



महाराष्ट्र शासन

विधि व न्याय विभाग

सन २०१७ चा महाराष्ट्र अधिनियम क्रमांक ६

महाराष्ट्र सार्वजनिक विद्यापीठ अधिनियम, २०१६

(दिनांक २५ मे २०१७ पर्यंत सुधारित)

**Maharashtra Act No. VI of 2017**  
**MAHARASHTRA PUBLIC UNIVERSITIES**  
**ACT, 2016**

*(As modified upto 25th May 2017)*



व्यवस्थापक, शासकीय मध्यवर्ती मुद्रणालय, मुंबई ४०० ००४ यांनी भारतात मुद्रित केले आणि  
संचालक, शासन मुद्रण लेखनसामग्री व प्रकाशने, महाराष्ट्र राज्य, मुंबई ४०० ००४ यांनी प्रकाशित केले.

२०१७

[किंमत : रुपये १७०.०० ]

**सन २०१७ चा महाराष्ट्र अधिनियम क्रमांक ६**  
**महाराष्ट्र सार्वजनिक विद्यापीठ अधिनियम, २०१६**  
**अनुक्रमणिका**

| <b>उद्देशिका.</b> |  |                             |     | <b>पृष्ठे</b> |
|-------------------|--|-----------------------------|-----|---------------|
| <b>कलमे</b>       |  |                             |     |               |
|                   |  | <b>प्रकरण एक</b>            |     |               |
|                   |  | <b>प्रारंभिक</b>            |     |               |
| १                 | संक्षिप्त नाव व प्रारंभ.   | ...                         | ... | १             |
| २                 | व्याख्या.  | ...                         | ... | २             |
|                   |  | <b>प्रकरण दोन</b>           |     |               |
|                   |  | <b>सार्वजनिक विद्यापीठे</b> |     |               |
| ३                 | विद्यापीठांचे विधि संस्थापन.   | ...                         | ... | ८             |
| ४                 | विद्यापीठाची उद्दिष्टे.  | ...                         | ... | ९             |
| ५                 | विद्यापीठाचे अधिकार व कर्तव्ये.  | ...                         | ... | ११            |
| ६                 | विद्यापीठाची अधिकारिता आणि प्रवेशाचे विशेषाधिकार बहाल करणे.  | ...                         | ... | १९            |
| ७                 | स्त्री-पुरुष भेद, वंश, पंथ, वर्ग, जात, जन्मस्थान, धर्म किंवा मतप्रणाली इ. विचारात न घेता विद्यापीठ सर्वांना खुले असणे. | ...                         | ... | २०            |
| ८                 | राज्य शासनाचे विद्यापीठांवर नियंत्रण असणे.   | ...                         | ... | २१            |
|                   |  | <b>प्रकरण तीन</b>           |     |               |
|                   |  | <b>विद्यापीठाचे अधिकारी</b> |     |               |
| ९                 | कुलपती आणि त्याचे अधिकार.  | ...                         | ... | २४            |
| १०                | विद्यापीठाचे इतर अधिकारी.  | ...                         | ... | २५            |
| ११                | कुलगुरुची नियुक्ती.  | ...                         | ... | २५            |
| १२                | कुलगुरुचे अधिकार व कर्तव्ये.   | ...                         | ... | २९            |
| १३                | प्र-कुलगुरु.   | ...                         | ... | ३२            |
| १४                | कुलसचिव.   | ...                         | ... | ३५            |
| १५                | विद्याशाखेचा अधिष्ठाता.  | ...                         | ... | ३६            |
| १६                | अधिष्ठात्याचे अधिकार व कर्तव्ये.   | ...                         | ... | ३७            |
| १७                | संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ.  | ...                         | ... | ३९            |

(२)

| कलमे |   | पृष्ठे |
|------|---|--------|
| १८   | वित्त व लेखा अधिकारी. ... ..  | ४१     |
| १९   | विद्यापीठ उप परिसर संचालक. ... ..   | ४२     |
| २०   | संचालक, नवोपक्रम, नवसंशोधन व साहचर्य मंडळ. ... ..                                       | ४४     |
| २१   | संचालक, ज्ञान स्रोत केंद्र. ... ..  | ४५     |
| २२   | संचालक, आजीवन अध्ययन व विस्तार. ... ..  | ४६     |
| २३   | संचालक, विद्यार्थी विकास व संचालक, राष्ट्रीय सेवा योजना. ... ..                         | ४८     |
| २४   | संचालक, क्रीडा व शारीरिक शिक्षण. ... ..   | ४९     |
| २५   | प्राधिकरणांचे, मंडळाचे अधिकारी, सदस्य आणि विद्यापीठाचे कर्मचारी हे लोकसेवक असणे. ... .. | ५०     |

प्रकरण चार

विद्यापीठाची प्राधिकरणे

|    |  |    |
|----|--|----|
| २६ | विद्यापीठाची प्राधिकरणे. ... ..  | ५० |
| २७ | विद्यापीठाच्या कोणत्याही प्राधिकरणाचा सदस्य असण्यासाठीच्या पात्रता शर्ती विनिर्दिष्ट करण्याचा राज्य शासनाचा अधिकार. ... .. | ५१ |
| २८ | अधिसभा. ... ..   | ५१ |
| २९ | अधिसभेची कार्ये व कर्तव्ये. ... ..   | ५३ |
| ३० | व्यवस्थापन परिषद. ... ..   | ५४ |
| ३१ | व्यवस्थापन परिषदेचे अधिकार व कर्तव्ये. ... ..  | ५६ |
| ३२ | विद्यापरिषद. ... ..  | ५८ |
| ३३ | विद्यापरिषदेचे अधिकार व कर्तव्ये. ... ..   | ६० |
| ३४ | विद्याशाखा. ... ..   | ६२ |
| ३५ | विद्याशाखेचे अधिकार व कर्तव्ये. ... ..   | ६३ |
| ३६ | अधिष्ठाता मंडळ. ... ..   | ६४ |
| ३७ | अधिष्ठाता मंडळाचे अधिकार व कर्तव्ये. ... ..  | ६४ |
| ३८ | विद्यापीठ उप परिसर मंडळ. ... ..  | ६६ |
| ३९ | विद्यापीठ उप परिसर मंडळाचे अधिकार व कर्तव्ये. ... ..   | ६७ |
| ४० | अभ्यास मंडळे. ... ..   | ६८ |
| ४१ | अभ्यास मंडळाचे अधिकार व कर्तव्ये. ... ..   | ६९ |
| ४२ | विद्यापीठ विभाग आणि आंतरविद्याशाखीय अभ्यास मंडळ. ... ..  | ७० |
| ४३ | विद्यापीठ विभाग व आंतर-विद्याशाखा अभ्यास मंडळाचे अधिकार व कर्तव्ये. ... ..   | ७० |

| कलमे  | पृष्ठे |
|---|--------|
| ४४ महाविद्यालयीन पदव्युत्तर शिक्षण मंडळ.                        | ७१     |
| ४५ आजीवन अध्ययन व विस्तार मंडळ.                                 | ७२     |
| ४६ आजीवन अध्ययन व विस्तार मंडळाचे अधिकार व कर्तव्ये.            | ७३     |
| ४७ परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ.                                    | ७४     |
| ४८ परीक्षा व मूल्यमापन मंडळाचे अधिकार व कर्तव्ये.               | ७४     |
| ४९ माहिती तंत्रज्ञान मंडळ.                                      | ७७     |
| ५० माहिती तंत्रज्ञान मंडळाचे अधिकार व कर्तव्ये.                 | ७७     |
| ५१ राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय साहचर्य मंडळ.                      | ७८     |
| ५२ राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय साहचर्य मंडळाचे अधिकार व कर्तव्ये. | ७९     |
| ५३ नवोपक्रम, नवसंशोधन व उपक्रम मंडळ.                            | ८०     |
| ५४ नवोपक्रम, नवसंशोधन व उपक्रम मंडळाचे अधिकार व कर्तव्ये.       | ८१     |
| ५५ विद्यार्थी विकास मंडळ.                                       | ८१     |
| ५६ विद्यार्थी विकास मंडळाचे अधिकार व कर्तव्ये.                  | ८२     |
| ५७ क्रीडा व शारीरिक शिक्षण मंडळ.                                | ८३     |
| ५८ क्रीडा व शारीरिक शिक्षण मंडळाचे अधिकार व कर्तव्ये.           | ८४     |
| ५९ संशोधन मंडळ.   | ८५     |
| ६० संशोधन मंडळाचे अधिकार व कर्तव्ये.                            | ८५     |
| ६१ प्राधिकरणांचे अधिकार, कार्ये व कर्तव्ये.                     | ८६     |
| ६२ प्राधिकरणांच्या सदस्यांचा पदावधी.                            | ८७     |
| ६३ सदस्यत्वाची समाप्ती.   | ८७     |
| ६४ प्राधिकरणाच्या सदस्यत्वासाठी निरहता.                         | ८७     |
| ६५ लागोपाठच्या दुसऱ्या मुदतीकरिता सदस्य असण्यास अपात्र असणे.    | ८८     |
| ६६ प्राधिकरणाच्या निर्णयाची निर्णायकता.                         | ८८     |
| ६७ प्रमाणशीर प्रतिनिधित्वाद्वारे निवडणूक घेणे.                  | ८८     |
| ६८ सदस्यत्वाचा राजीनामा.  | ८८     |
| ६९ प्राधिकरणांची बैठक.  | ८८     |
| ७० प्रासंगिक रिक्त पद व ते स्थायी समितीने भरणे.                 | ८९     |

(४)

प्रकरण पाच

| कलमे | परिनियम, आदेश आणि विनियम     | पृष्ठे |
|------|------------------------------|--------|
| ७१   | परिनियम व त्याचे विषय ... .. | ९०     |
| ७२   | परिनियम कसे करावयाचे ... ..  | ९२     |
| ७३   | आदेश व त्यांचे विषय ... ..   | ९३     |
| ७४   | आदेश व ते तयार करणे ... ..   | ९४     |
| ७५   | विनियम ... ..                | ९५     |

प्रकरण सहा

महाराष्ट्र राज्य उच्च शिक्षण व विकास आयोग

|    |   |     |
|----|---|-----|
| ७६ | महाराष्ट्र राज्य उच्च शिक्षण व विकास आयोग ... ..      | ९५  |
| ७७ | आयोगाची कार्ये व कर्तव्ये ... ..                      | ९७  |
| ७८ | महाराष्ट्र राज्य राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा परिषद ... .. | १०२ |

प्रकरण सात

अध्यापक आणि कर्मचारी यांच्या तक्रारींचे निवारण

|    |   |     |
|----|---|-----|
| ७९ | तक्रार निवारण समिती ... ..  | १०२ |
| ८० | विद्यापीठ व महाविद्यालय न्यायाधिकरण ... ..  | १०३ |
| ८१ | अपील करण्याचा अधिकार ... ..   | १०४ |
| ८२ | न्यायाधिकरणाचे सर्वसाधारण अधिकार व कार्यपद्धती ... ..                                 | १०५ |
| ८३ | उचित अनुतोष व निदेश देण्याचे न्यायाधिकरणाचे अधिकार ... ..                             | १०५ |
| ८४ | न्यायाधिकरणाचा निर्णय अंतिम व बंधनकारक असणे ... ..                                    | १०६ |
| ८५ | न्यायाधिकरणाच्या निदेशांचे पालन करण्यास कसूर केल्याबद्दल व्यवस्थापनाला शास्ती. ... .. | १०७ |

प्रकरण आठ

प्रवेश, परीक्षा, मूल्यमापन व विद्यार्थ्यांशी संबंधित इतर बाबी

|    |  |     |
|----|--|-----|
| ८६ | प्रवेश ... ..  | १०८ |
| ८७ | प्रवेशासंबंधीचे विवाद ... ..   | १०८ |
| ८८ | परीक्षा व मूल्यामापन ... ..  | १०८ |
| ८९ | निकाल जाहीर करणे ... ..  | १०९ |
| ९० | वेळापत्रकाचे पालन न केल्यामुळे परीक्षा आणि मूल्यमापन अवैध ठरणार नाही. ... .. | १०९ |
| ९१ | क्रीडा व अभ्यासेतर कार्यक्रम ... ..  | १०९ |

(५)

प्रकरण नऊ

| कलमे | समित्या व परिषद   | पृष्ठे |
|------|---|--------|
| ९२   | समित्या व परिषदा  | १०९    |
| ९३   | सल्लागार परिषद  | ११०    |
| ९४   | वित्त व लेखा समिती  | १११    |
| ९५   | अंतर्गत गुणवत्ता हमी समिती  | ११२    |
| ९६   | ज्ञानस्रोत समिती  | ११३    |
| ९७   | महाविद्यालय विकास समिती   | ११४    |
| ९८   | खरेदी समिती   | ११६    |
| ९९   | विद्यार्थी परिषद  | ११७    |
| १००  | इमारत व बांधकाम समिती   | १२०    |
| १०१  | शुल्क निश्चिती समिती  | १२२    |
| १०२  | विद्यापीठ अध्यापकांची निवड व नियुक्ती   | १२३    |
| १०३  | विद्यापीठाच्या अध्यापकांची तात्पुरती रिक्त पदे भरणे   | १२५    |
| १०४  | संचालित महाविद्यालयांच्या प्राचार्यांची नियुक्ती व निवड   | १२६    |
| १०५  | विद्यापीठाचे अधिकारी व कर्मचारी, संलग्न महाविद्यालयांचे प्राचार्य, अध्यापक व इतर कर्मचारी यांच्यासाठी निवड समित्या. | १२६    |
| १०६  | इतर समित्या   | १२८    |

प्रकरण दहा

परवानगी, संलग्नीकरण व मान्यता

|     |   |     |
|-----|---|-----|
| १०७ | सम्यक योजना   | १२९ |
| १०८ | संलग्नीकरण आणि मान्यता यांकरिता शर्ती   | १३० |
| १०९ | नवीन महाविद्यालय किंवा नवीन पाठ्यक्रम, विषय, विद्याशाखा, तुकडी सुरू करण्यासाठी परवानगी देण्याची कार्यपद्धती | १३१ |
| ११० | संलग्नीकरण करण्यासाठी कार्यपद्धती   | १३४ |
| १११ | परिसंस्थांना मान्यता देण्याची कार्यपद्धती   | १३५ |
| ११२ | खाजगी कौशल्य शिक्षण प्रदाता परिसंस्थेस मान्यता देण्याची कार्यपद्धती   | १३६ |
| ११३ | अधिकारप्रदत्त स्वायत्त कौशल्य विकास महाविद्यालयास मान्यता देणे  | १३८ |
| ११४ | संलग्नीकरण किंवा मान्यता चालू ठेवणे   | १४० |
| ११५ | संलग्नीकरण किंवा मान्यता यांचा विस्तार  | १४० |
| ११६ | स्थायी संलग्नीकरण व मान्यता   | १४१ |
| ११७ | महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांची तपासणी व अहवाल  | १४१ |

(६)

| कलमे |   | पृष्ठे |
|------|---|--------|
| ११८  | महाविद्यालयाचे ठिकाणाचे स्थानांतरण  | १४२    |
| ११९  | व्यवस्थापनाचे हस्तांतरण   | १४२    |
| १२०  | संलग्नीकरण किंवा मान्यता काढून घेणे   | १४२    |
| १२१  | संलग्न महाविद्यालये किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था बंद करणे                           | १४३    |
| १२२  | स्वायत्त विद्यापीठ विभाग किंवा परिसंस्था, महाविद्यालय किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था. | १४४    |
| १२३  | अधिकारप्रदत्त स्वायत्त महाविद्यालये   | १४४    |
| १२४  | अधिकारप्रदत्त स्वायत्त समूह परिसंस्था   | १४५    |

प्रकरण अकरा

नाव नोंदणी, पदव्या व दीक्षांत समारंभ

|     |  |     |
|-----|--|-----|
| १२५ | पदव्युत्तर अध्यापन व संशोधन                              | १४५ |
| १२६ | विद्यार्थ्यांची नाव नोंदणी                               | १४५ |
| १२७ | शिस्तविषयक अधिकार आणि विद्यार्थ्यांमधील शिस्त            | १४५ |
| १२८ | पदव्या, पदविका, प्रमाणपत्रे व विद्याविषयक इतर विशेषोपाधी | १४६ |
| १२९ | सन्मान्य पदवी  | १४७ |
| १३० | दीक्षांत समारंभ  | १४७ |
| १३१ | नोंदणीकृत पदवीधर   | १४७ |
| १३२ | पदवीधरांच्या नोंदवहीतून नाव काढून टाकणे                  | १४८ |

प्रकरण बारा

विद्यापीठ निधी, लेखे व लेखापरीक्षा

|     |                            |     |
|-----|----------------------------|-----|
| १३३ | वार्षिक वित्तीय अंदाज      | १४९ |
| १३४ | विद्यापीठ निधी             | १४९ |
| १३५ | वार्षिक लेखे व लेखापरीक्षा | १५० |
| १३६ | वार्षिक अहवाल              | १५१ |

प्रकरण तेरा

श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी महिला विद्यापीठाकरिता विशेष तरतुदी

|     |  |     |
|-----|--|-----|
| १३७ | श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी महिला विद्यापीठाकरिता विशेष तरतुदी | १५१ |
|-----|--|-----|

प्रकरण चौदा

संकीर्ण

|     |  |     |
|-----|--|-----|
| १३८ | नुकसानीबद्दल प्राधिकरणे आणि अधिकारी जबाबदार असणे | १५२ |
| १३९ | राज्य विधान मंडळाचे आणि संसदेचे सदस्यत्व         | १५२ |

| कलमे  | पृष्ठे  |
|---|---------|
| १४० अर्थउकलीसंबंधातील प्रश्न आणि विद्यापीठ प्राधिकरण किंवा मंडळ<br>इत्यादींच्या रचनेसंबंधातील विवाद.                      | ... १५३ |
| १४१ कृती व आदेश यांचे संरक्षण   | ... १५३ |
| १४२ अधिकार सोपवणे   | ... १५३ |
| १४३ कृती व कार्यवाही ही, केवळ रचनेतील दोष, रिक्त पदे, कार्यपद्धतीतील<br>नियमबाह्यता इत्यादी कारणांवरून विधिअग्राह्य नसणे. | ... १५४ |
| प्रकरण पंधरा  |         |
| <b>नवीन विद्यापीठे स्थापन करणे</b>  |         |
| १४४ नवीन विद्यापीठ घटित करताना बाबींसाठी तरतुदी करण्याकरिता आदेश काढणे  | ... १५४ |
| प्रकरण सोळा   |         |
| <b>संक्रमणात्मक तरतुदी</b>  |         |
| १४५ विद्यापीठाचे विद्यमान अधिकारी व कर्मचारी असणे चालू राहणे  | ... १५५ |
| १४६ प्राधिकरणांची पदे पुढे चालू राहणे आणि ती घटित करणे यांच्याशी संबंधित<br>तरतुदी.                                       | ... १५५ |
| १४७ निरसन व व्यावृत्ती  | ... १५६ |
| १४८ अडचणी दूर करणे  | ... १५८ |



(सन २०१७ चा महाराष्ट्र अधिनियम क्रमांक ६.)

महाराष्ट्र सार्वजनिक विद्यापीठ अधिनियम, २०१६.

(मा. राज्यपालांची संमती मिळाल्यानंतर “महाराष्ट्र शासन राजपत्रात ” दिनांक ११ जानेवारी २०१७ रोजी प्रथम प्रसिद्ध केलेला अधिनियम.)

विद्याविषयक स्वायत्तता व अत्युच्च गुणवत्ता, लोकशाही प्रक्रियेद्वारे पर्याप्त प्रतिनिधित्व, उच्च शिक्षणाची अभिवृद्धी, त्याचे बळकटीकरण व विनियमन यांकरिता आणि त्यांच्याशी संबंधित किंवा तदनुषंगिक बाबींकरिता तरतूद करण्यासाठी अधिनियम.

**ज्याअर्थी**, महाराष्ट्र राज्यातील कृषीतर व वैद्यकेतर विद्यापीठांना विद्याविषयक स्वायत्तता देणे आणि त्याकरिता अधिक चांगल्या तरतुदी करणे इष्ट आहे ;

**आणि ज्याअर्थी**, महाराष्ट्र शासनाने उच्च शिक्षण व अध्ययन यांच्या विविध पैलूंवर विचार करण्यासाठी व शिफारस करण्यासाठी आणि स्वायत्ततेची सुनिश्चिती करण्याकरिता विविध उपाययोजना सुचविण्यासाठी डॉ. अरूण निगवेकर, डॉ. अनिल काकोडकर, डॉ. राम ताकवले आणि दिवंगत श्रीमती कुमुद बन्सल यांच्या अध्यक्षतेखाली विविध समित्या नियुक्त केल्या होत्या ;

**आणि ज्याअर्थी**, उक्त समित्यांच्या शिफारशी विचारात घेतल्यानंतर, महाराष्ट्र शासनास, विद्याविषयक स्वायत्तता व अत्युच्च गुणवत्ता, लोकशाही प्रक्रियेद्वारे पर्याप्त प्रतिनिधित्व, उच्च शिक्षणाची अभिवृद्धी, त्याचे बळकटीकरण व विनियमन करणे आणि महाराष्ट्र राज्यातील कृषीतर व वैद्यकेतर विद्यापीठांचे अधिक प्रभावी रीतीने विनियमन करणे, महाराष्ट्र राज्य उच्च शिक्षण व विकास आयोगाची स्थापना करून विद्यापीठांना सामाजिक व शैक्षणिक क्षेत्रात अधिकाधिक वाव देणे, विविध मंडळे घटित करणे, आणि महाराष्ट्र विद्यापीठ अधिनियम, १९९४ निरसित करणे यांकरिता, आणि त्यांच्याशी संबंधित किंवा तदनुषंगिक बाबींकरिता कायदा करणे इष्ट वाटते;

१९९४ चा महा. ३५. **त्याअर्थी**, भारतीय गणराज्याच्या सदुसष्टाच्या वर्षी, याद्वारे, पुढील अधिनियम करण्यात येत आहे :-

प्रकरण एक

प्रारंभिक

१. (१) या अधिनियमास, महाराष्ट्र सार्वजनिक विद्यापीठ अधिनियम, २०१६, असे म्हणावे. संक्षिप्त नाव व प्रारंभ.
- (२) तो, राज्य शासन राजपत्रातील अधिसूचनेद्वारे नेमून देईल अशा दिनांकास अंमलात येईल.
२. या अधिनियमात, संदर्भानुसार दुसरा अर्थ अपेक्षित नसेल तर,— व्याख्या.

(१) “विद्याविषयक सेवा युनिट” याचा अर्थ, विद्यापीठ विज्ञान व उपकरण केंद्र, विद्याविषयक अधिकारी महाविद्यालय, संगणक केंद्र, विद्यापीठ मुद्रणालय किंवा विद्यापीठाच्या कोणत्याही उद्दिष्टांच्या प्रचालनासाठी विशेषीकृत सेवा पुरविणारे इतर कोणतेही युनिट, असा आहे ;

(२) “संलग्न प्राध्यापक” , “संलग्न सहयोगी प्राध्यापक” किंवा “संलग्न सहायक प्राध्यापक” याचा अर्थ, विद्यापीठाबरोबरच्या सहयोगाच्या किंवा साहचर्याच्या कालावधीत तशी पदनिर्देशित करण्यात आलेली, उद्योग, व्यापार, कृषि, वाणिज्य, सामाजिक, सांस्कृतिक, विद्याविषयक किंवा इतर कोणत्याही संलग्न क्षेत्रातील व्यक्ती, असा आहे ;

(३) “ संलग्न महाविद्यालय ” याचा अर्थ, विद्यापीठाकडून संलग्नीकरणास मंजूरी देण्यात आलेले महाविद्यालय, असा आहे ;

(४) “ प्राधिकरणे ” याचा अर्थ, या अधिनियमाद्वारे किंवा त्याअन्वये विनिर्दिष्ट करण्यात आलेली विद्यापीठाची प्राधिकरणे, असा आहे ;

(५) “ स्वायत्तता ” याचा अर्थ, शैक्षणिक अध्ययनक्रम चालविणे आणि परीक्षा पार पाडणे, त्या त्या विषयांसाठी पाठ्यक्रम तयार करणे आणि परीक्षा उत्तीर्ण झाल्याची प्रमाणपत्रे देणे, इत्यादींसाठी महाविद्यालय, परिसंस्था किंवा विद्यापीठ विभाग यांना परवानगी देण्याचा, परिनियमांद्वारे प्रदान करण्यात आलेला, विद्यापीठाचा विशेषाधिकार, असा आहे ;

(६) “ स्वायत्त महाविद्यालय ”, “ स्वायत्त परिसंस्था ” किंवा “ स्वायत्त विभाग ” याचा अर्थ, परिनियमान्वये स्वायत्तता देण्यात आलेले आणि तसे संबोधण्यात आलेले महाविद्यालय, परिसंस्था किंवा विभाग, असा आहे ;

(७) “ मंडळे ” याचा अर्थ, त्या त्या प्राधिकरणांनी रचना केलेली विद्यापीठाची मंडळे, असा आहे ;

(८) “ कुलपती ” आणि “ कुलगुरू ” याचा अर्थ, अनुक्रमे, विद्यापीठाचा कुलपती व कुलगुरू, असा आहे ;

(९) “ पसंतीवर आधारित श्रेयांक पद्धती ” याचा अर्थ, परिनियमांमध्ये विहित केलेले श्रेयांक संचित करण्यासाठी पाठ्यक्रमामधून (मुख्य, ऐच्छिक किंवा दुय्यम किंवा सुलभ कौशल्य अभ्यास पाठ्यक्रम) निवड करण्यासाठी विद्यार्थ्यांकरिता बहुविध आंतरविद्या शाखीय पसंतीनुसार अभ्यासपाठ्यक्रमाची पद्धती, असा आहे ;

(१०) “ समूह (क्लस्टर) विद्यापीठ ” याचा अर्थ, या अधिनियमाच्या कलम ३ च्या पोट-कलम (६) अन्वये स्थापन करण्यात आलेले समूह विद्यापीठ, असा आहे ;

(११) “ सहयोग ” याचा अर्थ, विद्यापीठाचा किंवा महाविद्यालयाचा किंवा इतर परिसंस्थेचा, कृषि, उद्योग, व्यापार व वाणिज्य, क्रीडा, सामाजिक, सांस्कृतिक, विज्ञान, तंत्रज्ञान क्षेत्रातील व अन्य कोणत्याही क्षेत्रातील स्थानिक, प्रादेशिक, राष्ट्रीय किंवा आंतरराष्ट्रीय परिसंस्था, संशोधन परिसंस्था व संघटना यांसह इतर विद्यापीठे, विद्याविषयक परिसंस्था यांच्याबरोबर असलेला विद्याविषयक सहयोगी कार्यक्रम, असा आहे ;

(१२) “ महाविद्यालय ” याचा अर्थ, विद्यापीठ क्षेत्रात किंवा त्याच्या अधिकारक्षेत्रात असलेले, विद्यापीठाला संलग्न असलेले महाविद्यालय, असा आहे ;

(१३) “ महाविद्यालय विकास समिती ” याचा अर्थ, या अधिनियमाच्या कलम ९७ अन्वये महाविद्यालयांच्या विकासासाठी घटित केलेली, महाविद्यालय विकास समिती, असा आहे ;

(१४) “ संलग्न महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांच्या विभाग प्रमुखांचा गट ” याचा अर्थ, संलग्न महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांच्या विभाग प्रमुखांचा, जे संबंधित प्राधिकरणांचे सदस्य म्हणून त्यांच्यामधून निवडून येतील, त्यांचा समावेश असलेला निर्वाचक गण, असा आहे ;

(१५) “ विद्यापीठाच्या पदवीधरांचा गट ” याचा अर्थ, जे विद्यापीठाचे नोंदणीकृत पदवीधर आपल्यामधून निरनिराळ्या प्राधिकरणांचे सदस्य म्हणून निवडून येतील अशा, विद्यापीठाच्या नोंदणीकृत पदवीधरांनी मिळून बनलेला निर्वाचक गण, असा आहे ;

(१६) “ व्यवस्थापन प्रतिनिधींचा गट ” याचा अर्थ, जे संलग्न किंवा स्वायत्त महाविद्यालयांच्या किंवा परिसंस्थांच्या व्यवस्थापन समित्यांचे प्रतिनिधी आपल्यामधून निरनिराळ्या प्राधिकरणांचे सदस्य म्हणून निवडून येतील अशा, संलग्न किंवा स्वायत्त महाविद्यालयांच्या किंवा परिसंस्थांच्या व्यवस्थापन समित्यांच्या प्रतिनिधींचा मिळून बनलेला निर्वाचक गण, असा आहे ;

(१७) “ प्राचार्यांचा गट ” याचा अर्थ, जे पूर्णकालिक मान्यताप्राप्त प्राचार्य व मान्यताप्राप्त परिसंस्थांचे संचालक आपल्यामधून निरनिराळ्या प्राधिकरणांचे सदस्य म्हणून निवडून येतील अशा, पूर्णकालिक मान्यताप्राप्त प्राचार्यांनी व मान्यताप्राप्त परिसंस्थांच्या संचालकांनी मिळून बनलेला निर्वाचक गण, असा आहे ;

(१८) “ अध्यापकांचा गट ” याचा अर्थ, जे संलग्न व स्वायत्त महाविद्यालयांचे आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्थांचे अध्यापक आपल्यामधून निरनिराळ्या प्राधिकरणांचे सदस्य म्हणून निवडून येतील अशा, संलग्न व स्वायत्त महाविद्यालयांच्या आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्थांच्या अध्यापकांनी मिळून बनलेला निर्वाचक गण, असा आहे ;

(१९) “ विद्यापीठ अध्यापकांचा गट ” याचा अर्थ, जे विद्यापीठाने नियुक्त केलेले विद्यापीठ विभागांचे, विद्यापीठ परिसंस्थांचे आणि संचालित महाविद्यालयांचे पूर्णकालिक अध्यापक आपल्यामधून निरनिराळ्या प्राधिकरणांचे सदस्य म्हणून निवडून येतील अशा, विद्यापीठ विभागांचे, विद्यापीठ परिसंस्थांचे आणि संचालित महाविद्यालयांचे पूर्णकालिक अध्यापक यांनी मिळून बनलेला निर्वाचक गण, असा आहे ;

(२०) “ आयोग ” याचा अर्थ, या अधिनियमाच्या कलम ७६ अन्वये घटित केलेला, महाराष्ट्र राज्य उच्च शिक्षण व विकास आयोग, असा आहे ;

(२१) “ समूह (कम्युनिटी) महाविद्यालय ” याचा अर्थ, परिनियमांमध्ये विहित केल्याप्रमाणे, कौशल्य-आधारित शैक्षणिक अध्ययनक्रम प्रस्तुत करणारी परिसंस्था, असा आहे ;

(२२) “ संचालित महाविद्यालय ” याचा अर्थ, विद्यापीठाकडून चालवण्यात येणारे व व्यवस्था पाहण्यात येणारे महाविद्यालय, असा आहे ;

(२३) “ निरधिसूचित जमाती (विमुक्त जाती) ” याचा अर्थ, राज्य शासनाने, वेळोवेळी विमुक्त जाती म्हणून घोषित केलेल्या जमाती, असा आहे ;

(२४) “ विभाग ” याचा अर्थ, परिनियमांमध्ये विहित करण्यात आल्यानुसार महाविद्यालयामध्ये किंवा परिसंस्थेमध्ये एखादा विशिष्ट विषय किंवा विषय गट शिकवणारा विभाग, असा आहे ;

(२५) “ संचालक ” याचा अर्थ, व्यवस्थापन परिषदेकडून तसे संबोधण्यात आलेला, विद्यापीठाचे केंद्र किंवा प्रशाळा यांसह त्या परिसंस्थेचा प्रमुख किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थेचा प्रमुख, असा आहे ;

(२६) “ संचालक, उच्च शिक्षण ” आणि “ संचालक, तंत्र शिक्षण ” याचा अर्थ, अनुक्रमे, संचालक, उच्च शिक्षण, महाराष्ट्र राज्य, आणि संचालक, तंत्र शिक्षण, महाराष्ट्र राज्य, असा आहे ;

(२७) “ अधिकारप्रदत्त स्वायत्त महाविद्यालय ” याचा अर्थ, ज्याची विद्यापीठ अनुदान आयोगाने उत्कृष्टताक्षम महाविद्यालय किंवा उत्कृष्ट महाविद्यालय म्हणून निवड केली असेल किंवा ज्याने राज्य शासनाकडून राजपत्राद्वारे विनिर्दिष्ट करण्यात आलेली उच्चदर्जाची श्रेणी प्राप्त केलेली असेल, तसेच ज्याला परिनियमान्वये प्राधिकरणांकडून अधिकार प्रदत्त स्वायत्त महाविद्यालयाचा संलग्नता असलेल्या विद्यापीठासह अशा महाविद्यालयांची संयुक्त पदवी प्रदान करण्याचा अधिकार देण्यात आला असेल असे स्वायत्त महाविद्यालय, असा आहे ;

(२८) “ अधिकारप्रदत्त स्वायत्त समूह परिसंस्था ” याचा अर्थ विद्यापीठ अनुदान आयोगाने उत्कृष्टताक्षम महाविद्यालय किंवा उत्कृष्ट महाविद्यालय म्हणून ज्याची निवड केली असेल किंवा ज्यांनी राज्य शासनाकडून राजपत्राद्वारे विनिर्दिष्ट करण्यात आलेली उच्चदर्जाची श्रेणी प्राप्त केलेली असेल, तसेच ज्यांना परिनियमान्वये प्राधिकरणांकडून अधिकार प्रदत्त स्वायत्त समूह परिसंस्थांचा दर्जा देण्यात आला असेल आणि ज्यांना संलग्नता असलेल्या विद्यापीठासह संयुक्त पदवी प्रदान करण्याचा अधिकार देण्यात आला असेल अशा स्वायत्त महाविद्यालयांचा व परिसंस्थांचा समावेश असलेला, एकाच व्यवस्थापनाचा किंवा शैक्षणिक संस्थेचा गट, असा आहे ;

(२९) “ अधिकारप्रदत्त स्वायत्त कौशल्य विकास महाविद्यालय ” याचा अर्थ, विद्यापीठाने कौशल्य अर्हता व शिक्षण संरचना याबाबतच्या राष्ट्रीय, राज्य स्तरीय धोरणानुसार विद्यापीठाकडून विहित करण्यात आलेले कौशल्य विकास अध्ययनक्रम चालविण्याकरिता ज्या महाविद्यालयास मान्यता दिलेली आहे आणि ज्या विद्यापीठाशी ते संलग्न आहे त्या विद्यापीठाने त्यास अधिकारप्रदत्त स्वायत्त कौशल्य विकास महाविद्यालयाचा दर्जा देण्यात आलेला आहे आणि ज्यास संलग्न विद्यापीठाबरोबर संयुक्त पदवी, प्रमाणपत्र, पदविका व प्रगत पदविका देण्याचा अधिकार प्रदान करण्यात आलेला आहे, असे महाविद्यालय, असा आहे ;

(३०) “ शुल्क ” याचा अर्थ, शिकवणी शुल्क, विकास आकारासह इतर शुल्क व आकार, असा आहे ;

(३१) “ विद्यापीठ विभागाचा प्रमुख ”, “ परिसंस्थेचा प्रमुख ” आणि “ महाविद्यालय विभागाचा प्रमुख ” याचा अर्थ, परिनियमामध्ये विहित केल्याप्रमाणे अनुक्रमे विद्यापीठ विभागाचा प्रमुख, मान्यताप्राप्त परिसंस्थेचा प्रमुख आणि महाविद्यालय विभागाचा प्रमुख, असा आहे ;

(३२) “ उच्च शिक्षण ” याचा अर्थ, उच्च माध्यमिक शालेय शिक्षणाच्या टप्प्यावरील शिक्षणानंतरचा ज्ञानाचा व्यासंग, असा आहे ;

(३३) “ वसतिगृह ” याचा अर्थ, विद्यापीठ किंवा महाविद्यालय किंवा, यथास्थिति, परिसंस्था यांनी तरतूद केलेले, स्थापन केलेले, चालवण्यात येणारे, विद्यापीठाच्या किंवा महाविद्यालयाच्या किंवा परिसंस्थेच्या विद्यार्थ्यांसाठी असलेले निवासस्थान, असा आहे ;

(३४) “ परिसंस्था ” याचा अर्थ, विद्यापीठाशी सहयोगी असलेली आणि विद्यापीठाचे विशेषाधिकार बहाल करण्यात आलेली, महाविद्यालय नसणारी, उच्च शिक्षणाची विद्याविषयक परिसंस्था, असा आहे;

(३५) “ आंतर-विद्याशाखीय अभ्यासक्रम ” याचा अर्थ, परिनियमांद्वारे विहित केल्याप्रमाणे निरनिराळ्या विद्याशाखांमधील संयुक्त शैक्षणिक अभ्यासक्रम व संशोधन, असा आहे ;

(३६) “ज्ञान स्रोत केंद्र” याचा अर्थ, मुद्रित, इलेक्ट्रॉनिक व दृक-श्राव्य स्वरूपातील साहित्य, प्रबंधिका, संदर्भ ग्रंथ, पाठ्यपुस्तके व समीक्षा ग्रंथ, सर्व प्रकारची जर्नल्स आणि शिक्षण, संशोधन, विस्तार सेवा किंवा तत्सम प्रयोजनासाठी उपयुक्त विविध स्वरूपातील इतर कोणतेही साहित्य ठेवण्यासाठी विद्यापीठाच्या परिसरामध्ये किंवा उप-परिसरामध्ये विद्यापीठाने स्थापन केलेले ग्रंथालय, असा आहे ;

(३७) “व्यवस्थापन” याचा अर्थ, ज्यांच्या व्यवस्थापनाखाली एका किंवा अधिक महाविद्यालयांचे किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थांचे किंवा उच्च शिक्षणाच्या इतर परिसंस्थांचे संचालन करण्यात येते आणि त्यांना विद्यापीठाचे विशेषाधिकार बहाल करण्यात येतात असे, महाराष्ट्र सार्वजनिक विश्वस्त व्यवस्था अधिनियमान्वये, नोंदणी करण्यात आलेल्या कोणत्याही विश्वस्त मंडळाचे किंवा सोसायटी नोंदणी अधिनियम, १८६० अन्वये नोंदणी करण्यात आलेल्या कोणत्याही संस्थेचे किंवा कंपनी अधिनियम, २०१३ च्या कलम ८ अन्वये नोंदणी करण्यात आलेल्या कंपनीचे विश्वस्त किंवा व्यवस्थापन किंवा नियामक मंडळ, –मग त्याला कोणत्याही नावाने संबोधण्यात येवो-, असा आहे :

१९५०  
चा २९.  
१८६०  
चा २१.  
२०१३  
चा १८.

परंतु, केंद्र सरकार किंवा राज्य शासन किंवा जिल्हा परिषद, नगरपरिषद किंवा महानगरपालिका यांसारखे स्थानिक प्राधिकरण यांनी स्थापन केलेल्या किंवा त्यांच्याकडून चालवण्यात येणाऱ्या कोणत्याही महाविद्यालयाच्या किंवा परिसंस्थेच्या बाबतीत, व्यवस्थापन याचा अर्थ, अनुक्रमे, यथास्थिति, केंद्र सरकार किंवा राज्य शासन किंवा जिल्हा परिषद किंवा नगरपरिषद किंवा महानगरपालिका, असा आहे ;

(३८) “बहु-विद्याशाखीय अभ्यासक्रम” याचा अर्थ, परिनियमांद्वारे विहित केल्याप्रमाणे, एखाद्या विशिष्ट विद्याशाखेच्या निरनिराळ्या शाखांमधील संयुक्त शैक्षणिक अभ्यासक्रम व संशोधन, असा आहे ;

(३९) “भटक्या जमाती” याचा अर्थ, चरितार्थाच्या शोधात ठिकठिकाणी भटकणाऱ्या जमाती म्हणून राज्य शासनाने वेळोवेळी घोषित केलेल्या जमाती, असा आहे ;

(४०) “दीर्घ सुटी नसलेला विद्याविषयक कर्मचारीवर्ग” याचा अर्थ, राज्य शासन दीर्घ सुटी नसलेला विद्याविषयक कर्मचारीवर्ग म्हणून वर्गीकरण करील असा कर्मचारीवर्ग, असा आहे आणि त्यामध्ये विद्याविषयक कर्मचाऱ्यांना पूरक अशा सर्व कर्मचारीवर्गांचा समावेश होईल. परंतु केवळ प्रशासकीय कामे करणाऱ्या कर्मचारीवर्गांचा त्यात समावेश होणार नाही ;

(४१) “इतर मागास वर्ग” याचा अर्थ, राज्य शासनाने सामाजिकदृष्ट्या व शैक्षणिकदृष्ट्या मागास वर्ग म्हणून घोषित केलेला नागरिकांचा कोणताही वर्ग, असा आहे आणि त्यामध्ये भारत सरकारने घोषित केलेल्या, महाराष्ट्र राज्याशी संबंधित इतर मागास वर्गांचा अंतर्भाव होतो ;

(४२) “पदव्युत्तर विभाग” याचा अर्थ, विद्यापीठांकडून तशी असल्याबाबत मान्यता देण्यात आलेला व पदव्युत्तर शिक्षण देणारा किंवा संशोधनाबाबत मार्गदर्शन करणारा, महाविद्यालयातील किंवा उच्च शिक्षण संशोधन किंवा विशेषीकृत अभ्यास यांच्या परिसंस्थेतील विभाग, असा आहे ;

(४३) “विहित” याचा अर्थ, या अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये करण्यात आलेले परिनियम किंवा आदेश किंवा, यथास्थिति, विनियम यांद्वारे विहित करण्यात आलेले, असा आहे ;

(४४) “प्राचार्य” याचा अर्थ, विद्यापीठाने प्राचार्य म्हणून यथोचितरीत्या मान्यता दिलेला अध्यापक, असा आहे ;

(४५) “प्र-कुलगुरु” याचा अर्थ, कुलगुरूच्या लगतनंतर संपूर्ण विद्यापीठाची कार्यकक्षा असणारा विद्याविषयक व कार्यकारी अधिकारी, असा आहे ;

(४६) “मान्यताप्राप्त परिसंस्था” याचा अर्थ, महाविद्यालयाव्यतिरिक्त उच्च शिक्षणासाठी, संशोधनासाठी किंवा विशेषीकृत अभ्यासासाठी असलेली आणि विद्यापीठाने तशी मान्यता दिलेली परिसंस्था, असा आहे ;

(४७) “नोंदणीकृत पदवीधर” याचा अर्थ, अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये कोणत्याही एका विद्यापीठात नोंदणी केलेला किंवा नोंदणी केल्याचे मानण्यात आलेला विद्यापीठाचा पदवीधर, असा आहे ;

(४८) “सॅटेलाईट केंद्र” याचा अर्थ, एखाद्या संलग्नित किंवा संचालित महाविद्यालयाचा किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थेचा एक अविभाज्य भाग म्हणून ग्रामीण किंवा आदिवासी क्षेत्रात वंचितांपर्यंत शिक्षण पोहोचविण्याच्या हेतूने शैक्षणिक अभ्यासक्रम, अभ्यासानुवर्ती कार्यक्रम, संशोधन आणि विस्तार कार्यक्रम राबविण्यासाठी राज्य शासनाकडून **राजपत्रातील** आदेशाद्वारे विनिर्दिष्ट करण्यात येतील अशा अटी व शर्तीवर स्थापन करण्यात आलेले, केंद्र, असा आहे ;

(४९) “अनुसूची” याचा अर्थ, या अधिनियमाची अनुसूची, असा आहे ;

(५०) “अनुसूचित जाती” याचा अर्थ, भारताच्या संविधानाच्या अनुच्छेद ३४१ अन्वये महाराष्ट्र राज्याच्या संबंधात अनुसूचित जाती म्हणून समजण्यात येणाऱ्या जाती, वंश किंवा जमाती अथवा अशा जाती, वंश किंवा जमाती यांचे भाग किंवा त्यांच्यातील गट, असा आहे ;

(५१) “अनुसूचित जमाती” याचा अर्थ, भारताच्या संविधानाच्या अनुच्छेद ३४२ अन्वये महाराष्ट्र राज्याच्या संबंधात अनुसूचित जमाती म्हणून समजण्यात येणाऱ्या अशा, महाराष्ट्र राज्याच्या कोणत्याही भागात राहणाऱ्या जमाती अथवा जमाती समूह किंवा अशा जमाती किंवा जमाती समूह यांचे भाग किंवा त्यांच्यातील गट, असा आहे ;

(५२) “प्रशाला” याचा अर्थ, विद्यापीठ किंवा स्वायत्त महाविद्यालय, अधिकारप्रदत्त स्वायत्त महाविद्यालय, अधिकारप्रदत्त स्वायत्त समूह परिसंस्था यांच्याकडून चालविण्यात येणारी किंवा अध्ययन प्रशाला म्हणून मान्यता देण्यात आलेली अध्ययन प्रशाला, असा आहे ;

(५३) “कौशल्य ज्ञान प्रदाता परिसंस्था” याचा अर्थ, विद्यापीठाने कौशल्य अर्हता संरचना याबाबतच्या राष्ट्रीय, राज्य स्तरीय धोरणानुसार विहित केलेले असे अध्ययनक्रम चालविण्याकरिता विद्यापीठाकडून जिला मान्यता देण्यात आलेली असेल अशी परिसंस्था, असा आहे ;

(५४) “विशेष मागास प्रवर्ग” याचा अर्थ, राज्य शासनाने विशेष मागास प्रवर्ग म्हणून घोषित केलेला नागरिकांचा सामाजिकदृष्ट्या व शैक्षणिकदृष्ट्या मागास प्रवर्ग, असा आहे ;

(५५) “राज्य” याचा अर्थ, महाराष्ट्र राज्य, असा आहे ;

(५६) “राज्य शासन” किंवा “शासन” याचा अर्थ, महाराष्ट्र शासन, असा आहे ;

(५७) “परिनियम”, “आदेश” व “विनियम” याचा अर्थ, या अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये तयार केलेले विद्यापीठाचे अनुक्रमे परिनियम, आदेश व विनियम, असा आहे ;

(५८) “विद्यार्थी” याचा अर्थ, विद्यापीठाच्या किंवा संलग्न, संचालित, स्वायत्त महाविद्यालयांच्या आणि विद्यापीठाच्या मान्यताप्राप्त परिसंस्थांच्या शैक्षणिक अध्ययनक्रमाकरिता ज्याने प्रवेश घेतला आहे आणि ज्याची नोंदणी झाली आहे अशी व्यक्ती, असा आहे ;

(५९) “विद्यार्थी परिषद” याचा अर्थ, या अधिनियमाच्या कलम ९९ अन्वये स्थापन करण्यात आलेली विद्यार्थी परिषद, असा आहे ;

(६०) “उप-परिसर” याचा अर्थ, कार्यक्षमतेत व परिणामकारकतेत सुधारणा करण्याच्या उद्दिष्टांसह, पूर्वनिर्धारित भौगोलिक अधिकारितेतील विद्याविषयक, प्रशासकीय संशोधन व विस्तार कार्ये यांचे विकेंद्रीकरण करण्यासाठी पूर्वनिर्धारित भौगोलिक अधिकारिता असणारे विद्यापीठाचे सर्वसमावेशक अंगभूत स्वतंत्र युनिट, असा आहे ;

(६१) “अध्यापक” याचा अर्थ, विद्यापीठाच्या कोणत्याही विभागातील संचालित, संलग्न किंवा स्वायत्त महाविद्यालयातील, स्वायत्त परिसंस्थेतील किंवा विभागातील किंवा विद्यापीठातील मान्यताप्राप्त परिसंस्थेतील पूर्णकालिक मान्यताप्राप्त प्राध्यापक, सहयोगी प्राध्यापक, सहायक प्राध्यापक, प्रपाठक, अधिव्याख्याता, ग्रंथपाल, प्राचार्य, परिसंस्थेचा संचालक, ज्ञान स्रोत केंद्राचा संचालक, आजीवन अध्ययन व विस्तार केंद्राचा संचालक, विद्यापीठाचा उप किंवा सहायक ग्रंथपाल व महाविद्यालयाचा ग्रंथपाल, शारीरिक शिक्षण संचालक किंवा निर्देशक, असा आहे ;

(६२) “न्यायाधिकरण” याचा अर्थ, या अधिनियमाच्या कलम ८० अन्वये स्थापन करण्यात आलेले न्यायाधिकरण, असा आहे ;

(६३) “विद्यापीठ” याचा अर्थ, अनुसूचीत उल्लेख करण्यात आलेल्या विद्यापीठांपैकी कोणतेही सार्वजनिक विद्यापीठ, असा आहे आणि यामध्ये कलम ३, पोट-कलम (६) च्या अर्थातर्गत समूह विद्यापीठांचा अंतर्भाव होतो ;

(६४) “विद्यापीठ क्षेत्र” याचा अर्थ, अनुसूचीमध्ये विद्यापीठाच्या नावापुढे विनिर्दिष्ट करण्यात आलेले क्षेत्र, असा आहे ;

(६५) “विद्यापीठ विभाग” याचा अर्थ, परिनियमांद्वारे विहित केल्याप्रमाणे विद्यापीठाने स्थापन केलेला व विद्यापीठाकडून चालवण्यात येणारा विभाग, असा आहे ;

१९५६  
चा ३.

(६६) “विद्यापीठ अनुदान आयोग” याचा अर्थ, विद्यापीठ अनुदान आयोग अधिनियम, १९५६ अन्वये स्थापन करण्यात आलेला विद्यापीठ अनुदान आयोग, असा आहे ;

(६७) “विद्यापीठ परिसंस्था” याचा अर्थ, परिनियमांद्वारे विहित केल्याप्रमाणे विद्यापीठाने स्थापन केलेले व विद्यापीठाकडून चालवण्यात येणारे केंद्र, प्रशाळा किंवा परिसंस्था, असा आहे ;

(६८) “विद्यापीठ अध्यापक” याचा अर्थ, विद्यापीठाने नियुक्त केलेला पूर्णकालिक अध्यापक, असा आहे.

## प्रकरण दोन

## सार्वजनिक विद्यापीठे

विद्यापीठांचे विधि-संस्थापन. ३. (१) अनुसूचीचा भाग एक, स्तंभ (१) मध्ये विनिर्दिष्ट करण्यात आलेले प्रत्येक विद्यमान सार्वजनिक विद्यापीठ हे, या अधिनियमाच्या प्रारंभाच्या लगतपूर्वीच्या दिनांकास उक्त भागाच्या स्तंभ (२) मध्ये विनिर्दिष्ट केलेल्या ज्या क्षेत्रासाठी ते घटित करण्यात आले होते त्याच क्षेत्रासाठी या अधिनियमाच्या प्रारंभाच्या दिनांकापासून घटित केले असल्याचे मानण्यात येईल.

(२) राज्य शासनाला, वेळोवेळी, **राजपत्रातील** अधिसूचनेद्वारे, त्याच्याकडून विनिर्दिष्ट करण्यात येईल अशा नावाने, अशा क्षेत्रासाठी व अशा दिनांकापासून या अधिनियमान्वये कोणतेही नवीन विद्यापीठ घटित करता येईल व अनुसूचीच्या भाग दोन मध्ये आवश्यक त्या नोंदी समाविष्ट करता येतील ; आणि त्यास त्या प्रयोजनासाठी किंवा त्याबाबतीत विनिर्दिष्ट करण्यात येतील अशा अन्य कोणत्याही प्रयोजनांसाठी, उक्त अधिसूचनेद्वारे, अनुसूचीत योग्य ती सुधारणा करून कोणत्याही विद्यमान किंवा नवीन विद्यापीठाचे क्षेत्र कमी करता येईल, वाढवता येईल किंवा त्यात फेरबदल करता येईल, आणि त्यानंतर, अनुसूचीच्या, भाग एकच्या स्तंभ (२) मधील किंवा, यथास्थिति, भाग दोनच्या स्तंभ (२) मधील नोंदीमध्ये तदनुसार सुधारणा होईल ; आणि विद्यमान विद्यापीठाशी संलग्न असलेल्या किंवा त्याने मान्यता दिलेल्या नवीन विद्यापीठाच्या क्षेत्रातील सर्व शिक्षण परिसंस्था,—मग त्या महाविद्यालये, परिसंस्था, स्वायत्त किंवा अधिकारप्रदत्त स्वायत्त महाविद्यालये, अधिकारप्रदत्त स्वायत्त समूह परिसंस्था, पदव्युत्तर विभाग, उप-परिसरांतील प्रशाला असोत व त्यांना कोणत्याही नावाने संबोधण्यात येवो—उपरोक्त दिनांकापासून नवीन विद्यापीठांशी संलग्न होतील किंवा त्यांना नवीन विद्यापीठाची मान्यता मिळेल :

परंतु, राज्य विधानमंडळाच्या दोन्ही सभागृहांनी ठराव संमत केल्याखेरीज, अशी कोणतीही अधिसूचना काढली जाणार नाही.

(३) पोट-कलम (२) मध्ये काहीही अंतर्भूत असले तरी, परिस्थितीच्या गरजेनुसार, पोट-कलम (२) मध्ये निर्दिष्ट केलेल्या ज्या शिक्षण परिसंस्था, विद्यमान विद्यापीठाचे जे विवक्षित विशेषाधिकार मिळण्यास उक्त पोट-कलमान्वये विनिर्दिष्ट केलेल्या दिनांकाच्या लगतपूर्वी हक्कदार होत्या, त्यांना, पूर्वोक्त दिनांकानंतर, एकंदर पाच वर्षांहून अधिक होणार नाही एवढ्या विवक्षित मुदतीकरिता ते विशेषाधिकार मिळण्याचे चालू राहणे इष्ट आहे, अशा नवीन विद्यापीठास योग्य वाटत असेल त्याबाबतीत, त्या नवीन विद्यापीठास, तदनुरूप आपल्या शिफारशी राज्य शासनाकडे पाठवता येतील व अशा शिफारशी मिळाल्यावर, असे विशेषाधिकार चालू राहावेत याबाबत राज्य शासनाची खात्री पटल्यास, त्यास **राजपत्रातील** अधिसूचनेद्वारे त्या अधिसूचनेत विनिर्दिष्ट करण्यात येईल एवढ्या मुदतीकरिता ते विशेषाधिकार चालू राहावेत अशी तरतूद करता येईल.

(४) प्रत्येक विद्यापीठातील त्या त्या वेळी पद धारण करणारे कुलपती, कुलगुरू, प्र-कुलगुरू, कुलसचिव, अधिसभा, व्यवस्थापन परिषद व विद्यापरिषद सदस्य यांचा, याद्वारे, अनुसूचीमध्ये त्याबाबत विनिर्दिष्ट करण्यात आलेल्या नावाने एक निगम निकाय घटित व घोषित केला आहे व त्या निगम निकायाची एक अखंड परंपरा व सामाईक मोहोर असेल व त्यास आणि त्याच्याविरुद्ध किंवा त्याच्या नावाने दावा दाखल करता येईल.



(५) प्रत्येक विद्यापीठ जंगम व स्थावर अशा दोन्ही प्रकारची मालमत्ता संपादन करण्यास व ती धारण करण्यास, विद्यापीठाच्या प्रयोजनांसाठी, त्याच्याकडे निहित असेल अशी किंवा त्याच्याकडून संपादन करण्यात येईल अशी, कोणतीही जंगम किंवा स्थावर मालमत्ता पट्ट्याने देण्यास, विकण्यास किंवा अन्य प्रकारे तिचे हस्तांतरण करण्यास किंवा तिची विल्हेवाट लावण्यास आणि करार करण्यास व या अधिनियमाच्या प्रयोजनांसाठी आवश्यक असतील अशा इतर सर्व गोष्टी करण्यास सक्षम असेल :

परंतु, अशी मालमत्ता विद्यापीठाने नियुक्त केलेल्या मान्यताप्राप्त मूल्यनिर्धारकाकडून तिचे मूल्यनिर्धारण करून घेतल्याखेरीज व राज्य शासनाच्या पुर्वसंमतीखेरीज भाडेपट्ट्याने देण्यात येणार नाही, तिची विक्री करण्यात येणार नाही किंवा तिचे हस्तांतरण करण्यात येणार नाही.

(६) या अधिनियमामध्ये काहीही अंतर्भूत असले तरी, राज्य शासनाला, **राजपत्रातील** अधिसूचनेद्वारे, विद्यापीठाची समूह, संलग्न किंवा स्वायत्त महाविद्यालये किंवा परिसंस्था यांचा समावेश असणारे समूह विद्यापीठ घटित करता येईल. अशा समूह विद्यापीठामध्ये विद्यापीठाच्या अशा प्राधिकरणांचा समावेश असेल आणि अशा अधिसूचनेत विनिर्दिष्ट करण्यात येईल त्याप्रमाणे विद्यापीठाच्या अशा अधिकारांचा वापर करील व अशी कार्ये पार पाडील :

परंतु, अशी प्रत्येक अधिसूचना, ती काढण्यात आल्यानंतर, शक्य असेल तितक्या लवकर राज्य विधानमंडळाच्या प्रत्येक सभागृहासमोर मांडण्यात येईल.

४. अध्यापन, संशोधन व विकास, कौशल्य विकास प्रशिक्षण व शिक्षण, विस्तार व सेवा यांद्वारे आणि परिणामकारक प्रात्यक्षिकांद्वारे आणि विद्यापीठ या नात्याने समाजजीवनावर प्रभाव पाडून, त्याद्वारे ज्ञान व सामंजस्य यांचा प्रसार, निर्मिती व जपणूक करणे, ही विद्यापीठाची सर्वसाधारण उद्दिष्टे असतील व ही उद्दिष्टे, विशेषकरून पुढीलप्रमाणे असतील.—

विद्यापीठाची उद्दिष्टे.

(१) ज्ञानाची निर्मिती, जतन व प्रसार करण्याची आपली जबाबदारी पार पाडणे ;

(२) शिस्त आणि बौद्धिक जिज्ञासेचे तत्त्व जोपासणे आणि सर्वोच्च गुणवत्ता साध्य करण्याच्या अविरत कार्यास एक निर्भय शैक्षणिक संस्था म्हणून वाहून घेणे ;

(३) सहिष्णुता व परस्पर सामंजस्याच्या वातावरणात व्यक्तित्वाला व बहुविधतेला प्रोत्साहन देणे ;

(४) भारताच्या संविधानात नमूद केलेले स्वातंत्र्य, धर्मनिरपेक्षता, समता व सामाजिक न्याय यांचे संवर्धन करणे व सर्वोत्तम मूलतत्त्वे व मूल्ये यांची राष्ट्रीय विकासाच्या दृष्टीने जोपासना करून देशभक्तीपर सामाजिक आर्थिक परिवर्तनामध्ये प्रेरक शक्ती म्हणून कार्य करणे ;

(५) सामाजिक सलोखा, सहजीवन, एकात्मिक मानवता आणि गरिबातल्या गरिबाची उन्नती यांची सुनिश्चिती करण्यासाठी अनुकूल वातावरण तयार करण्यासाठी चालना देणे ;

(६) विद्यापीठाने स्थानिक, प्रादेशिक व राष्ट्रीय विकासाच्या समस्यांमध्ये जवळून सहभागी होणे, ज्ञान व कौशल्य यांचा लाभ व्यक्ती व समाज यांच्या विकासासाठी उपलब्ध करून देणे ;

(७) एक सजग व वस्तुनिष्ठ समीक्षक म्हणून आपली सामाजिक जबाबदारी पार पाडणे, गुणवत्तेचा शोध व जोपासना करणे, जीवनाच्या सर्व क्षेत्रांमध्ये योग्य नेतृत्व तयार करणे व योग्य दृष्टिकोन, आवडी व गुण विकसित करण्याच्या कामी नवीन पिढीला साहाय्य करणे ;

(८) सर्वांना उच्च शिक्षणाचे अध्यापन, अध्ययन, प्रशिक्षण व इतर आधारभूत सेवासुविधा यांची समान संधी उपलब्ध करून देणे ;

(९) कार्यक्षम व संवेदनशील प्रशासन, शास्त्रशुद्ध व तंत्रज्ञानात्मक व्यवस्थापन यांची तरतूद करणे आणि अध्यापन, अध्ययन, प्रशिक्षण, संशोधन व विस्तार संघटनेचा विकास करणे ;

(१०) व्यक्तिगत आकलनविषयक क्षमता दडपून न ठेवता काहीशा नावीन्यपूर्ण कल्पना व इच्छा प्रत्यक्षात साकार करण्यासाठी आणि स्व-कर्तृत्व सिद्ध करण्यासाठी त्या विकसित केल्या असल्याची सुनिश्चिती करणारी प्रेरणादायी प्रणाली योजना तयार करणे ;

(११) वेगाने विकास व परिवर्तन होत असलेल्या समाजात ज्ञान संपादनास चालना देणे, बुद्धिजीवी समाजाला योग्य अशी आधुनिक प्रसारमाध्यमे, माहिती व संदेशवहन तंत्रज्ञान आणि इतर उद्गामी व भविष्यातील तंत्रज्ञान यांचा वापर करून उच्च शिक्षणाचे जाळे निर्माण करून मानवी कर्तृत्वाच्या सर्व क्षेत्रांमधील नवनवीन कल्पना, संशोधन व शोध यांच्या संदर्भात ज्ञान, प्रशिक्षण व कौशल्य यांचा दर्जा वाढविण्याच्या संधी सातत्याने उपलब्ध करून देणे ;

(१२) वेगवेगळे धर्म, साहित्य, इतिहास, विज्ञान आणि कला, सभ्यता व संस्कृती यांच्या अभ्यासामार्फत राष्ट्रीय एकात्मता, बंधुता वाढीस लावणे आणि सांस्कृतिक वारसा जतन करणे तसेच भारतातील विभिन्न धर्म आणि विविध संस्कृती यांच्या प्रती आदर वृद्धिंगत करणे ;

(१३) पाठ्यक्रमांमध्ये उपयोजित घटकांचा समावेश करून त्याद्वारे काम करण्याची प्रवृत्ती वाढविणे व श्रमांना प्रतिष्ठा मिळवून देणे ;

(१४) स्थानिक, प्रादेशिक, राष्ट्रीय आणि जागतिक स्तरावर सार्वजनिक व खाजगी उद्योग, शासकीय संघटना यांकरिता विद्याविषयक अध्यापन, प्रशिक्षण व संबद्ध कार्यक्रम, संशोधन व विकास कार्यक्रम आणि खर्चाची फलनिष्पत्ती होईल अशा रीतीने, साधनसंपत्ती निर्माण करणारी कामे हाती घेऊन आर्थिक स्वावलंबन साध्य करणे ;

(१५) सर्वसाधारणपणे विद्यापीठाचे प्रशासन व उच्च शिक्षणासाठी ते पुरवीत असलेल्या सुविधा, यात सुधारणा करण्यासाठी निरनिराळी विद्यापीठे, दिलेल्या विद्यापीठातील, राज्यातील, प्रदेशातील, राष्ट्रातील व जागतिक स्तरावरील इतर विद्यापीठांतील परिसंस्था व महाविद्यालये यांच्यात अधिक चांगल्या प्रकारे सहयोग व समन्वय साधणे ;

(१६) समाजाच्या दुर्बल घटकांतील व्यक्तींमध्ये आत्मसन्मान व प्रतिष्ठेची जाणीव निर्माण करणे व ती वाढीस लावणे ;

(१७) समाजातील स्त्री-पुरुष समानता व संवेदनशीलता यांना चालना देणे ;

(१८) सर्व विद्याविषयक व विद्यार्थ्यांशी संबंधित असलेल्या इतर बाबींच्या संबंधात एकमेव मार्गदर्शक निकष म्हणून स्पर्धात्मक गुणवत्ता व श्रेष्ठत्व वाढीस लावण्याचे प्रयत्न करणे.

५. विद्यापीठाचे अधिकार व कर्तव्ये पुढीलप्रमाणे असतील :—

विद्यापीठाचे  
अधिकार व  
कर्तव्ये.

(१) विद्यापीठ, वेळोवेळी निश्चित करील, अशा शाखा किंवा विषय किंवा विद्याशाखांमध्ये आणि पसंतीवर आधारित श्रेयांक पद्धत आणि भविष्यात उदयास येऊ शकेल अशी इतर कोणतीही पद्धत यासह अभ्यास पाठ्यक्रमामध्ये शिक्षण, विस्तार, अध्यापन, अध्ययन व प्रशिक्षण यांची तरतूद करणे ;

(२) संशोधन आणि ज्ञानवर्धन व ज्ञानप्रसार यांसाठी तरतूद करणे आणि सर्वसाधारणतः (ललित कला व प्रायोगिक कला यांसह,) कला व शास्त्रे, मानवविज्ञान, सामाजिक शास्त्रे, लेखा व वाणिज्य, शुद्ध व उपयोजित शास्त्रे, तंत्रज्ञाने, व्यवस्थापन, औषधवैद्यकशास्त्राचे निरनिराळे प्रकार, अभियांत्रिकी, कायदा, शारीरिक शिक्षण आणि अध्ययनाच्या इतर शाखा व संस्कृती व त्यांच्या बहुविद्याशाखांची व आंतरविद्याशाखांची क्षेत्रे यांचे संवर्धन करणे व त्यांना चालना देणे ;

(३) संचालित आणि संलग्न महाविद्यालयांना व मान्यताप्राप्त परिसंस्थांना विशेषीकृत अभ्यासक्रम सुरू करणे शक्य व्हावे यासाठी तरतूद करणे ;

(४) स्वायत्त परिसंस्था, अधिकारप्रदत्त स्वायत्त परिसंस्था व अधिकारप्रदत्त स्वायत्त समूह परिसंस्था यांच्या निर्मितीसाठी तरतूदी करणे ;

(५) खाजगी कौशल्य शिक्षण प्रदाता परिसंस्था आणि अधिकारप्रदत्त स्वायत्त कौशल्य विकास महाविद्यालये यांच्या मान्यतेसाठीची कार्यपद्धती व प्रक्रिया विकसित करणे ;

(६) विद्यापीठ विभाग, प्रशाला, परिसंस्था, प्रयोगशाळा, ज्ञान स्रोत केंद्रे, अध्ययन स्रोत केंद्रे, ग्रंथालये, संग्रहालये आणि अध्यापन, अध्ययन, प्रशिक्षण, संशोधन व विकास किंवा विस्तार यासाठी आवश्यक असलेली साधनसामग्री यांचे आयोजन, परिरक्षण व व्यवस्थापन करणे ;

(७) विभाग, संशोधन परिसंस्था, विशेषीकृत अभ्यासक्रम परिसंस्था किंवा विद्याविषयक सेवा युनिट यांची स्थापना करणे, त्या चालवणे व त्यांचे व्यवस्थापन करणे ;

(८) घटक, समूह व संचालित महाविद्यालये, परिसंस्था, वसतिगृहे, आरोग्य केंद्रे, श्रोतृगृहे आणि व्यायामशाळा यांची स्थापना करणे, त्या चालवणे व त्यांचे व्यवस्थापन करणे ;

(९) विद्यापीठ परिसरात व उप परिसरांत बहुविध-विद्यापीठ व आंतर-विद्यापीठ केंद्रे, संशोधन प्रयोगशाळा, आधुनिक उपकरण केंद्रे यांसारख्या आणि विद्यापीठ किंवा महाविद्यालय किंवा विद्यापीठांचा किंवा महाविद्यालयांचा गट यांद्वारे उपयोगात आणली जातील असे विद्यापीठ अनुदान आयोग, केंद्र सरकार किंवा राज्य शासन, अध्यापन किंवा अध्ययन किंवा प्रशिक्षण महाविद्यालये किंवा परिसंस्था यांनी स्थानिक, प्रादेशिक, राष्ट्रीय व जागतिक स्तरावर स्थापन केलेली अध्ययन केंद्रे यांसारख्या स्वायत्त परिसंस्था स्थापन करण्यासाठी तरतूद करणे :

परंतु, स्वतःसाठी विद्यापीठाच्या अशा सुविधेचा लाभ घेणारा कोणताही उद्योग किंवा कोणत्याही अशासकीय संघटना यांच्याबाबतीत, किंवा अशा संघटना विद्यापीठाला सुविधा उपलब्ध करून देत असतील त्याबाबतीत संबंधित विद्यापीठ राज्य शासनाची पूर्वसंमती घेईल ;

(१०) महाविद्यालयांच्या गटाला सेवा उपलब्ध करून देण्याच्या दृष्टीने विद्यापीठ उपपरिसर स्थापन करण्यासाठी तरतूद करणे आणि तसेच अशा उपपरिसरांमध्ये पदव्युत्तर विभाग, बहु-विद्याशाखा किंवा आंतर-विद्याशाखा प्रशाला, ज्ञान स्रोत केंद्रे, ग्रंथालये, प्रयोगशाळा, संगणक केंद्रे यांच्या स्वरूपात सामाईक स्रोत केंद्रे आणि राज्य शासनाने किंवा विद्यापीठ अनुदान आयोगाने निर्धारित केलेल्या मार्गदर्शक तत्वानुसार त्यांसारखी अध्ययन व कौशल्य प्रशिक्षण केंद्रे स्थापन करण्याची तरतूद करणे व ती चालविणे ;

(११) विद्यापीठासाठी आवश्यक असणारी त्याच्या निधीतून आणि इतर विधीकरण अभिकरणांकडून प्राप्त झालेल्या निधीतून, संचालक, प्राचार्य, विद्यापीठ अध्यापक, दीर्घ सुटी नसलेल्या विद्याविषयक कर्मचाऱ्यांची अध्यापकेतर कुशल, प्रशासकीय, लिपिकवर्गीय कर्मचारी आणि इतर पदे निर्माण करणे आणि त्यांच्या अर्हता, अनुभव व वेतनश्रेणी विहित करणे आणि त्यांच्या नियुक्त्या करणे ;

(१२) राज्य शासन व विद्यापीठ अनुदान आयोग विहित करील अशा अर्हता व अनुभव यांनुसार, संचालक, प्राचार्य, विद्यापीठ अध्यापक, दीर्घ सुटी नसलेले विद्याविषयक कर्मचारी, अध्यापकेतर कुशल, प्रशासकीय, लिपिकवर्गीय कर्मचारी आणि राज्य शासनाने मंजूर केलेली इतर पदे यांवर नियुक्त्या करणे ;

(१३) अन्य कोणत्याही विद्यापीठात किंवा संघटनेत काम करणाऱ्या व्यक्तींना विनिर्दिष्ट कालावधीसाठी विद्यापीठाचे संलग्न प्राध्यापक, संलग्न सहयोगी प्राध्यापक, संलग्न सहायक प्राध्यापक, अभ्यागत प्राध्यापक म्हणून नियुक्त करणे किंवा मान्यता देणे ;

(१४) संबंधित अध्यापकांच्या संमतीने, त्या अध्यापकांना विद्यापीठात इतरत्र व इतर विद्यापीठांमध्ये पाठवणे सुकर करणे ;

(१५) विनिर्दिष्ट पदव्या, पदविका किंवा प्रमाणपत्रे असलेल्या वेगवेगळ्या परीक्षांचे शिक्षणक्रम व अभ्यासपाठ्यक्रम विहित करणे ;

(१६) एकल स्वरूपात किंवा इतर राज्यीय किंवा राष्ट्रीय किंवा जागतिक विद्यापीठाशी संयुक्त स्वरूपात विनिर्दिष्ट पदव्या, पदविका किंवा प्रमाणपत्रे यांसाठी असलेल्या वेगवेगळ्या परीक्षांचे शिक्षणक्रम व पसंतीवर आधारित श्रेयांक पद्धती मधील अभ्यासपाठ्यक्रम विहित करणे ;

(१७) व्यवहार्य असेल तेथे, विद्यापीठ विभागांमध्ये, महाविद्यालयांमध्ये, परिसंस्थांमध्ये, मान्यताप्राप्त परिसंस्थांमध्ये आणि प्रशाळांमध्ये विद्यार्थ्यांच्या अभ्यासक्रमांचा एक भाग म्हणून विद्यार्थ्यांना सहभागी करून घेऊन, राज्य व राष्ट्रीय योजना, विकासविषयक योजनांचे मूल्यमापन यांसह विविध विकासविषयक कार्याची पाहणी व त्यांच्याशी संबंधित असलेली आकडेवारी, आधारसामग्री व इतर तपशील यांचे संकलन यासाठी तरतूद करणे ;

(१८) विद्यापीठ विभाग, प्रशाळा, बहु-विद्याशाखा व आंतर-विद्याशाखा प्रशाळा, समूह महाविद्यालये, संचालित आणि संलग्न महाविद्यालये, परिसंस्था आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांमधील वेगवेगळ्या अभ्यासपाठ्यक्रमांसाठी विद्यार्थ्यांना दिल्या जाणाऱ्या प्रवेशाच्या संबंधात देखरेख, नियंत्रण व विनियमन करणे ;

(१९) विद्यापीठाच्या अध्यापकांच्या संकोषामधून अध्यापकांची प्रतिनियुक्ती करून महाविद्यालयांतील अध्यापनाचे मार्गदर्शन करणे आणि महाविद्यालयांचा दर्जा सुधारण्यासाठी त्यातील अध्यापनाला सहाय्य करणे ;

(२०) परीक्षा किंवा इतर कोणतीही चाचणी यांच्या आधारे किंवा अन्य रीतीने पदव्या, पदव्युत्तर पदविका, उच्च माध्यमिक शिक्षणोत्तर पदविका, प्रमाणपत्रे आणि इतर विद्याविषयक विशेषोपाधी सुरू करणे ;

(२१) ज्या व्यक्तींनी,—

(क) विहित पद्धतीने त्यांना परीक्षांमधून सूट मिळालेली नसेल तर, विद्यापीठातील किंवा महाविद्यालयातील किंवा परिसंस्थेतील किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थेतील किंवा प्रशास्त्रेतील मान्यताप्राप्त अभ्यासपाठ्यक्रम पूर्ण केलेला असेल आणि ज्या व्यक्ती विद्यापीठाने विहित केलेल्या परीक्षा उत्तीर्ण झालेल्या असतील आणि आवश्यक श्रेयांक किंवा गुण किंवा श्रेणी मिळविलेल्या असतील ; किंवा

(ख) विद्यापीठातील किंवा महाविद्यालयातील किंवा परिसंस्थेतील किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थेतील किंवा स्वायत्त महाविद्यालयातील किंवा स्वायत्त मान्यताप्राप्त परिसंस्थेतील किंवा अधिकारप्रदत्त स्वायत्त महाविद्यालयातील किंवा अधिकारप्रदत्त स्वायत्त समूह परिसंस्थेतील किंवा प्रशास्त्रेतील मान्यताप्राप्त पाठ्यक्रम पूर्ण केलेला असेल आणि ज्या व्यक्ती विद्यापीठाने विहित केलेल्या परीक्षा उत्तीर्ण झालेल्या असतील आणि आवश्यक श्रेयांक किंवा गुण किंवा श्रेणी मिळविलेल्या असतील ; किंवा

(ग) आदेश आणि विनियम यांद्वारे तरतूद करण्यात आलेल्या शर्तीनुसार संशोधन केलेले असेल ;

अशा व्यक्तींच्या परीक्षा घेणे किंवा मूल्यांकन करणे आणि त्यांना पदव्या, पदव्युत्तर पदविका आणि उच्च माध्यमिक शिक्षणोत्तर पदविका आणि प्रमाणपत्रे व इतर विद्याविषयक विशेषोपाधी प्रदान करणे ;

(२२) बहिःशाल विद्यार्थी आणि पत्रव्यवहार व दूरस्थ पद्धतीद्वारे शिक्षण घेणारे विद्यार्थी, तसेच ऑनलाईन व निरंतर शिक्षणविषयक अभ्यासक्रमाचे विद्यार्थी यांना पदव्या, पदविका आणि प्रमाणपत्रे देणे व त्यांना व्याख्यान, शिक्षण व प्रशिक्षण देण्याची तरतूद करणे ;

(२३) परिणियमांद्वारे विहित करण्यात आल्याप्रमाणे सन्मान्य पदव्या किंवा इतर विद्याविषयक विशेषोपाधी प्रदान करणे ;

(२४) व्यवस्थापनाची व्यवहार्यता आणि वेळोवेळी निर्धारित केल्याप्रमाणे, महाविद्यालयांच्या, विद्याशाखांच्या आणि विषयांच्या शैक्षणिक कामगिरीची मानके विचारात घेता, महाविद्यालयांच्या संलग्नीकरणाच्या आणि परिसंस्थांच्या मान्यतेच्या शर्ती निर्धारित करणे आणि त्या शर्तीची पूर्तता करण्यात आली आहे, याबाबत नियतकालिक किंवा अन्यप्रकारे मूल्यांकन करून स्वतःची खात्री पटविणे ;

(२५) विद्यापीठाकडून चालविण्यात येत नसतील अशा संलग्न महाविद्यालयांना आणि परिसंस्थांना विद्यापीठाचे विशेषाधिकार प्रदान करणे आणि हे सर्व किंवा त्यांपैकी कोणतेही विशेषाधिकार तात्पुरते किंवा कायमचे काढून घेणे ;

(२६) राज्य शासनाने किंवा विद्यापीठ अनुदान आयोगाने घालून दिलेल्या मार्गदर्शक तत्वांनुसार, कोणतीही असल्यास, विद्यापीठ विभाग, संचालित महाविद्यालय, संलग्न महाविद्यालय, परिसंस्था किंवा प्रशाळा यांना, यथास्थिति, स्वायत्त विद्यापीठ विभाग, संचालित महाविद्यालय, संलग्न महाविद्यालय किंवा परिसंस्था किंवा प्रशाळा म्हणून संबोधणे ;

(२७) राज्य शासनाने किंवा विद्यापीठ अनुदान आयोगाने घालून दिलेल्या मार्गदर्शक तत्वांनुसार, कोणतीही असल्यास, संचालित महाविद्यालय, संलग्न महाविद्यालय, परिसंस्था किंवा प्रशाळा यांना, यथास्थिति, एकल किंवा समूह स्वरूपातील अधिकारप्रदत्त संचालित महाविद्यालय, संलग्न महाविद्यालय, किंवा परिसंस्था किंवा प्रशाळा म्हणून संबोधणे ;

(२८) संलग्नीकरणासाठी, किंवा, यथास्थिति, मान्यतेसाठी आणि नियतकालिक अधिस्वीकृतीसाठी विद्यापीठ विभागांच्या, विद्यापीठ परिसंस्थांच्या, संचालित महाविद्यालयांच्या आणि एकल किंवा समूह स्वरूपातील संलग्न महाविद्यालयांच्या, स्वायत्त किंवा अधिकारप्रदत्त महाविद्यालयांच्या आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्थांच्या विद्याविषयक कामगिरीचे संनियंत्रण व मूल्यमापन करणे ;

(२९) आवश्यक असेल तेथे, निरीक्षणाच्या प्रयोजनार्थ स्थापन करण्यात आलेल्या समुचित यंत्रणेमार्फत सर्व प्रकारच्या महाविद्यालयांची किंवा परिसंस्थांची आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्थांची तपासणी करणे आणि त्यांच्यामध्ये शिक्षण, अध्यापन, अध्ययन, प्रशिक्षण व संशोधन आणि विस्तार यांचा उचित दर्जा राखण्यात येत आहे आणि त्यामध्ये ग्रंथालये, वर्ग खोल्या, प्रयोगशाळा, वसतिगृह, कार्यशाळा आणि अन्य विद्याविषयक सोयींची पर्याप्त तरतूद करण्यात आली आहे याची खात्री करून घेण्यासाठी उपाय योजणे ;

(३०) विश्वस्त निधी आणि दाननिधी धारण करणे आणि त्यांची व्यवस्था पाहणे आणि विद्यापीठांचे आणि महाविद्यालयांचे अध्यापक आणि विद्यार्थी यांच्यासाठी अधिछात्रवृत्त्या, प्रवासी अधिछात्रवृत्त्या, शिष्यवृत्त्या, छात्रवृत्त्या, पदके आणि बक्षिसे सुरू करणे व ती देणे ;

(३१) वेळोवेळी आदेशांद्वारे विनियमित करण्यात येईल असे शुल्क व इतर आकार निश्चित करणे, त्यांची मागणी करणे व ती प्राप्त करणे किंवा वसूल करणे ;

(३२) शुल्क निश्चिती समिती घटित करणे ;

(३३) विद्यापीठ, महाविद्यालये, परिसंस्था, मान्यताप्राप्त परिसंस्था, प्रशाळा आणि वसतिगृहे यांमधील विद्यार्थ्यांची वर्तणूक व शिस्त यांवर देखरेख ठेवणे, नियंत्रण ठेवणे आणि त्यांचे विनियमन करणे ;

(३४) विद्यार्थ्यांना औपचारिक शिक्षणाकडून अनौपचारिक शिक्षणाकडे जाता यावे यासाठी आणि अनौपचारिक शिक्षणाकडून औपचारिक शिक्षणाकडे आणि राज्यातील व राज्याबाहेरील इतर विद्यापीठांमध्ये देखील जाता यावे यासाठी तरतूद करणे ;

(३५) विद्यापीठ, महाविद्यालये, प्रशाळा व परिसंस्था यांच्या अध्यापकांसाठी उजळणी किंवा सेवेच्या कालातील पाठ्यक्रमांच्या सुविधांची तरतूद करणे ;

(३६) विद्यापीठ, महाविद्यालये, प्रशाळा व परिसंस्था यांच्या विद्यार्थ्यांच्या बाबतीत निरोगी वातावरण, समूह जीवन आणि सर्वसाधारण कल्याण यांच्या अभिवृद्धीसाठी व्यवस्था करणे ;

(३७) विद्यापीठाच्या कर्मचाऱ्यांच्या कल्याणविषयक कार्यास चालना देण्याची व्यवस्था करणे ;

(३८) महाविद्यालयांमध्ये व मान्यताप्राप्त परिसंस्थांमध्ये अध्यापन, अध्ययन, प्रशिक्षण व संशोधन आणि विस्तार यांचा समन्वय साधणे व नियमन करणे ;

(३९) अध्यापक आणि अध्यापकेतर कर्मचारी यांचे प्रशिक्षण व क्षेत्रातील दर्जेदार शिक्षण, दर्जा वाढविण्याकरिता व्यापक कार्यशाळा किंवा अध्ययन पाठ यासाठी आणि त्यांची गुणवत्ता वाढवण्यासाठी अंतर्गत दर्जा सुनिश्चित करणाऱ्या यंत्रणेची देखील तरतूद करणे ;

(४०) विद्यापीठ अनुदान आयोगाने किंवा राज्य शासनाने विहित केलेल्या मानकांनुसार, महाविद्यालये, परिसंस्था व विद्यापीठ यातील अध्यापक आणि अध्यापकेतर कर्मचारी यांच्या कामाच्या नियतकालिक मूल्यमापनासाठी तरतूद करणे ;

(४१) विहित करण्यात येईल त्याप्रमाणे अध्यापनाच्या वेळेत व अध्यापनाच्या वेळेनंतर विद्यापीठ किंवा महाविद्यालये किंवा परिसंस्था यांच्या जागांमध्ये असणाऱ्या अध्यापकांच्या उपस्थितीचे नियमन करणे व तरतूद करणे आणि तसेच खाजगी शिकवणी किंवा खाजगी शिकवणी वर्ग घेण्यास किंवा चालविण्यास अध्यापकांना मनाई करणे ;

(४२) विहित करण्यात येईल त्याप्रमाणे कामाच्या वेळेत व कामाच्या वेळेनंतर विद्यापीठ किंवा महाविद्यालये किंवा परिसंस्था यांच्या जागांमध्ये असणाऱ्या अध्यापकेतर कर्मचाऱ्यांच्या उपस्थितीचे नियमन करणे व तरतूद करणे ;

(४३) अध्यापक व अध्यापकेतर कर्मचारीवर्गाकरिता राज्य शासनाने विहित केलेल्या वर्तणूक व शिस्त यांसंबंधीच्या नियमांची अंमलबजावणी करणे ;

(४४) व्यवस्थापनासाठी आचारसंहिता विहित करणे ;

(४५) विद्यार्थ्यांची सनद विहित करणे व त्याची अंमलबजावणी करणे ;

(४६) आवश्यक असेल त्याबाबतीत,—

(क) ज्ञान स्रोत केंद्र ;

(ख) विद्यापीठ विस्तार मंडळे ;

(ग) माहिती केंद्रे ;

(घ) सेवायोजन मार्गदर्शन केंद्रे ;

(ङ) स्वायत्त मूल्यमापन मंडळे ; आणि

(च) विद्यापीठाची उद्दिष्टे साध्य करण्यासाठी आवश्यक व शक्य असतील असे इतर उपक्रम ;

स्थापन करणे, चालविणे व त्यांची व्यवस्था ठेवणे ;

(४७) विद्यार्थ्यांना,—

- (क) राष्ट्रीय सेवा योजना ;
- (ख) राष्ट्रीय छात्रसेना ;
- (ग) होमगार्ड व नागरी संरक्षण दल ;
- (घ) राष्ट्रीय क्रीडा संघटना ;
- (ङ) शारीरिक व लष्करी प्रशिक्षण ;
- (च) बहिःशाल अध्यापन व संशोधन ;
- (छ) आजीवन अध्ययन, विस्तार यांच्याशी संबंधित कार्यक्रम ;

(ज) विद्यापीठाची उद्दिष्टे साध्य करण्यासाठी आवश्यक व शक्य असतील असे सांस्कृतिक, आर्थिक आणि सामाजिक सुधारणेच्या दृष्टीने आखण्यात आलेले कोणतेही इतर कार्यक्रम, सेवा किंवा उपक्रम ;

यांमध्ये सहभागी करण्यासाठी तरतूद करणे ;

(४८) लोकसेवा, सार्वजनिक उपक्रम यांमधील सेवाप्रवेशाकरिता व रोजगाराच्या इतर स्पर्धात्मक संधी यांकरिता स्पर्धात्मक परीक्षांसाठी विशेष प्रशिक्षणाची किंवा खास शिक्षणाची तरतूद करणे ;

(४९) संशोधन व सल्लागार सेवा यांसाठी अन्य कोणतेही विद्यापीठ, परिसंस्था, प्राधिकरण किंवा संघटना यांच्याशी सहकार्य करणे किंवा त्यांच्याशी समन्वय साधणे आणि अशा प्रयोजनांसाठी परिस्थितीनुरूप मागणी केली जाईल त्याप्रमाणे विवक्षित पाठ्यक्रम चालविण्यासाठी अन्य विद्यापीठे, परिसंस्था, प्राधिकरणे किंवा संघटना यांसह योग्य ती व्यवस्था करणे ;

(५०) महाविद्यालयांना किंवा परिसंस्थांना किंवा परिसंस्थांच्या समूहाला दिलेले संलग्नीकरण किंवा मान्यता किंवा अधिकारप्रदत्त दर्जा विखंडित करणे किंवा स्थगित करणे ;

(५१) राज्य शासनाच्या पूर्वपरवानगीने, विद्यापीठाच्या मालमत्तेच्या तारणावर, विद्यापीठाच्या प्रयोजनांकरिता पैसा कर्जाऊ घेणे ;

(५२) संशोधन व विकास, सल्ला सेवा, प्रशिक्षण कार्यक्रमांचा अंदाज घेऊन किंवा नव्याने सुरू करून आणि उद्योग, व्यापार किंवा अन्य कोणत्याही अशासकीय संघटना या क्षेत्रांमधील विविध ग्राहकांना सेवा देऊन, त्याद्वारे विद्यापीठाच्या साधनसंपत्तीत वाढ करण्याच्या शक्यतेचा शोध घेणे ;



(५३) संलग्न महाविद्यालयाच्या, परिसंस्थेच्या किंवा स्वायत्त महाविद्यालयाच्या किंवा अधिकारप्रदत्त स्वायत्त महाविद्यालयाच्या किंवा परिसंस्थांच्या समूहाच्या व्यवस्थापनाने नियमबाह्य गोष्टी किंवा दंडनीय स्वरूपाच्या कृती किंवा अकृती केलेल्या आहेत किंवा अशा महाविद्यालयामध्ये किंवा परिसंस्थेमध्ये गैरव्यवस्थापन झाले आहे असे प्रथमदर्शनी दिसून आले असेल त्याबाबतीत अशा महाविद्यालयाचे किंवा परिसंस्थेचे व्यवस्थापन कोणत्याही इतर व्यवस्थापनाकडे हस्तांतरित करणे ;

(५४) राज्य शासनाच्या पूर्वमान्यतेने विदेशातील विद्यापीठांबरोबर व परिसंस्थांबरोबर विद्याविषयक सहयोगी कार्यक्रम, संशोधन व सल्लागार सेवा हाती घेणे ;

(५५) याबाबतीतील, केंद्र सरकारच्या व राज्य शासनाच्या नियमांच्या व विनियमांच्या अधीन राहून, विदेशी अभिकरणांकडून सहयोगी कार्यक्रमासाठी निधी स्वीकारणे ;

(५६) विद्यापीठ त्याच्या अध्यापनातून, अध्ययनातून, प्रशिक्षणातून, संशोधन व विकास, सल्ला सेवा, आणि कोणत्याही अन्य विद्याविषयक व पूरक कार्यक्रम यांमधून विद्यापीठ जे उत्पन्न मिळवेल त्या व्यतिरिक्त उत्पन्नातून विकास निधी तयार करणे आणि व्यावसायिकरीत्या त्या निधीची गुंतवणूक करणे आणि त्यामधून मिळालेल्या व्याजाचा शैक्षणिक वृद्धी व विकास, संशोधन व विकास, शैक्षणिक व भौतिक पायाभूत सुविधा यांचा विकास आणि कोणत्याही इतर पायाभूत सुविधा यांच्यासाठी उपयोग करणे ;

(५७) अध्यापक आणि विद्यापीठ अध्यापक यांच्याकरिता विद्यापीठाच्या मते विद्याविषयक बाबींच्या संबंधात आवश्यक असतील अशा इतर सूचना किंवा निदेश घालून देणे ;

(५८) साधनसंपत्ती निर्माण करण्याच्या दृष्टीने, शुल्क आकारून बाहेरील अभिकरणांकरिता उच्च शिक्षण, संशोधन, सल्लागार सेवा यांवर आधारित प्रकल्प यांसंबंधातील विकास कार्यक्रम आणि प्रशिक्षण कार्यक्रम हाती घेणे ;

(५९) सामाजिक आणि शैक्षणिकदृष्ट्या मागास असलेल्या वर्गांना व जाती-जमातींना विद्यापीठातील शिक्षणाचे लाभ उपलब्ध करून देण्यासाठी विशेष तरतुदी करणे ;

(६०) विद्यार्थीना आणि दिव्यांग विद्यार्थ्यांना विद्यापीठातील शिक्षणाचे लाभ विद्यापीठास आवश्यक वाटतील त्याप्रमाणे उपलब्ध करून देण्यासाठी विशेष तरतुद करणे ;

(६१) ग्रामीण आणि आदिवासी क्षेत्रांमध्ये उच्च शिक्षणासाठी विशेष तरतुद करणे ;

(६२) एकूण नावनोंदणीचे प्रमाण वाढविण्याच्या प्रयोजनार्थ योग्य उपाययोजना करणे ;

(६३) विद्यापीठ यंत्रणेमधील अध्यापक व विद्यार्थी यांच्यामार्फत स्वेच्छा-तत्त्वावर राष्ट्रीय साक्षरता आणि प्रौढ शिक्षण कार्यक्रम कार्यान्वित करणे आणि त्यांच्या सर्वसाधारण शैक्षणिक कामगिरीशिवाय आणखी विद्यार्थ्यांचे या क्षेत्रातील प्रयत्न व कामगिरी यांना योग्य ते गुणाधिक्य देण्याची उपाययोजना करणे आणि त्याचप्रमाणे अध्यापकांच्या या क्षेत्रातील कामगिरीचेही मूल्यमापन करणे.

(६४) विद्यापीठाने स्वतः किंवा इतर विद्यापीठाच्या सहकार्याने, राज्य शासनाच्या धोरणाचे अनुपालन करण्यासाठी मराठीचा अभ्यासक्रम आणि शिक्षण, अभ्यास, संशोधन व परीक्षा यांचे माध्यम म्हणून मराठीचा वापर करण्यास चालना देणे ;

(६५) विद्यापीठाने स्वतः किंवा इतर विद्यापीठांच्या किंवा संघटनांच्या सहकार्याने, सर्वसाधारणपणे विदेशी भाषांच्या व विशेषतः आशियाई भाषांच्या अभ्यासास चालना देणे ;

(६६) विद्यापीठ, परिसंस्था व महाविद्यालये यांचे अध्यापक, दीर्घ सुटीवर नसलेले शैक्षणिक व अध्यापकेतर कर्मचारी यांच्या जबाबदाऱ्या सुनिश्चित करण्यासाठी कार्यात्मक योजना तयार करणे ;

(६७) विद्यापीठामधील एकापेक्षा अनेक विभागात किंवा प्रशासकीय उप विभागात, त्याचप्रमाणे विद्यापीठातील विभागांमध्ये आणि विद्यापीठ-सार्वजनिक किंवा विद्यापीठ-खाजगी किंवा विद्यापीठ सार्वजनिक- खाजगी भागीदारी संशोधन प्रयोगशाळा किंवा विद्यापीठ उद्योग किंवा विद्यापीठ इतर संस्था यांच्यामध्ये एकाच वेतनश्रेणीतील संयुक्त नियुक्त्या करण्यासाठी तरतूद करणे ;

(६८) जे समकालीन, जागतिकदृष्ट्या स्पर्धात्मक आणि स्थानिक तसेच धार्मिक व राष्ट्रीयदृष्ट्या महत्त्वपूर्ण आहे अशा ज्ञानाची निर्मिती करणे व त्याचा प्रसार करणे आणि श्रेष्ठ दर्जाच्या संशोधनाची जोपासना करणे ;

(६९) विद्यार्थीकेंद्री दृष्टिकोन ठेवणे आणि ज्ञानाची निर्मिती करण्यासाठी भूमिका पार पाडणे ;

(७०) पदवीपूर्व, पदव्युत्तर शिक्षणाचे बळकटीकरण करणे, संशोधन व संस्कृती विकास आणि संबंधित पदवी कार्यक्रम यात वाढ करणे ;

(७१) ई-अध्ययन आणि ई-प्रशासन या दोन्ही सेवांसाठी सर्वसमावेशक डिजिटल विद्यापीठाची रचना तयार करणे ;

(७२) माहिती व संदेशवहन तंत्रज्ञानाच्या उपयोगासह सहयोग आणि सहभाग यांद्वारे शिक्षणाच्या अधिकाराचे समुपयोजन करणे ;

(७३) वेगवेगळ्या विद्याशाखेमधील बहुविध विद्या शाखेतील गटांचा अंतर्भाव असणाऱ्या विद्यापीठामधील संशोधनाचा व्यावसायिक क्षेत्रामध्ये व समन्वयित प्रकल्पांमध्ये रूपांतर करण्यासाठी संशोधन केंद्र, तंत्रज्ञानातील नवसंशोधन व इतर कार्यउद्योगी संस्था यांची निर्मिती करणे जेणेकरून राज्यासमोरील काही महत्त्वाच्या समस्यांचे निराकरण होईल ;

(७४) स्थानिक गरजा, उपलब्ध प्रशिक्षण सुविधा, नव्याने उद्भवणाऱ्या गरजा आणि नवीन रोजगाराची संधी विचारात घेऊन विद्यार्थ्यांना जी कौशल्ये माहित करून देण्याची गरज आहे अशी कौशल्ये निश्चित करणे ;

(७५) तरूण पिढीला देशाच्या समृद्ध सांस्कृतिक वारशाची ओळख करून देऊन त्याद्वारे त्यांच्या सर्वांगीण विकासाकरिता पोषक वातावरण तयार करणे आणि खेळांमध्ये कौशल्यांचा विकास करण्याकरिता संधी निर्माण करणे ;

(७६) मुख्यत्वेकरून विद्याशाखा, तंत्रज्ञान शाखा, व्यावसायिक व सामाजिक शाखा आणि व्यक्तिमत्व व सांस्कृतिक विकास शाखा या चार शाखांमधून हस्तांतरित करण्यायोग्य पसंतीवर आधारित श्रेयांक पद्धती सुरू करण्याची सुनिश्चिती करणे ;

(७७) वर्धनक्षम वास्तव जीवनातील कार्यांचे ज्ञानात रूपांतर करण्यासाठी सामाजिक विकासात गुंतलेले उद्योग, संशोधन व विकास प्रयोगशाळा, अशासकीय संघटना यांसारख्या संस्थांचा सहयोग घेऊन अध्यापकांच्या चलनशीलतेला चालना देणे आणि त्याच्या परिणामरूप विद्यापीठांच्या कार्यक्रमांना समृद्ध करणे ;

(७८) केंद्र सरकार व राज्य शासन यांच्या परवानगीने परराष्ट्रांमध्ये केंद्रांची किंवा संस्थांची स्थापना करणे ;

(७९) उद्योगसमूहासोबत भागीदारी करून व्यावसायिक किंवा कौशल्यावर आधारित समूह महाविद्यालये स्थापन करणे ;

(८०) आयोगाच्या अहवालातील शिफारशीची, त्याद्वारे देण्यात आलेल्या कालमर्यादेत अंमलबजावणी करणे ;

(८१) विद्यापीठाचे वरील अधिकार, कर्तव्ये व जबाबदाऱ्या यांच्या संदर्भात, राज्य शासनाद्वारे वेळोवेळी देण्यात आलेल्या निदेशांचे अनुपालन करणे व ते पार पाडणे ;

(८२) नियमित कालांतरांनी विद्यापीठ विभागांची, संचालित महाविद्यालयांची, संलग्न महाविद्यालयांची, परिसंस्थांची किंवा प्रशालांची शैक्षणिक लेखापरीक्षा करणे ;

(८३) विद्यापीठाची सर्व किंवा कोणतीही उद्दिष्टे पार पाडण्यासाठी आवश्यक किंवा आनुषंगिक किंवा पोषक असतील अशा इतर सर्व कृती आणि गोष्टी करणे.

६. (१) या अधिनियमाद्वारे विद्यापीठाला प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकारांचा वापर हा, ज्या प्रादेशिक सीमांमध्ये करण्यात येईल त्या प्रादेशिक सीमांमध्ये, अनुसूचीत अशा विद्यापीठाच्या नावासमोर विनिर्दिष्ट केल्याप्रमाणे संपूर्ण विद्यापीठ क्षेत्राचा समावेश असेल:

विद्यापीठाची  
अधिकारिता  
आणि  
प्रवेशाचे  
विशेषाधिकार  
बहाल करणे.

परंतु, राज्य शासनाच्या पूर्वपरवानगीने, कोणत्याही विद्यापीठाचे दूरस्थ शिक्षण पाठ्यक्रम, पत्रव्यवहार शिक्षण पाठ्यक्रम, मुक्त विद्यापीठ पाठ्यक्रम किंवा बाह्य पदवी पाठ्यक्रम यांचा लाभ विद्यापीठ क्षेत्राबाहेरील, राज्याच्या, संपूर्ण क्षेत्रास लागू करता येईल किंवा देता येईल :

परंतु आणखी असे की, जर विद्यापीठाची स्वतःची किंवा इतर कोणत्याही भारतीय किंवा विदेशी विद्यापीठाचा सहयोग घेऊन कोणत्याही देशात उप-परिसर किंवा परिसर किंवा परिसंस्था यांची स्थापना करण्याची इच्छा असल्यास, ते विद्यापीठ केंद्र सरकार आणि राज्य शासन यांच्या पूर्वपरवानगीने स्थापन करू शकेल.

(२) कलम ३ च्या पोट-कलम (३) च्या तरतुदीस अधीन राहून, विद्यापीठ क्षेत्राच्या आत स्थित असलेली कोणतीही शैक्षणिक परिसंस्था, विद्यापीठाच्या संमतीने व राज्य शासनाच्या मंजूरीने असेल त्याव्यतिरिक्त अन्य बाबतीत, राज्य मुक्त विद्यापीठाच्या आणि अन्य कोणत्याही विद्यापीठाशी किंवा महाविद्यालयांशी विद्यापीठाचा, महाविद्यालयांचा सहयोगी संशोधन किंवा प्रकल्प यांचा अपवाद करून विधिद्वारे स्थापित अशा कोणत्याही अन्य विद्यापीठाशी कोणत्याही प्रकारे सहयोगी होणार नाही किंवा त्यांचा कोणताही विशेषाधिकार मिळविण्याचा प्रयत्न करणार नाही :

परंतु, जर एखादी सार्वजनिक किंवा खाजगी, भारतीय किंवा विदेशी शैक्षणिक परिसंस्था, ज्या विद्यापीठाची अधिकारिता कोणत्याही राज्यापुरती किंवा क्षेत्रापुरती मर्यादित करण्यात आलेली नसेल अशा एखाद्या विद्यापीठाशी संबंध ठेवण्याची किंवा अशा विद्यापीठाचे विशेषाधिकार मिळविण्याची मागणी करत असेल तर, असे सहयोगी होण्यास किंवा असे विशेषाधिकार मिळविण्यास, राज्य शासन परवानगी देऊ शकेल :

परंतु आणखी असे की, ज्या विद्यापीठाची अधिकारिता कोणत्याही राज्यापुरती किंवा क्षेत्रापुरती मर्यादित नसेल असे एखादे विद्यापीठ, विद्यापीठ क्षेत्रात स्वतः किंवा कोणत्याही सार्वजनिक किंवा खाजगी, भारतीय किंवा विदेशी विद्यापीठ या सोबत संशोधनाचे केंद्र किंवा इतर युनिट प्रस्थापित करू इच्छित असेल आणि जर असा सहयोग विदेशी विद्यापीठ किंवा परिसंस्थेसोबत असेल तर, त्यास, राज्य शासनाच्या मंजूरीने आणि केंद्र सरकारच्या मंजूरीने देखील तसे करता येईल.

एच ४०२६-४अ

(३) जर सार्वजनिक किंवा खाजगी, भारतीय किंवा विदेशी शैक्षणिक परिसंस्था ही विधिद्वारे स्थापित केलेल्या इतर कोणत्याही विद्यापीठासोबत सहयोगी असल्यास किंवा विशेषाधिकार मिळविलेला असल्यास, ती शैक्षणिक परिसंस्था विद्यापीठासोबत सहयोगी होण्यास किंवा विशेषाधिकार मिळविण्यास प्रयत्न करू शकेल आणि राज्य शासनाच्या मंजूरीने आणि संबंधित विद्यापीठाच्या संमतीने असा सहयोगी होण्यास किंवा असा प्रवेश मिळविण्यास परवानगी देता येईल.

(४) या अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये तरतूद करण्यात आली असेल त्याव्यतिरिक्त अन्य बाबतीत, हा अधिनियम अंमलात येण्याच्या दिनांकापूर्वी अन्य विद्यापीठाच्या क्षेत्रात कोणत्याही शैक्षणिक परिसंस्थांद्वारे वापरला जाणारा कोणताही विशेषाधिकार राज्य शासनाची मंजूरी न घेता, काढून घेण्यात येणार नाही.

(५) राज्य शासनाने, नवीन जिल्ह्याची निर्मिती केल्यास, अशा विद्यापीठाच्या विशेषाधिकारांनुसार, प्रवेश देण्याच्या प्रयोजनांसाठी, राज्य शासनाकडून **राजपत्रातील** अधिसूचनेद्वारे घोषित करण्यात येईल त्याप्रमाणे, अशा जिल्ह्याचे क्षेत्र अशा विद्यापीठाच्या अधिकारितेखाली येईल.

स्त्री-पुरुष भेद, वंश, पंथ, वर्ग, जात, जन्मस्थान, धर्म किंवा मतप्रणाली, इ. विचारात न घेता विद्यापीठ सर्वांना खुले असणे.

७. (१) भारताच्या कोणत्याही नागरिकास स्त्री-पुरुष भेद, वंश, पंथ, वर्ग, जात, जन्मस्थान, धर्म किंवा मतप्रणाली, इ. विचारात न घेता विद्यापीठ सर्वांना खुले असणे.

७. (१) भारताच्या कोणत्याही नागरिकास स्त्री-पुरुष भेद, वंश, पंथ, वर्ग, जात, जन्मस्थान, धर्म किंवा मतप्रणाली, इ. विचारात न घेता विद्यापीठ सर्वांना खुले असणे.

७. (१) भारताच्या कोणत्याही नागरिकास स्त्री-पुरुष भेद, वंश, पंथ, वर्ग, जात, जन्मस्थान, धर्म किंवा मतप्रणाली, इ. विचारात न घेता विद्यापीठ सर्वांना खुले असणे.

परंतु, विद्यापीठास केवळ स्त्रियांसाठी असलेले किंवा स्त्रियांसाठी राखीव असलेले कोणतेही महाविद्यालय किंवा परिसंस्था चालविता येईल किंवा त्यास अधिस्वीकृती किंवा मान्यता देता येईल.

(२) अनुसूचित जातींसाठी, अनुसूचित जमातींसाठी, निरधिसूचित जमातींसाठी (विमुक्त जाती), भटक्या जमातींसाठी, इतर मागासवर्गांसाठी अध्यापक व अध्यापकेतर कर्मचारी यांच्या वेगवेगळ्या पदांवरील नियुक्त्यांच्या बाबतीत व संलग्न किंवा संचालित किंवा समूह महाविद्यालयांमध्ये, विद्यापीठ विभागांमध्ये, विद्यापीठ परिसंस्थांमध्ये किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थांमध्ये विद्यार्थ्यांना प्रवेश देण्याच्या प्रयोजनांकरिता, विद्यापीठ, राखीव जागा ठेवण्यासंबंधातील शासनाचे धोरण अंगिकारील व शासनाने वेळोवेळी दिलेल्या आदेशांचे अनुपालन करील.

(३) विद्यापीठ, राज्य शासनाकडून वेळोवेळी निदेश देण्यात येईल त्यानुसार, समाजाच्या दुर्बल घटकांतील विविध प्रवर्ग, अल्पसंख्याक, महिला व दिव्यांग व्यक्ती यांच्या कल्याणासंबंधात राज्य शासनाच्या सर्वसाधारण धोरणांचे अनुपालन करील.

८. (१) राज्य शासनाच्या पूर्वपरवानगीशिवाय, विद्यापीठ,—

राज्य  
शासनाचे  
विद्यापीठांवर  
नियंत्रण  
असणे.

(क) अध्यापकांची, अधिकाऱ्यांची किंवा इतर कर्मचाऱ्यांची नवीन पदे निर्माण करणार नाही ;

(ख) त्याच्या अध्यापकांचे, अधिकाऱ्यांचे व इतर कर्मचाऱ्यांचे वेतन, भत्ते, सेवानिवृत्तीनंतरचे लाभ व इतर लाभ यात सुधारणा करणार नाही ;

(ग) त्याच्या कोणत्याही अध्यापकांना, अधिकाऱ्यांना किंवा इतर कर्मचाऱ्यांना कोणतेही विशेष वेतन, भत्ते किंवा कोणत्याही स्वरूपाचे अन्य अतिरिक्त पारिश्रमिक, तसेच सानुग्रह प्रदान किंवा अपेक्षित वित्तीय भार असणारे अन्य लाभ देणार नाही ;

(घ) कोणत्याही प्रयोजनासाठी मिळालेला कोणताही राखीव निधी, तो ज्या प्रयोजनासाठी मिळालेला होता, त्या प्रयोजनाव्यतिरिक्त अन्य कोणत्याही प्रयोजनासाठी वळविणार नाही ;

(ङ) स्थावर मालमतेची विक्री किंवा भाडेपट्टा याद्वारे, हस्तांतरण करणार नाही ;

(च) राज्य शासनाकडून किंवा विद्यापीठ अनुदान आयोग किंवा कोणतीही व्यक्ती किंवा संस्था यांकडून मिळणाऱ्या निधीतून, ज्या प्रयोजनाकरिता निधी मिळाला आहे त्या प्रयोजनाव्यतिरिक्त अन्य प्रयोजनाकरिता, कोणत्याही विकास कामासाठी तो निधी खर्च करणार नाही ;

(छ) संलग्न महाविद्यालयाच्या संबंधात, ज्यामुळे प्रत्यक्षपणे किंवा अप्रत्यक्षपणे राज्य शासनाचे वित्तीय दायित्व वाढेल,

असा कोणताही निर्णय घेणार नाही.

(२) राज्य शासनाने वेळोवेळी केलेली धोरणे आणि दिलेले निदेश यांच्याशी सुसंगत राहून, विद्यापीठ पुढील ठिकाणांहून मिळणाऱ्या निधीतून खर्च करण्यास सक्षम असेल,—

(क) राज्य शासनाकडून मिळणारा कोणताही हिस्सा किंवा अंशदान याशिवाय विविध निधिकरण अभिकरणे ;

(ख) विद्यापीठाच्या उद्दिष्टांना चालना देण्यासाठी, व्यक्ती, उद्योगसमूह, परिसंस्था, संघटना किंवा कोणतीही व्यक्ती यांच्याकडून मिळालेली अंशदाने ;

(ग) अनुदानित व स्वयंसहाय्यित शैक्षणिक अध्ययन कार्यक्रमांसाठी विद्यापीठाने पुरवलेल्या शैक्षणिक किंवा इतर सेवांकरिता अंशदाने किंवा शुल्क ;

(घ) पुढील प्रयोजनांकरिता विद्यापीठाने स्थापन केलेला विकास निधी किंवा इतर कोणताही निधी,—

(एक) विविध संवर्गाची पदे निर्माण करणे ;

(दोन) आपल्या स्वतःच्या निधीतून निर्माण केलेल्या पदांच्या बाबतीत, परंतु, ज्या पदासाठी शासकीय अंशदान प्राप्त झाले आहे अशी पदे धारण करित असलेल्या अशा व्यक्तींनी ती पदे धारण केली नसतील तर असे वेतन, भत्ते व इतर लाभ देणे ;

(तीन) स्वयंसहाय्यित तत्वावर कोणताही शैक्षणिक कार्यक्रम सुरू करणे ;

(चार) कर्मचाऱ्यांची नियमित कर्तव्ये व दायित्वे यांच्या व्यतिरिक्त त्यांना सोपविण्यात आलेले कोणतेही कार्य पार पाडण्यासाठी त्यांना पारिश्रमिक किंवा प्रोत्साहने देणे ;

(पाच) कोणत्याही विकासविषयक कामांवर आणि विद्यापीठाचे विद्यार्थी व कर्मचारी यांच्या कल्याण कार्यक्रमांवर खर्च करणे :

परंतु, यामुळे राज्य शासनावर, प्रत्यक्षपणे किंवा अप्रत्यक्षपणे, तात्काळ किंवा भविष्यात, कोणतेही वित्तीय दायित्व येणार नाही.

(३) राज्य शासनास, या अधिनियमात अंतर्भूत असलेल्या तरतुदीनुसार, राज्यातील सर्व विद्यापीठांमध्ये समान मानके साध्य करण्याच्या आणि ती कायम राखण्याच्या प्रयोजनासाठी, **राजपत्रातील** अधिसूचनेद्वारे, विद्यापीठाचे अधिकारी, अध्यापक व इतर कर्मचारीवर्ग आणि (राज्य शासन, केंद्र सरकार आणि स्थानिक प्राधिकरणे यांच्याकडून व्यवस्थापन करण्यात व चालविण्यात येत असतील अशी महाविद्यालये व परिसंस्था यांखेरीज इतर) संलग्न महाविद्यालयांमधील व मान्यताप्राप्त परिसंस्थांमधील अध्यापक व इतर कर्मचारीवर्ग यांचे वर्गीकरण, निवडीची रीत व पद्धती, नियुक्ती, पदस्थापना व प्रगत प्रशिक्षण, क्षेत्र अनुभव, प्रतिनियुक्ती, अनुसूचित जाती, अनुसूचित जमाती, निरधिसूचित जमाती (विमुक्त जाती), भटक्या जमाती आणि इतर मागासवर्ग यांतील व्यक्तींसाठी पदे राखून ठेवणे, त्यांची कर्तव्ये, कार्यभार, वेतन, भत्ते, सेवानिवृत्तीनंतरचे लाभ, इतर लाभ, वर्तणूक व शिस्तविषयक बाबी व सेवेच्या इतर शर्ती यांसाठी तरतूद करणारी आणि विद्यापीठ विभाग, संलग्न किंवा संचालित महाविद्यालये व परिसंस्था यांतील अनुदानित असलेले व अतिरिक्त ठरलेले अध्यापक व कर्मचारी यांना सामावून घेण्यासाठीच्या तरतुदी यांसाठी प्रमाण संहिता विहित करता येईल. तथापि, विद्यापीठ विभाग, संलग्न किंवा संचालित महाविद्यालये व परिसंस्था यातील अतिरिक्त ठरलेले विना अनुदानित अध्यापक व कर्मचारी हे विद्यापीठ विभाग, संलग्न किंवा संचालित महाविद्यालये व परिसंस्था यांतील अनुदानित रिक्त पदावर सामावून घेण्यासाठी पात्र असणार नाहीत. जेथे अशी संहिता विहित करण्यात आली आहे तेथे संहितेत केलेल्या तरतुदी अधिभावी ठरतील आणि या अधिनियमान्वये करण्यात आलेले परिनियम, आदेश आणि विनियम यात करण्यात आलेल्या तरतुदी संहितेमध्ये अंतर्भूत असलेल्या बाबींच्या संबंधात त्या संहितेमधील तरतुदींशी, जेथवर विसंगत असतील तेथवर, विधिअग्राह्य असतील.

(४) विद्यापीठामधील, संलग्न महाविद्यालयांमधील आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्थांमधील (राज्य शासन, केंद्र सरकार आणि स्थानिक प्राधिकरणांकडून व्यवस्थापन करण्यात आणि चालवण्यात येत असलेली महाविद्यालये व परिसंस्था खेरीजकरून इतर) अध्यापकेतर कर्मचाऱ्यांच्या नियुक्तीच्या प्रयोजनार्थ अर्हता व अनुभव हा राज्य शासन **राजपत्रात** प्रसिद्ध करील अशा अधिसूचनेद्वारे विनिर्दिष्ट करण्यात येईल त्या प्रमाणे असेल.

(५) या अधिनियमात काहीही अंतर्भूत असले तरीही, जर परिस्थितीनुसार अशी गरज भासल्यास आणि राज्य शासनाला तसे करणे आवश्यक वाटल्यास, विद्यापीठ, एका वेळी एका वर्षापेक्षा आणि एकूण तीन वर्षापेक्षा अधिक असणार नाही इतक्या कालावधीसाठी कुलसचिव, वित्त व लेखा अधिकारी किंवा परीक्षा व मूल्यमापन मंडळाच्या संचालकाची कर्तव्ये पार पाडण्यासाठी आवश्यक अर्हता धारण करणाऱ्या योग्य व्यक्तीची प्रतिनियुक्तीवर नियुक्ती करू शकेल.

(६) राज्य शासनाला, सह संचालक, उच्च शिक्षण किंवा तंत्र शिक्षण याच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जा नसलेल्या अधिकाऱ्यामार्फत कोणत्याही संलग्न, संचालित किंवा स्वायत्त महाविद्यालयाची, मान्यताप्राप्त परिसंस्थेची किंवा विद्यापीठ विभागाची तपासणी करवून घेण्याचे अधिकार असतील.

(७) कलम ५ मध्ये विनिर्दिष्ट केलेले अधिकार व कर्तव्ये अनुक्रमे वापरण्यास व पार पाडण्यास विद्यापीठाने कसूर केली असेल त्याबाबतीत किंवा विद्यापीठाने असे अधिकार व कर्तव्ये समुचितरीतीने अनुक्रमे वापरलेले किंवा पार पाडलेली नसतील किंवा राज्य शासनाने काढलेल्या कोणत्याही आदेशाचे पालन केलेले नसेल, किंवा राज्य शासनाला योग्य वाटेल अशा कोणत्याही परिस्थितीअन्वये त्याबाबतीत, राज्य शासन विद्यापीठास अशा अधिकारांचा योग्य वापर करण्याचा किंवा अशी कर्तव्ये योग्य रीतीने पार पाडण्याचा किंवा आदेशाचे पालन करण्याचा निदेश देता येईल व अशा निदेशाचे पालन करणे हे विद्यापीठाचे कर्तव्य असेल. विद्यापीठाने निदेशाचे पालन करण्यात कसूर केल्याच्या बाबतीत, राज्य शासन, या आदेशाचे पालन का करण्यात आले नाही, याची लेखी कारणे देण्यास विद्यापीठाला फर्मावील. राज्य शासनाचे, जर त्या स्पष्टीकरणाने समाधान झाले नाही तर, ते, कलम ९ च्या पोट-कलम (३) अन्वये आवश्यक ती कार्यवाही करण्यासाठी ही बाब कुलपतीकडे विचारार्थ पाठवील.

(८) राज्य शासनास, त्यास योग्य वाटेल अशा ठराविक कालांतराने विद्यापीठ, महाविद्यालय, प्रशाळा किंवा परिसंस्था यांची नियमितपणे चाचणी लेखापरीक्षा किंवा संपूर्ण लेखापरीक्षा करता येईल.

## प्रकरण तीन

## विद्यापीठाचे अधिकारी

कुलपती आणि त्याचे अधिकार . ९. (१) त्या त्या वेळी असलेला महाराष्ट्राचा राज्यपाल हा प्रत्येक विद्यापीठाचा कुलपती असेल व त्याच्या पदपरत्वे तो विद्यापीठाचा प्रमुख असेल.

(२) कुलपती, जेव्हा उपस्थित असेल तेव्हा, विद्यापीठाच्या दीक्षांत समारंभाचे अध्यक्षपद भूषवील व तो, कुलगुरूस कोणत्याही विशिष्ट प्रयोजनाकरिता आवश्यक असेल तेव्हा, विद्यापीठाच्या कोणत्याही प्राधिकरणाची सभा बोलाविण्याचा निदेश देऊ शकेल व कुलगुरू, अशा सभेचे कार्यवृत्त कुलपतीस त्याच्या अवलोकनार्थ सादर करील.

(३) कुलपतीस,—

(क) अशा प्रकरणात कलम ८ च्या पोट-कलम (७) च्या परंतुकान्वये राज्य शासनाकडून कोणताही संदर्भ प्राप्त झाल्यावर ; किंवा

(ख) त्यास, कोणत्याही प्रकरणात स्वाधिकारे किंवा अन्यथा,

अशा प्रकरणासंबंधीचा किंवा विद्यापीठाच्या कोणत्याही प्रकरणासंबंधीचा किंवा कार्यासंबंधीचा अहवाल किंवा खुलासा किंवा अशी माहिती मागविता येईल, आणि तो, असा अहवाल किंवा खुलासा किंवा माहिती किंवा अभिलेख विचारात घेतल्यानंतर, त्यावर विद्यापीठाच्या किंवा विद्यार्थ्यांच्या हितासाठी किंवा व्यापक लोकहितासाठी त्यास योग्य वाटतील असे निदेश देईल, आणि त्याचे निदेश अंतिम असतील आणि विद्यापीठाकडून त्या निदेशांचे ताबडतोब अनुपालन करण्यात येईल.

(४) कुलपतीस, कुलगुरूकडून लेखी अहवाल घेतल्यानंतर कोणत्याही प्राधिकरणाचा, मंडळाचा, समितीचा किंवा अधिकाऱ्याचा कोणताही ठराव, आदेश किंवा कामकाज त्याच्या मते या अधिनियमाशी किंवा त्याखाली केलेल्या परिनियमांशी, आदेशांशी किंवा विनियमांशी सुसंगत नसेल किंवा विद्यापीठाच्या हिताचे नसेल तर, ते स्थगित करता येईल, किंवा त्यात फेरबदल करता येईल आणि विद्यापीठ, प्राधिकरण, मंडळ, समिती व अधिकारी त्याचे पालन करतील :

परंतु, कुलपती असा कोणताही आदेश देण्यापूर्वी, विद्यापीठ प्राधिकरण, मंडळ, समिती किंवा, यथास्थिति, अधिकारी यांना, असा आदेश का देण्यात येऊ नये याची कारणे दाखविण्यास फर्मावील व कुलपतीने ठरवून दिलेल्या कालावधीत, जर कोणतेही कारण दाखविण्यात आले तर, कुलपती, ते विचारात घेईल आणि ज्याबाबतीत त्यास आवश्यक वाटेल त्याबाबतीत राज्य शासनाशी विचारविनिमय करून, तो, त्या प्रकरणात कोणती कारवाई करायची हे ठरवील व त्याचा निर्णय अंतिम असेल.

(५) ज्या बाबतीत कुलपतीच्या मते, निवडून दिलेल्या किंवा नामनिर्देशित केलेल्या किंवा नियुक्त केलेल्या किंवा स्वीकृत केलेल्या कोणत्याही सदस्याचे वर्तन, विद्यापीठाचे, किंवा कोणत्याही प्राधिकरणाचे किंवा मंडळाचे किंवा समितीचे कामकाज सुरळीत चालण्यास बाधक ठरत असेल तर, त्यास अशा सदस्यास, त्याचे लेखी स्पष्टीकरण देण्याची संधी दिल्यानंतर व अशा प्रकारचे कोणतेही स्पष्टीकरण मिळाल्यास, त्यावर विचार करून आणि असे करणे आवश्यक आहे याबद्दल स्वतःची खात्री करून घेतल्यानंतर, अशा सदस्यास, त्याला योग्य वाटेल तेवढ्या कालावधीकरिता अपात्र ठरवता येईल किंवा त्याला निलंबित करता येईल.



(६) कुलपती, या अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये त्यास प्रदान करण्यात येतील किंवा त्याच्याकडे निहित असतील अशा अन्य अधिकारांचा वापर करील व अशी अन्य कर्तव्ये पार पाडील.

१०. विद्यापीठाचे इतर अधिकारी पुढीलप्रमाणे असतील, ते असे :—

विद्यापीठाचे  
इतर  
अधिकारी.

- (१) कुलगुरू ;
- (२) प्र-कुलगुरू ;
- (३) कुलसचिव ;
- (४) विद्याशाखांचे अधिष्ठाते ;
- (५) संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ ;
- (६) वित्त व लेखा अधिकारी ;
- (७) संचालक, विद्यापीठ उप परिसर ;
- (८) संचालक, नवोपक्रम, नवसंशोधन व साहचर्य मंडळ ;
- (९) संचालक, ज्ञान स्रोत केंद्र ;
- (१०) संचालक, आजीवन अध्ययन व विस्तार ;
- (११) संचालक, विद्यार्थी विकास ;
- (१२) संचालक, क्रीडा व शारीरिक शिक्षण ;
- (१३) संचालक, राष्ट्रीय सेवा योजना ;
- (१४) परिनियमांद्वारे विहित करण्यात येतील असे, विद्यापीठाच्या सेवेतील इतर अधिकारी.

११. (१) विद्यापीठाचा एक कुलगुरू असेल जो विद्यापीठाचा मुख्य विद्याविषयक आणि कार्यकारी अधिकारी असेल व व्यवस्थापन परिषद, विद्यापरिषद, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ, आजीवन शिक्षण व विस्तार, वित्त व लेखा समिती, राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय साहचर्य मंडळ आणि नवोपक्रम, नवसंशोधन व उपक्रम केंद्र, माहिती तंत्रज्ञान मंडळ, विद्यार्थी विकास मंडळ, क्रीडा व शारीरिक शिक्षण मंडळ आणि संशोधन मंडळ यांचा पदसिद्ध अध्यक्ष असेल आणि तो कुलपतीच्या अनुपस्थितीत विद्यापीठाच्या कोणत्याही दीक्षांत समारंभात तसेच अधिसभेच्या कोणत्याही बैठकीत देखील अध्यक्ष म्हणून काम पाहील. त्याचे अधिकार व कर्तव्ये कलम १२ मध्ये तरतूद केल्याप्रमाणे असतील.

(२) अन्यथा तरतूद करण्यात आली असेल त्याव्यतिरिक्त इतर बाबतीत, कुलगुरूचे वेतन व भत्ते, सेवेच्या अटी व शर्ती, राज्य शासन वेळोवेळी निर्धारित करील त्याप्रमाणे असतील.

(३) कुलपती हा, यात याखाली नमूद केलेल्या रीतीने कुलगुरूची नियुक्ती करील :—

(क) कुलगुरूच्या नियुक्तीसाठी कुलपतीला योग्य अशा नावांची शिफारस करण्याकरिता पुढील सदस्यांचा समावेश असलेली एक समिती असेल :—

(एक) कुलपतीने नामनिर्देशित केलेला एक सदस्य असेल जो सर्वोच्च न्यायालयाचा सेवानिवृत्त न्यायाधीश किंवा उच्च न्यायालयाचा सेवानिवृत्त मुख्य न्यायमूर्ती किंवा राष्ट्रीय कीर्तीचा ख्यातनाम विद्याव्यासंगी किंवा शैक्षणिक क्षेत्रामध्ये पद्म पुरस्कार प्राप्त केलेली व्यक्ती असेल ;

(दोन) उच्च व तंत्र शिक्षण विभागाचा प्रधान सचिव किंवा राज्य शासनाने नामनिर्देशित केलेला शासनाच्या प्रधान सचिवाच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जा नसलेला कोणताही अधिकारी ;

(तीन) **राजपत्रात** प्रसिद्ध केलेल्या आदेशाद्वारे, राज्य शासनाने विनिर्दिष्ट केलेल्या रीतीने, व्यवस्थापन परिषद व विद्यापरिषद यांनी एकत्रितरीत्या नामनिर्देशित करून संसदेच्या अधिनियमाद्वारे प्रस्थापित केलेल्या राष्ट्रीय कीर्तीच्या परिसंस्थेचा किंवा संघटनेचा संचालक किंवा प्रमुख.

(ख) कुलपतीने नामनिर्देशित केलेला सदस्य हा समितीचा अध्यक्ष असेल.

(ग) समितीवर नामनिर्देशित केलेले सदस्य विद्यापीठाशी किंवा विद्यापीठाच्या कोणत्याही महाविद्यालयाशी किंवा कोणत्याही मान्यताप्राप्त परिसंस्थेशी संबंध नसलेल्या व्यक्ती असतील.

(घ) समितीचे सर्व तीन सदस्य उपस्थित असल्याशिवाय समितीची कोणतीही सभा घेण्यात येणार नाही.

(ङ) समिती, कुलगुरू म्हणून नियुक्ती केली जाण्यासाठी कुलपतीच्या विचारार्थ ५ पेक्षा कमी नसतील अशा योग्य व्यक्तींच्या नामिकेची शिफारस करील. अशाप्रकारे शिफारस करण्यात आलेल्या व्यक्तींची नावे, कोणताही पसंतीक्रम न दर्शविता वर्णक्रमानुसार नमूद केलेली असतील. नामिकेत समाविष्ट असलेल्या प्रत्येक व्यक्तीच्या योग्यतेची सविस्तर माहिती अहवालासोबत जोडलेली असेल.

(च) कुलगुरू म्हणून नियुक्तीकरिता, समितीद्वारे शिफारस केलेली व्यक्ती ही,—

(एक) एक शिक्षणतज्ज्ञ आणि उच्च दर्जाची प्रशासक असेल ;

(दोन) तिच्या स्वतःच्या उदाहरणाद्वारे नेतृत्व करण्यास सक्षम असेल ;

(तीन) दूरदृष्टी देण्यास सक्षम असेल ; आणि विद्यार्थी व समाज यांच्या हिताच्या दृष्टीने ती दृष्टी वास्तवात साकार करण्यासाठीची क्षमता तिच्यात असेल ; आणि

(चार) कुलपतीशी विचारविनिमय करून, राज्य शासनाकडून **राजपत्रात** प्रसिद्ध केलेल्या आदेशाद्वारे विनिर्दिष्ट करण्यात येईल अशी शैक्षणिक अर्हता व अनुभव धारण करणारी असेल.

(छ) कुलगुरू म्हणून नियुक्तीसाठी पात्रतेच्या शर्ती आणि नावांची शिफारस करण्याची प्रक्रिया यांस सर्वोत्तम उमेदवारांची शिफारस करण्याची सुनिश्चिती करण्यासाठी विस्तृत प्रसिद्धी देण्यात येईल.

(४) कुलपती नामिकेमध्ये समाविष्ट असलेल्या व्यक्तींपैकी एकाची कुलगुरू म्हणून नियुक्ती करील :

परंतु, कुलपतीस, अशी शिफारस केलेल्या कोणत्याही व्यक्तीस मान्यता दिली नाही तर, त्यास त्याच समितीकडून किंवा या प्रयोजनासाठी नवीन समिती घटित करून त्यानंतर अशा नवीन समितीकडून नवीन नामिका मागवता येईल.

(५) कुलगुरू म्हणून नियुक्ती करण्यास योग्य व्यक्तीची नामिका तयार करण्याची प्रक्रिया ही, कुलगुरूचे पद रिक्त होण्याच्या संभाव्य दिनांकाच्या किमान सहा महिने अगोदर सुरू करण्यात येईल, आणि कुलगुरूच्या नियुक्तीची प्रक्रिया कुलगुरूचे पद रिक्त होण्याच्या संभाव्य दिनांकाच्या किमान एक महिना अगोदर पूर्ण करण्यात येईल.

(६) कुलगुरू म्हणून नियुक्ती करण्यात आलेली व्यक्ती ही, सेवाविषयक संविदेच्या अटी व शर्तींना अधीन राहून, तिने अधिकारपद ग्रहण केल्याच्या दिनांकापासून पाच वर्षांचा अवधी किंवा तिच्या वयाची पासष्ट वर्षे पूर्ण होईपर्यंतचा अवधी या दोन्हीपैकी जो कोणताही अवधी अगोदर पूर्ण होईल त्या अवधीसाठी पद धारण करील, आणि ती पुनर्नियुक्तीसाठी पात्र असणार नाही.

(७) कुलगुरू म्हणून नियुक्ती करण्यात आलेली व्यक्ती ही, त्या नियुक्तीपूर्वी ज्या कोणत्या पदावर कायम झाली असेल त्या पदावर तिचा धारणाधिकार, कोणताही असल्यास, धारण करील.

(८) जी परिस्थिती निकडीची असल्याबद्दलचा निर्णय केवळ कुलपतीच करील अशा पुढीलपैकी कोणत्याही परिस्थितीत, म्हणजेच,—

(एक) ज्याबाबतीत पोट-कलम (३) चा खंड (क) अन्वये नियुक्ती करण्यात आलेल्या समितीला कुलपतीने विनिर्दिष्ट केलेल्या कालमर्यादेच्या आत कोणत्याही नावाची शिफारस करता येत नसेल ;

(दोन) ज्याबाबतीत मृत्यू, राजीनामा यांमुळे किंवा अन्य कारणांमुळे कुलगुरूचे पद रिक्त झाले असेल व ते पद पोट-कलम (३) व (४) च्या तरतुदीनुसार सुकरतेने व शीघ्रतेने भरता येत नसेल ;

(तीन) ज्याबाबतीत रजा, आजार यांमुळे किंवा अन्य कारणांमुळे कुलगुरूचे पद तात्पुरते रिक्त झाले असेल ; किंवा

(चार) ज्याबाबतीत इतर कोणत्याही प्रकारची निकडीची परिस्थिती असेल,

त्याबाबतीत कुलपतीला, त्याच्या आदेशात तो विनिर्दिष्ट करील अशा, एकूण बारा महिन्यांपेक्षा अधिक नसेल इतक्या मुदतीकरिता, कोणत्याही योग्य अशा व्यक्तीची कुलगुरू म्हणून काम करण्यासाठी नियुक्ती करता येईल :

परंतु, अशाप्रकारे नियुक्ती करण्यात आलेली व्यक्ती ही, ज्या दिनांकास पोट-कलम (३) व (४) च्या तरतुदीनुसार कुलगुरू म्हणून नियुक्त केलेली व्यक्ती पद ग्रहण करील किंवा कुलगुरू त्या पदावर पुन्हा रूजू होईल, त्या दिनांकापासून पदावर राहणार नाही.

(९) कुलगुरू हा, विद्यापीठाचा पूर्णवेळ वेतनी अधिकारी असेल व त्याला राज्य शासनाने निर्धारित केल्याप्रमाणे वेतन व भत्ते आणि अशा सुविधा मिळतील. याखेरीज त्याला मोफत, सुसज्ज निवासस्थान, त्याच्या वापरासाठी मोटारगाडी, तिचे परिरक्षण, दुरुस्ती व त्यासाठी आवश्यक असलेल्या इंधनासह शोफरची मोफत सेवा मिळण्याचा हक्क असेल.

(१०) राज्य शासन मान्यता देईल असा आतिथ्य भत्ता, कुलगुरूकडे देण्यात येईल.

(११) जर एखाद्या व्यक्तीस राज्याच्या एकत्रीकृत निधीतून मानधन मिळत असेल किंवा जर संलग्न महाविद्यालयाच्या किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थेच्या प्राचार्याची किंवा विद्यापीठाच्या अध्यापकाची कुलगुरू म्हणून नियुक्ती झालेली असेल तर, कुलगुरू म्हणून असलेल्या त्याच्या पदावधीत त्याच्या सेवेच्या अटी व शर्तीमध्ये त्याचे अहित होईल अशा प्रकारे फेरफार करण्यात येणार नाही.

(१२) पूर्वगामी पोट-कलमांमध्ये काहीही अंतर्भूत असले तरी, पोट-कलम (७) मध्ये निर्दिष्ट केलेली व्यक्ती, तिच्या मूळ पदाच्या सेवेच्या अटी व शर्तीनुसार त्या पदावरून निवृत्त होईल.

(१३) कुलगुरूस आपल्या सहीने कुलपतीला पत्र लिहून एक महिन्याची नोटीस देऊन आपल्या पदाचा राजीनामा देता येईल आणि त्याचा राजीनामा कुलपतीने स्वीकारणे किंवा उक्त नोटीशीचा कालावधी समाप्त होणे यापैकी जे अगोदर घडेल त्या दिवसापासून तो आपल्या पदावर राहणार नाही.

(१४) कुलपतीला, जर अशी खात्री वाटेल की कुलगुरू हा,—

- (क) भ्रमिष्ट झाला आहे आणि सक्षम न्यायालयाने तसे जाहीर केले आहे ; किंवा
- (ख) नैतिक अधःपात अंतर्भूत असलेल्या कोणत्याही अपराधाकरिता न्यायालयाकडून दोषी ठरविण्यात आलेला आहे ; किंवा
- (ग) अविमुक्त नादार झाला आहे आणि सक्षम न्यायालयाने तसे जाहीर केले आहे ; किंवा
- (घ) तो शारीरिकदृष्ट्या अपात्र झाला आहे आणि दीर्घकाळच्या आजारामुळे किंवा विकलांगांतेमुळे त्याची कार्ये पार पाडण्यास तो असमर्थ झालेला आहे ; किंवा
- (ङ) या अधिनियमाच्या तरतुदींचे पालन करण्याचे बुद्धिपुरस्सर वर्जिले आहे किंवा पालन करण्याचे बुद्धिपुरस्सर नाकारले आहे किंवा सेवाविषयक संविदेतील कोणत्याही अटींचा किंवा शर्तींचा किंवा पोट-कलम (२) अन्वये राज्य शासनाने विहित केलेल्या कोणत्याही अटींचा भंग केला आहे, किंवा त्याच्याकडे निहित केलेल्या अधिकारांचा दुरुपयोग केला आहे किंवा त्या कुलगुरूला पदावर पुढे चालू ठेवणे, विद्यापीठाच्या हितसंबंधाच्या दृष्टीने हानिकारक आहे ; किंवा
- (च) तो कोणत्याही राजकीय पक्षाचा किंवा राजकारणात भाग घेणाऱ्या कोणत्याही संघटनेचा सदस्य आहे किंवा त्या पक्षाशी वा संघटनेशी अन्य प्रकारे संबंधित आहे, किंवा कोणत्याही राजकीय चळवळीत किंवा कार्यात भाग घेत आहे किंवा त्यासाठी मदतीदाखल वर्गणी देत आहे ;

तर, कुलगुरू त्याच्या पदावरून काढून टाकला जाऊ शकेल.

**स्पष्टीकरण.**—या उप-खंडाच्या प्रयोजनांसाठी, कोणताही पक्ष राजकीय पक्ष आहे किंवा कोणतीही संघटना राजकारणात भाग घेते किंवा कोणतीही चळवळ किंवा कार्ये या उप-खंडाच्या व्याप्तीमध्ये येते किंवा कसे यासंबंधातील कुलपतीचा निर्णय अंतिम असेल :

परंतु, उप-खंड (घ), (ङ) आणि (च) अन्वये कुलगुरूला काढून टाकण्यापूर्वी कुलपतीकडून कुलगुरूला कारणे दाखवण्याची वाजवी संधी देण्यात येईल.

१२. (१) कुलगुरू हा, विद्यापीठाचा प्रमुख विद्याविषयक व कार्यकारी अधिकारी असेल कुलगुरूचे आणि तो विद्यापीठाच्या शैक्षणिक कार्यक्रमांच्या विकासासाठी जबाबदार असेल. विद्यापीठाचे अधिकार व कामकाज कार्यक्षमतापूर्वक व सुव्यवस्थितरीत्या चालावे यासाठी विद्यापीठाच्या शैक्षणिक कार्यक्रमांची अंमलबजावणी आणि सामान्य प्रशासन यांच्यावर तो देखरेख करील व संनियंत्रण ठेवील.

(२) त्याला विद्यापीठाच्या इतर कोणत्याही प्राधिकरणाच्या किंवा मंडळाच्या किंवा समितीच्या कोणत्याही बैठकीमध्ये हजर राहण्याचा व बोलण्याचा हक्क असेल, परंतु, तो त्या प्राधिकरणाची किंवा मंडळाची अध्यक्षपदस्थ व्यक्ती किंवा सदस्य नसेल तर, त्याला तेथे मत देण्याचा हक्क असणार नाही.

(३) कुलगुरूला, कोणत्याही प्राधिकरणांच्या, मंडळांच्या किंवा समित्यांच्या बैठका त्याला आवश्यक वाटेल तेव्हा, बोलावण्याचा अधिकार असेल.

(४) कुलगुरू, कुलपतीने काढलेल्या निदेशांचे काटेकोर अनुपालन, किंवा यथास्थिति, अंमलबजावणी करण्यात येत असल्याबद्दल खात्री करून घेईल.

(५) राज्य शासनाचे कोणतेही निदेश असल्यास, त्यांचे, आणि या अधिनियमाच्या तरतुदी, परिनियम, आदेश व विनियम यांचे काटेकोर पालन करण्यात येत आहे, तसेच हा अधिनियम, परिनियम, आदेश व विनियम यांच्याशी विसंगत नसतील असे, प्राधिकरणांचे, मंडळांचे व समित्यांचे जे निर्णय असतील त्यांची योग्यरीत्या अंमलबजावणी करण्यात येत आहे, याबाबत खात्री करून घेणे हे कुलगुरूचे कर्तव्य असेल.

(६) विद्यापीठाचे कोणतेही प्राधिकरण, मंडळ किंवा समिती यांनी घेतलेला निर्णय किंवा संमत केलेला ठराव हा, कुलगुरूच्या मते राज्य शासनाच्या निदेशांशी किंवा अधिनियम, परिनियम, आदेश आणि विनियम यांच्या तरतुदींशी सुसंगत नसेल किंवा असा निर्णय किंवा ठराव हा विद्यापीठाच्या हिताचा नसेल तर कुलगुरूला त्याची अंमलबजावणी लांबणीवर टाकता येईल आणि तो संधी मिळाल्यानंतर ताबडतोब संबंधित प्राधिकरण, मंडळ किंवा समिती यांच्याकडे कारणे लेखी नमूद करून पुढील बैठकीमध्ये मांडण्यासाठी फेरविचारार्थ परत पाठविता येईल. जर मतभेद कायम राहिले तर, कुलगुरू एक आठवड्याच्या आत कारणे देऊन कुलपतीकडे निर्णयार्थ तो सादर करील आणि असे केल्याबद्दल संबंधित प्राधिकरण, मंडळ किंवा समिती यांच्या सभासदांना कळवील. कुलपतीचा निर्णय आल्यानंतर, कुलगुरू कुलपतीच्या निदेशांनुसार कार्यवाही करील आणि तदनुसार संबंधित प्राधिकरण, मंडळ किंवा समिती यांना कळवील.

(७) कुलगुरूला जर, तातडीने कार्यवाही करण्यासारखी निकडीची परिस्थिती आहे असे रास्त कारणांवरून किंवा विद्यापीठाच्या हितासाठी कोणतीही कार्यवाही करणे आवश्यक आहे, असे वाटले तर, तो त्यास आवश्यक वाटेल अशी कार्यवाही करील आणि ज्या कारणांमुळे निकडीची परिस्थिती निर्माण झाली असल्याबद्दल त्याला खात्री पटली ती कारणे आणि त्याने केलेली कार्यवाही ज्यांनी एरवी या बाबींच्या संबंधात कार्यवाही केली असती त्या प्राधिकरणाला किंवा मंडळाला शक्य तितक्या लवकर लेखी कळवील. निकडीची परिस्थिती खरोखरच होती किंवा कसे, याबद्दल किंवा ज्या बाबतीत विद्यापीठाच्या सेवेत असलेल्या कोणत्याही व्यक्तीला अशा कार्यवाहीमुळे बाधा पोचत नसेल त्या बाबतीत केलेल्या कार्यवाहीबद्दल किंवा दोन्हीबद्दल कुलगुरू आणि प्राधिकरण किंवा मंडळ यांच्यामध्ये मतभेद निर्माण झाले तर ती बाब कुलपतीकडे निर्णयासाठी पाठवण्यात येईल, त्याचा निर्णय अंतिम असेल :

परंतु, ज्या बाबतीत कुलगुरूने केलेल्या अशा कोणत्याही कार्यवाहीमुळे विद्यापीठाच्या सेवेत असलेल्या कोणत्याही व्यक्तीला बाधा पोचत असेल त्याबाबतीत अशा व्यक्तीला, तिला अशा कार्यवाहीची नोटीस मिळाल्याच्या दिनांकापासून तीस दिवसांच्या आत व्यवस्थापन परिषदेकडे अपील दाखल करण्याचा हक्क असेल.

**स्पष्टीकरण.**—या पोट-कलमाच्या प्रयोजनार्थ, कुलगुरूने केलेल्या कार्यवाहीमध्ये विद्यापीठाच्या कोणत्याही कर्मचाऱ्याविरोधात केलेल्या शिस्तभंगविषयक कारवाईचा अंतर्भाव असणार नाही.

(८) ज्या बाबतीत कोणतीही बाब, परिनियम, आदेश किंवा विनियम याद्वारे विनियमित करावयाची असेल परंतु त्यासंबंधात कोणतेही परिनियम, आदेश किंवा विनियम केलेले नसतील किंवा परिनियम, आदेश किंवा विनियम यांत सुधारणा करण्याची निकडीची परिस्थिती असेल तर कुलगुरू त्यास आवश्यक वाटतील असे निदेश देऊन ती बाब त्या वेळेपुरती विनियमित करू शकेल आणि शक्य तितक्या लवकर मान्यतेसाठी व्यवस्थापन परिषदेपुढे किंवा संबंधित प्राधिकरण किंवा मंडळ यांच्यापुढे मांडील. त्याचबरोबर तो यासंबंधात करावयाचे परिनियम, आदेश किंवा यथास्थिति, विनियम यांचा मसुदा विचारार्थ अशा प्राधिकरणापुढे किंवा मंडळापुढे ठेविले :

परंतु, असा निदेश दिल्यापासून सहा महिन्यांच्या आत, हा परिनियम, आदेश किंवा, यथास्थिति, विनियम यात रूपांतरित करावा लागेल, असे करण्यात कसूर केल्यास असा निदेश आपोआपच व्यपगत होईल.

(९) कुलगुरू हा, विद्यापीठ अध्यापकांसाठी नियुक्ती व शिस्तविषयक प्राधिकारी असेल.

(१०) कुलगुरू हा, विद्यापीठातील सहायक कुलसचिवाच्या दर्जाच्या आणि त्याच्याशी समतुल्य व त्यावरील दर्जाच्या अधिकाऱ्यांसाठी नियुक्ती व शिस्तविषयक प्राधिकारी असेल.

(११) विद्यापीठाची प्राधिकरणे किंवा मंडळे किंवा समित्या यांचा अध्यक्ष या नात्याने, कुलगुरूला, प्राधिकरण, मंडळ किंवा समिती यांच्या बैठकीतून एखाद्या सदस्यास, त्याने कामकाजात सतत अडथळे आणण्याचा किंवा ते थांबविण्याचा प्रयत्न केल्यामुळे किंवा सदस्याला न शोभणारी वर्तणूक केल्यामुळे निर्लंबित करण्याचा अधिकार असेल व तो ती बाब त्यानुसार कुलपतीला कळविले.

(१२) कुलगुरू, आदेशांन्वये तरतूद केल्याप्रमाणे नियतकालाने विद्यापीठाच्या कामाचा अहवाल व्यवस्थापन परिषदेसमोर ठेविले.

(१३) कुलगुरूला पुढील अधिकार असतील :—

(क) या अधिनियमाच्या तरतुदीनुसार उच्चशिक्षणाच्या परिसंस्थांना विशेषीकृत अभ्यासांच्या संशोधनासाठी मान्यता देणे ;

(ख) या अधिनियमाच्या तरतुदीनुसार स्वायत्त महाविद्यालये, अधिकारप्रदत्त स्वायत्त महाविद्यालये, किंवा समूह परिसंस्था आणि अधिकारप्रदत्त कौशल्य विकास महाविद्यालये यांना मान्यता देणे ;

(ग) या अधिनियमाच्या तरतुदीनुसार खाजगी कौशल्य शिक्षण प्रदात्यांना मान्यता देणे ;

(घ) खाजगी कौशल्य शिक्षण प्रदाते आणि अधिकारप्रदत्त कौशल्य विकास महाविद्यालये यांमधील प्रशिक्षण तज्ज्ञ म्हणून काम करणाऱ्या आणि विविध व्यावसायिक कौशल्यांमधील विशिष्ट कार्यक्षेत्र तज्ज्ञ आणि कृतिप्रवण उद्योग किंवा कंपनी क्षेत्रामधील तज्ज्ञांना अर्हताप्राप्त अध्यापक म्हणून मान्यता देणे ;

(ङ) पदव्युत्तर पदव्या, डॉक्टरेट व उच्च पदव्या देण्याकरिता प्रबंध किंवा संशोधन निबंध यांच्यासाठी निर्देशीच्या शिफारसप्राप्त नामिकेस मान्यता देणे.

(१४) (क) कुलगुरूस, तो निदेश देईल असा प्र-कुलगुरू किंवा अशी व्यक्ती किंवा अशा व्यक्ती किंवा व्यक्तींचे मंडळ, यांच्याकडून विद्यापीठ, त्याच्या इमारती, प्रयोगशाळा, ग्रंथालये, वस्तुसंग्रहालये, कार्यशाळा व साधनसामग्री यांची आणि तसेच विद्यापीठाकडून चालविण्यात येणारी किंवा विद्यापीठाने मान्यता दिलेली कोणतीही संलग्न, संचालित किंवा स्वायत्त महाविद्यालये, अधिकारप्रदत्त स्वायत्त महाविद्यालये किंवा समूह परिसंस्था, मान्यताप्राप्त किंवा स्वायत्त परिसंस्था, अधिकारप्रदत्त कौशल्य विकास महाविद्यालये किंवा खाजगी कौशल्य शिक्षण प्रदाता, सभागृहे किंवा वसतिगृहे यांची आणि विद्यापीठाच्या परीक्षांची, विद्यापीठाकडून किंवा विद्यापीठाच्या वतीने करण्यात येणारे अध्यापन व इतर कामकाज यांची तपासणी करवून घेण्याचा आणि विद्यापीठ, संलग्न, संचालित किंवा समूह किंवा स्वायत्त महाविद्यालय, अधिकारप्रदत्त स्वायत्त महाविद्यालये किंवा समूह परिसंस्था, मान्यताप्राप्त किंवा स्वायत्त परिसंस्था, अधिकारप्रदत्त कौशल्य विकास महाविद्यालये किंवा खाजगी कौशल्य शिक्षण प्रदाता यांचे प्रशासन किंवा वित्तव्यवस्था यांच्याशी संबंधित कोणत्याही बाबींची त्याच पद्धतीने चौकशी करवून घेण्याचा हक्क असेल :

परंतु, कुलगुरू, संलग्न किंवा स्वायत्त महाविद्यालय, अधिकारप्रदत्त स्वायत्त महाविद्यालय किंवा समूह परिसंस्था, मान्यताप्राप्त किंवा स्वायत्त परिसंस्था, अधिकारप्रदत्त कौशल्य विकास महाविद्यालये किंवा खाजगी कौशल्य शिक्षण प्रदाता यांच्या बाबतीत अशा प्रकारे तपासणी किंवा चौकशी करवून घेण्याच्या उद्देशाबद्दलची नोटीस, अशा संलग्न किंवा स्वायत्त महाविद्यालयाच्या, अधिकारप्रदत्त स्वायत्त महाविद्यालयाच्या किंवा समूह परिसंस्थांच्या, मान्यताप्राप्त किंवा स्वायत्त परिसंस्थांच्या, अधिकारप्रदत्त कौशल्य विकास महाविद्यालयाच्या किंवा खाजगी कौशल्य विकास प्रदात्याच्या व्यवस्थापनाला देईल :

परंतु आणखी असे की, व्यवस्थापनाला, अशी तपासणी किंवा चौकशी होण्यापूर्वी त्यास आवश्यक वाटेल असे अभिवेदन कुलगुरूंकडे करण्याचा हक्क असेल ;

(ख) असे कोणतेही अभिवेदन विचारात घेतल्यानंतर, कुलगुरूला अशी तपासणी किंवा चौकशी करवून घेता येईल किंवा ती चौकशी करणे सोडून देता येईल ;

(ग) व्यवस्थापनाच्या बाबतीत, तपासणी किंवा चौकशी करण्याची व्यवस्था करण्यात आली असेल त्यावेळी व्यवस्थापनाला एक प्रतिनिधी नियुक्त करण्याचा हक्क असेल आणि त्या प्रतिनिधीला अशा तपासणीच्या किंवा चौकशीच्या वेळी हजर राहण्याचा व आपले म्हणणे मांडण्याचा हक्क असेल ;

(घ) ही तपासणी किंवा चौकशी, विद्यापीठाचे विशेषाधिकार देण्यात आलेल्या कोणत्याही महाविद्यालयासंबंधात किंवा परिसंस्थेच्या संबंधात असेल तर, कुलगुरू अशा तपासणीचा किंवा चौकशीचा निष्कर्ष, व्यवस्थापनाला कळवू शकेल ;

(ङ) व्यवस्थापन त्याने करण्याचे योजलेली किंवा केलेली अशी कोणतीही कार्यवाही असेल तर त्याबाबत कुलगुरूला कळवील ;

(च) व्यवस्थापनाने, कुलगुरूकडून निश्चित करण्यात आलेल्या मुदतीत त्याचे समाधान होईल अशी कार्यवाही केली नाही तर, कुलगुरू, व्यवस्थापनावर द्रव्यदंड लादण्यास सक्षम असेल आणि महाविद्यालये किंवा परिसंस्था यातील नवीन प्रवेश बंद करण्याचे निदेश व्यवस्थापनास देईल किंवा या बाबतीत इतर कोणती कार्यवाही करावी ते ठरवील आणि त्याचे अनुपालन करण्यासाठी संबंधित व्यवस्थापनाला तसे कळवील.

(१५) कुलगुरु, व्यवस्थापन परिषदेच्या शिफारशीवरून, संलग्न महाविद्यालयाच्या व्यवस्थापनाच्या संदर्भात विवाद असल्याचे आणि एखाद्या संलग्न महाविद्यालयाच्या, परिसंस्थेच्या व्यवस्थापनाने गुन्हेगारी स्वरूपाच्या अनियमितता किंवा कृती किंवा अकृतीचे किंवा अशा महाविद्यालयाचे किंवा परिसंस्थेचे गैरव्यवस्थापन घडल्याचे विद्यापीठाने नियुक्त केलेल्या चौकशी समितीला प्रथमदर्शनी दिसून आले असेल त्याबाबतीत, असे संलग्न महाविद्यालय, परिसंस्था किंवा अधिकारप्रदत स्वायत्त संस्था किंवा समूह परिसंस्था यांचे दैनंदिन विद्याविषयक व प्रशासकीय कामकाज चालविण्यासाठीच्या विद्यार्थ्यांच्या हितार्थ तात्पुरत्या पर्यायी व्यवस्थेबाबतचा आणि तो विवाद सांविधिकरीत्या मिटविण्यात येईपर्यंत अशा महाविद्यालयाचे दैनंदिन विद्याविषयक व प्रशासकीय कामकाज चालवण्यासाठी आवश्यक व्यवस्था करण्याबाबतचा अहवाल, राज्य शासनाला पाठवील व राज्य शासनाचा याबाबतीतील निर्णय हा अंतिम व बंधनकारक असेल.

(१६) कुलगुरु, या अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये, त्याला प्रदान करण्यात येतील अशा अन्य अधिकारांचा वापर करील व अशी अन्य कर्तव्ये पार पाडील.

प्र-कुलगुरु. १३. (१) प्र-कुलगुरु हा, कुलगुरुनंतरचा, दुसरा विद्याविषयक व कार्यकारी अधिकारी असेल व संपूर्ण विद्यापीठावर त्याची कार्यकक्षा असेल.

(२) प्र-कुलगुरुचे पद धारण करणारी व्यक्ती ही, जिला किमान पंधरा वर्षांचा अध्यापनाचा किंवा संशोधनाचा अनुभव असेल व जिने महाविद्यालयाच्या अथवा परिसंस्थेच्या प्राध्यापकाचे किंवा प्राचार्याचे पद धारण केले असेल अशी व्यक्ती असेल.

(३) प्र-कुलगुरु हा, अधिष्ठाता मंडळ, विद्यापीठ उप-परिसर मंडळ, विद्यापीठ विभाग व आंतर विद्याशाखा अभ्यास मंडळ, महाविद्यालयांतील पदव्युत्तर शिक्षण मंडळ यांचा अध्यक्ष असेल आणि संशोधन व मान्यता समितीचा पदसिद्ध अध्यक्ष असेल.

(४) प्र-कुलगुरु हा, विद्यापीठाचा पूर्णकालिक वेतनी अधिकारी असेल आणि तो, थेट कुलगुरुचे अधीक्षण, संचालन व नियंत्रण यांखाली काम करील.

(५) अन्यथा तरतूद केली असेल त्याव्यतिरिक्त, त्याला अनुज्ञेय असलेले वेतन व भत्ते तसेच त्याच्या सेवेच्या अटी व शर्ती, राज्य शासनाकडून वेळोवेळी निर्धारित करण्यात येतील त्याप्रमाणे असतील.

(६) कुलपती, कुलगुरुशी विचारविनिमय करून, विद्यापीठासाठी प्र-कुलगुरुची नियुक्ती करील.

(७) प्र-कुलगुरुचा पदावधी हा, कुलगुरुच्या पदाच्या अवधीबरोबरच किंवा तो वयाची पासष्ट वर्षे पूर्ण करेपर्यंत, यांपैकी जे लवकर घडेल तेव्हा समाप्त होईल.

(८) प्र-कुलगुरुच्या सेवा शर्तीच्या संबंधातील कलम ११ च्या पोट-कलम (११) च्या तरतुदी, योग्य त्या फेरफारांसह, लागू होतील.

(९) प्र-कुलगुरु हा, कुलगुरुच्या अनुपस्थितीत, प्राधिकरणे, मंडळे व समित्या यांचा अध्यक्ष म्हणून काम पाहील.

(१०) प्र-कुलगुरुचे पद रिक्त होईल किंवा आजारपण किंवा अनुपस्थिती किंवा इतर कोणतेही



कारण यामुळे तो आपल्या पदाची कर्तव्ये पार पाडण्यास असमर्थ झाला असेल तर, त्यावेळी कुलगुरूस, प्र-कुलगुरू कामावर परत रुजू होईपर्यंत, किंवा यथास्थिति, नवीन प्र-कुलगुरू पद ग्रहण करीपर्यंत, प्र-कुलगुरू म्हणून स्थानापन्न करण्याकरिता, प्र-कुलगुरू म्हणून नियुक्ती होण्यास अर्हताप्राप्त अशा योग्य व्यक्तीची नियुक्ती करता येईल.

(११) प्र-कुलगुरूस आपल्या सहीनिशी कुलगुरूला उद्देशून, एक महिन्याची नोटीस देऊन, आपल्या पदाचा राजीनामा देता येईल आणि त्याचा राजीनामा कुलगुरूने स्वीकारणे किंवा उक्त नोटीशीचा कालावधी समाप्त होणे, यापैकी जे अगोदर घडेल त्या दिनांकापासून तो, आपल्या पदावर राहणार नाही.

(१२) जर कुलपतीची अशी खात्री पटली असेल की, प्र-कुलगुरू हा,—

(क) भ्रमिष्ट झाला आहे आणि सक्षम न्यायालयाने त्याला तसे घोषित केले आहे; किंवा

(ख) त्याला नैतिक अधःपतनाचा अंतर्भाव असलेल्या कोणत्याही अपराधाबद्दल न्यायालयाकडून दोषी ठरवण्यात आले आहे; किंवा

(ग) तो अमुक्त नादार झाला आहे आणि सक्षम न्यायालयाने त्याला तसे घोषित केले आहे; किंवा

(घ) तो शारीरिकदृष्ट्या अपात्र झाला आहे आणि दीर्घकाळच्या आजारामुळे किंवा विकलांगतेमुळे त्याची कार्ये पार पाडण्यात तो असमर्थ झाला आहे; किंवा

(ङ) या अधिनियमाच्या तरतुदींचे पालन करण्याचे त्याने बुद्धिपुरस्सर वर्जिले आहे किंवा पालन करण्याचे बुद्धिपुरस्सर नाकारले आहे किंवा सेवेच्या कोणत्याही अटींचा व शर्तींचा भंग केला आहे किंवा पोट-कलम (५) अन्वये राज्य शासनाने विहित केलेल्या कोणत्याही अन्य अटींचा भंग केला आहे किंवा त्याच्याकडे निहित असलेल्या अधिकारांचा दुरुपयोग केला आहे किंवा त्या प्र-कुलगुरूला पदावर पुढे चालू ठेवणे, विद्यापीठाच्या हिताच्या दृष्टीने हानीकारक आहे ; किंवा

(च) तो कोणत्याही पक्षाचा किंवा राजकारणात भाग घेणाऱ्या कोणत्याही संघटनेचा सदस्य आहे किंवा त्या पक्षाशी वा संघटनेशी अन्य प्रकारे संबंधित आहे, किंवा कोणत्याही राजकीय चळवळीत किंवा कार्यात भाग घेत आहे किंवा त्यासाठी मदतीदाखल वर्गणी देत आहे;

तर, कुलगुरूच्या शिफारशीवरून प्र-कुलगुरूला त्याच्या पदावरून दूर करता येईल.

**स्पष्टीकरण.**—या खंडाच्या प्रयोजनांसाठी, कोणताही पक्ष राजकीय पक्ष आहे किंवा कोणतीही संघटना राजकारणात भाग घेते किंवा कोणतीही चळवळ किंवा कार्य या खंडाच्या व्याप्तीमध्ये येते किंवा कसे यासंबंधातील कुलगुरूचा निर्णय अंतिम असेल :

परंतु, खंड (घ), (ङ) आणि (च) अन्वये प्र-कुलगुरूला पदावरून दूर करण्यापूर्वी, कुलपती कडून प्र-कुलगुरूला कारणे दाखविण्याची वाजवी संधी देण्यात येईल.

(१३) प्र-कुलगुरू,—

(क) विद्यापीठाचा पदव्युत्तर अध्यापन, संशोधन व विस्तार कार्यक्रम आणि सहयोगी कार्यक्रम यांसह विद्याविषयक विकास कार्यक्रमांसाठी मुख्य विद्याविषयक नियोजन व विद्याविषयक लेखा अधिकारी असेल ;

(ख) विद्यापीठाकडून शिक्षणातील आणि केंद्रीय शैक्षणिक सेवांमधील गुणवत्ता राखली जात आहे याची सुनिश्चिती करेल ;

(ग) विद्यापीठात बौद्धिक परस्पर संवादाची जोपासना करण्यासाठी आणि संशोधन व विकास आणि उद्योग यांत दुवा साधला जात आहे याची सुनिश्चिती करण्यासाठी जबाबदार असेल ;

(घ) विद्यापीठातील आणि त्यांच्या महाविद्यालयांमध्ये त्यांचे शैक्षणिक कार्यक्रम यांची संबंधित प्राधिकारी, संस्था, समित्या आणि अधिकारी यांच्या मार्फत दीर्घ मुदतीच्या आणि अल्प मुदतीच्या विकास योजनांची अंमलबजावणी यथोचितरीत्या होत आहे याची सुनिश्चिती करील ;

(ङ) संलग्न महाविद्यालये आणि परिसंस्था, स्वायत्त महाविद्यालये आणि परिसंस्था, अधिकारप्रदत्त स्वायत्त महाविद्यालये, समूह परिसंस्था आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्था किंवा पदव्युत्तर केंद्रे यांचे प्राचार्य आणि अध्यापक यांच्या नियुक्तीचे सनियंत्रण करेल ;

(च) या आदेशांमध्ये विहित केलेल्या कार्यपद्धतीनुसार संलग्न महाविद्यालये व परिसंस्था, स्वायत्त महाविद्यालये व परिसंस्था, अधिकारप्रदत्त स्वायत्त परिसंस्था, समूह परिसंस्था आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांचे प्राचार्य आणि अध्यापक यांच्या नियुक्तीला मान्यता देईल किंवा ती काढून घेईल ;

(छ) विद्यापीठ अनुदान आयोग आणि राज्य शासन यांच्या मानकांनुसार महाविद्यालयातील अध्यापकांच्या नियुक्तीकरीता निवड समितीला मान्यता देईल ;

(ज) विद्यापीठाची संचालित महाविद्यालये, प्रशाळा, विभाग, उच्च शिक्षणाच्या परिसंस्था, संशोधन व विशेषीकृत अभ्यास, ज्ञान स्रोत केंद्र, शैक्षणिक सेवा युनिटे, ग्रंथालये, प्रयोगशाळा व वस्तुसंग्रहालये यांच्या आस्थापनाकरिता व्यवस्थापन परिषदेकडे प्रस्तावांची शिफारस करील ;

(झ) विद्यापीठाच्या निधीमधून आणि इतर निधीकरण अभिकरणाकडून मिळालेल्या निधीमधून विद्यापीठास आवश्यक असणाऱ्या संचालक, प्राचार्य, विद्यापीठाचे अध्यापक, दीर्घ सुटी नसलेला विद्याविषयक कर्मचारी- वर्ग, अध्यापकेतर कर्मचारी आणि विद्यापीठास आवश्यक असलेली इतर पदे आणि अशा पदांची अर्हता, पदांचे अनुभव आणि पदांच्या वेतनश्रेणी निर्माण करण्यावर विचार करील आणि तसे प्रस्ताव व्यवस्थापन परिषदेकडे सादर करील ;

(ञ) विद्यापीठाच्या सहयोगी आणि विकासविषयक कार्यक्रमांसाठी निधी जमवण्याकरिता, बाह्य निधीकरण अभिकरणांबरोबर मुख्य संपर्क अधिकारी म्हणून काम करील आणि त्याच्या योग्य विनियोगावर नियंत्रण ठेवील ;

(ट) कलम १०७ अन्वये सर्वसमावेशक सम्यक योजना, वार्षिक योजना तयार करण्याकरिता आणि भौगोलिक अधिकारिता क्षेत्रात पद्धतशीर क्षेत्रीय सर्वेक्षण हाती घेण्याकरिता जबाबदार असेल ;

(ठ) विद्यापीठ, महाविद्यालये आणि राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय परिसंस्था आणि वैज्ञानिक, औद्योगिक व वाणिज्यिक संघटनांमधील सहयोगाची जोपासना करण्यासाठी आणि त्यास प्रोत्साहन देण्यासाठी संपर्क प्रस्थापित करण्यास जबाबदार असेल ;

(ड) वेगवेगळ्या विकासात्मक आणि सहयोगी कार्यक्रमांतर्गत साध्य केलेल्या प्रगतीचा वार्षिक अहवाल कुलगुरूला सादर करण्यास जबाबदार असेल, आणि कुलगुरू हा अहवाल व्यवस्थापन परिषदेसमोर मांडील ;

(ढ) या अधिनियमाअन्वये विहित केलेल्या किंवा कुलगुरूने वेळोवेळी त्यास नेमून दिलेल्या अशा इतर अधिकारांचा वापर करील व अशी इतर कर्तव्ये पार पाडील.

१४. (१) कुलसचिव हा विद्यापीठाचा मुख्य प्रशासकीय अधिकारी असेल. तो पूर्णकालिक वेतनी कुलसचिव. अधिकारी असेल व तो थेट कुलगुरूचे अधीक्षण, संचालन व नियंत्रण याखाली काम करील.

(२) कुलसचिवाची निवड करण्याच्या प्रयोजनासाठी असलेली अर्हता व अनुभव हा विद्यापीठ अनुदान आयोगाने घालून दिल्याप्रमाणे व राज्य शासनाने मान्यता दिल्याप्रमाणे असेल.

(३) या अधिनियमाअन्वये नियुक्तीच्या प्रयोजनासाठी घटित करण्यात आलेल्या निवड समितीच्या शिफारशीवरून कुलगुरूकडून कुलसचिवाची नियुक्ती करण्यात येईल.

(४) कुलसचिवाची नियुक्ती पाच वर्षांच्या कालावधीसाठी किंवा नियत वयोमान पूर्ण करेपर्यंत, यापैकी जे अगोदर घडेल इतक्या कालावधीसाठी करण्यात येईल आणि तो या प्रयोजनार्थ घटित केलेल्या निवड समितीच्या शिफारशीवरील निवडीद्वारे, तो ज्या विद्यापीठात काम करत असेल अशा विद्यापीठात, पाच वर्षांच्या फक्त एकाच कालावधीसाठी पुनर्नियुक्तीकरिता पात्र असेल.

(५) कुलसचिवाचे पद रिक्त झाले असेल तेव्हा किंवा आजारपणाच्या कारणामुळे, किंवा अनुपस्थित असल्यामुळे किंवा अन्य कोणत्याही कारणामुळे, सहा महिन्यांपेक्षा अधिक नसेल इतक्या कालावधीसाठी, कुलसचिव आपल्या पदाची कर्तव्ये पार पाडण्यास असमर्थ असेल त्याबाबतीत, कुलगुरू, कुलसचिव पदावर रुजू होईपर्यंत किंवा यथास्थिति, नवीन कुलसचिव पदावर रुजू होईपर्यंत कुलसचिव म्हणून काम पाहण्यासाठी योग्य त्या व्यक्तीची नियुक्ती करील.

(६) कुलसचिव, -

(क) अधिसभेचा, व्यवस्थापन परिषदेचा, विद्यापरिषदेचा आणि या अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये विहित करण्यात आलेल्या अशा इतर प्राधिकरणांचा, मंडळांचा व समित्यांचा सदस्य-सचिव म्हणून काम पाहील ;

(ख) अध्यापक, दीर्घ सुटी नसलेला विद्याविषयक कर्मचारी वर्ग व सहायक कुलसचिवाच्या दर्जाचे अधिकारी व तत्सम दर्जाची किंवा त्यापेक्षा वरच्या दर्जाची पदे धारण करणारे इतर अधिकारी यांव्यतिरिक्त विद्यापीठाच्या अन्य कर्मचाऱ्यांचा नियुक्ती व शिस्तभंगविषयक प्राधिकारी असेल. कुलसचिवाच्या निर्णयामुळे बाधित झालेल्या कोणत्याही व्यक्तीस असा निर्णय त्यास कळवल्याच्या दिनांकापासून तीस दिवसांच्या आत कुलगुरूकडे अपील दाखल करता येईल ;

(ग) विद्यापीठाच्या अभिलेखांचा, सामाईक शिक्क्याचा आणि व्यवस्थापन परिषद त्याच्याकडे सुपूर्द करील, अशा विद्यापीठाच्या इतर मालमत्तेचा अभिरक्षक असेल ;

(घ) कुलगुरूकडून मान्य करण्यात येईल अशा कार्यक्रमानुसार विद्यापीठाच्या विविध प्राधिकरणाच्या व मंडळांच्या निवडणुका घेईल ;

(ङ) प्राधिकरणे, मंडळे किंवा समित्या यांच्याकडून वेळोवेळी मान्यता देण्यात येईल असे परिणियम व विनियम यांचे एक निदेशपुस्तक तयार करील व ते अद्ययावत ठेवील आणि प्राधिकरणांचे सर्व सदस्य व विद्यापीठाचे अधिकारी यांना ते उपलब्ध करून देईल ;

(च) प्रशासनात सुधारणा करण्यासंबंधातील तक्रारी व सूचना तो स्वीकारील व त्यांवर योग्य ती कार्यवाही करण्यासंबंधात विचार करील ;

एच ४०२६-६अ

(छ) कुलगुरुकडून निदेश देण्यात येईल अशी व्यक्ती किंवा अशा व्यक्ती किंवा व्यक्तींचे मंडळ यांच्याकडून विद्यापीठ, त्याच्या इमारती, वर्गखोल्या, प्रयोगशाळा, ग्रंथालये, ज्ञान स्रोत केंद्र, वस्तु संग्रहालये, कार्यशाळा व साधनसामग्री यांची तपासणी करण्यासाठी आवश्यक ते सहाय्य देईल ;

(ज) विद्यापीठातील आणि संलग्न महाविद्यालयांतील अध्यापकेतर कर्मचाऱ्यांसाठी प्रशिक्षण व दिशानिर्देशन कार्यक्रम आयोजित करील ;

(झ) विद्यापीठाच्या प्राधिकरणाच्या निर्णयांच्या अधीन राहून, विद्यापीठाच्या वतीने करार करण्याचा, दस्तऐवजांवर स्वाक्षरी करण्याचा व अभिलेख अधिप्रमाणित करण्याचा त्याला अधिकार असेल ;

(ञ) विद्यापीठाच्या प्रत्येक सहा महिन्यांचा विकास कार्यक्रमांचा एक अहवाल व्यवस्थापन परिषदेसमोर सादर करील ;

(ट) राज्य शासनाकडे आणि इतर बाह्य अभिकरणांकडे माहिती सादर करण्यासाठी विद्यापीठाच्या अधिष्ठात्याकडून, वित्त व लेखा अधिकाऱ्याकडून आणि कोणत्याही इतर अधिकाऱ्यांकडून, ती माहिती मागवण्याचा अधिकार असेल ;

(ठ) या अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये वेळोवेळी विहित केलेल्या किंवा कुलगुरुकडून आणि प्र-कुलगुरुकडून त्यास नेमून देण्यात आलेल्या अशा इतर अधिकारांचा वापर करील व अशी इतर कर्तव्ये पार पाडील.

विद्याशाखेचा  
अधिष्ठाता.

१५. (१) प्रत्येक विद्याशाखेसाठी एक अधिष्ठाता असेल, जो पूर्णकालिक वेतनी अधिकारी असेल.

(२) या अधिनियमाच्या प्रयोजनार्थ निवड समितीच्या शिफारशींवरून कुलगुरुकडून अधिष्ठात्याची नियुक्ती करण्यात येईल.

(३) अधिष्ठात्याचा पदावधी हा कुलगुरुच्या पदावधीइतकाच किंवा त्याचे नियत वयोमान पूर्ण होईपर्यंत, यांपैकी जे अगोदर घडेल तोपर्यंत असेल :

परंतु, नवीन अधिष्ठात्याची यथोचितरीत्या नियुक्ती होईतोपर्यंत नवीन कुलगुरुस, अधिष्ठात्याची सेवा पुढे चालू ठेवता येईल :

परंतु आणखी असे की, मृत्यू, राजीनामा किंवा अन्यथा, या कारणामुळे कुलगुरुचे पद रिक्त झाल्यास, अधिष्ठाता हा, त्या शैक्षणिक वर्षाच्या अखेरपर्यंत पद धारण करणे सुरू ठेवील.

(४) अधिष्ठात्याच्या निवडीच्या प्रयोजनार्थ असलेली अर्हता व अनुभव, प्राध्यापक किंवा प्राचार्य पदाची जी अर्हता असेल तीच अर्हता असेल आणि अध्यापनाचा व संशोधनाचा एकूण पंधरा वर्षांपेक्षा कमी नसेल असा अनुभव असेल.

(५) कुलगुरुस, आवश्यक असेल अशा संबंधित अभ्यास मंडळाच्या विशिष्ट गटाकरिता साहाय्य, समर्थन आणि समन्वयन यासाठी सहयोगी अधिष्ठात्याचे नामनिर्देशन करता येईल आणि अशा नामनिर्देशनासाठी किमान अर्हता व अनुभव हा, अधिष्ठात्याच्या पदाप्रमाणेच असेल :

परंतु, अशा सहयोगी अधिष्ठात्याला देय असणारे वेतन, भत्ते व इतर वित्तीय लाभ हे, विद्यापीठाच्या स्वतःच्या स्रोतामधून भागविण्यात येतील आणि उक्त प्रयोजनासाठी राज्य शासनावर, कोणतेही प्रत्यक्ष किंवा अप्रत्यक्ष, दायित्व असणार नाही.

१६. अधिष्ठाता हा,—

अधिष्ठात्याचे  
अधिकार व  
कर्तव्ये.

(क) अध्यापनाचा व संशोधनाचा दर्जा व त्याच्या विद्याशाखेतील अध्यापकांचे प्रशिक्षण यांसह विद्याविषयक विकास, शैक्षणिक गुणवत्ता राखणे यासंबंधात विद्यापरिषदेने मान्यता दिलेल्या कार्यक्रमाचे विद्याविषयक नियोजन आणि विद्याविषयक लेखाजोखा तसेच विद्याविषयक धोरणांची अंमलबजावणी करण्यास जबाबदार असेल. तो थेट कुलगुरूचे अधीक्षण, निदेशन आणि नियंत्रण यांखाली काम करील ;

(ख) उच्च शिक्षणाच्या विविध विद्याविषयक व प्रशासकीय कार्यक्रमांकरिता गुणवत्तापूर्ण मापदंड किंवा परिमाणे यांचा विकास व त्यांचे उपयोजन याकरिता जबाबदार असेल ;

(ग) गुणवत्तापूर्ण शिक्षणाकरिता हितावह असणारी अध्ययनार्थी केंद्रित परिस्थिती निर्माण करणे सुकर करील ;

(घ) गुणवत्तेशी संबंधित असणाऱ्या संस्थात्मक प्रक्रियेवर विद्यार्थी, अध्यापक, अध्यापकेतर कर्मचारीवर्ग, पालक व इतर हितसंबंधित व्यक्ती यांच्याकडून मिळणाऱ्या प्रतिसादाचा पाठपुरावा करण्याची व्यवस्था करील ;

(ङ) अंतर्गत गुणवत्ता हमी कक्षाने तपशील दिल्याप्रमाणे अध्यापनाचा दर्जा राखण्याकरिता आवश्यक आहे त्याप्रमाणे उचित कार्यवाही सुरू आहे याची सुनिश्चिती करील ;

(च) विद्यार्थ्यांद्वारे अध्यापक मूल्यन होत आहे आणि त्याचा अहवाल संबंधित विद्यापीठ प्राधिकाऱ्यांकडे पाठविला आहे याची सुनिश्चिती करील ;

(छ) शैक्षणिक परिसंस्थांमधील गुणवत्ता निर्धारण व मानांकन करण्याशी संबंधित असणाऱ्या विविध राष्ट्रीय स्तरावरील संस्थांकडून निश्चित करण्यात आल्याप्रमाणे उच्च शिक्षणाच्या विविध गुणात्मक मापदंडावरील माहितीचा प्रसार करण्याकरिता जबाबदार असेल ;

(ज) गुणवत्तेशी संबंधित विषयांवर आंतर परिसंस्थात्मक व अंतर्गत परिसंस्थात्मक कार्यशाळा, चर्चासत्रे आयोजित करील व गुणात्मक गटांचे प्रचालन करील ;

(झ) चांगल्या प्रथांचा स्वीकार व प्रसार करणे यांसह गुणवत्तेशी संबंधित असलेल्या कार्यक्रमांचे समन्वयन करणे, संस्थात्मक गुणवत्ता कायम राखणे व गुणवत्तेत वाढ करणे, या प्रयोजनार्थ व्यवस्थापन माहिती यंत्रणेमार्फत संस्थात्मक आधारसामग्रीचा विकास व परिरक्षण करील ;

(ञ) उच्च शिक्षणामधील गुणवत्तापूर्ण संस्कृतीच्या विकासासाठी जबाबदार असेल ;

(ट) संबंधित गुणवत्ता हमी मंडळांनी विहित नमुन्यात विकसित केलेले गुणवत्तेचे परिमाण किंवा निर्धारण निकष यांच्यावर आधारित त्याच्या विद्याशाखेमधील कार्यक्रमांचा वार्षिक गुणवत्ता हमी अहवाल तयार करील ;

(ठ) वार्षिक गुणवत्ता हमी अहवालाच्या आधारे उच्च शिक्षणाच्या गुणवत्ता निकषाचा द्वि-वार्षिकी विकास करण्यासाठी आणि अविभाज्य युनिटांची श्रेणीव्यवस्था लावण्यासाठी जबाबदार असेल ;

(ड) राज्य गुणवत्ता हमी कक्षाशी अधिस्वीकृतीपूर्व आणि अधिस्वीकृतीत्तर गुणवत्ता निर्धारण, शाश्वतता व वाढीचे प्रयत्न यासंबंधात विचारांची देवघेव करील ;

(ढ) अधिछात्रवृत्ती, प्रवासी अधिछात्रवृत्ती, शिष्यवृत्ती, छात्रवृत्ती, पदके व बक्षिसे देण्यासाठी व्यवस्थापन परिषदेकडे प्रस्तावांची शिफारस करील व ते देण्यासाठी विनियम करील ;

(ण) आंतरविद्याशाखा आणि क्षेत्रीय किंवा प्रादेशिक अभ्यासक्रम चालविण्यासाठी साधनभूत केंद्रे, ज्ञान स्रोत केंद्रे, विज्ञान व तंत्रज्ञान केंद्रे उद्योजकता विकास व उद्योग नवसंशोधन केंद्र, बौद्धिक संपदा हक्क केंद्र, कार्यशाळा, छंद केंद्रे, वस्तुसंग्रहालये इत्यादींसारख्या सामाईक सुविधा पुरविण्यासाठी विद्यापरिषदेच्या प्रस्तावांमार्फत व्यवस्थापन परिषदेकडे शिफारस करील ;

(त) विद्यापीठ विभाग, महाविद्यालयांतील आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्थांतील पदव्युत्तर विभाग यांमधील अध्यापनाचा व संशोधनचा दर्जा राखण्यासाठी संशोधन कार्यक्रमांवर नियंत्रण ठेविले, त्यांचे विनियमन करील व त्यांचा समन्वय साधील.

(थ) विद्यापीठ विभाग, महाविद्यालयातील व मान्यताप्राप्त परिसंस्थांतील पदव्युत्तर विभाग यांमध्ये पदव्युत्तर अभ्यासक्रम चालविण्यासाठी विद्यापरिषदेकडे शिफारस करील ;

(द) महाविद्यालयातील, स्वायत्त महाविद्यालयांतील व परिसंस्थांतील, अधिकारप्रदत्त स्वायत्त महाविद्यालयातील, समूह परिसंस्थेतील व मान्यताप्राप्त परिसंस्थेतील पदव्युत्तर विभागात पदव्युत्तर अध्यापक व संशोधन मार्गदर्शक यांच्या मान्यतेच्या मानकांची विद्यापरिषदेकडे शिफारस करील ;

(ध) महाविद्यालये, स्वायत्त महाविद्यालये, अधिकारप्रदत्त स्वायत्त महाविद्यालये, समूह परिसंस्था आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांमधील पदवीपूर्व विभागांमधील पदवीपूर्व अध्यापक व प्रकल्प मार्गदर्शक यांच्या मान्यतेच्या मानकांची विद्यापरिषदेकडे शिफारस करील ;

(न) विद्यापीठ प्राधिकरणांनी शिफारस केलेली महाविद्यालये, परिसंस्था, स्वायत्त महाविद्यालये व परिसंस्था, अधिकारप्रदत्त स्वायत्त महाविद्यालये किंवा समूह परिसंस्था, अधिकारप्रदत्त कौशल्य विकास महाविद्यालये, अधिकारप्रदत्त कौशल्य विकास खाजगी परिसंस्था यांद्वारे चालविण्यात येतील अशा प्रमाणपत्र किंवा पदविका किंवा प्रगत पदविका किंवा सहयोगी पदवी कार्यक्रम यांचे मान्यताप्राप्त अध्यापक म्हणून उद्योग किंवा खाजगी व्यवसाय कौशल्य विकास कंपन्या किंवा खाजगी कौशल्य विकास प्रदाता परिसंस्था यात कार्यरत असणाऱ्या तज्ज्ञांच्या मान्यतेच्या मानकांची विद्यापरिषदेकडे शिफारस करील ;

(प) विद्याशाखेतील पदवीपूर्व अध्यापन, पदव्युत्तर अध्यापन व संशोधन यासाठी जबाबदार असेल आणि अध्यापनाच्या व संशोधनाच्या दर्जाबाबत सुनिश्चिती करील ;

(फ) त्याच्या कार्यक्षेत्रातील विद्याशाखांच्या विद्याविषयक विकासाच्या सुनिश्चितीसाठी आणि त्याच्या विद्याशाखेच्या संबंधात अभ्यास मंडळे, विद्याशाखा, विद्यापरिषद, व्यवस्थापन परिषद आणि परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ यांच्या निर्णयाच्या योग्य अंमलबजावणीसाठी जबाबदार असेल ;

(ब) आदर्श उत्तरांसह प्रश्नसंग्रह तयार करण्यासाठी, जो सतत अद्ययावत करण्यासाठी व त्यात वाढ करण्यासाठी, जबाबदार असेल ;

(भ) विद्यापरिषदेने निदेश दिल्यावर, विद्यापीठ विभागात, संलग्न किंवा संचालित किंवा स्वायत्त, अधिकारप्रदत्त स्वायत्त महाविद्यालय किंवा समूह परिसंस्था किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था यातील विद्याशाखेतील कोणत्याही विद्याविषयक उपक्रमात केलेल्या कोणत्याही गैरव्यवहारांची चौकशी करील आणि याबाबतच्या निष्कर्षाचा एक अहवाल विद्यापरिषदेला सादर करील.

(म) विद्याशाखेतील विद्यार्थ्यांच्या तक्रारींचे निवारण करण्यासाठी आवश्यक ते सहाय्य देईल ;

(य) विद्याशाखेतील विद्यापरिषदेकडे सादर करण्यासाठी अधिछात्रवृत्त्या, शिष्यवृत्त्या व इतर विशेषोपाधी देण्याबाबतचे प्रस्ताव तयार करील ;

(यक) विद्यापीठाच्या विविध प्राधिकरणांना किंवा मंडळांना, राज्य शासनाला, केंद्र सरकारला, केंद्रीय शैक्षणिक आयोगांना किंवा परिषदांना, आयोगाला आणि अशा इतर कोणत्याही मंडळाला आवश्यक असल्याप्रमाणे अहवाल तयार करील;

(यख) या अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये विहित केल्याप्रमाणे किंवा कुलगुरु किंवा प्र-कुलगुरु यांनी वेळोवेळी त्याला नेमून दिल्याप्रमाणे अशा अधिकारांचा वापर करील आणि अशी इतर कर्तव्ये पार पाडील.

१७. (१) संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ, हा पूर्णकालिक वेतनी अधिकारी असेल आणि तो थेट कुलगुरुच्या निदेशनाखाली व नियंत्रणाखाली काम करील. तो, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळाचे पर्यवेक्षण, निदेशन व मार्गदर्शन यांअन्वये आपली कार्ये पार पाडील आणि परीक्षा व मूल्यमापन मंडळाने आखलेली धोरणे व निदेशकतत्त्वे यांची अंमलबजावणी करण्यामध्ये लक्ष घालील. संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ.

(२) संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ याच्या निवडीच्या प्रयोजनार्थ असणारी अर्हता व अनुभव हा, राज्य शासनाकडून, **राजपत्रात** प्रसिद्ध केलेल्या, आदेशाद्वारे, विहित करण्यात येईल त्याप्रमाणे असेल.

(३) संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ याची नियुक्ती, या अधिनियमान्वये या प्रयोजनासाठी घटित करण्यात आलेल्या निवड समितीच्या शिफारशीवरून कुलगुरुकडून करण्यात येईल :

परंतु, संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ याची नियुक्ती करताना, शिक्षणात तंत्रज्ञानाचा वापर करण्याची क्षमता सिद्ध केलेल्या व्यक्तींना पसंती देण्यात येईल.

(४) संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ याची नियुक्ती पाच वर्षांसाठी किंवा त्याचा नियत सेवावधी पूर्ण होईतोपर्यंत, यांपैकी जे अगोदर घडेल, तोपर्यंतच्या मुदतीसाठी करण्यात येईल आणि तो या प्रयोजनार्थ घटित केलेल्या निवड समितीच्या शिफारशीवरून निवडीद्वारे तो ज्या विद्यापीठात काम करित असेल त्या विद्यापीठात फक्त पाच वर्षांच्या आणखी एका मुदतीसाठी, पुनर्नियुक्तीस पत्र असेल.

(५) संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ, हा —

(क) विद्यापीठाच्या परीक्षा, चाचणी परीक्षा घेणे व मूल्यमापन करणे व त्यांचे निकाल जाहीर करणे या गोष्टींचा मुख्य प्रभारी अधिकारी असेल ;

(ख) परीक्षा व मूल्यमापन मंडळाचा तसेच प्राश्निक, परीक्षक व नियामक यांच्या नियुक्तीसाठी घटित करण्यात आलेल्या समित्यांव्यतिरिक्त मंडळाकडून नियुक्त करण्यात आलेल्या समित्यांचा सदस्य-सचिव असेल ;

(ग) परीक्षा व चाचणी परीक्षा घेणे, मूल्यमापन करणे व त्यांचे निकाल वेळेत जाहीर करणे यांसाठी आवश्यक ती सर्व व्यवस्था करण्यासाठी जबाबदार असेल ;

(घ) परीक्षा व मूल्यमापन मंडळाशी विचारविनिमय करून परीक्षा व मूल्यमापन योग्य व सुरळीतपणे पार पाडण्यासाठी प्रक्रिया तयार करील आणि तिची अंमलबजावणी करील ;

(ङ) परीक्षा व मूल्यमापन मंडळाची मान्यता मिळाल्यानंतर, परीक्षांचे वेळापत्रक आधीच तयार करून ते जाहीर करील ;

(च) प्रश्नपत्रिका छापून घेण्याची व्यवस्था करील ;

(छ) गैरप्रकारांच्या प्रसंगी किंवा परिस्थितीची तशी गरज असेल तर परीक्षा पुढे ढकलील अथवा अंशतः किंवा पूर्णतः रद्द करील आणि कुलगुरुशी विचारविनिमय करून असे गैरप्रकार केल्याचा ज्यांच्यावर आरोप असेल अशा कोणत्याही व्यक्ती किंवा व्यक्तींच्या गटांविरुद्ध किंवा महाविद्यालयांविरुद्ध किंवा परिसंस्थेविरुद्ध शिस्तभंगाची कारवाई करील किंवा कोणतीही दिवाणी किंवा फौजदारी कार्यवाही सुरू करील ;

(ज) आवश्यक असेल त्या बाबतीत, परीक्षांशी व मूल्यमापनाशी संबंधित असलेले आणि परीक्षांच्या व मूल्यमापनाच्या बाबतीत गैरप्रकारांबद्दल दोषी असल्याचे आढळून आलेले परीक्षेतील उमेदवार, प्राशिनक, परीक्षक, नियामक किंवा अन्य कोणत्याही व्यक्ती यांच्यावर शिस्तभंगाची कारवाई करील ;

(झ) विद्यापीठाच्या परीक्षांच्या व मूल्यमापनाच्या निकालाचे वेळोवेळी पुनर्विलोकन करील व त्यासंबंधातील अहवाल परीक्षा व मूल्यमापन मंडळाला सादर करील ;

(ञ) विद्यापीठाकडून घेण्यात आलेल्या प्रत्येक परीक्षेचा व मूल्यमापनाचा निकाल त्या विशिष्ट पाठ्यक्रमाच्या परीक्षेच्या अखेरच्या दिनांकापासून तीस दिवसांच्या आत जाहीर करण्याचा आटोकाट प्रयत्न करील आणि कोणत्याही परिस्थितीत, कलम ८९ मध्ये तरतूद केल्याप्रमाणे उशिरात उशिरा पंचेचाळीस दिवसांच्या आत निकाल जाहीर करील आणि विलंब झाल्यास, त्याबाबतची कारणे नमूद करून, एक सविस्तर अहवाल तयार करील ;

(ट) परीक्षा व मूल्यमापन मंडळाने घेतलेल्या सर्व विद्याविषयक व प्रशासकीय निर्णयांची अंमलबजावणी करण्याकरिता आवश्यक ती सर्व उपाययोजना करील ;

(ठ) परीक्षा व मूल्यमापन प्रक्रियेसंबंधात विविध विद्यापीठ प्राधिकरणांनी घेतलेले निर्णय अंमलात आणील ;

(ड) पदवीपूर्व, पदव्युत्तर या दोन्ही स्तरांवर आणि इतर अध्यापन कार्यक्रमांमध्ये पसंतीवर आधारित श्रेयांक पद्धतीच्या संदर्भातील सर्व धोरणात्मक व कार्यचालनात्मक निर्णय अंमलात आणील ;

(ढ) अध्यापकांना बोधात्मक व ज्ञानात्मक निर्धारण, प्रश्नसंग्रह तयार करणे व त्यांचा वापर करणे, प्रश्नपत्रिका तयार करताना व परीक्षा, चाचण्या घेताना व मूल्यमापन करताना तंत्रज्ञानाचा वापर करणे त्यांसारख्या निर्धारण प्रक्रियेमधील नवीन प्रवाहांची ओळख करून देण्याच्या हेतूने, अध्यापकांसाठी संबंधित विषयांची कार्यशाळा आयोजित करील ;

(ण) परीक्षा घेणे व मूल्यमापन करणे या संपूर्ण प्रक्रियेमध्ये माहिती व संदेशवहन तंत्रज्ञानाच्या अभिनव व परिणामक वापराची सुनिश्चिती करील ;

(त) परीक्षांमध्ये उमेदवारांच्या कामगिरीचे उचित निर्धारण करण्याची व्यवस्था करील आणि निकाल प्रक्रिया पार पाडील ;

(थ) सर्व पदवी परीक्षांच्या उत्तरपत्रिकांचे केंद्रीय निर्धारण पद्धतीमार्फत निर्धारण करण्यात आल्याबाबत सुनिश्चिती करील ;

(द) विद्यापीठ, संलग्न किंवा संचालित महाविद्यालये किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांमधील प्रत्येक अध्यापक व अध्यापकेतर कर्मचारी, विद्यापीठाच्या परीक्षा व मूल्यमापन प्रक्रियेमध्ये आवश्यक ते सहाय्य व सेवा देत आहेत याची सुनिश्चिती करील ;

(ध) परीक्षा व मूल्यमापन मंडळाने त्याच्याकडे नेमून देण्यात आलेली अशी इतर सर्व कर्तव्ये व कार्ये पार पाडील ;



(न) परीक्षा व मूल्यमापन मंडळाची उद्दिष्टे साध्य करण्यासाठी विद्यापीठ प्राधिकरणांकडून त्याला नेमून देण्यात येईल असे इतर कोणतेही नियुक्तकार्य हाती घेईल आणि विद्यापीठाची उद्दिष्टे साध्य झाली आहेत याची सुनिश्चिती करील ;

(प) या अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये विहित करण्यात येतील किंवा कुलगुरूकडून आणि प्र-कुलगुरूकडून वेळोवेळी, त्यास नेमून देण्यात येतील अशा इतर अधिकारांचा वापर करील व अशी इतर कर्तव्ये पार पाडील.

१८. (१) वित्त व लेखा अधिकारी हा, विद्यापीठाचा प्रमुख वित्त, लेखा व लेखापरीक्षा अधिकारी वित्त व लेखा असेल. तो पूर्णकालिक वेतनी अधिकारी असेल व थेट कुलगुरूच्या पर्यवेक्षणाखाली, निदेशनाखाली अधिकारी. व नियंत्रणाखाली काम करील.

(२) वित्त व लेखा अधिकारी ही, त्यास पाच वर्षांपेक्षा कमी नसेल इतका व्यावसायिक अनुभव असलेली सनदी लेखापाल किंवा परिव्यय लेखापाल अशी व्यक्ती असेल.

(३) पोट-कलम (२) मध्ये, विनिर्दिष्ट केलेली अर्हता व अनुभव धारण करणारी व्यक्ती नियुक्त केली जाऊ शकत नसेल तेथे, उप संचालकाच्या दर्जाहून कमी दर्जा नसलेले पद धारण करणाऱ्या राज्य वित्त व लेखा सेवेतील शासकीय अधिकाऱ्यांमधून वित्त व लेखा अधिकाऱ्याची नियुक्ती करण्यात येईल.

(४) वित्त व लेखा अधिकाऱ्याची नियुक्ती या अधिनियमाच्या प्रयोजनार्थ घटित केलेल्या निवड समितीच्या शिफारशीवरून कुलगुरूकडून करण्यात येईल.

(५) वित्त व लेखा अधिकाऱ्यांची नियुक्ती ही, पाच वर्षांच्या मुदतीसाठी किंवा त्याचा नियत सेवावधी पूर्ण होईपर्यंत, यांपैकी जे अगोदर घडेल, तोपर्यंतच्या मुदतीसाठी असेल आणि तो त्या विद्यापीठात पुनर्नियुक्तीस पात्र असणार नाही.

(६) वित्त व लेखा अधिकारी,—

(क) विद्यापीठाच्या निधींवर सर्वसाधारण देखरेख ठेवील आणि विद्यापीठाच्या वित्तव्यवस्थेसंबंधात कुलगुरूला सल्ला देईल ;

(ख) कुलगुरूच्या मान्यतेने विद्यापीठाच्या उद्दिष्टांच्या पुष्ट्यर्थ, निधी, मालमत्ता व गुंतवणुका तसेच विश्वस्तव्यवस्था व दान करण्यात आलेली मालमत्ता धारण करील व त्यांचे व्यवस्थापन करील ;

(ग) वर्षातील आवर्ती व अनावर्ती खर्च, विद्यापीठाने त्याकरिता निश्चित केलेल्या मर्यादांपेक्षा अधिक होत नाही आणि तसेच, वाटप करावयाच्या सर्व रकमा ह्या, ज्या प्रयोजनासाठी देण्यात आलेल्या आहेत किंवा त्या रकमांचे नियतवाटप करण्यात आलेले आहे त्याच प्रयोजनांसाठी त्या खर्च केल्या जातात, याची खात्री करील ;

(घ) रोख रक्कम व बँकेतील शिल्लक रकमा आणि गुंतवणुका यांच्या स्थितीवर लक्ष ठेवील ;

(ङ) उत्पन्न वसुलीच्या कार्यपद्धतीवर आणि प्रगतीवर लक्ष ठेवून उत्पन्नाचे प्रभावी व्यवस्थापन केले जात असल्याची सुनिश्चिती करील, आणि त्याबाबतीत अनुसरावयाच्या पद्धतीबाबत कुलगुरूला सल्ला देईल ;

(च) महाराष्ट्र विद्यापीठ लेखा संहितेनुसार खंड (क) ते (ड) खालील कर्तव्ये पार पाडील ;

(छ) विद्यापीठाच्या लेखांची नियमितपणे लेखापरीक्षा करून घेईल ;

(ज) इमारती, जमीन, साधनसामग्री, यंत्रसामग्री आणि इतर मत्ता यांच्या नोंदवहा अद्ययावत ठेवल्या जात आहेत आणि तसेच या मत्तांची आणि विद्यापीठांची सर्व कार्यालये, संचालित महाविद्यालये, कार्यशाळा व भांडारे यांमधील इतर उपभोग्य साहित्याची नियमितपणे प्रत्यक्ष पडताळणी केली जात आहे आणि त्यांचा मेळ बसविला जात आहे, यांची खात्री करील ;

(झ) सहायक कुलसचिवाच्या किंवा त्याच्या समकक्ष आणि त्यापेक्षा वरिष्ठ दर्जाच्या, विद्यापीठाच्या कोणत्याही विद्याविषयक सदस्याकडून किंवा दीर्घ सुटी नसलेला विद्याविषयक कर्मचारीवर्ग यांच्याकडून किंवा अधिकाऱ्याकडून अनधिकृत खर्च किंवा इतर वित्तीय अनियमितता याबद्दल स्पष्टीकरण मागण्यात यावे, असे कुलगुरूला सूचित करील ;

(ञ) विद्यापीठाचे अध्यापक, दीर्घ सुटी नसलेला विद्याविषयक कर्मचारीवर्ग आणि सहायक कुलसचिव दर्जाचा किंवा समकक्ष आणि त्यापेक्षा वरिष्ठ दर्जाचा अधिकारी यांव्यतिरिक्त अध्यापकेतर कोणतेही सदस्य, यांच्याकडून कोणत्याही विशिष्ट प्रकरणातील अनधिकृत खर्च किंवा अनियमितता यांबद्दल स्पष्टीकरण मागण्यात यावे, असे कुलसचिवाला सूचित करील आणि कसूरदार व्यक्तींवर शिस्तभंगाची कारवाई करण्याची शिफारस करील ;

(ट) आपल्या वित्तीय जबाबदाऱ्या योग्य रीतीने पार पाडण्यासाठी कोणतेही कार्यालय, केंद्र, प्रयोगशाळा, संचालित महाविद्यालय, विद्यापीठाचा विभाग किंवा विद्यापीठाची परिसंस्था यांच्याकडून त्यास आवश्यक वाटेल अशी कोणतीही माहिती आणि विवरणे मागवील ;

(ठ) वित्त व लेखा समितीच्या बैठकीची कार्यवृत्ते ठेवील ;

(ड) वित्त व लेखा समितीला आणि व्यवस्थापन परिषदेला वार्षिक वित्तीय अंदाज (अर्थसंकल्प), लेखांचे विवरणपत्र आणि लेखापरीक्षा अहवाल सादर करून उपाजित तत्त्वावर दुहेरी नोंद लेखांकन प्रणालीद्वारे लेखे तयार करण्यास आणि ते ठेवण्यास जबाबदार असेल ;

(ढ) विद्यापीठाची विविध प्राधिकरणे किंवा मंडळे, राज्य शासन, केंद्र सरकार, केंद्रीय शिक्षण आयोग किंवा परिषदा, आयोग, विद्यापीठ अनुदान आयोग आणि अखिल भारतीय तंत्रशिक्षण परिषद तसेच विद्यापीठाला निधी पुरविणारी अशी कोणतीही संस्था यांनी मागणी केलेले वित्तीय अहवाल तयार करणे ;

(ण) या अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये विहित केलेले असतील असे किंवा कुलगुरूकडून व प्र-कुलगुरूकडून वेळोवेळी त्यास नेमून देण्यात येतील असे अन्य अधिकार वापरील आणि अशी अन्य कर्तव्ये पार पाडील.

विद्यापीठ उप १९. (१) संचालक, विद्यापीठ उप परिसर हा पूर्णकालिक वेतनी अधिकारी असेल. तो कुलगुरूच्या परिसर अधीक्षणाखाली, निदेशनाखाली व नियंत्रणाखाली काम करील. संचालक.

(२) संचालक, उप परिसर ही व्यक्ती अध्यापन, संशोधन व विकास कार्यक्रमांमध्ये सक्रिय असलेल्या, राष्ट्रीय ख्याती असलेल्या कोणत्याही विद्यापीठात किंवा अध्यापन, संशोधन व विकास कार्यक्रमांमध्ये सक्रिय असलेल्या परिसंस्थेत प्राध्यापक किंवा प्राचार्य अथवा समकक्ष पद धारण केलेली व पंधरा वर्षांपेक्षा कमी नसेल इतक्या कालावधीची अध्यापन किंवा संशोधन किंवा प्रशासकीय कामाचा अनुभव असणारी असेल.

(३) संचालक, उप परिसर याची नियुक्ती, या अधिनियमाखालील प्रयोजनासाठी घटित केलेल्या निवड समितीच्या शिफारशीवरून कुलगुरूकडून करण्यात येईल.

(४) संचालक, उप परिसर याची नियुक्ती, पाच वर्षांच्या मुदतीसाठी किंवा नियत सेवावधी पूर्ण होईल तोपर्यंत, यापैकी जे अगोदर घडेल, तोपर्यंतच्या मुदतीसाठी करण्यात येईल आणि तो या प्रयोजनार्थ घटित केलेल्या निवड समितीच्या शिफारशीवरून निवडीद्वारे, ज्या विद्यापीठात तो काम करीत असेल त्या विद्यापीठामध्ये फक्त पाच वर्षांच्या आणखी एका मुदतीसाठी, पुनर्नियुक्तीस पात्र असेल.

(५) संचालक, उप परिसर हा,—

(क) उप परिसराचा मुख्य विद्याविषयक व प्रशासकीय अधिकारी असेल ;

(ख) जिल्ह्यातील महाविद्यालयांच्या आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्थांच्या विद्याविषयक अध्ययनक्रमांच्या प्रशासनाचे पर्यवेक्षण व संनियंत्रण करील;

(ग) विद्यापीठाच्या उप परिसराच्या सर्वसाधारण प्रशासनाचे पर्यवेक्षण व संनियंत्रण करील आणि उप-परिसरातील विद्यापीठ विभाग अथवा प्रशाळा अथवा परिसंस्था यांच्या कार्यक्षमतेची व सुस्थितीची सुनिश्चिती करील ;

(घ) जिल्ह्यातील विद्यापीठ, महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्था तसेच त्या विद्यापीठाच्या उप-परिसरातील विभाग, प्रशाळा अथवा परिसंस्था यांच्यामधला दुवा म्हणून कार्य करील ;

(ङ) अंतर्गत गुणवत्ता हमी कक्ष आणि विद्यापीठ प्राधिकरणे यांनी विनिर्दिष्ट केल्याप्रमाणे, अध्यापन गुणवत्ता राखण्याकरिता आवश्यक आहेत अशी समुचित कामे सुरू करण्यात आलेली आहेत, त्यांचा अभिलेख ठेवण्यात आलेला आहे, विद्यार्थ्यांकडून अध्यापक मूल्यन करण्यात आलेले आहे, आणि त्याचा अहवाल विद्यापीठ प्राधिकरणांना पाठविण्यात आलेला आहे, याबाबत सुनिश्चिती करील ;

(च) जिल्ह्यामधील आणि उप परिसरातील मूल्यमापन, विद्याविषयक प्रशिक्षण कार्यशाळा किंवा चर्चासत्रे, गुणवत्ता-मापन आणि अन्य विद्याविषयक, प्रशासनिक, वित्तीय व संबंधित कार्यक्रमांचे समन्वयन करील ;

(छ) जिल्ह्यातील संलग्न महाविद्यालयांमध्ये आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्थांमध्ये आंतर-संस्था व संस्थांतर्गत माहिती व संदेशवहन तंत्रज्ञान साहचर्य प्रस्थापित करण्याबाबत सुनिश्चिती करील ;

(ज) उप परिसरातील महाविद्यालये अथवा विद्यापीठ विभाग, प्रशाळा, परिसंस्था यांनी घेतलेले निर्णय आणि त्यांचे कार्यचालन हे, हा अधिनियम, परिनियम व विनियम यांच्याशी विसंगत नाही, याची सुनिश्चिती करील ;

(झ) जिल्ह्यातील आणि उप परिसरातील अध्यापन व सहायक कर्मचारीवर्गाच्या लाभाकरिता कार्यशाळा व प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करील ;

(ञ) आर्थिक शिस्त राखली जात असल्याबाबत तसेच परिसराचा खर्च हा, उप परिसर समितीने शिफारस केलेल्या आणि विद्यापीठाच्या वित्त व लेखा समितीने मंजूर केलेल्या अर्थसंकल्पीय तरतुदीमधूनच केलेला असल्याबाबत सुनिश्चिती करील;

(ट) उप परिसराशी संबंधित वार्षिक लेखापरिक्षित लेखे तयार करण्यात आल्याबाबत आणि प्रत्येक वित्तीय वर्षाच्या अखेरीस ते विद्यापीठाकडे पाठविण्यात आल्याबाबत सुनिश्चिती करील ;

(ठ) विद्यापीठाची उद्दिष्टे पूर्ण झाल्याची सुनिश्चिती करण्याकरिता म्हणून, विद्यापीठ प्राधिकरणे त्याला नेमून देईल असे अन्य कार्य हाती घेईल ;

(ड) या अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये विहित केलेले असतील असे अथवा कुलगुरूकडून व प्र-कुलगुरूकडून वेळोवेळी त्यास नेमून देण्यात येतील असे अन्य अधिकार वापरील आणि अशी अन्य कर्तव्ये पार पाडील.

संचालक, नवोपक्रम, नवसंशोधन व साहचर्य मंडळ. २०. (१) संचालक, नवोपक्रम, नवसंशोधन व साहचर्य हा, पूर्णकालिक वेतनी अधिकारी असेल. तो, नवोपक्रमाची संकल्पना प्रसृत करण्यासाठी पोषक वातावरण निर्माण करण्यास व ते रुजविण्यास, तसेच ज्यायोगे अखेरीस एखाद्या उपक्रमाची निर्मिती होईल अशा, नवोपक्रमशील कल्पनांचे नवसंशोधनाच्या प्रक्रियेमार्फत कार्यकारी रचना परिणामांमध्ये रूपांतर करण्यासदेखील जबाबदार असेल. तो विद्यापीठाचा प्रथम राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय विद्यापीठांशी व परिसंस्थांशी असलेला दुवा जोपासील, प्रस्थापित करील, राखील व त्यास बळकटी देईल. तो थेट कुलगुरूच्या अधीक्षणाखाली, निदेशनाखाली व नियंत्रणाखाली काम करील.

(२) संचालक, नवोपक्रम, नवसंशोधन व साहचर्य मंडळ याच्या निवडीच्या प्रयोजनासाठीची अर्हता व अनुभव, राज्य शासनाकडून राजपत्रात प्रसिद्ध केलेल्या आदेशाद्वारे विनिर्दिष्ट करण्यात येईल त्याप्रमाणे असेल.

(३) संचालक, नवोपक्रम, नवसंशोधन व साहचर्य मंडळ याची नियुक्ती, या अधिनियमाखालील प्रयोजनासाठी घटित केलेल्या निवड समितीच्या शिफारशीवरून कुलगुरूकडून करण्यात येईल.

(४) संचालक, नवोपक्रम, नवसंशोधन व साहचर्य मंडळ याची नियुक्ती पाच वर्षांच्या मुदतीसाठी किंवा नियत सेवावधी पूर्ण होईतोपर्यंत, यांपैकी जे अगोदर घडेल, तोपर्यंतच्या मुदतीसाठी करण्यात येईल आणि तो या प्रयोजनार्थ घटित केलेल्या निवड समितीच्या शिफारशीवरून निवडीद्वारे ज्या विद्यापीठात तो काम करीत असेल त्या विद्यापीठामध्ये पाच वर्षांच्या फक्त आणखी एकाच मुदतीकरिता, पुनर्नियुक्तीस पात्र असेल.

(५) संचालक, नवोपक्रम, नवसंशोधन व साहचर्य मंडळ हा,—

(क) मुख्य अधिकारी असेल व तो गतिमानतेने व धडाडीने नवोपक्रम, नवसंशोधन व उपक्रम केंद्राचे नेतृत्व करील आणि त्यास नवीन दृष्टी प्राप्त करून देईल ;

(ख) बौद्धिक संपदा हक्क आणि त्याच्याशी निगडित बाबी यासंबंधात शिक्षण देण्याकरिता जागरूकता आणि प्रशिक्षण कार्यक्रम यांना अग्रक्रम देईल ;

(ग) उद्योजकतेच्या महत्त्वाबाबत जागरूकता निर्माण करण्यासाठी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करील ;

(घ) जिच्या परिणामस्वरूप लघु, मध्यम व मोठे उद्योग स्थापन होतील अशा उपयुक्ततेच्या श्रेणीसह चांगल्या कल्पना रुजविण्याकरिता व वृद्धिंगत करण्याकरिता पाठबळ व्यवस्था संघटित करील व निर्माण करील;

(ड) विद्यार्थ्यांमध्ये उद्योजकतेचे कौशल्य निर्माण करण्यासाठी व विकसित करण्यासाठी काम करणारी राष्ट्रीय आणि आंतरराष्ट्रीय मंडळे व अभिकरणे यांच्याशी स्नेहसंबंध निर्माण करण्याबाबतचे कार्य करील ;

(च) ज्ञानाधारित व अन्य प्रकारच्या उद्योगांशी साहचर्य प्रस्थापित करून महाविद्यालयांना सुकर होईल अशी सर्व उपाययोजना करील ;

(छ) तरुण उद्योजकांना कार्यात्मक बाबी, विधिविषयक बाबी, बौद्धिक संपदा हक्क, पेटंटसंबंधित मुद्दे, व्यवसाय प्रतिमान निर्मिती आणि वित्तीय बाबी यांसंबंधात मार्गदर्शन करण्याकरिता प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करील;

(ज) राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय साहचर्य मंडळ आणि विद्यापीठ प्राधिकरणे यांना अभिप्रेत असल्याप्रमाणे, प्रथम राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय विद्यापीठे व परिसंस्था यांच्याबरोबर आंतरराष्ट्रीय साहचर्याचे प्रचालन करण्याकरिता धोरणे व कार्यतंत्रे अंमलात आणिल ;

(झ) विद्यापीठ विभाग, परिसंस्था, संचालित महाविद्यालये, महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्था येथील अध्यापक व विद्यार्थी यांनी राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय विद्यापीठे व परिसंस्था यांना भेटी देण्याबाबतच्या अर्जांवर कार्यवाही करील आणि अशा भेटींकरिता त्यांना व्यूहतंत्रविषयक साहाय्य देण्यात मदत करील ;

(ञ) विदेशी विद्यार्थ्यांसाठी एक खिडकी मोहीम राबविण्याकरिता सुविधा पुरविणाऱ्या विदेशी विद्यार्थी सहायता कक्षाच्या प्रशासनावर पर्यवेक्षण व संनियंत्रण करील ;

(ट) विदेशी विद्यार्थ्यांनी भारताच्या अन्य भागांना भेटी देण्याकरिता म्हणून त्यांच्याकडून आलेल्या अर्जांवर कार्यवाही करील ;

(ठ) देशाच्या अन्य भागांतून येणाऱ्या विद्यार्थ्यांसाठी एक खिडकी मोहीम राबविण्याची तरतूद करण्याकरिता स्थापन करण्यात आलेल्या स्थलांतरित भारतीय विद्यार्थी कक्षाच्या कामकाजावर देखरेख ठेवील ;

(ड) नवोपक्रम, नवसंशोधन आणि उपक्रम मंडळ आणि राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय साहचर्य मंडळाची उद्दिष्टे पार पाडण्याची सुनिश्चिती करण्यासाठी विद्यापीठ प्राधिकरणांनी त्याला नेमून दिलेले अन्य कोणतेही काम हाती घेईल ;

(ढ) या अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये विहित केलेले असतील असे अथवा कुलगुरूकडून व प्र-कुलगुरूकडून वेळोवेळी त्यास नेमून देण्यात येतील असे अन्य अधिकार वापरील आणि अशी अन्य कर्तव्ये पार पाडील.

२१. (१) संचालक, ज्ञान स्रोत केंद्र हा विद्यापीठाचा पूर्णकालिक वेतनी अधिकारी असेल आणि संचालक, ज्ञान तो विद्यापीठामध्ये ज्ञान स्रोत केंद्राचा प्रभारी असेल. तो थेट कुलगुरूच्या अधीक्षणाखाली, निदेशनाखाली स्रोत केंद्र व नियंत्रणाखाली काम करील.

(२) संचालक, ज्ञान स्रोत केंद्र याची अर्हता, अनुभव, वित्तलब्धी आणि सेवेच्या अटी व शर्ती विद्यापीठ अनुदान आयोगाने विद्यापीठ ग्रंथपालाच्या बाबतीत शिफारस केल्याप्रमाणे आणि राज्य शासनाने स्वीकृत केल्याप्रमाणे असतील.

(३) संचालक, ज्ञान स्रोत केंद्र याची नियुक्ती, त्या प्रयोजनासाठी घटित केलेल्या निवड समितीच्या शिफारशीवरून कुलगुरूकडून करण्यात येईल.

(४) संचालक, ज्ञान स्रोत केंद्र हा,—

(क) ज्ञान स्रोत केंद्र समितीचा सदस्य-सचिव असेल आणि ज्ञान स्रोत केंद्र समितीने घेतलेल्या निर्णयांची योग्य अंमलबजावणी होत असल्याबाबत तो सुनिश्चिती करील ;

(ख) मुद्रित, ध्वनिमुद्रित आणि डिजिटल स्वरूपातील सर्व पुस्तके, नियतकालिके, हस्तलिखिते, जर्नल यांचा आणि ज्ञान स्रोत केंद्र सामग्रीचा परिरक्षक असेल ;

(ग) ज्ञान स्रोत केंद्राची पुस्तके, नियतकालिके, हस्तलिखिते, जर्नल आणि साधनसामग्री गहाळ होऊ नये किंवा तिचे नुकसान होऊ नये आणि ज्ञान स्रोत केंद्रामध्ये नियमबाह्य गोष्टी घडू नयेत याची खातरजमा करण्यासाठी अशा प्रक्रिया व कार्यपद्धती विकसित करील व त्यांची अंमलबजावणी करील ;

(घ) साठ्याच्या नियतकालिक पडताळणीची व्यवस्था करील, हानीबाबतची माहिती समाविष्ट असलेला योग्य अहवाल तयार करील आणि तो ज्ञान स्रोत केंद्र समितीपुढे ठेवील ;

(ङ) विद्यापीठ ज्ञान स्रोत केंद्राच्या विकासासाठी, आधुनिकीकरणासाठी, त्याची निगा राखण्यासाठी आणि व्यवस्थापनासाठी जबाबदार असेल ;

(च) विद्यापीठाच्या उप परिसरातील ज्ञान स्रोत केंद्रात संबंधित अधिकाऱ्यांना मदत करील आणि मार्गदर्शन करील ;

(छ) संलग्न महाविद्यालयांच्या आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्थांच्या ग्रंथपालांची वार्षिक बैठक आयोजित करून, संलग्न महाविद्यालयांच्या आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्थांच्या ग्रंथालयांना साहाय्य करील आणि ग्रंथपालांना सल्ला देईल ;

(ज) संलग्न महाविद्यालयांच्या आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्थांच्या ग्रंथपालांचे कौशल्य आणि ज्ञान अद्ययावत ठेवण्यासाठी प्रशिक्षण कार्यक्रम आणि कार्यशाळा आयोजित करील ;

(झ) साधनसंपत्ती, माहिती, संशोधन तंत्रे व आधारसामग्री यांच्या उपलब्धतेबाबत विद्यापीठाच्या विविध विभागांच्या विद्यार्थ्यांमध्ये माहिती साक्षरता कार्यक्रमांमार्फत जागरूकता निर्माण करील ;

(ञ) ज्ञान स्रोत केंद्राची उद्दिष्टे पार पाडण्याची सुनिश्चिती करण्याकरिता विद्यापीठ प्राधिकरणांनी त्यास नेमून दिलेली अन्य कोणतीही कामे हाती घेईल ;

(ट) या अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये विहित केलेले असतील असे किंवा कुलगुरूकडून व प्र-कुलगुरूकडून वेळोवेळी त्यास नेमून देण्यात येतील असे अन्य अधिकार वापरील आणि अशी अन्य कर्तव्ये पार पाडील.

संचालक, २२. (१) संचालक, आजीवन अध्ययन व विस्तार हा, विद्यापीठाचा पूर्णकालिक वेतनी आजीवन अधिकारी असेल आणि आजीवन अध्ययन व विस्तार मंडळाची कार्ये पार पाडण्यास तो जबाबदार अध्ययन व असेल. तो थेट कुलगुरूच्या अधिक्षणाखाली, निदेशनाखाली व नियंत्रणाखाली काम करील. विस्तार.

(२) संचालक, आजीवन अध्ययन व विस्तार यांची अर्हता, अनुभव, वित्तलब्धी आणि सेवेच्या अटी व शर्ती या, विद्यापीठ अनुदान आयोगाने शिफारस केल्याप्रमाणे आणि राज्य शासनाने स्वीकृत केल्याप्रमाणे असतील.

(३) संचालक, आजीवन अध्ययन व विस्तार यांची नियुक्ती, या अधिनियमाखालील प्रयोजनासाठी घटित केलेल्या निवड समितीच्या शिफारशीवरून कुलगुरूकडून करण्यात येईल.

(४) संचालक, आजीवन अध्ययन व विस्तार यांची नियुक्ती, पाच वर्षांच्या मुदतीसाठी किंवा नियत सेवावधी पूर्ण होईल तोपर्यंत, यापैकी जे अगोदर घडेल, तोपर्यंतच्या मुदतीसाठी करण्यात येईल आणि तो, ज्या विद्यापीठात तो काम करीत असेल त्या विद्यापीठामध्ये फक्त पाच वर्षांच्या आणखी एका मुदतीसाठी पोट-कलम (३) मध्ये तरतूद केलेल्या रीतीने पुनर्नियुक्तीस पात्र असेल.

(५) संचालक, आजीवन अध्ययन व विस्तार हा, आजीवन अध्ययन व विस्तार विभागाचा पदसिद्ध प्रमुख असेल.

(६) संचालक, आजीवन अध्ययन व विस्तार हा,—

(क) आजीवन अध्ययन व विस्तार मंडळाच्या धोरणांची व शिफारशींची अंमलबजावणी करण्यासाठी जबाबदार असेल ;

(ख) प्रौढांकरिता व ज्येष्ठ नागरिकांकरिता आणि सखोल शिक्षणाकरिता आजीवन अध्ययन, मूल्य शिक्षण व जीवन कौशल्य या क्षेत्रातील संशोधनास चालना देईल ;

(ग) वयोवृद्ध किंवा असाध्य आजार असलेले रुग्ण यांना सांभाळणाऱ्या परिचारिकांना व परिचारकांना प्रशिक्षण देण्याकरिता निम्नस्तरीय कौशल्याविकास कार्यक्रम आयोजित करील ;

(घ) मूल्य शिक्षण व सखोल शिक्षण यातील पदवीधर विद्यार्थ्यांकरिता प्रमाणपत्र व पदविका अध्ययनक्रम आणि पदव्युत्तर स्तरावरील प्रगत पदविका अध्ययनक्रम यांचा समावेश असणारे अध्ययनक्रम आयोजित करील ;

(ङ) प्रौढ व ज्येष्ठ नागरिक यांच्याकरिता निव्वळ मूल्य शिक्षण व आजीवन कौशल्य या क्षेत्रातील पदव्युत्तर अध्यापन अध्ययनक्रम आयोजित करील ;

(च) वृद्धापकाळ सुसह्य व्हावा म्हणून प्रौढ व ज्येष्ठ नागरिकांकरिता जीवन कौशल्ये आत्मसात करण्याकरिता वयोवृद्ध व्यक्तींना त्यांच्याकरिता असलेल्या सामाजिक संघटना व शासकीय योजना यांची माहिती देण्याकरिता आणि वृद्धश्रमांची आवश्यक ती माहिती पुरविण्याकरिता जनजागृती कार्यक्रम आयोजित करील व समन्वय साधील ;

(छ) आजीवन अध्ययन व विस्तार मंडळाची उद्दिष्टे पार पाडण्यासाठी, विद्यापीठ प्राधिकरणाकडून नेमून देण्यात येईल असे इतर कोणतेही काम हाती घेईल ;

(ज) या अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये विहित केलेले असतील असे, किंवा कुलगुरूकडून व प्र-कुलगुरूकडून वेळोवेळी त्यास नेमून देण्यात येतील असे अन्य अधिकार वापरील आणि अशी अन्य कर्तव्ये पार पाडील.

संचालक,  
विद्यार्थी  
विकास व  
संचालक,  
राष्ट्रीय सेवा  
योजना.

२३. (क) (१) संचालक, विद्यार्थी विकास हा, अध्यापनाचा किमान एकूण दहा वर्षांचा अनुभव असणाऱ्या, आणि अभ्यासेतर व विस्तार कृतिकार्यक्रम क्षेत्रामध्ये समाधानकारक कामगिरी पार पाडलेल्या अध्यापकांमधून कुलगुरूकडून नामनिर्देशित करण्यात येईल. तो कुलगुरूच्या थेट अधीक्षणाखाली, निदेशनाखाली व नियंत्रणाखाली काम करील.

(२) त्याच्या वित्तलब्धी, पदावधी आणि सेवेच्या अटी व शर्ती परिनियमांद्वारे विहित केल्याप्रमाणे असतील.

(३) संचालक विद्यार्थी विकास हा,—

(क) महाविद्यालये, परिसंस्था आणि विद्यापीठ विभाग यांमध्ये सांस्कृतिक, मनोरंजनपर आणि विद्यार्थी कल्याण कार्यक्रमांना चालना देण्याकरिता काम करील ;

(ख) विद्यार्थ्यांसाठी नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करील ;

(ग) महाविद्यालये, परिसंस्था आणि विद्यापीठ विभाग यांमध्ये विद्यार्थ्यांसाठी समुपदेशक आणि समुपदेशन कक्ष असल्याची खातरजमा करील ;

(घ) रॅगिंग करण्यास प्रतिबंध समित्या आणि पथके यांची रचना करील आणि विद्यापीठ, महाविद्यालये आणि परिसंस्था यांमध्ये रॅगिंग करण्यास प्रतिबंध करण्यासाठी आवश्यक त्या सर्व उपाययोजना केल्या जात असल्याची खातरजमा करील ;

(ङ) विद्यार्थ्यांच्या तक्रारी आणि सर्वसाधारण कल्याण या गोष्टींमध्ये लक्ष घालील ;

(च) विद्यार्थ्यांचे सर्वांगीण व्यक्तिमत्त्व घडविण्यासाठी मदत करील आणि त्यांचे नेतृत्वगुण विकसित करण्यासाठी आणि त्यांना आत्मनिर्भर बनविण्यासाठी तयार करील ;

(छ) प्रादेशिक, राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय मंडळे यांच्या संयुक्त विद्यमाने सांस्कृतिक व मनोरंजनपर कार्यक्रम आयोजित करील ;

(ज) युवकांच्या अभिरूचीला चालना देईल आणि ललित व प्रयोगनिष्ठ कला, विशुद्ध कला व साहित्यिक कौशल्ये वाढीस लागण्यासाठी युवकांची कौशल्य विकसित करील ;

(झ) विद्यार्थ्यांकरिता विविध क्षेत्रांमध्ये विद्यापीठ, राज्य, राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय स्तरावर स्पर्धा, कौशल्य विकास कार्यशाळा आणि परिसंवाद कार्यक्रम आयोजित करील ;

(ञ) विविध प्रकारच्या सांस्कृतिक कार्यक्रमांमध्ये राज्य, राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय स्तरावरील स्पर्धांसाठी विद्यार्थ्यांना प्रशिक्षण देईल ;

(ट) विद्यापीठ विद्यार्थी परिषदेच्या निवडणुका घेईल ;

(ठ) अधिसभेपुढे सादर करावयाचा विद्यार्थी विकास मंडळाचा अहवाल तयार करील ;

(ड) विद्यार्थी विकास मंडळाची उद्दिष्टे पार पाडण्यासाठी विद्यापीठ प्राधिकरणांनी त्यास नेमून दिलेली अन्य कोणतीही कामे हाती घेईल ;

(ढ) या अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये, विहित केलेले असतील असे किंवा कुलगुरूकडून व प्र-कुलगुरूकडून वेळोवेळी त्यास नेमून देण्यात येतील असे अन्य अधिकार वापरील आणि अशी इतर कर्तव्ये पार पाडील.



(ख) (१) संचालक, राष्ट्रीय सेवा योजना हा, अध्यापनाचा किमान एकूण दहा वर्षांचा अनुभव असणाऱ्या, राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी म्हणून किमान तीन वर्षांचा अनुभव असणाऱ्या आणि राष्ट्रीय सेवा योजना कृतिकार्यक्रम क्षेत्रामध्ये समाधानकारक कामगिरी पार पाडलेल्या अध्यापकांमधून कुलगुरूकडून नामनिर्देशित करण्यात येईल.

(२) त्याच्या वित्तलब्धी, पदावधी आणि सेवेच्या अटी व शर्ती परिनियमांद्वारे विहित केल्याप्रमाणे असतील.

(३) संचालक, राष्ट्रीय सेवा योजना हा,—

(एक) महाविद्यालये, परिसंस्था आणि विद्यापीठ विभाग यांमध्ये राष्ट्रीय सेवा योजनेअंतर्गत विविध कार्यक्रमांना चालना देण्यासाठी, त्यात समन्वय साधण्यासाठी व ते आयोजित करण्यासाठी काम करील ;

(दोन) राष्ट्रीय सेवा योजना स्वयंसेवकांसाठी विद्यापीठ, राज्य, राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय स्तरावर कार्यशाळा, चर्चासत्रे, शिबिरे, स्पर्धा आयोजित करील ;

(तीन) राज्य, राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय स्पर्धांसाठी विद्यार्थ्यांना प्रशिक्षण देईल ;

(चार) राष्ट्रीय सेवा योजनेची उद्दिष्टे पार पाडण्यासाठी राज्य राष्ट्रीय सेवा योजना समन्वयकाने व विद्यापीठ प्राधिकरणांनी त्याला नेमून दिलेले इतर कोणतेही काम हाती घेईल ;

(पाच) या अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये विहित केलेले असतील असे, किंवा कुलगुरूकडून प्र-कुलगुरूकडून वेळोवेळी त्यास नेमून देण्यात येतील असे अन्य अधिकार वापरील आणि अशी अन्य कर्तव्ये पार पाडील.

२४. (१) संचालक, क्रीडा व शारीरिक शिक्षण हा पूर्णकालिक वेतनी अधिकारी असेल. तो संचालक, क्रीडा विद्यापीठ, महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांमध्ये क्रीडा संस्कृतीस चालना देण्यास आणि व शारीरिक क्रीडासंबंधी कार्यक्रमांचे पर्यवेक्षण करण्यास जबाबदार असेल. तो कुलगुरूच्या अधीक्षणाखाली, शिक्षण. निदेशनाखाली व नियंत्रणाखाली काम करील.

(२) संचालक, क्रीडा व शारीरिक शिक्षण यांच्या निवडीच्या प्रयोजनासाठीची अर्हता व अनुभव, राज्य शासन **राजपत्रातील** आदेशाद्वारे विनिर्दिष्ट करील त्याप्रमाणे असेल.

(३) संचालक, क्रीडा व शारीरिक शिक्षण यांची नियुक्ती, या अधिनियमाखालील प्रयोजनासाठी घटित केलेल्या निवड समितीच्या शिफारशीवरून कुलगुरूकडून करण्यात येईल.

(४) संचालक, क्रीडा व शारीरिक शिक्षण यांची नियुक्ती पाच वर्षांच्या मुदतीसाठी किंवा नियत सेवावधी पूर्ण होईतोपर्यंत, यांपैकी जे अगोदर घडेल, तोपर्यंतच्या मुदतीसाठी करण्यात येईल आणि तो या प्रयोजनार्थ घटित केलेल्या निवड समितीच्या शिफारशीवरून निवडीद्वारे ज्या विद्यापीठात काम करित असेल त्या विद्यापीठामध्ये फक्त पाच वर्षांच्या आणखी एका मुदतीकरिता, पुर्ननियुक्तीस पात्र असेल.

(५) संचालक, क्रीडा व शारीरिक शिक्षण हा,—

(क) विविध क्रीडा क्षेत्रांमध्ये अत्युच्च गुणवत्तेची जोपासना करील आणि त्याचबरोबर निकोप स्पर्धेचे वातावरण निर्माण करण्यास देखील चालना देईल ;

(ख) महाविद्यालये, परिसंस्था आणि विद्यापीठ विभाग यांमध्ये क्रीडा संस्कृतीला चालना देईल आणि क्रीडा क्षेत्रातील कार्यक्रम आयोजित करील ;

(ग) प्रादेशिक आणि राष्ट्रीय मंडळांच्या संयुक्त विद्यमाने विविध क्रीडा प्रकारांशी संबंधित कार्यक्रमांमध्ये समन्वय साधील आणि ते कार्यक्रम आयोजित करील ;

(घ) विद्यापीठ क्षेत्रामध्ये विविध क्रीडा प्रकारांची विद्यापीठस्तरीय स्पर्धा, क्रीडा कौशल्य विकास शिबिरे आयोजित करील ;

(ड.) विविध क्रीडा प्रकारांत प्रादेशिक, राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय स्पर्धाकरिता विद्यार्थ्यांना प्रशिक्षण देईल ;

(च) अधिसभेपुढे सादर करावयाचा क्रीडा व शारीरिक शिक्षण मंडळाचा अहवाल तयार करील ;

(छ) क्रीडा व शारीरिक शिक्षण मंडळाची उद्दिष्टे पार पाडण्यासाठी विद्यापीठ प्राधिकरणांनी त्यास नेमून दिलेले अन्य कोणतेही काम हाती घेईल ;

(ज) या अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये विहित केलेले असतील असे किंवा कुलगुरूकडून व प्र-कुलगुरूकडून त्यास वेळोवेळी नेमून देण्यात येतील असे अधिकार वापरील आणि अशी इतर कर्तव्ये पार पाडील.

प्राधिकरणांचे,  
मंडळाचे  
अधिकारी,  
सदस्य आणि  
विद्यापीठाचे  
कर्मचारी हे  
लोकसेवक  
असणे.

२५. विद्यापीठाच्या प्राधिकरणांचे, समित्यांचे किंवा मंडळांचे, सर्व वेतनी अधिकारी, सदस्य विद्यापीठाचे अध्यापक आणि इतर कर्मचारी हे, भारतीय दंड संहितेच्या कलम २१ च्या अर्थातर्गत लोकसेवक असल्याचे मानण्यात येईल.

१८६०  
चा  
४५.

### प्रकरण चार

#### विद्यापीठाची प्राधिकरणे

विद्यापीठाची  
प्राधिकरणे.

२६. विद्यापीठाची प्राधिकरणे पुढीलप्रमाणे असतील :-

- (१) अधिसभा ;
- (२) व्यवस्थापन परिषद ;
- (३) विद्यापरिषद ;
- (४) विद्याशाखा ;
- (५) अधिष्ठाता मंडळ ;
- (६) विद्यापीठ उप-परिसर मंडळ ;
- (७) अभ्यास मंडळ ;
- (८) विद्यापीठ विभाग व आंतरविद्याशाखा अभ्यास मंडळ ;
- (९) महाविद्यालयांतील पदव्युत्तर शिक्षण मंडळ ;

- (१०) आजीवन अध्ययन व विस्तार मंडळ ;  
 (११) परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ ;  
 (१२) माहिती तंत्रज्ञान मंडळ ;  
 (१३) राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय साहचर्य मंडळ ;  
 (१४) नवोपक्रम, नवसंशोधन व उपक्रम मंडळ ;  
 (१५) विद्यार्थी विकास मंडळ ;  
 (१६) क्रीडा व शारीरिक शिक्षण मंडळ ;  
 (१७) संशोधन मंडळ ;  
 (१८) विद्यापीठाची प्राधिकरणे म्हणून परिणियमांद्वारे निर्देशित केली असतील अशी विद्यापीठाची इतर मंडळे.

२७. या अधिनियमाच्या अन्य कोणत्याही तरतुदींमध्ये काहीही अंतर्भूत असले तरी, राज्य शासन, कुलपतीशी विचारविनिमय करून, विद्यापीठाच्या कोणत्याही प्राधिकरणाचा सदस्य म्हणून निवडून घेण्याच्या, नामनिर्देशित करण्याच्या अथवा स्वीकृत करून घेण्याच्या पात्रता शर्ती, **राजपत्रात** प्रसिद्ध केलेल्या आदेशाद्वारे विनिर्दिष्ट करील.

विद्यापीठाच्या कोणत्याही प्राधिकरणाचा सदस्य असण्यासाठीच्या पात्रता शर्ती विनिर्दिष्ट करण्याचा राज्य शासनाचा अधिकार.

२८. (१) अधिसभा ही, सर्व वित्तीय अंदाजांकरिता आणि अर्थसंकल्पीय विनियोजनांकरिता आणि विद्यापीठाला विद्यमान व भविष्यातील शैक्षणिक कार्यक्रमांच्या बाबतीत सामाजिक परिणामांची माहिती देण्याकरिता प्रमुख प्राधिकरण असेल.

अधिसभा.

(२) अधिसभेमध्ये पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :-

- (क) कुलपती-अध्यक्ष ;  
 (ख) कुलगुरु ;  
 (ग) प्र-कुलगुरु ;  
 (घ) विद्याशाखांचे अधिष्ठाते ;  
 (ङ) संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ ;  
 (च) वित्त व लेखा अधिकारी ;  
 (छ) विद्यापीठाच्या उप-परिसरांचे संचालक ;  
 (ज) संचालक, नवोपक्रम, नवसंशोधन व साहचर्य ;  
 (झ) संचालक, उच्च शिक्षण किंवा त्याने नामनिर्देशित केलेली सह संचालक दर्जापेक्षा कमी दर्जा नसलेली व्यक्ती ;  
 (ञ) संचालक, तंत्रशिक्षण किंवा त्याने नामनिर्देशित केलेली सह संचालकाच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जा नसलेली व्यक्ती ;

- (ट) संचालक, ज्ञान स्रोत केंद्र ;
- (ठ) संचालक, विद्यार्थी विकास मंडळ ;
- (ड) संचालक, क्रीडा व शारीरिक शिक्षण ;
- (ढ) संचालक, आजीवन अध्ययन व विस्तार मंडळ ;

(ण) प्राचार्यांच्या गटाने त्यांच्यामधून निवडून द्यावयाचे राष्ट्रीय मूल्यांकन व अधिस्वीकृती परिषदेने (नेक) किंवा, यथास्थिति, राष्ट्रीय अधिस्वीकृती मंडळाने अधिस्वीकृती दिलेल्या संलग्न, संचालित व स्वायत्त महाविद्यालयांचे दहा प्राचार्य, त्यांपैकी प्रत्येकी एक अनुसूचित जाती, अनुसूचित जमाती, निरधिसूचित जमाती (विमुक्त जाती) किंवा भटक्या जमाती, इतर मागास वर्ग या प्रवर्गातील व्यक्ती असेल आणि एक महिला असेल ;

(त) संलग्न महाविद्यालये किंवा परिसंस्था यांच्या व्यवस्थापन गटाने त्यांच्यामधून निवडून द्यावयाचे व्यवस्थापनाचे सहा प्रतिनिधी, ज्यांपैकी किमान एक आळीपाळीने अनुसूचित जाती किंवा अनुसूचित जमाती किंवा निरधिसूचित जमाती (विमुक्त जाती) किंवा भटक्या जमाती, किंवा इतर मागासवर्ग या प्रवर्गातील व्यक्ती असेल आणि एक महिला असेल :

परंतु, निवडून द्यावयाचे व्यवस्थापनाचे असे प्रतिनिधी, राष्ट्रीय मूल्यांकन व अधिस्वीकृती परिषदेने किंवा, यथास्थिति, राष्ट्रीय अधिस्वीकृती मंडळाने अधिस्वीकृती दिलेल्या महाविद्यालयांच्या व्यवस्थापनाचे प्रतिनिधी असतील :

परंतु आणखी असे की, जेथे व्यवस्थापन, एक वा त्याहून अधिक महाविद्यालये किंवा परिसंस्था चालवित असेल त्याबाबतीत, अशा व्यवस्थापनाचा केवळ एक प्रतिनिधी हा व्यवस्थापन प्रतिनिधीच्या गटामध्ये समाविष्ट होण्याकरिता पात्र असेल ;

(थ) विद्यापीठाच्या विद्यार्थी परिषदेचा अध्यक्ष आणि सचिव ;

(द) प्राचार्य आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्थांचे संचालक यांच्याखेरीज अध्यापक गटाने त्यांच्यामधून निवडून द्यावयाचे दहा अध्यापक, ज्यांपैकी प्रत्येकी एक अनुसूचित जाती, अनुसूचित जमाती, निरधिसूचित जमाती (विमुक्त जाती) किंवा भटक्या जमाती, इतर मागासवर्ग या प्रवर्गातील व्यक्ती असेल आणि एक महिला असेल ;

(ध) विद्यापीठ अध्यापक गटाने त्यांच्यामधून निवडून द्यावयाचे तीन अध्यापक, ज्यांपैकी एक आळीपाळीने अनुसूचित जाती किंवा अनुसूचित जमाती किंवा निरधिसूचित जमाती (विमुक्त जाती) किंवा भटक्या जमाती किंवा इतर मागासवर्ग यांतील व्यक्ती असेल आणि एक महिला असेल ;

(न) नोंदणीकृत पदवीधर गटाने त्यांच्यामधून निवडून द्यावयाचे, नामनिर्देशनाच्या दिनांकाच्या किमान पाच वर्षे अगोदर पदवी प्राप्त केलेले दहा नोंदणीकृत पदवीधर, ज्यांपैकी प्रत्येकी एक अनुसूचित जाती, अनुसूचित जमाती, निरधिसूचित जमाती (विमुक्त जाती) किंवा भटक्या जमाती, इतर मागासवर्ग यांतील व्यक्ती असेल आणि एक महिला असेल :

परंतु, नोंदणीकृत पदवीधरांमध्ये अध्यापक (नियमित असलेले किंवा कंत्राटी तत्त्वावर घेतलेले—मग त्याचा अध्यापकीय अनुभव काहीही असो), प्राचार्य, विभाग प्रमुख, व्यवस्थापन किंवा या पोट-कलमामध्ये नमूद केलेल्या इतर कोणत्याही प्रवर्गामध्ये मोडणाऱ्या पदवीधरांचा समावेश होणार नाही ;

(प) कुलपती दहा व्यक्ती नामनिर्देशित करील ज्यांपैकी चार व्यक्ती कृषि, समाजकार्य, सहकारी चळवळ, विधिविषयक, वित्तीय, बँक व्यवसाय व सांस्कृतिक कार्यक्रम या क्षेत्रांतील असतील तर उर्वरित सहा व्यक्तींपैकी एक उद्योग क्षेत्रातील, एक शिक्षण तज्ज्ञ, एक शास्त्रज्ञ, एक प्रयोगनिष्ठ व ललित कला किंवा वाङ्मय किंवा क्रीडा क्षेत्रातील, एक व्यक्ती पर्यावरण अथवा निसर्ग संरक्षण संबंधित कामामध्ये कार्यरत असलेल्या संघटनेतील, आणि एक व्यक्ती महिला विकास अथवा ज्येष्ठ नागरिक कल्याण अथवा संदेशवहन व प्रसारमाध्यमे या क्षेत्रांत कार्यरत असलेल्या संघटनेतील असेल ;

(फ) कुलगुरूने नामनिर्देशित केलेल्या दोन व्यक्ती, यांपैकी एक व्यक्ती विद्यापीठाची अध्यापकेतर कर्मचारी असेल व एक व्यक्ती संलग्न महाविद्यालयांच्या किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थांच्या अध्यापकेतर कर्मचाऱ्यांमधील असेल ;

(ब) विधानसभा अध्यक्षांने अडीच वर्षांच्या पदावधीकरिता नामनिर्देशित केलेले, विधानसभेचे दोन सदस्य ;

(भ) विधानपरिषद सभापतीने अडीच वर्षांच्या पदावधीकरिता नामनिर्देशित केलेला, विधानपरिषदेचा एक सदस्य ;

(म) कुलगुरूने एक वर्षांच्या पदावधीकरिता आळीपाळीने नामनिर्देशित करावयाचा नगरपालिकेचा किंवा महानगरपालिकेचा एक सदस्य ;

(य) शिक्षण समितीने एक वर्षांच्या कालावधीसाठी, आळीपाळीने नामनिर्देशित केलेला, विद्यापीठ क्षेत्रातील जिल्हा परिषदेच्या शिक्षण समित्यांचा एक प्रतिनिधी ;

(यक) कुलसचिव—सदस्य सचिव.

(३) सर्वसाधारणपणे कुलपती हा अधिसभेच्या अध्यक्षस्थानी असेल आणि त्याच्या अनुपस्थितीत कुलगुरू हा अध्यक्षस्थानी असेल.

(४) अधिसभेची बैठक वर्षांतून किमान दोन वेळा, कुलपती निश्चित करील, त्या दिनांकास बोलावण्यात येईल. या बैठकीपैकी एक वार्षिक बैठक असेल.

**२९.** अधिसभा, तिच्या बैठकीमध्ये पुढील कामकाज चालवील :—

अधिसभेची  
कार्ये व  
कर्तव्ये.

(क) विद्या, संशोधन व विकास, प्रशासन व व्यवस्था यांसारखे विद्यापीठाचे आवश्यक भाग असलेल्या सर्व क्षेत्रांमध्ये व परिक्षेत्रांमध्ये करता येऊ शकतील अशा सुधारणांवर विद्यापीठ प्राधिकरणांना सूचना करणे ;

(ख) विद्यमान विद्याविषयक कार्यक्रम व सहयोगी कार्यक्रम यांचे पुनरीक्षण करणे ;

(ग) उच्च शिक्षणातील सामाजिक गरजांशी सुसंगत असे नवीन विद्याविषयक अध्ययनक्रम सुचविणे ;

(घ) विद्यापीठाची सुधारणा व विकास यांसाठी उपाय सुचविणे ;

(ङ) व्यवस्थापन परिषदेच्या शिफारशीवरून सन्मान्य पदव्या किंवा इतर विद्याविषयक विशेषोपाधी प्रदान करणे ;

(च) विद्यापीठाची स्थूल धोरणे आणि कार्यक्रम यांचे पुनरीक्षण करणे आणि त्यांची सुधारणा व विकास यांसाठी उपाय सुचविणे ;

(छ) वार्षिक वित्तीय अंदाज (अर्थसंकल्प), वार्षिक अहवाल, लेखे, लेखापरीक्षा अहवाल आणि लेखापरीक्षकाच्या त्यावरील स्पष्टीकरणासह त्यांचे समाधानकारक अनुपालन अहवाल आणि विद्यापीठाने या संबंधातील शिस्तभंगविषयक किंवा अन्यथा केलेल्या कार्यवाहीचा अहवाल प्राप्त करणे, त्यावर चर्चा करणे आणि ते मान्य करणे ;

(ज) विद्यापरिषदेने शिफारस केल्याप्रमाणे उच्च शिक्षण देणाऱ्या महाविद्यालयांच्या व परिसंस्थांच्या ठिकाणांसाठी सर्वसमावेशक सम्यक योजनेस आणि वार्षिक योजनेस मान्यता देणे ;

(झ) विद्यापीठाच्या कुलसचिवाने सादर करावयाच्या, विद्यार्थी तक्रार निवारण अहवालाचे पुनरीक्षण करणे व ते स्वीकृत करणे ;

(ञ) संबंधित संचालकांनी सादर करावयाच्या, विद्यार्थी विकास मंडळाच्या व क्रीडा मंडळाच्या अहवालाचे पुनरीक्षण करणे व ते स्वीकृत करणे ;

(ट) विद्यापीठाच्या विद्यार्थी कल्याण, क्रीडा, सांस्कृतिक कार्य या क्षेत्रांमध्ये व परिक्षेत्रांमध्ये करता येतील अशा सुधारणांवर विद्यापीठ प्राधिकरणांना सूचना देणे;

(ठ) परिनियम तयार करणे, त्यात सुधारणा करणे किंवा ते निरसित करणे.

व्यवस्थापन  
परिषद.

३०. (१) व्यवस्थापन परिषद, विद्यापीठाचे मुख्य कार्यकारी व धोरण आखणारे प्रमुख प्राधिकरण असेल आणि विद्यापीठाचे कामकाज चालविण्याकरिता जबाबदार असेल आणि ती अन्य कोणत्याही प्राधिकरणाकडे विनिर्देशपूर्वक नेमून दिली नसतील अशी कर्तव्ये पार पाडील.

(२) व्यवस्थापन परिषदेच्या वर्षातून चारपेक्षा कमी नसतील इतक्या बैठकी होतील.

(३) बैठकीमध्ये कामकाज-चालनाबाबत अनुसरावयाची कार्यपद्धती, गणपूर्ती आणि बैठकीच्या संबंधात आवश्यक असतील अशा इतर बाबी या, परिनियमांद्वारे विहित करण्यात येतील त्याप्रमाणे असतील.

(४) व्यवस्थापन परिषदेत, पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :-

(क) कुलगुरु-अध्यक्ष ;

(ख) प्र-कुलगुरु ;

(ग) कुलपतीने नामनिर्देशित करावयाची, शिक्षण, उद्योग, कृषि, वाणिज्य, बँक व्यवसाय, वित्त, सामाजिक, सांस्कृतिक व इतर संलग्न क्षेत्रे यातील एक विख्यात व्यक्ती ;

(घ) अडीच वर्षांच्या मुदतीसाठी कुलगुरूने नामनिर्देशित करावयाचे दोन अधिष्ठाते ;

(ङ) कुलगुरूने विद्यापीठ विभाग किंवा विद्यापीठ परिसंस्था यांचे प्रमुख किंवा संचालक यांच्यामधून आळीपाळीने एक वर्षांच्या मुदतीसाठी नामनिर्देशित केलेला एक प्रमुख किंवा संचालक :

परंतु, विद्यापीठ विभाग किंवा विद्यापीठ परिसंस्था यांच्यामधून प्रमुख किंवा संचालक आळीपाळीने नामनिर्देशित करताना, ज्या विद्यापीठ विभागांना किंवा विद्यापीठ परिसंस्थांना पूर्वी प्रतिनिधित्वाची संधी दिलेली होती ती दुर्लक्षित करण्यात येईल ;

(च) अधिसभेचे सदस्य असतील अशा, प्राचार्यांमधून अधिसभेने निवडून द्यावयाचे दोन प्राचार्य, ज्यांपैकी एक, अनुसूचित जाती किंवा अनुसूचित जमाती किंवा निरधिसूचित जमाती (विमुक्त जाती) किंवा भटक्या जमाती किंवा इतर मागासवर्ग या प्रवर्गांतून निवडून आलेले आहेत अशा प्राचार्यांमधून आळीपाळीने निवडण्यात येईल ;

(छ) अधिसभेचे सदस्य असतील अशा, अध्यापक व विद्यापीठ अध्यापक यांमधून अधिसभेने निवडून द्यावयाचे, जे मान्यताप्राप्त संस्थेचे प्राचार्य किंवा संचालक नाहीत असे दोन अध्यापक, ज्यांपैकी एक, अनुसूचित जाती किंवा अनुसूचित जमाती किंवा निरधिसूचित जमाती (विमुक्त जाती) किंवा भटक्या जमाती किंवा इतर मागासवर्ग या प्रवर्गांतून निवडून आलेले आहेत अशा, अध्यापक व विद्यापीठ अध्यापक यांच्यामधून आळीपाळीने निवडण्यात येईल ;

(ज) अधिसभेचे सदस्य असतील अशा व्यवस्थापन प्रतिनिधींमधून अधिसभेने निवडून द्यावयाच्या व्यवस्थापन प्रतिनिधींपैकी दोन प्रतिनिधी, परंतु त्याच व्यवस्थापनाकडे लागोपाठ दुसरे संस्थात्मक प्रतिनिधित्व असणार नाही :

परंतु, या खंडान्वये दोन प्रतिनिधींपैकी एक सदस्य अनुसूचित जाती किंवा अनुसूचित जमाती किंवा निरधिसूचित जमाती (विमुक्त जाती) किंवा इतर मागासवर्ग यांमधून आळीपाळीने निवडण्यात येईल.

(झ) अधिसभेच्या निवडून दिलेल्या नोंदणीकृत पदवीधर सदस्यांमधून अधिसभेने निवडून दिलेले दोन नोंदणीकृत पदवीधर, ज्यांपैकी एका नोंदणीकृत पदवीधरास अनुसूचित जाती किंवा अनुसूचित जमाती किंवा निरधिसूचित जमाती (विमुक्त जाती) किंवा भटक्या जमाती किंवा इतर मागासवर्ग प्रवर्गांमधून आळीपाळीने निवडून देण्यात येईल ;

(ञ) विद्यापरिषदेने तिच्या सदस्यांमधून निवडून दिलेले दोन सदस्य, ज्यांपैकी एक सदस्य परिषदेच्या सदस्य असलेल्या निर्वाचित अध्यापकांमधील असेल व दुसरा सदस्य ही महिला असेल ;

(ट) कुलगुरूने कुलपतीशी विचारविनिमय करून, राष्ट्रीय कीर्तीच्या परिसंस्थेमधून किंवा संघटनेमधून नामनिर्देशित करावयाचा एक ख्यातनाम तज्ज्ञ ;

(ठ) सचिव, उच्च शिक्षण, किंवा त्याने नामनिर्देशन केलेली उप सचिव किंवा सह संचालक, उच्च शिक्षण या पदाच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जाची नसेल अशी व्यक्ती ;

(ड) संचालक, उच्च शिक्षण, किंवा त्याने नामनिर्देशन केलेली सह संचालक, उच्च शिक्षण या पदाच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जाची नसेल अशी व्यक्ती ;

(ढ) संचालक, तंत्र शिक्षण, किंवा त्याने नामनिर्देशन केलेली सह संचालक, तंत्र शिक्षण या पदाच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जाची नसेल अशी व्यक्ती ;

(ण) कुलसचिव-सदस्य सचिव.

(५) वित्त व लेखा अधिकारी आणि संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ हे, व्यवस्थापन परिषदेचे निमंत्रित असतील, परंतु, त्यांना मतदानाचा हक्क असणार नाही.

(६) विद्यापीठाच्या विद्यार्थी परिषदेचा अध्यक्ष हा, निमंत्रित असेल, त्यास ज्या ज्या वेळी निमंत्रित करण्यात येईल त्या त्या वेळी तो बैठकीला उपस्थित राहील :

परंतु, विद्यार्थ्यांचा विकास, कल्याण आणि तक्रारी यांच्याशी संबंधित प्रश्नांवर चर्चा करण्यासाठी किमान दर तीन महिन्यांतून अशा अध्यक्षाला निमंत्रित करण्यात येईल.

व्यवस्थापन  
परिषदेचे  
अधिकार व  
कर्तव्ये.

३१. व्यवस्थापन परिषदेचे अधिकार व कर्तव्ये पुढीलप्रमाणे असतील :-

(क) राष्ट्रीय व जागतिक स्तरावर घडून येत आहेत अशा विद्याविषयक, संशोधन आणि विकास कार्यक्रम, वित्त व्यवस्था, व्यवस्थापन व नियमन याबाबत अल्प व दीर्घकालीन सुधारणांचा आढावा घेणे व विद्यापीठात त्यांचा अंतर्भाव करून घेण्याच्या दृष्टीने त्यावर विचारविनिमय करणे ;

(ख) विद्यापीठाच्या सर्व क्षेत्रांमध्ये आयोगाकडून शिफारस करण्यात येतील अशा सर्व सुधारणांचा अभ्यास करणे व अशा सर्व सुधारणांच्या संबंधात परिणामकारक कार्यतंत्र ठरविणे ;

(ग) ज्यायोगे महाविद्यालयांना व परिसंस्थांना विशेषीकृत अभ्यासक्रम व पाठ्यक्रम हाती घेणे शक्य होईल अशा तरतुदी करणे आणि जेथे आवश्यक आणि इष्ट असेल त्याबाबतीत, अध्यापनासाठी व संशोधनासाठी सामायिक प्रयोगशाळा, ग्रंथालये, संग्रहालये आणि साधनसामग्री यांचे आयोजन करणे व त्याबाबत तरतूद करणे ;

(घ) विद्यापरिषदेच्या शिफारशीवरून विभाग, महाविद्यालये, प्रशाला, केंद्रे, उच्च शिक्षण, संशोधन व विशेषीकृत अभ्यास परिसंस्था स्थापन करणे ;

(ङ) अधिसभेला, मान्यतेकरिता प्रारूप परिनियम किंवा परिनियमांमध्ये सुधारणा किंवा त्यांचे निरसन करणे यांबाबत शिफारस करणे ;

(च) आदेश व विनियम तयार करणे, त्यांत सुधारणा करणे किंवा त्यांचे निरसन करणे ;

(छ) विद्यापीठाची मत्ता व मालमत्ता यांचे नियंत्रण करणे व तिच्या प्रशासनाची व्यवस्था करणे ;

(ज) वित्त व लेखा समितीकडून प्राप्त होतील असे फेरबदल, कोणतेही असल्यास, वार्षिक वित्तीय अंदाज किंवा अर्थसंकल्प, म्हणजे राज्य शासनाकडून प्राप्त होईल असा निधी, विद्यापीठ निधी आणि इतर निधीकरण अभिकरणे यांच्याकडून स्वतंत्रपणे प्राप्त होईल असा निधी यावर चर्चा करणे आणि त्यांना मान्यता देणे ;

(झ) विद्यापीठाच्या वतीने करार करणे, त्यात सुधारणा करणे, त्याचे पालन करणे व ते रद्द करणे यांबाबतच्या प्रस्तावांचा विचार करणे ;

(ञ) विद्यापीठाच्या सामाईक शिक्क्याचा नमुना ठरविणे आणि त्याच्या वापराची तरतूद करणे ;

(ट) विद्यापीठाच्या वतीने कोणताही विश्वस्तनिधी, मृत्युपत्रित दान, देणग्या आणि विद्यापीठाकडे करण्यात आलेल्या कोणत्याही जंगम, स्थावर मालमत्तेचे आणि बौद्धिक संपदेचे हस्तांतरण स्वीकारणे ;

(ठ) विद्यापीठाच्या वतीने कोणत्याही जंगम किंवा बौद्धिक संपदेचे हक्क विक्रीद्वारे किंवा अन्यप्रकारे हस्तांतरित करणे ;

(ड) राज्य शासनाच्या पूर्व परवानगीने कोणतीही स्थावर मालमत्ता, इतर संघटनेकडे विक्रीद्वारे किंवा भाडेपट्ट्याने किंवा कराराने हस्तांतरित करणे :

परंतु, विद्यापीठाची उद्दिष्टे साध्य करण्याकरिता कोणत्याही आवश्यक भौतिक सुविधा पुरविण्याच्या प्रयोजनार्थ, बँक, उपाहारगृहे, डाकघर, मोबाईल टॉवर, इत्यादींसारख्या कोणत्याही स्थावर मालमत्तेचा राज्य शासनाच्या पूर्व-मान्यतेशिवाय विशिष्ट कालावधीकरिता वापर करण्याची परवानगी असेल ;



(ढ) विद्यापीठ परिसर व उप परिसर यांकरिता राखीव निधीतून जमीन, इमारत व अन्य पायाभूत सोयीसुविधा यांच्या स्वरूपात स्थावर मालमत्ता निर्माण करणे ;

(ण) वित्त व लेखा समितीने केलेल्या शिफारशीनुसार, विद्यापीठाच्या वतीने, कर्ज घेणे, कर्ज देणे किंवा निधी गुंतविणे ;

(त) विशिष्ट प्रयोजनांसाठी विद्यापीठाकडे असलेल्या निधीचा वापर करण्याबाबतचे धोरण ठरविणे ;

(थ) विद्यापीठाचे कामकाज चालविण्यासाठी आवश्यक असलेल्या इमारती, जागा, फर्निचर, उपकरणे व इतर साधनसामग्री यांची तरतूद करणे ;

(द) सन्मान्य पदव्या व विद्याविषयक विशेषोपाधी प्रदान करण्याबाबत शिफारशी करणे ;

(ध) विद्यापरिषदेकडून शिफारशी करण्यात आल्या असतील अशा पदव्या, पदविका, प्रमाणपत्रे व इतर विद्याविषयक विशेषोपाधी सुरू करणे व प्रदान करणे आणि आदेशाद्वारे तरतूद केल्यानुसार त्यांचे प्रदान करण्याकरिता दीक्षांत समारंभाची व्यवस्था करणे ;

(न) अधिछात्रवृत्त्या, प्रवासी अधिछात्रवृत्त्या, शिष्यवृत्त्या, छात्रवृत्त्या, प्रदर्शने, पारितोषिके, पदके व बक्षिसे सुरू करणे व ते प्रदान करण्यासाठी विनियम विहित करणे ;

(प) अधिष्ठाता मंडळाने शिफारस केलेल्या परस्पर लाभप्रद विद्याविषयक अध्ययनक्रमांसाठी इतर विद्यापीठे, परिसंस्था व संघटना यांच्याशी सहयोग करण्याकरिता विनियम करणे ;

(फ) आवश्यक असेल त्यानुसार विद्यापरिषदेच्या शिफारशीवरून विद्यापीठ निधीमधून व निधी देणाऱ्या अन्य अधिकरणांकडून विद्यापीठ अध्यापकांची व दीर्घ सुटी नसलेल्या विद्याविषयक कर्मचारीवर्गाची पदे निर्माण करणे आणि त्यांची अर्हता, अनुभव व वेतनश्रेणी विहित करणे ;

(ब) आवश्यक असेल त्यानुसार, विद्यापीठ निधीमधून व निधीकरण अधिकरणांकडून अधिकारी, अध्यापकेतर कुशल, प्रशासनिक, लिपिकवर्गीय व इतर पदे निर्माण करणे आणि त्यांची अर्हता, अनुभव व वेतनश्रेणी विहित करणे ;

(भ) प्राश्निक व परीक्षाविषयक इतर कर्मचारीवर्ग, विद्याशाखेचे अभ्यागत यांच्यासाठी मानधन, पारिश्रमिक, शुल्क आणि प्रवास व इतर भत्ते व विद्यापीठाला देण्यात येणाऱ्या अशा इतर सेवांसाठी शुल्क व इतर आकार विहित करणे ;

(म) अधिष्ठाता मंडळाने तयार केल्याप्रमाणे उच्च शिक्षण महाविद्यालयांच्या व परिसंस्थांच्या ठिकाणासाठी सर्वसमावेशक सम्यक योजनेची व वार्षिक योजनेची विद्यापरिषदेकडे शिफारस करणे ;

(य) परिनियमामध्ये विहित केल्याप्रमाणे, व्यवस्थापनाच्या बदलांच्या किंवा हस्तांतरणाच्या आणि महाविद्यालये व परिसंस्था यांचे ठिकाण बदलण्याच्या प्रस्तावांवर विचार करणे व त्यांना मान्यता देणे ;

(यक) कुलसचिवाकडून दर सहा महिन्यांनी प्राप्त झालेल्या, विद्यापीठाच्या विकास कार्यक्रमांचा अहवाल स्वीकारणे व त्यावर विचार करणे ;

(यख) परिनियमांनुसार, विद्यापरिषदेच्या शिफारशीवरून, विद्यापीठ विभाग, विद्यापीठ परिसंस्था, संलग्न महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांना स्वायत्त दर्जा देणे ;

(यग) विद्यापरिषदेकडून प्राप्त झालेल्या विद्याविषयक कार्यक्रमांच्या प्रस्तावांचे निर्धारण करणे व त्यांना मान्यता देणे ;

(यघ) राज्य शासनाचे निधी, विद्यापीठ निधी व इतर अभिकरणांकडून स्वतंत्रपणे मिळालेले निधी यांचे वार्षिक अहवाल, वार्षिक लेखे व लेखापरीक्षा अहवाल यांवर विचार करणे व ते स्वीकारणे ;

(यङ) महाविद्यालये, परिसंस्था किंवा विद्यापीठ विभाग योग्यरीत्या चालविणे, त्यांचे कामकाज करणे व त्यांची आर्थिक स्थिती यांसंबंधातील कोणत्याही बाबीच्या संबंधात चौकशी करण्याची व्यवस्था करणे ;

(यच) परिनियम आणि आदेश काढण्याचा किंवा त्यामध्ये सुधारणा करण्याचा किंवा त्याचे निरसन करण्याचा अधिकार वगळता, आपल्या अधिकारांपैकी कोणतेही अधिकार कुलगुरुकडे किंवा त्यास योग्य वाटेल अशा विद्यापीठाच्या अधिकाऱ्याकडे किंवा प्राधिकरणाकडे किंवा त्याने नियुक्त केलेल्या समितीकडे सोपविणे ;

(यछ) विद्यापीठ निधी व इतर अभिकरणांकडून मिळालेले निधी यांमधून निर्माण केलेल्या पदांच्या संबंधात, विद्यापीठातील अध्यापकेतर कर्मचारीवर्गाची कार्ये, कर्तव्ये, अधिकार व जबाबदाऱ्या निश्चित करणे ;

(यज) महाराष्ट्र शैक्षणिक संस्था (कॅपिटेशन फी घेण्यास प्रतिबंध) अधिनियम, १९८७ व इतर १९८८ संबद्ध अधिनियम यांच्या तरतुदीनुसार विहित फी च्या उल्लंघनाच्या संबंधातील सर्व प्रकरणे चा हाताळणे ; महा. ६.

(यझ) महाविद्यालयाचे माजी विद्यार्थी, लोकहितैषी, उद्योगसमूह आणि इतर हितसंबंधित व्यक्तीकडून देणग्या, बक्षिसे आणि इतर स्वरूपातील वित्तीय साहाय्य स्वीकारणे आणि अशा देणग्या, बक्षिसे, इत्यादी स्वीकारण्यासाठी विद्यापीठाने अनुसरावयाची कार्यपद्धती विहित करणे ;

(यञ) परिनियमांमध्ये निर्धारित केलेली कार्यपद्धती अनुसरल्यानंतर दोषी महाविद्यालये किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांच्यावर शास्ती लादणे ;

(यट) संलग्न महाविद्यालयाच्या व्यवस्थापनासंबंधीच्या विवादांच्या बाबतीत, त्या विवादावर वैधानिकरीत्या निर्णय घेण्यात येईपर्यंत अशा महाविद्यालयाचे व्यवस्थापन चालविण्याकरिता, प्रशासकीय मंडळ नियुक्त करण्याकरिता कुलगुरूमार्फत राज्य शासनाला शिफारस करणे. या मंडळाची रचना व त्याच्या नियुक्तीची प्रक्रिया ही परिनियमांद्वारे विहित केल्याप्रमाणे असेल. या संबंधातील राज्य शासनाचा निर्णय अंतिम आणि बंधनकारक असेल ;

(यठ) विद्यार्थ्यांची सनद तयार करणे व ती स्वीकारणे.

विद्यापरिषद. ३२. (१) विद्यापरिषद हे विद्यापीठाचे विद्याविषयक प्रमुख प्राधिकरण असेल आणि ती विद्यापीठातील अध्यापन, संशोधन व मूल्यमापन यांचे नियमन करण्यास व त्यांचा दर्जा कायम राखण्यास जबाबदार असेल. अध्यापन, संशोधन, विस्तार, विद्याविषयक बाबीसंबंधातील सहयोगी कार्यक्रम यांसंबंधातील दर्जा राखणे व सुधारणे आणि अध्यापकांच्या कार्यभाराचे मूल्यमापन याबाबीसंबंधातील विद्याविषयक धोरणे निर्धारित करण्यासदेखील विद्यापरिषद जबाबदार असेल.

(२) विद्यापरिषदेच्या वर्षातून किमान चारपेक्षा कमी नसतील इतक्या बैठकी होतील.

(३) विद्यापरिषदेत पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :-

(क) कुलगुरु, अध्यक्ष ;

(ख) प्र-कुलगुरु ;

(ग) विद्याशाखांचे अधिष्ठाते आणि सहयोगी अधिष्ठाते, कोणतेही असल्यास ;

(घ) उप परिसरांचे संचालक ;

(ङ) संचालक, नवोपक्रम, नवसंशोधन आणि साहचर्य ;

(च) कुलगुरु, कुलपतीशी विचारविनिमय करून या प्रयोजनाकरिता त्याने नियुक्त केलेल्या शोध समितीच्या शिफारशीनुसार खालील सदस्य नामनिर्देशित करील :-

(एक) संचालित स्वायत्त किंवा संलग्न महाविद्यालयांचे आठ प्राचार्य, यांपैकी एक महिला असेल आणि एक ज्यांना राष्ट्रीय मूल्यांकन व अधिस्वीकृती परिषद (नॅक), किंवा, यथास्थिति, राष्ट्रीय अधिस्वीकृती मंडळ यांच्याकडून अधिस्वीकृती मिळालेली आहे असे, आळीपाळीने अनुसूचित जातीची किंवा अनुसूचित जमातीची किंवा निरधिसूचित जमातीची (विमुक्त जाती) किंवा भटक्या जमातीची किंवा इतर मागासवर्गाची व्यक्ती असेल ;

(दोन) दोन प्राध्यापक, त्यापैकी एक व्यक्ती, आळीपाळीने अनुसूचित जाती किंवा अनुसूचित जमाती किंवा निरधिसूचित जाती (विमुक्त जाती) किंवा भटक्या जमाती किंवा इतर मागासवर्ग यांतील असेल ;

(तीन) मान्यताप्राप्त परिसंस्थेचा एक प्रमुख ;

(छ) अध्यापक गटाने आपल्यामधून निवडून घ्यावयाचे पंधरा वर्षापेक्षा कमी नसेल इतका अध्यापनाचा अनुभव असलेले, प्रत्येक विद्याशाखेचे प्रतिनिधित्व करणारे दोन अध्यापक, त्यांपैकी एक अनुसूचित जातीची किंवा अनुसूचित जमातीची किंवा निरधिसूचित जमातीची (विमुक्त जाती) किंवा भटक्या जमातीची किंवा इतर मागासवर्गाची व्यक्ती असेल, परंतु प्रत्येक विद्याशाखेचे आरक्षण हे चिठ्ठ्या टाकून काढलेल्या सोडतीद्वारे ठरवण्यात येईल ;

परंतु, या खंडान्वये, प्रत्येक विद्याशाखेचे प्रतिनिधित्व करणाऱ्या अध्यापकांपैकी, एक अध्यापक ही, चिठ्ठ्या टाकून काढलेल्या सोडतीद्वारे ठरविण्यात येईल अशी महिला असेल ;

(ज) अधिसभेने, अधिसभेचे सदस्य असलेल्या व्यवस्थापनाच्या प्रतिनिधींमधून नामनिर्देशित केलेला एक व्यवस्थापन प्रतिनिधी ;

(झ) भारतीय प्रौद्योगिकी संस्था, भारतीय विज्ञान शिक्षण व संशोधन संस्था, भारतीय व्यवस्थापन संस्था, भारतीय अवकाश संशोधन संघटना, भारतीय सनदी लेखापाल संस्था, भारतीय परिव्यय लेखापाल संस्था, भारतीय कंपनी सचिव संस्था, भारतीय सामाजिक संशोधन परिषद, औद्योगिक संघ, भारतीय ऑलिम्पिक संघ यांसारख्या राष्ट्रीय दर्जाच्या परिसंस्थांमधील आणि संलग्न क्षेत्रांमधील तसेच शक्य तेथवर सर्व विद्याशाखांचे प्रतिनिधित्व करणाऱ्या क्षेत्रांमधील, कुलपतीने, नामनिर्देशित केलेले, आठ मान्यवर तज्ज्ञ ;

(ज) संचालक, उच्च शिक्षण, किंवा सह संचालक, उच्च शिक्षण या दर्जापेक्षा कमी दर्जाची नसेल अशी, त्याने नामनिर्देशित केलेली व्यक्ती ;

(ट) संचालक, तंत्र शिक्षण, किंवा सह संचालक, तंत्र शिक्षण या दर्जापेक्षा कमी दर्जाची नसेल अशी, त्याने नामनिर्देशित केलेली व्यक्ती ;

(ठ) संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ ;

(ड) अभ्यास मंडळाचे अध्यक्ष ;

(ढ) कुलसचिव-सदस्य सचिव.

विद्यापरिषदेचे  
अधिकार व  
कर्तव्ये.

३३. (१) विद्यापरिषदेचे अधिकार व कर्तव्ये पुढीलप्रमाणे असतील :-

(क) विद्यापीठ हे, संशोधन व विकास यांस चालना देणारे, आणि उद्योगाशी परस्परसंबंध राखणारे व एकमेकांशी दुवा साधणारे बौद्धिक संपदा हक्क आणि उपक्रमशीलता यांची जोपासना व ज्ञानाधिष्ठित उद्योगांचे नवसंशोधन करणारे एक गतिमान असे मध्यवर्ती केंद्र बनले आहे याची सुनिश्चिती करणे ;

(ख) विद्याशाखेकडून अभ्यास मंडळाकडे विचारार्थ पाठविण्यात आलेल्या बाबी, कोणत्याही असल्यास, त्यावर विचार करणे आणि फेरबदलांसह त्यास मान्यता देणे ;

(ग) सर्व प्रमाणपत्रे, पदविका, पदव्या, पदव्युत्तर अध्ययनक्रम व इतर विद्याविषयक विशेषोपाधी यांसाठी पसंतीवर आधारित श्रेयांकपद्धती असल्याबाबत सुनिश्चिती करणे ;

(घ) विद्यापीठाची सर्व महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांमध्ये संशोधनाचा व उपक्रमशीलतेचा अंतस्थ हेतू वाढीस लागत आहे याची सुनिश्चिती करणे ;

(ङ) अधिष्ठाता मंडळ, शुल्क निश्चिती समिती मार्फत, शिफारस केल्याप्रमाणे शुल्क, इतर शुल्क व आकार यांना मान्यता देणे ;

(च) पदव्या, पदविका, प्रमाणपत्रे आणि इतर विद्याविषयक विशेषोपाधी सुरू करण्यासंबंधी व्यवस्थापन परिषदेकडे शिफारस करणे ;

(छ) व्यवस्थापन परिषदेकडे विद्याविषयक बाबींच्या संबंधात आदेशांचा मसुदा प्रस्तावित करणे ;

(ज) विद्याविषयक बाबींच्या संबंधात आदेश आणि विनियम करणे, त्यात सुधारणा करणे व त्यांचे निरसन करणे ;

(झ) विद्याशाखांना विषयांचे वाटप करणे ;

(ञ) प्राश्निक, परीक्षक, नियामक आणि परीक्षा घेणाऱ्या व मूल्यमापन करण्याच्या कामाशी संबंधित इतर व्यक्ती यांच्या नियुक्तीसाठी अर्हता व प्रमाणके विहित करणे ;

(ट) विद्यापीठ निधीमधून व इतर निधीकरण अभिकरणांकडून मिळणाऱ्या निधीमधून विद्यापीठास आवश्यक असलेल्या विद्यापीठ अध्यापकांची व दीर्घ सुटी नसलेल्या विद्याविषयक कर्मचारीवर्गाची पदे निर्माण करण्यासाठी व्यवस्थापन परिषदेने विचार करणे व त्याबद्दल शिफारस करणे ;

(ठ) विद्यापीठ अनुदान आयोग व राज्य शासनाच्या प्रमाणकांशी अनुरूप संलग्न महाविद्यालयांच्या किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थांच्या कर्मचारीवर्गामधील कोणत्याही कर्मचाऱ्यास विद्यापीठाचा अध्यापक म्हणून मान्यता देण्यासाठी प्रमाणके विहित करणे ;

(ड) महाविद्यालयांना संलग्नीकरण देणे, त्यांचे संलग्नीकरण चालू ठेवणे, संलग्नीकरणाची मुदत वाढविणे व उच्च शिक्षण व संशोधन किंवा विशेषीकृत अभ्यास परिसंस्थाना मान्यता देणे, त्यांची मान्यता चालू ठेवणे, मान्यतेची मुदत वाढविणे यांसाठी प्रमाणके विहित करणे ;

(ढ) हा अधिनियम, परिनियम, आदेश व विनियम यांच्या तरतुदींनुसार महाविद्यालयांना किंवा परिसंस्थांना संलग्नीकरण देणे ;

(ण) विद्यापीठ अनुदान आयोग व राज्य शासनाच्या मानकांनुसार खाजगी कौशल्य शिक्षण प्रदाता परिसंस्था व अधिकारप्रदत्त स्वायत्त कौशल्य विकास महाविद्यालयांनी सुरु केलेल्या विविध प्रमाणपत्र, पदविका, प्रगत पदविका व पदवी अध्ययनक्रम यांस मान्यता देणे ;

(त) अधिष्ठाता मंडळाने तयार केल्याप्रमाणे आणि व्यवस्थापन परिषदेने शिफारस केल्याप्रमाणे सर्वसमावेशक सम्यक योजनेची अधिसभेला शिफारस करणे ;

(थ) अधिष्ठाता मंडळाने तयार केल्याप्रमाणे आणि व्यवस्थापन परिषदेच्या शिफारशीप्रमाणे, उच्च शिक्षणाची महाविद्यालये, परिसंस्था यांच्या ठिकाणाबाबतच्या वार्षिक योजनेस मान्यता देणे ;

(द) परिनियमांच्या तरतुदींनुसार परिसंस्था, विभाग, संलग्न किंवा संचालित महाविद्यालय आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांना स्वायत्त दर्जा प्रदान करण्याबद्दल व्यवस्थापन परिषदेकडे शिफारस करणे ;

(ध) अधिष्ठाता मंडळाने त्यांच्याकडे विचारार्थ पाठवलेले नवीन पाठ्यक्रम, आंतर-विद्याशाखीय पाठ्यक्रम व अल्पमुदत प्रशिक्षण कार्यक्रम यांना मान्यता देणे ;

(न) संबंधित विद्याशाखेने शिफारस केलेल्या पाठ्यक्रम, अभ्यासक्रम, प्राश्निक, परीक्षक व नियामक प्राश्निक व विविध पाठ्यक्रम योजनांचे मूल्यमापन यांस मान्यता देणे ;

(प) सर्व विद्याविषयक बाबींसंबंधात विद्यापीठाला सल्ला देणे आणि अधिसभेने तिच्या मागील वार्षिक बैठकीत शिफारस केलेल्या विद्याविषयक अध्ययनक्रमांबाबत व्यवहार्यता अहवाल व्यवस्थापन परिषदेला सादर करणे ;

(फ) सर्व विद्याविषयक अध्ययनक्रमांकरिता पसंतीवर आधारित श्रेयांकपद्धतीसाठी धोरण, कार्यपद्धती आणि कार्यप्रणाली निर्माण करणे ;

(ब) राज्यातील विविध विद्यापीठांमध्ये विद्यार्थ्यांच्या स्थानांतरणाबाबतचे धोरण तयार करणे तसेच राज्यातील एका विद्यापीठातील किंवा इतर विद्यापीठांमधील विविध विद्याशाखांमधून निरनिराळ्या पाठ्यक्रम रचनांची निवड करण्यास आणि त्याचे अध्ययन करण्यास लवचिकता आणण्याबाबतचे धोरण निर्धारित करणे ;

(भ) एखादे पदवी शिक्षण व इतर विद्याविषयक अध्ययनक्रम पूर्ण करण्यासाठी किमान व कमाल कालावधीसह शिक्षणाबाबत लवचिक दृष्टिकोन आणि “ अनुकूल अध्ययनगती ” प्रस्तुत करण्यासाठी कार्यपद्धती, धोरणे व कार्यप्रणाली याबाबत तपशीलवार योजना तयार करणे ;

(म) संशोधन प्रकल्प हे, पदव्युत्तर अध्ययनक्रमाच्या पसंतीवर आधारित प्रतिमानाचा एक अविभाज्य भाग असल्याची सुनिश्चिती करणे ;

(य) विद्यमान शैक्षणिक वर्ष संपण्याच्या तीन महिने अगोदर राज्य शासन व विद्यापीठ अनुदान आयोग यांनी दिलेल्या मार्गदर्शकतत्त्वानुसार, पुढील शैक्षणिक वर्षाकरिता विद्यापीठाचे शैक्षणिक वेळापत्रक तयार करणे ;

(यक) विभाग, महाविद्यालये, प्रशाळा, केंद्रे, उच्च शिक्षण, संशोधन व विशेषीकृत अभ्यासक्रम परिसंस्था स्थापन करण्यासाठी व्यवस्थापन परिषदेकडे शिफारस करणे ;

(यख) हा अधिनियम, परिनियम, आदेश व विनियम यांद्वारे किंवा तदन्वये प्रदान करण्यात येतील अशा इतर अधिकारांचा वापर करणे किंवा सोपविण्यात येतील अशी कर्तव्ये पार पाडणे.

(२) विद्यापरिषद, वित्तीय भाराचा अंतर्भाव असणाऱ्या सर्व बाबी किंवा निर्णय मान्यतेसाठी व्यवस्थापन परिषदेकडे विचारार्थ पाठवील.

विद्याशाखा. ३४. (१) विद्याशाखा या, विद्याशाखेत समाविष्ट असलेल्या विषयांच्या संबंधातील अभ्यास व संशोधन यांबाबत आणि तसेच बहुविध विद्याशाखांच्या अभ्यास व संशोधनाच्या संबंधात, विद्यापीठाची विद्याविषयक समन्वय साधणारी प्रमुख प्राधिकरणे असतील.

(२) विद्यापीठात पुढील विद्याशाखा असतील :-

(एक) विज्ञान व तंत्रज्ञान विद्याशाखा ;

(दोन) वाणिज्य व व्यवस्थापन विद्याशाखा ;

(तीन) मानवविज्ञान विद्याशाखा ;

(चार) आंतर-विद्याशाखीय अभ्यास विद्याशाखा.

(३) प्रत्येक विद्याशाखेत, परिनियमांद्वारे विहित करण्यात येतील अशा विषयांचा समावेश असेल.

(४) विद्याशाखेत पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :-

(क) विद्याशाखेचा अधिष्ठाता-पदसिद्ध अध्यक्ष ;

(ख) कलम १५ च्या पोट-कलम (५) अन्वये नामनिर्देशित केला असल्यास सहयोगी अधिष्ठाता ;

(ग) विद्याशाखेत अंतर्भूत असलेल्या विषयांसाठी प्रत्येक अभ्यास मंडळाचा अध्यक्ष ;

(घ) प्रत्येक अभ्यास मंडळाने नामनिर्देशित केलेली एक व्यक्ती, जी मान्यताप्राप्त अध्यापक असेल आणि अन्यथा अभ्यास मंडळाचा सदस्य म्हणून नामनिर्देशित होण्यास पात्र असेल ;

(ङ) प्र-कुलगुरूने विद्याशाखेच्या अधिष्ठात्याशी विचारविनिमय करून नामनिर्देशित करावयाच्या, विद्याशाखेतील विषयांमध्ये उच्च विद्याविभूषित आणि औद्योगिक किंवा व्यावसायिक कामगिरीसाठी ख्यातनाम आहेत अशा पाच विशेष निर्मात्रित व्यक्ती.

३५. विद्याशाखेचे अधिकार व कर्तव्ये पुढीलप्रमाणे असतील :-

विद्याशाखेचे  
अधिकार व  
कर्तव्ये.

(क) व्यवस्थापन परिषद, विद्यापरिषद किंवा अधिष्ठाता मंडळ यांच्याकडून विद्याशाखेकडे विचारार्थ पाठवण्यात आलेल्या कोणत्याही बाबींवरील अहवाल विचारात घेणे ;

(ख) शैक्षणिक धोरणात्मक निर्णयांची अंमलबजावणी करण्यासाठी कालबद्ध कार्यचालन यंत्रणा तयार करणे ;

(ग) अभ्यास मंडळाने विचारार्थ पाठविलेल्या बाबी विचारात घेणे व फेरबदलांसह, कोणतेही असल्यास, त्याची विद्यापरिषदेकडे शिफारस करणे ;

(घ) अभ्यास मंडळाकडून पाठविण्यात आलेल्या शिक्षण पाठ्यक्रम, पाठ्यक्रम संरचना व विविध पाठ्यक्रमांच्या मूल्यमापन योजना यांबाबत विद्यापरिषदेकडे शिफारस करणे ;

(ङ) स्वायत्त महाविद्यालये, अधिकारप्रदत्त स्वायत्त महाविद्यालये किंवा समूह परिस्थिती यांनी तयार केलेल्या अभ्यासक्रमांचा अभ्यास करणे व ते प्रमाणित करणे ;

(च) मनुष्यबळाच्या आवश्यकतेसह, विद्यापीठ विभाग किंवा परिस्थिती, संलग्न महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिस्थिती यांमध्ये पदव्युत्तर किंवा पदवीपूर्व अध्यापन, संशोधन, प्रशिक्षण व निदेशन सुरू करण्यासाठी आवश्यक असलेल्या बाबीसंबंधी अधिष्ठाता मंडळाकडे शिफारस करणे ;

(छ) अभ्यास मंडळे किंवा विद्यापीठ विभागाने व आंतर-विद्याशाखीय अभ्यास मंडळ यांनी त्यांच्याकडे विचारार्थ पाठविलेले नवीन पाठ्यक्रम, आंतर-विद्याशाखीय पाठ्यक्रम आणि अल्पमुदती प्रशिक्षण कार्यक्रम यांवर विचार करणे आणि त्याची अधिष्ठाता मंडळाकडे शिफारस करणे ;

(ज) अध्यापन, संशोधन, प्रशिक्षण व निदेशन यांच्या संबंधात विद्यापरिषदेने घालून दिलेल्या मार्गदर्शक-तत्वांची अंमलबजावणी केली जात आहे याची सुनिश्चिती करणे ;

(झ) अधिष्ठाता मंडळ, अभ्यास मंडळे आणि विद्यापीठ विभाग व आंतर-विद्याशाखीय अभ्यास मंडळ यांच्याशी विचारविनिमय करून, आंतरविभागीय व आंतर-विद्याशाखीय अध्ययनक्रमांचे नियोजन व आयोजन करणे ;

(ञ) विशेषतः सुधारित किंवा नव्याने सुरू केलेले किंवा आंतर-विद्याशाखीय अभ्यास पाठ्यक्रम, प्रशिक्षण व प्रगत प्रशिक्षण, क्षेत्रीय अनुभव व प्रतिनियुक्ती यांसाठी संलग्न महाविद्यालये आणि विद्यापीठ विभाग यांच्या अध्यापकांकरिता उजळणी पाठ्यक्रम व दिशानिर्देशन कार्यक्रम आयोजित करण्यासंबंधात, अध्यापक कर्मचारी प्रशिक्षण महाविद्यालयाकडे आणि विद्यापरिषदेकडे शिफारस करणे ;

(ट) विद्याशाखेच्या कामकाजाचा वार्षिक अहवाल तयार करणे आणि तो कुलगुरूकडे सादर करणे ;

(ठ) विद्यापीठ प्राधिकरणांद्वारे तिच्याकडे नेमून दिलेल्या विद्याशाखेमध्ये तसेच बहु-विद्याशाखांमध्ये अंतर्भूत केलेल्या विषयांच्या संबंधातील अभ्यासक्रम व संशोधन यांच्या संबंधात अन्य कोणतेही कार्य हाती घेणे.

अधिष्ठाता मंडळ. ३६. (१) विद्यापीठाच्या विद्याविषयक कामकाजांमध्ये समन्वय साधण्यासाठी, त्याचे निरीक्षण करण्यासाठी व ते कार्यान्वित करण्यासाठी आणि त्यावर देखरेख ठेवण्यासाठी एक अधिष्ठाता मंडळ असेल. विद्याविषयक संशोधन व विकास, उपक्रमशीलता, बौद्धिक संपदा हक्क, औद्योगिक नवसंशोधन व एकात्मिकृत नियोजनासाठी उद्योगांशी संबंध प्रस्थापित करणे यांसंबंधातील विद्यापीठ विकास योजना करण्यासाठी ते जबाबदार असेल. ते पदवीपूर्व, पदव्युत्तर विद्याविषयक अध्ययनक्रम व संलग्न महाविद्यालयांचा विकास यांचे नियोजन करील, संनियंत्रण करील, मार्गदर्शन करील व त्यात समन्वय साधेल.

(२) अधिष्ठाता मंडळात पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :-

(क) प्र-कुलगुरू-अध्यक्ष ;

(ख) विद्याशाखांचे अधिष्ठाते.

(ग) संचालक, नवोपक्रम, नवसंशोधन आणि साहचर्य.

अधिष्ठाता  
मंडळाचे  
अधिकार व  
कर्तव्ये.

३७. (१) अधिष्ठाता मंडळाचे अधिकार व कर्तव्ये पुढीलप्रमाणे असतील :-

(क) विद्यापीठ विभाग व महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांमधील पदव्युत्तर विभागांमध्ये पदव्युत्तर पाठ्यक्रम सुरू करण्यासाठी विद्यापरिषदेकडे शिफारशी करणे ;

(ख) विद्याशाखेने त्यांच्याकडे विचारार्थ पाठविलेले नवीन पाठ्यक्रम, आंतर-विद्याशाखीय पाठ्यक्रम व अल्पमुदती प्रशिक्षण कार्यक्रम यांवर विचार करणे व त्यांची विद्यापरिषदेकडे शिफारस करणे ;

(ग) विद्यापीठ विभाग व महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांमधील पदव्युत्तर विभाग यांमधील अध्यापन व संशोधन यांचा दर्जा राखण्यासाठीच्या संशोधनविषयक कार्यक्रमांवर नियंत्रण ठेवणे, त्यांचे विनियमन करणे व त्यात समन्वय साधणे ;

(घ) महाविद्यालये आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांमधील पदव्युत्तर अध्यापक व संशोधन मार्गदर्शक यांना मान्यता देण्याबाबतच्या मानकासंबंधात विद्यापरिषदेकडे शिफारस करणे ;

(ङ) विद्यापरिषदेने विहित केलेल्या मानकांनुसार संशोधन व मान्यता समितीने शिफारस केल्याप्रमाणे पदव्युत्तर अध्यापक व संशोधन मार्गदर्शक यांना मान्यता देणे ;

(च) या अधिनियमान्वये विहित केल्याप्रमाणे कार्यपद्धतीचे अनुसरण करून खाजगी कौशल्य शिक्षण प्रदाता परिसंस्था व अधिकारप्रदत्त स्वायत्त कौशल्य शिक्षण महाविद्यालये यांना मान्यता देण्यासाठी कुलगुरूकडे शिफारस करणे ;

(छ) नवीन प्रमाणपत्र, पदविका, प्रगत पदविका व पदवी कार्यक्रम यांविषयी अध्ययनक्रम सुरू करण्याच्या व त्यांच्या अभ्यासक्रमांची रचना करण्याच्या बाबतीत खाजगी कौशल्य शिक्षण प्रदाता परिसंस्था व अधिकारप्रदत्त स्वायत्त कौशल्य-विकास महाविद्यालये यांनी विद्यापरिषदेकडे सादर केलेले प्रस्ताव विचारात घेणे व शिफारस करणे ;



(ज) आयोगाने तयार केलेल्या मार्गदर्शकतत्त्वांनुसार, उच्च शिक्षणाकरिता सुविधांचे समन्यायी वाटप करण्याची सुनिश्चिती करण्यासाठी विकासाची योजना एकत्रित करून पाच वर्षांसाठी सर्वसमावेशक सम्यक योजना तयार करणे ;

(झ) महाविद्यालये व उच्च शिक्षण परिसंस्था यांच्या ठिकाणासाठी सम्यक योजनेशी अनुरूप वार्षिक योजना तयार करणे ;

(ञ) विद्यापीठ विभाग, परिसंस्था, संलग्न महाविद्यालये, स्वायत्त विद्यापीठ विभाग व परिसंस्था, अधिकारप्रदत्त स्वायत्त महाविद्यालये, समूह परिसंस्था आणि अधिकारप्रदत्त स्वायत्त कौशल्य विकास महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांचे विद्याविषयक लेखापरीक्षण करणे. असे लेखापरीक्षण विद्याविषयक लेखापरीक्षा समिती करील त्या समितीची अंतर्गत व बाह्य सदस्य संख्या समान असेल ;

(ट) विद्याविषयक लेखापरीक्षा पद्धतीने महाविद्यालयांचे संलग्नीकरण चालू ठेवण्यावर आणि परिसंस्थांची मान्यता चालू ठेवण्यावर लक्ष ठेवणे.

(ठ) विद्यापीठामध्ये संचालित महाविद्यालये, प्रशाला, विभाग, उच्च शिक्षण, संशोधन व विशेषीकृत अभ्यास परिसंस्था, विद्याविषयक सेवा युनिटे, ग्रंथालये, प्रयोगशाळा व संग्रहालये स्थापन करण्यासाठीच्या प्रस्तावांची विद्यापरिषदेकडे शिफारस करणे ;

(ड) विद्यापीठ निधीमधून व इतर निधीकरण अभिकरणांकडून मिळालेल्या निधीमधून विद्यापीठासाठी आवश्यक असलेले विद्यापीठ अध्यापक व दीर्घ सुटी नसलेल्या विद्याविषयक कर्मचारीवर्गाची पदे निर्माण करण्याचा विचार करील आणि त्यांची अर्हता, अनुभव व वेतनश्रेणी विहित करण्याचा निर्णय घेणे आणि त्याबाबत विद्यापरिषदेकडे शिफारस करणे ;

(ढ) अधिछात्रवृत्ती, प्रवासी अधिछात्रवृत्ती, शिष्यवृत्ती, छात्रवृत्ती, पदके व पारितोषिके सुरू करण्याबाबत व्यवस्थापन परिषदेकडे प्रस्ताव तयार करणे व ती देण्यासाठी विनियम करणे ;

(ण) आंतर-विद्याशाखा व क्षेत्रीय किंवा प्रादेशिक अभ्यासक्रम चालविण्यासाठी उपकरण केंद्रे, कार्यशाळा, छंद केंद्रे, संग्रहालये, इत्यादींसारख्या सामाईक सुविधा पुरविण्याबाबतच्या प्रस्तावावर विद्यापरिषदेमार्फत व्यवस्थापन परिषदेकडे शिफारस करणे ;

(त) शुल्क-निश्चिती समितीमार्फत शुल्क, इतर शुल्के व आकार विहित करण्याबाबतच्या प्रस्तावाची विद्यापरिषदेकडे शिफारस करणे ;

(थ) आदेशांचा मसुदा तयार करणे आणि तो मान्यतेसाठी व्यवस्थापन परिषदेसमोर, किंवा, यथास्थिति, विद्यापरिषदेसमोर ठेवणे ;

(द) विनियमाचा मसुदा तयार करणे आणि तो मान्यतेसाठी व्यवस्थापन परिषदेसमोर किंवा, यथास्थिति, विद्यापरिषदेसमोर ठेवणे.

(२) अधिष्ठाता मंडळ, प्रत्येक अभ्यास मंडळासाठी संशोधन व मान्यता समिती नेमील :-

(क) संशोधन व मान्यता समितीमध्ये पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :-

(एक) प्र-कुलगुरू-पदसिद्ध अध्यक्ष ;

(दोन) संबंधित विद्याशाखा अधिष्ठाता आणि संबंधित विषय गटाचा सहयोगी अधिष्ठाता, कोणताही असल्यास ;

(तीन) अभ्यास मंडळाचा अध्यक्ष ;

(चार) ज्यांनी विद्यावाचस्पतीच्या (पीएच.डी.) किमान तीन विद्यार्थ्यांना यशस्वीरीत्या मार्गदर्शन केले आहे व जे प्राध्यापकाच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जाचे नाहीत असे आणि मान्यताप्राप्त किंवा ग्यातनाम राष्ट्रीय किंवा आंतरराष्ट्रीय जर्नल, साहित्यसंग्रह इत्यादींमध्ये ज्यांचे संशोधनपर वाङ्मय प्रसिद्ध झाले आहे असे कुलगुरूंनी नामनिर्देशित करावयाचे दोन विषयांतील तज्ज्ञ, त्यांपैकी एक व्यक्ती, विद्यापीठाबाहेरील असेल ;

(ख) संशोधन व मान्यता समितीला पुढील अधिकार आणि कर्तव्ये असतील :-

(एक) शोधनिबंधाचा किंवा प्रबंधाचा विषय मान्य करणे ;

(दोन) विद्यापरिषदेने मान्य केलेल्या निकषांच्या आधारे पदव्युत्तर, विद्यावाचस्पती आणि उच्च पदव्या प्रदान करण्यासाठी प्रबंध व संशोधन निबंधासाठी निर्देशींच्या नामिकेची शिफारस कुलगुरूंकडे करणे ;

(तीन) उचित कार्यप्रणाली अनुसरून, मान्यताप्राप्त संशोधन व इतर परिसंस्थांमधील पदव्युत्तर अध्यापक, संशोधक, शास्त्रज्ञ, विविध उद्योगातील, संशोधन व विकास प्रयोगशाळा किंवा केंद्रे यांमधील दहा वर्षांपेक्षा कमी नसेल इतका अनुभव असणारे, सक्रिय संशोधन व विकास तज्ज्ञ यांना मान्यताप्राप्त संशोधन मार्गदर्शक म्हणून मान्यता देण्यासाठी, अधिष्ठाता मंडळाकडे शिफारस करणे ;

(चार) अधिष्ठाता मंडळ, विद्याशाखा व विद्यापरिषद यांनी नेमून दिलेली शैक्षणिक व संशोधन आणि विकासविषयक बाबींच्या संदर्भातील इतर कोणतीही कामे हाती घेणे.

विद्यापीठ उप परिषर मंडळ. ३८. (१) उप परिसरातील नेमून दिलेले काम आणि कार्यक्रम आयोजित करण्यासाठी विद्यापीठाचे एक उप-परिसर मंडळ असेल. त्यामध्ये पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :-

(क) प्र-कुलगुरू-अध्यक्ष ;

(ख) विद्याशाखांचे अधिष्ठाता ;

(ग) वित्त व लेखा अधिकारी ;

(घ) सर्व उप परिसराचे संचालक ;

(ड) संचालक, नवोपक्रम, नवसंशोधन आणि साहचर्य ;

(च) कुलगुरूनी नामनिर्देशित केलेले, व्यवस्थापन परिषदेचे दोन सदस्य, ज्यांपैकी एक प्राचार्य असेल आणि दुसरा व्यवस्थापनाचे प्रतिनिधित्व करणारा असेल ;

(छ) संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ ;

(ज) संचालक, विद्यार्थी विकास मंडळ ;

(झ) संचालक, क्रीडा व शारीरिक शिक्षण ;

(ञ) व्यवस्थापन परिषदेने, नामनिर्देशित करावयाचे, प्रत्येक उप परिसराच्या अधिकारितेतील संलग्न, स्वायत्त महाविद्यालयामधील एक प्राचार्य, एक अध्यापक, एक व्यवस्थापन प्रतिनिधी ;

(ट) कुलसचिव-सदस्य-सचिव ;

(२) विद्यापीठ उप परिसर मंडळाची बैठक वर्षातून किमान तीन वेळा घेण्यात येईल.

३९. विद्यापीठ उप परिसर मंडळाचे अधिकार व कर्तव्ये पुढीलप्रमाणे असतील :-

(क) जिल्ह्यातील पदवीपूर्व व पदव्युत्तर शैक्षणिक उपक्रमांमध्ये समन्वय साधणे ;

(ख) मूळ विद्यापीठाच्या विविध शैक्षणिक, प्रशासनिक आणि प्रशासन यंत्रणेच्या कार्यान्वयनाची सुनिश्चिती करणे ;

(ग) जिल्ह्यातील उच्च शिक्षणाच्या परिसंस्थांमधील अंतर्गत परिसंस्था व आंतर परिसंस्था यांची परस्परांमधील माहिती व संदेशवहन तंत्रज्ञानाचे दुवे यांमध्ये समन्वय साधणे ;

(घ) अध्यापक आणि अध्यापकेतर कर्मचाऱ्यांच्या लाभासाठी महाविद्यालयांच्या सहयोगाने कार्यशाळा व प्रशिक्षण कार्यक्रम पार पाडणे ;

(ड) जिल्ह्यातील परीक्षा व मूल्यमापन यांच्याशी संबंधित कार्यक्रमांमध्ये समन्वय साधणे ;

(च) जिल्ह्यातील महाविद्यालये आणि संस्थांसाठी संशोधन योजना, विकास योजना आणि इतर निधी उभारणीचे कार्यक्रम तयार करण्यासाठी समन्वय साधणे आणि मूळ विद्यापीठाच्या मध्यवर्ती कार्यालयाशी संपर्क प्रस्थापित करणे ;

(छ) महाविद्यालये आणि परिसंस्थांमध्ये पदव्युत्तर स्तरावर अध्यापन आणि अध्ययन कामांचे समन्वय करणे आणि या संदर्भात आवश्यक ते सहाय्य उपलब्ध करून देणे ;

(ज) विद्यार्थी, संशोधन करणारे विद्यार्थी, अध्यापक, सहायक कर्मचारी आणि समाजातील इतर सदस्यांसाठी सर्व शैक्षणिक व प्रशासकीय कामांसाठी विद्यापीठाचा जिल्हास्तरीय प्रतिनिधी मंडळ म्हणून काम करणे ;

(झ) वित्तीय वर्षासाठीच्या वित्तीय गरजा आणि वार्षिक वित्तीय अंदाजपत्रक (अर्थसंकल्प) तयार करणे आणि मूळ विद्यापीठाच्या मध्यवर्ती कार्यालयास ते सादर करणे ;

(ञ) विद्यापीठाची उद्दिष्टे पार पाडण्यासाठी विद्यापीठ प्रशासनाने नेमून दिलेली कोणतीही इतर नियुक्त कामे हाती घेणे.

अभ्यास मंडळे. ४०. (१) परिनियमांद्वारे विहित करण्यात आलेल्या प्रत्येक विषयासाठी किंवा विषयांच्या गटासाठी एक अभ्यास मंडळ असेल. अभ्यास मंडळ हे विद्यापीठाचे प्राथमिक विद्याविषयक मंडळ असेल.

(२) अभ्यास मंडळात पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :—

(क) संबंधित विषयांतील विद्यापीठ विभागाचा किंवा परिसंस्थेचा प्रमुख :

परंतु, जेथे विषयासंबंधात विद्यापीठ विभाग नसेल त्याबाबतीत, मंडळ आपल्या पहिल्या बैठकीत, त्या विषयातील पदव्युत्तर स्तरावर अध्यापन करणाऱ्या संलग्न महाविद्यालयामधील किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थेमधील पदव्युत्तर विद्यार्थ्यांना अध्यापन करण्यासाठी ज्याला मान्यता मिळालेली आहे अशा विभागाच्या प्रमुखास स्वीकृत करील ;

(ख) कुलगुरूने संबंधित विद्याशाखेच्या अधिष्ठात्याशी विचारविनिमय करून, किमान दहा वर्षे अध्यापनाचा अनुभव असलेले पुढील प्रवर्गामधून नामनिर्देशित केलेले सहा अध्यापक :—

(एक) संबंधित विषयातील विद्यापीठ विभागाच्या पूर्णवेळ अध्यापकांमधून एक अध्यापक ;

(दोन) संबंधित विषयातील पदव्युत्तर अध्ययनक्रम देऊ करणाऱ्या संलग्न महाविद्यालयांमधील किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थांमधील किंवा पदव्युत्तर केंद्रांमधील मान्यताप्राप्त पदव्युत्तर अध्यापकांमधून दोन अध्यापक ;

(तीन) संलग्न महाविद्यालये आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांमधील विभागप्रमुख नसलेले तीन अध्यापक ;

(ग) संलग्न महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांच्या विभाग प्रमुखाच्या गटामधून निवडून घ्यावयाचे संलग्न महाविद्यालयातील व मान्यताप्राप्त परिसंस्थेमधील तीन विभाग प्रमुख ;

(घ) अभ्यास मंडळ त्याच्या पहिल्या बैठकीत :—

(एक) कलम ६५ च्या तरतुदींना अधीन राहून, अभ्यास मंडळ त्याच्या सदस्यांमधून एका सदस्याची अध्यक्ष म्हणून निवड करील :

परंतु, अभ्यास मंडळाच्या अध्यक्ष म्हणून निवडून घ्यावयाचा सदस्य हा, पदव्युत्तर विद्यार्थ्यांना अध्यापन करण्यासाठी मान्यता मिळालेला व पदव्युत्तर विद्यार्थ्यांना अध्यापन करणारा अध्यापक असेल ; आणि त्यानंतर पुढील व्यक्तींना स्वीकृत करून घेईल—

(दोन) इतर विद्यापीठातील एक प्राध्यापक ; आणि

(तीन) पुढीलप्रमाणे चार तज्ज्ञ व्यक्ती, जी,—

(क) राष्ट्रीय प्रयोगशाळा किंवा परिसंस्थांतील किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था किंवा उद्योग यांमधील सहायक संचालकाच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जाचे नसलेले पद धारण करणारी व्यक्ती किंवा मान्यताप्राप्त राष्ट्रीय किंवा आंतरराष्ट्रीय जर्नलमध्ये त्या विषयातील किमान एक संदर्भ पुस्तक किंवा तीन संशोधन प्रबंध प्रसिद्ध झाले आहेत अशा संबंधित क्षेत्रामधील तज्ज्ञ आहे ;

(ख) त्या विषयातील नामवंत विद्याव्यासंगी ;

(ग) विषयाशी संबंधित उद्योगामधील किंवा व्यावसायिक संस्थांमधील नामवंत व्यक्ती ;

(घ) विषयाशी संबंधित उद्योगामध्ये किमान दहा वर्षे कामाचा अनुभव किंवा विषयाशी संबंधित उद्योगाचा मालक किंवा सल्लागार किंवा संयंत्रणा याचा अनुभव असणारी व्यक्ती.

(ड.) आधीच्या वर्षांच्या अंतिम वर्ष पदवी परीक्षेतील आणि अंतिम वर्ष पदव्युत्तर परीक्षेतील संबंधित विषयातील अव्वल क्रमांक असलेल्या व्यक्तीला एक वर्षासाठी त्या विषयाचा अथवा त्या विषयाच्या गटाचा अभ्यासक्रम तयार करणे किंवा त्यात सुधारणा करणे यावरील चर्चेसाठी निमंत्रित सदस्य म्हणून घेणे.

४१. अभ्यास मंडळाचे अधिकार व कर्तव्ये पुढीलप्रमाणे असतील :-

अभ्यास  
मंडळाचे  
अधिकार व  
कर्तव्ये.

(क) नवीन पदविका व पदव्या सुरू करण्याबाबत विद्याशाखा किंवा संबंधित विद्याशाखा व विद्यापरिषद यांमार्फत व्यवस्थापन परिषदेकडे शिफारस करणे ;

(ख) अप्रस्तुत ठरणाऱ्या पदविका व पदव्या बंद करण्याबाबत विद्याशाखा किंवा संबंधित विद्याशाखा आणि विद्यापरिषद यांच्यामार्फत व्यवस्थापन परिषदेकडे शिफारस करणे ;

(ग) पाठ्यक्रम अभ्यास, पाठ्यक्रम संरचना आणि विविध पाठ्यक्रमांच्या मूल्यमापन योजना याबाबत संबंधित विद्याशाखेला शिफारस करणे ;

(घ) अभ्यास पाठ्यक्रमासाठी उपयोगी ठरणारी संदर्भ पुस्तके किंवा पूरक वाचन ग्रंथ किंवा पाठ्यपुस्तके आणि असे इतर उपयोगी साहित्य यांबाबत विद्याशाखेला शिफारस करणे ;

(ड) पाठ्यक्रमात भर घालणे किंवा तो वगळणे किंवा तो अद्ययावत करणे या संबंधात फेरबदलाबाबत विद्याशाखेला शिफारस करणे ;

(च) विद्यापरिषदेने निर्धारित केलेल्या निकषांच्या आधारे विद्यापीठीय परीक्षा व मूल्यमापन यासाठी प्राश्निक, परीक्षक आणि नियामक यांची नामिका तयार करणे आणि परीक्षा व मूल्यमापन मंडळाकडे त्यांची शिफारस करणे ;

(छ) उन्हाळी किंवा दिवाळी सुट्ट्यांमध्ये विषयानुरूप दिशा निदेशन आणि उजळणी पाठ्यक्रम आयोजित करण्याबाबत संबंधित विद्याशाखेच्या अधिष्ठात्याला सुचविणे ;

(ज) संबंधित पाठ्यक्रमाबाबत ग्रंथालय, प्रयोगशाळा व साधनसामग्रीसंबंधात आवश्यक गोष्टींची सिद्धता करणे ;

(झ) सुरू केलेल्या पाठ्यक्रमांबाबत विस्तार कार्यक्रम सुचविणे ;

(ञ) उद्योगाच्या किंवा उद्योगसमूहाच्या किंवा समाजाच्या सर्वांगीण आवश्यक बाबी जाणून घेऊन आणि काळाची गरज ओळखून अध्यापन-अध्ययन प्रक्रिया सुसंबद्ध ठेवण्यासाठी या आवश्यक बाबींचा अभ्यासक्रमात समावेश करणे ;

(ट) माहिती व संदेशवहन तंत्रज्ञान साधने वापरून सहयोग व सहभाग याद्वारे अध्ययनास प्रोत्साहन देणे ;

(ठ) अभ्यासक्रम तयार करणे, प्रत्येक विद्याशाखेत व्यवसाय शिक्षणाचा समावेश करणे आणि कौशल्य विकास कार्यक्रमाचा पाठपुरावा करण्यासाठी आणि अपेक्षित प्राविण्याचा स्तर गाठण्यासाठी किमान कालावधी विहित करणे ;

(ड) स्वायत्त महाविद्यालये, विद्यापीठ विभाग किंवा परिसंस्था, स्वायत्त मान्यताप्राप्त परिसंस्था, अधिकारप्रदत्त स्वायत्त महाविद्यालये किंवा समूह परिसंस्था, अधिकारप्रदत्त कौशल्यविकास महाविद्यालये यांनी विकसित केलेले अभ्यासक्रम, सर्व प्रक्रिया व सराव आणि अध्यापकांच्या किंवा तज्ज्ञांच्या मान्यतेबाबतच्या शिफारशी यांचे अनुसमर्थन करणे.

विद्यापीठ  
विभाग आणि  
आंतर-  
विद्याशाखीय  
अभ्यास मंडळ.

४२. (१) विद्यापीठ परिसरात आंतर-विद्याशाखीय शिक्षण व संशोधन यांचे प्रचालन करण्यासाठी आणि तसेच राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय परिसंस्थांबरोबर संपर्कजाळे निर्माण करण्यासाठी आणि अनेक विद्याशाखांमध्ये विचारांचे मुक्त आदानप्रदान व्हावे म्हणून विद्याविषयक संशोधन व विकासाचे वातावरण निर्माण करण्यासाठी विद्यापीठ विभाग व आंतरविद्याशाखीय अभ्यास मंडळ असेल.

(२) विद्यापीठ विभाग आणि आंतरविद्याशाखीय अभ्यास मंडळात पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :-

(क) प्र-कुलगुरू— अध्यक्ष ;

(ख) विद्याशाखांचे अधिष्ठाते आणि सहयोगी अधिष्ठाते, कोणतेही असल्यास ;

(ग) कुलगुरूने, इतर विद्यापीठ किंवा राष्ट्रीय स्तरावरील संशोधन व विकास प्रयोगशाळेमधून नामनिर्देशित करावयाचे चार तज्ज्ञ, यापैकी प्रत्येकाला विज्ञान, तंत्रज्ञान, मानवविज्ञान, वाणिज्य व व्यवस्थापन आणि आंतर-विद्याशाखीय अभ्यास अशा प्रत्येक विद्याशाखेत, संशोधन व विकास प्रयोगशाळेमधील प्राध्यापक म्हणून किंवा समतुल्य पदाचा किमान पाच वर्षांचा अनुभव असेल ;

(घ) कुलगुरूने नामनिर्देशित करावयाचे, विविध विषयांचे किंवा विद्याशाखांचे समन्याय पद्धतीने प्रतिनिधित्व करणारे चार विभाग प्रमुख किंवा वरिष्ठ प्राध्यापक.

(३) आंतर-विद्याशाखीय अभ्यास विद्याशाखेचा अधिष्ठाता हा सदस्य-सचिव म्हणून काम पाहील.

(४) मंडळाची वर्षातून किमान तीन वेळा बैठक होईल.

विद्यापीठ  
विभाग  
व आंतर-  
विद्याशाखा  
अभ्यास  
मंडळाचे  
अधिकार व  
कर्तव्ये.

४३. विद्यापीठ विभाग व आंतर-विद्याशाखा अभ्यास मंडळाचे अधिकार व कर्तव्ये पुढीलप्रमाणे असतील :-

(क) विद्यापीठ परिसरात गुणवत्तापूर्ण पदव्युत्तर शिक्षणाच्या प्रचालनासाठी दीर्घ मुदतीची धोरणे व कार्ययोजना तयार करणे ;

(ख) विद्यापीठ विभागांमध्ये पदव्युत्तर शिक्षणासाठी सर्वसमावेशक विकास योजना तयार करणे ;

(ग) विद्यापीठ विभागांसाठी वार्षिक वित्तीय अंदाजपत्रकावर (अर्थसंकल्प) काम करणे ;

(घ) संशोधन व विकास कार्यक्रमांचा, संशोधन मंडळाशी समन्वय साधणे ;

(ड) विद्यापीठ परिसरामधील अध्यापन व संशोधन व विकास कार्यक्रम यांत वाढ करण्याकरिता विदेशी व भारतातील प्रमुख अध्यापन व संशोधन व विकास परिसंस्था किंवा विद्यापीठे यांमध्ये संबंध प्रस्थापित करणे ;

(च) राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय विद्यापीठे व परिसंस्था यांच्याबरोबर विद्याविषयक साधनसंपत्तीचे आदानप्रदान करण्यासाठी, संयुक्त अध्यापन कार्यक्रम चालविण्यासाठी, संयुक्त पदवी अध्ययनक्रम चालविण्यासाठी, राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय अभिकरणे, विद्यापीठे (अभिमत किंवा स्वयंअर्थसहाय्यित विद्यापीठांसह) व परिसंस्था यांच्याशी सहयोग साधून राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय साहचर्य मंडळाबरोबर सहकार्याने काम करणे ;

(छ) अध्यापकांमध्ये समन्वय साधून विद्यापीठ परिसरात आंतरविद्याशाखीय अध्यापन कार्यक्रमांचे प्रचालन करणे आणि त्याचबरोबर विद्याविषयक आणि संशोधन व विकासविषयक पायाभूत सुविधा विभागून देण्यासाठी धोरण तयार करणे ;

(ज) विद्यापीठ विभाग, संलग्न महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांमध्ये पर्सतीवर आधारित श्रेयांकपद्धतीचे प्रचालन करणे ;

(झ) शिक्षण देण्यामध्ये तंत्रज्ञानाचा वापर करणे व त्याचा अंगीकार करणे ;

(ञ) वर्गखोल्यांमधील अध्ययनात प्रत्यक्ष शिकवण्याचे आणि इ-अध्ययन पद्धतीचे प्रचालन करणे, पदव्युत्तर अध्ययनाचा एक अविभाज्य भाग म्हणून छोट्या व मोठ्या संशोधन प्रकल्पांचा वापर करणे ;

(ट) निरंतर ऑनलाईन प्रक्रिया म्हणून विद्यार्थ्यांद्वारे अध्ययनाचे मूल्यनिर्धारण करण्यासाठी नवीन दृष्टिकोन व कार्यपद्धती सुरू करणे ;

(ठ) कुलगुरूला पुढील शिफारशी करणे,—

(एक) विहित केलेली किमान व अतिरिक्त अर्हता धारण करणाऱ्यांमधून निवडीद्वारे भरावयाची (अनुदानित पदे व कलम ८ च्या पोट-कलम (२) च्या प्रयोजनांसाठी असलेली पदे यांसह) विद्यापीठ अध्यापकांची पदे ;

(दोन) वित्तलब्धी व भरावयाच्या पदांची संख्या ; आणि

(तीन) अनुसूचित जाती किंवा अनुसूचित जमाती, विमुक्त जाती (निरधिसूचित जमाती) किंवा भटक्या जमाती किंवा इतर मागासवर्ग यांतील व्यक्तींसाठी राखून ठेवता येतील ; अशा उप-खंड (एक) खालील पदांची संख्या ;

(ड) विद्यापीठ विभाग व आंतरविद्याशाखीय अभ्यास मंडळ आणि विद्यापीठाची उद्दिष्टे साध्य करण्यासाठी विद्यापीठ प्राधिकरणांकडून नेमून देण्यात येईल असे इतर कोणतेही काम हाती घेणे.

४४. (१) महाविद्यालयांत अध्ययनाच्या विविध विद्याशाखेतील गुणवत्तापूर्ण पदव्युत्तर अध्ययनक्रम सुरू करण्याचा आणि त्यांची गुणवत्ता सुधारण्याचे व्यापक उद्दिष्ट असलेले महाविद्यालयीन पदव्युत्तर शिक्षण मंडळ महाविद्यालयीन पदव्युत्तर शिक्षण मंडळ असेल.

(२) महाविद्यालयांतील पदव्युत्तर शिक्षण मंडळाची वर्षातून चारपेक्षा कमी नसेल एवढ्या वेळा बैठक होईल. त्यापैकी दोन बैठकी प्रत्येक वर्षी, सप्टेंबर किंवा ऑक्टोबर आणि डिसेंबर किंवा जानेवारी महिन्यात होणे आवश्यक असेल.

(३) महाविद्यालयीन पदव्युत्तर शिक्षण मंडळात पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :—

(क) प्र-कुलगुरू—अध्यक्ष ;

(ख) विद्याशाखांचे अधिष्ठाते आणि सहयोगी अधिष्ठाते, कोणतेही असल्यास ;

(ग) कुलगुरूने नामनिर्देशित करावयाचे, इतर विद्यापीठामधून विद्याशाखानिहाय एक तज्ज्ञ व्यक्ती, यापैकी प्रत्येकाकडे प्राध्यापक म्हणून किमान पाच वर्षांचा अनुभव असेल ;

(घ) कुलगुरूने नामनिर्देशित करावयाचे, अधिमानतः विविध जिल्ह्यांमधून महाविद्यालयांतील पदव्युत्तर केंद्रामधील मान्यताप्राप्त पदव्युत्तर अध्यापक म्हणून किमान पाच वर्षांचा अनुभव असणारे महाविद्यालयांतील विद्याशाखानिहाय तीन विभाग प्रमुख ;

(ङ) सर्व उप परिसरांचे संचालक ;

(च) संबंधित प्रशासनिक विभागाचा उप कुलसचिव, मंडळाचा सचिव म्हणून काम पाहील.

(४) महाविद्यालयीन पदव्युत्तर शिक्षण मंडळाचे पुढील अधिकार व कर्तव्ये असतील :-

(क) संलग्न महाविद्यालयातील विशिष्ट विद्याशाखेत नवीन पदव्युत्तर केंद्र निर्माण करण्याची किंवा विद्यमान पदव्युत्तर केंद्रात नवीन पाठ्यक्रम सुरू करण्याची शिफारस करणे ;

(ख) जिल्हा उप परिसरांमार्फत जिल्हा पातळीवरील पदव्युत्तर केंद्रांच्या विकासासाठी सहकार्य निर्माण करणे ;

(ग) पदव्युत्तर केंद्रांमध्ये शिक्षणाच्या संमिश्र स्वरूपातील तंत्रज्ञानाचा वापर सुरू करणे व त्याच्या वापरास प्रोत्साहन देणे ;

(घ) अध्यापक-क्षमता वृद्धिंगत उपक्रम सुरू करून पदव्युत्तर केंद्रातील गुणवत्ता वाढीचा प्रसार करणे आणि त्याचा मागोवा घेणे ;

(ङ) पदव्युत्तर केंद्रांमध्ये संशोधन व विकास कार्यक्रम सुरू करणे ;

(च) महाविद्यालयांतील पदव्युत्तर शिक्षण मंडळाचे उद्दिष्ट पार पाडणे शक्य व्हावे म्हणून विद्यापीठ प्राधिकरण नेमून देईल अशी इतर कामे हाती घेणे.

आजीवन  
अध्ययन व  
विस्तार मंडळ.

४५. (१) विविध पदवीस्तरीय अध्ययनक्रम व कौशल्य विकास अध्ययनक्रम यांमधून कौशल्यपूर्ण व विद्वतापूर्ण मनुष्यबळ तयार करण्यासाठी आजीवन अध्ययन व विस्तार मंडळ असेल.

(२) आजीवन अध्ययन व विस्तार मंडळाची वर्षातून किमान दोन वेळा बैठक होईल.



(३) आजीवन अध्ययन व विस्तार मंडळात पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :-

(क) कुलगुरू—अध्यक्ष ;

(ख) प्र-कुलगुरू ;

(ग) विद्याशाखांचे अधिष्ठाते ;

(घ) आजीवन अध्ययन कौशल्य, मूल्य शिक्षण याच्या कार्यक्षेत्रात आणि सखोल शिक्षण क्षेत्रात कार्य करणारे, कुलगुरूने नामनिर्देशित केलेले तीन विख्यात तज्ज्ञ ;

(ङ) नवोपक्रम, संशोधन व विकास यांत सक्रीयपणे कार्यरत असलेले, कुलगुरूने नामनिर्देशित केलेले विद्यापीठ विभागामधील दोन अध्यापक ;

(च) नवोपक्रम, संशोधन व विकास आणि विस्तार यात सक्रीयपणे कार्यरत असलेले, कुलगुरूने नामनिर्देशित केलेले, महाविद्यालयांमधील दोन अध्यापक ;

(छ) संचालक, आजीवन अध्ययन व विस्तार केंद्र—सदस्य सचिव.

४६. (१) आजीवन अध्ययन व विस्तार मंडळाचे अधिकार व कर्तव्ये पुढीलप्रमाणे असतील :-

(क) ज्येष्ठ नागरिकांसाठी आजीवन अध्ययन, मूल्य शिक्षण व जीवन कौशल्य याच्या क्षेत्रात, विविध अध्ययन, संशोधन व विकास परिस्थिती आणि विविध प्रादेशिक व राष्ट्रीय संस्था आणि शासकीय अभिकरणे यांच्यामधील सहजीवन व सहकार्य याकरिता धोरणात्मक व कार्यात्मक स्तरावर साहचर्य निर्माण करणे ;

(ख) आजीवन अध्ययन व विस्तार याकरिता स्वतंत्र केंद्राच्या उपक्रमांचे पर्यवेक्षण करणे व संनियंत्रण करणे. हे केंद्र, मंडळाची उद्दिष्टे पार पाडण्यासाठी विद्यापीठाकडून स्थापन करण्यात येईल ;

(ग) आजीवन अध्ययन व विस्तार केंद्राच्या अर्थसंकल्पाकडे व वित्तीय गरजांकडे लक्ष देणे ;

(घ) आजीवन अध्ययन व विस्तार केंद्राच्या उपक्रमांचे वार्षिक कार्यक्रम तयार करणे आणि त्याचे नियतकालिक पुनर्विलोकन करणे ;

(ङ) व्यवस्थापन परिषदेकडे वार्षिक अहवाल सादर करणे ;

(च) आजीवन अध्ययन व विस्तार मंडळाची उद्दिष्टे पार पाडण्यासाठी विद्यापीठ प्राधिकरण नेमून देईल अशी कोणतीही अन्य कामे हाती घेणे.

(२) आजीवन अध्ययन व विस्तार मंडळाची उद्दिष्टे पार पाडण्यासाठी आजीवन अध्ययन व विस्तार विभाग असेल व त्याचा प्रमुख संचालक असेल.

परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ. (१) परीक्षा व मूल्यमापन मंडळास, परीक्षा व मूल्यमापनाबाबतच्या सर्व बाबी हाताळण्याचा प्राधिकार असेल. परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ, स्वायत्त महाविद्यालये, परिसंस्था, विद्यापीठ विभाग व मंडळ. विद्यापीठ परिसंस्था यांमधील परीक्षा घेण्यावर देखील पर्यवेक्षण करील.

(२) परीक्षा व मूल्यमापन मंडळाची प्रत्येक शैक्षणिक वर्षात किमान दोनदा बैठक होईल.

(३) परीक्षा व मूल्यमापन मंडळात पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :—

(क) कुलगुरू—अध्यक्ष ;

(ख) प्र-कुलगुरू ;

(ग) विद्याशाखांचे अधिष्ठाते आणि सहयोगी अधिष्ठाते, कोणतेही असल्यास ;

(घ) व्यवस्थापन परिषदेने नामनिर्देशित केलेले, अधिष्ठात्याव्यतिरिक्त दोन प्राचार्य ;

(ङ) व्यवस्थापन परिषदेने नामनिर्देशित करावयाचा विद्यापीठ विभागामधील एक प्राध्यापक ;

(च) व्यवस्थापन परिषदेने नामनिर्देशित करावयाचा किमान १५ वर्षे अध्यापनाचा अनुभव असलेला विभागप्रमुख किंवा प्राचार्य यांच्याखेरीज संलग्न महाविद्यालयांमधील एक अध्यापक ;

(छ) कुलगुरूने नामनिर्देशित केलेला मूल्यमापन क्षेत्रातील संगणकीकरणाचा एक तज्ज्ञ ;

(ज) कुलगुरूने नामनिर्देशित करावयाचा, महाराष्ट्र राज्यातील इतर सांविधिक विद्यापीठातील उप कुलसचिवाच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जा नसलेला ; ज्याला परीक्षेच्या कामासंबंधीचा संगणकीकरणाचा अनुभव असेल, असा निमंत्रित म्हणून एक तज्ज्ञ ;

(झ) संचालक, उच्च शिक्षण किंवा सह संचालकाच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जा नसलेली त्याने नामनिर्देशित केलेली व्यक्ती ;

(ञ) संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ - सदस्य-सचिव.

परीक्षा व मूल्यमापन मंडळाचे अधिकार व कर्तव्ये. (१) परीक्षा व मूल्यमापन मंडळाचे अधिकार व कर्तव्ये पुढीलप्रमाणे असतील :—

(क) विद्यार्थ्यांच्या कामगिरीचे कार्यक्षमतेने आणि कालबद्ध रीतीने मूल्यमापन करण्यासंबंधातील कामे करण्यासाठी धोरणे, यंत्रणा व कृती योजना तयार करणे ;

(ख) नियमन, कोष्टकीकरण, मूल्यमापन व वेळेवर निकाल घोषित करणे यांसह विद्यापीठाच्या परीक्षा व चाचण्या योग्यप्रकारे आयोजित करण्याची सुनिश्चिती करणे ;

परंतु, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ, या खंडाच्या प्रयोजनार्थ, विद्यार्थी विकास मंडळ व क्रीडा व शारिरीक शिक्षण मंडळ यांच्या पर्यायी व्यवस्था करण्याविषयीच्या, शिफारशी परिणामक करतील.

(ग) विद्यापीठाच्या वार्षिक वित्तीय अंदाजपत्रकात (अर्थसंकल्प) समाविष्ट करण्यासाठी परीक्षा व मूल्यमापन याबाबत वित्तीय अंदाजपत्रके तयार करणे व ती वित्त व लेखा समितीस सादर करणे ;

(घ) परीक्षा घेताना काटेकोर दक्षता घेण्याची व्यवस्था करणे, जेणेकरून विद्यार्थी, अध्यापक, समवेक्षक, पर्यवेक्षक, इत्यादींद्वारे कोणत्याही गैरप्रकारांचा अवलंब करण्यास आळा बसेल ;

(ड) अध्यापकांद्वारे बहुआयामी (मॉड्युलर) संरचनेमधील श्रेयांकाधारित निर्धारणासाठी कार्यपद्धती व अध्यापन कार्यपद्धती प्रस्थापित करणे व परिणामकारक यंत्रणा तयार करणे आणि प्रश्नपत्रिका संचाचा संग्रह निर्माण करणे व त्याचा प्रभावीपणे वापर करणे यांसह मूल्यमापनाच्या व निर्धारणाच्या संपूर्ण प्रक्रियेकरिता संगणक तंत्रज्ञानाचा वापर करणे ;

(च) पदवी, पदविका किंवा प्रमाणपत्रे देण्यासाठीच्या उत्तरपत्रिकांचे निर्धारण, गुप्तता बाळगल्याची सुनिश्चिती करण्यासाठी उत्तरपत्रिकांना आच्छादन घालणे आणि आच्छादन काढणे किंवा इतर कोणतीही पर्यायी पद्धत अनुसरून, मध्यवर्ती निर्धारण पद्धतीद्वारे केंद्रीभूत करण्यात आले आहे, याची सुनिश्चिती करणे ;

(छ) परीक्षा व मूल्यमापन प्रणाली अधिक कार्यक्षम करण्यासाठी परीक्षा व मूल्यमापनविषयक सुधारणा हाती घेणे ;

(ज) संबंधित अभ्यास मंडळाद्वारे तयार करण्यात आलेल्या नामिकेमध्ये समाविष्ट केलेल्या व्यक्तींमधून प्राश्निक, परीक्षक व नियामक यांची नियुक्ती करणे आणि पोट-कलम (५) च्या खंड (ख) अन्वये समितीद्वारे करण्यात आलेल्या शिफारशी लक्षात घेऊन जेथे आवश्यक असेल तेथे त्यांना काढून टाकणे किंवा त्यास मनाई करणे ;

(झ) संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ यांनी तयार केलेल्या परीक्षा व मूल्यमापनाच्या सविस्तर कार्यक्रमास मंजूरी देणे ;

(ञ) संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ यांनी अग्रेषित केलेल्या विद्यापीठ परीक्षांच्या निकालाच्या पुनर्विलोकनाच्या अहवालावर विचार करणे ;

(ट) परीक्षा घेणे व मूल्यमापन करणे यासंबंधातील तक्रारी ऐकून घेणे व त्यावर निर्णय देणे;

(ठ) या अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये त्याच्याकडे परीक्षा आणि मूल्यमापनाच्या संबंधातील सोपविण्यात आले असतील अशा, इतर अधिकारांचा वापर करणे.

(२) तात्काळ कार्यवाही करणे जीमुळे आवश्यक असेल अशी आकस्मिक निकड असल्यास, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळाचे अध्यक्ष किंवा याबाबत त्याने प्राधिकृत केलेला इतर कोणताही अधिकारी किंवा व्यक्ती, त्यास योग्य व आवश्यक वाटेल अशी कार्यवाही करील आणि त्याने केलेल्या कार्यवाहीचा अहवाल मंडळाच्या आगामी बैठकीत देईल.

(३) (क) प्राश्निक, परीक्षक व नियामक यांची नियुक्ती करण्यासाठी, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ, प्रत्येक विषयासाठी, पुढील व्यक्तींचा समावेश असणारी समिती घटित करील :-

(एक) संबंधित विद्याशाखेचा अधिष्ठाता—अध्यक्ष ;

(दोन) सहयोगी अधिष्ठाता, कोणताही असल्यास ;

(तीन) संबंधित अभ्यास मंडळाचा अध्यक्ष ;

(चार) अभ्यास मंडळाने त्यांच्या सदस्यांमधून नामनिर्देशित केलेले दोन सदस्य, त्यापैकी किमान एक पदव्युत्तर अध्यापक असेल ;

(पाच) परीक्षा व मूल्यमापन मंडळाचा संचालक अशा समितीचा सचिव म्हणून काम करील.

(ख) समिती अभ्यास मंडळाने तयार करावयाच्या नामिकेमध्ये समाविष्ट केलेल्या विविध परीक्षा व चाचण्या यांसाठी व्यक्तींची सूची तयार करील आणि ती सूची प्र-कुलगुरुकडे सादर करील व तो, ती सूची त्याच्या शिफारशीसह, कोणत्याही असल्यास, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळास सादर करील. त्यानंतर सादर मंडळ प्राश्निक, परीक्षक व नियामक आणि जेथे आवश्यक असेल तेथे निर्देशी यांची नियुक्ती करील.

(ग) परीक्षा व मूल्यमापन मंडळाच्या किंवा या कलमान्वये घटित केलेल्या समितीच्या कोणत्याही सदस्याची प्राश्निक, परीक्षक, नियामक किंवा निर्देशी म्हणून नियुक्ती करता येणार नाही :

परंतु, जेथे परीक्षा व मूल्यमापन मंडळाचा किंवा समितीचा सदस्य नसेल अशा विषयाच्या संबंधातील कोणताही अध्यापक उपलब्ध नसल्यास प्राश्निक, परीक्षक, नियामक किंवा निर्देशी म्हणून परीक्षा व मूल्यमापन मंडळाच्या किंवा या कलमान्वये घटित केलेल्या समितीच्या सदस्याची नियुक्ती करण्याचा अधिकार प्र-कुलगुरुला असेल ;

(४) विद्यापीठ, संलग्न, संचालित महाविद्यालये, समूह महाविद्यालये किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांच्या प्रत्येक अध्यापकावर आणि अध्यापकेतर कर्मचाऱ्यावर, विद्यापीठाच्या परीक्षा व विद्यार्थ्यांचे मूल्यमापन याबाबत परिनियमाद्वारे विहित केल्याप्रमाणे आवश्यक ते सहाय्य आणि सेवा देणे बंधनकारक असेल. याबाबत विद्यापीठाच्या किंवा महाविद्यालयाच्या किंवा परिसंस्थेच्या आदेशाचे अनुपालन करण्यात कोणत्याही अध्यापकाने किंवा अध्यापकेतर कर्मचाऱ्याने कसूर केल्यास, ती गैरवर्तणूक असल्याचे समजण्यात येईल आणि तो कर्मचारी शिस्तभंगविषयक कारवाईसाठी पात्र असेल. याबाबत विद्यापीठाच्या आदेशाचे अनुपालन करण्यात, कोणत्याही संलग्न महाविद्यालयाच्या, संचालित महाविद्यालयाच्या, समूह महाविद्यालयाच्या किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थेच्या अध्यापकाच्या किंवा अध्यापकेतर कर्मचाऱ्याच्या वतीने कसूर झाल्यास, कुलगुरूस, त्यांच्याविरुद्ध, समुचित कारवाई करण्याचा अधिकार असेल, यामध्ये परिनियमांद्वारे विहित करण्यात आले असेल त्याप्रमाणे, अध्यापकाच्या नियुक्तीच्या मान्यतेस स्थगिती देण्यासह शास्ती लादण्याचा समावेश असू शकेल.

(५) (क) विद्यापीठाद्वारे किंवा त्याच्या वतीने परीक्षा किंवा विद्यार्थ्यांचे मूल्यमापन किंवा औपचारिक सराव याबाबत सहाय्य किंवा सेवा देण्यासाठी विद्यापीठाच्या आदेशाचे अनुपालन करण्यात कसूर केल्याबद्दल आणि विद्यार्थी, प्राश्निक, परीक्षक, नियामक, निर्देशी, अध्यापक यांच्या किंवा परीक्षापूर्व टप्पा आणि परीक्षेनंतरचा टप्पा यांसह किंवा अशा कोणत्याही इतर टप्प्यावर परीक्षा घेण्याशी संबंधित इतर कोणत्याही व्यक्तींच्या चुकांबद्दल अन्वेषण करण्यासाठी व त्यावर शिस्तभंगाची कारवाई करण्यासाठी, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ पाचहून अधिक नसतील अशा व्यक्तींची, ज्यामध्ये एक अध्यक्ष असेल, समिती घटित करील.

(ख) अशी समिती, कुलगुरूला तिचा अहवाल व शिफारशी सादर करील. कुलगुरू, हा परीक्षा व मूल्यमापन मंडळाचे संचालक यांना गैरव्यवहारात प्रत्यक्षपणे किंवा अप्रत्यक्षपणे सहभागी असलेल्या व्यक्तींविरुद्ध किंवा व्यक्तींविरुद्ध शिस्तभंगाची कारवाई करण्याचे निर्देश देईल आणि संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ हा, कुलगुरूच्या निर्णयाची अंमलबजावणी करण्याची कार्यवाही करील.

४९. (१) विद्यापीठाच्या उपक्रमांच्या सर्व क्षेत्रात आणि त्याच्याशी संलग्न असलेल्या कामामध्ये माहिती तंत्रज्ञान तंत्रज्ञान, कार्यप्रणाली (सॉफ्टवेअर), हार्डवेअर यांचा योग्य प्रकारे वापर करण्यासाठी व संपर्कजाळ्याचा मंडळ. वापर करण्यासंबंधातील प्रश्न सोडविण्यासाठी निवड, नियुक्ती यांची व्यावसायिकदृष्ट्या व्यवस्था करण्यासाठी व शैक्षणिक, वित्तीय व प्रशासकीय कामात उपयोजन कार्यप्रणाली व तंत्रज्ञान यांचा वापर करण्यासाठी, एकछत्री संरचना निर्माण करणे आणि या प्रयोजनासाठी आवश्यक असलेला निधी उभारणे यासाठी माहिती तंत्रज्ञान मंडळ असेल.

(२) माहिती तंत्रज्ञान मंडळाची वर्षातून किमान तीन वेळा बैठक होईल.

(३) माहिती तंत्रज्ञान मंडळात पुढील सदस्यांचा समावेश असेल,—

(क) कुलगुरू—अध्यक्ष ;

(ख) प्र-कुलगुरू ;

(ग) विद्याशाखांचे अधिष्ठाते आणि सहयोगी अधिष्ठाते, कोणतेही असल्यास ;

(घ) संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ ;

(ङ) वित्त व लेखा अधिकारी ;

(च) कुलगुरूने नामनिर्देशित केलेला, कार्यप्रणाली (सॉफ्टवेअर) व हार्डवेअर या क्षेत्रातील ज्ञान व विशेष नैपुण्य असलेला विद्यापीठ विभागातील एक प्राध्यापक ;

(छ) कुलगुरूने नामनिर्देशित केलेले, माहिती व संदेशवहन तंत्रज्ञानाच्या क्षेत्रातील दोन तज्ज्ञ, त्यापैकी एक कार्यप्रणाली (सॉफ्टवेअर) व दुसरा हार्डवेअर या क्षेत्रातील तज्ज्ञ असेल ;

(ज) कुलसचिव ;

(झ) विज्ञान व तंत्रज्ञान विद्याशाखेचा अधिष्ठाता, सदस्य-सचिव म्हणून काम करील.

५०. माहिती तंत्रज्ञान मंडळाचे अधिकार व कर्तव्ये पुढीलप्रमाणे असतील :—

माहिती तंत्रज्ञान  
मंडळाचे  
अधिकार व  
कर्तव्ये.

(क) माहिती तंत्रज्ञान पायाभूत सुविधांमार्फत माहिती तंत्रज्ञान सेवांचे नियोजन करणे ;

(ख) तंत्रज्ञानाशी संबंधित असलेल्या पायाभूत सुविधा निर्माण करण्यासाठी विद्यापीठाच्या वार्षिक अर्थसंकल्पात विचार करणे ;

(ग) आभासी वर्गखोल्या व प्रयोगशाळाविषयक पायाभूत सुविधा निर्माण करण्यासाठी कार्ययोजना तयार करणे ;

(घ) विद्यापीठाच्या विविध परिसरांमध्ये संपर्कजाळे उभारण्यासाठी धोरण निर्धारित करणे ;

(ङ) उच्च शिक्षण, संशोधन व विकास आणि संलग्न प्रकल्प किंवा कार्यक्रम या क्षेत्रातील वित्तीय साधनसंपत्ती निर्माण करण्यासाठी धोरण निर्धारित करणे ;

(च) विद्यापीठ प्रशासन, विभाग व महाविद्यालये यांना परस्परंशी जोडण्यासाठी आंतरविद्यापीठीय व विद्यापीठांतर्गत संपर्कजाळे निर्माण करण्यासाठी विद्यापीठाला सल्ला देणे व सहाय्य करणे ;

(छ) राष्ट्रीय ज्ञान जाळ्याचा भाग असण्यासाठी विद्यापीठाला सहाय्य करणे ;

(ज) राज्यातील इतर विद्यापीठांशी त्यास जोडण्यासाठी विद्यापीठ संपर्कजाळे निर्माण करण्यास सहाय्य करणे ;

(झ) विद्यापीठाद्वारे निश्चित करण्यात आलेल्या मापदंडानुसार माहिती तंत्रज्ञान पायाभूत सुविधांच्या आणि सेवांच्या विविध स्तरांवरील दर्जा व कार्यक्षमता यांची सुनिश्चिती करणे ;

(ञ) शिक्षण, मूल्यमापन, वित्त व प्रशासन यांच्याशी संबंधित सर्व पैलूंमध्ये तंत्रज्ञानाचा वापर करण्यासाठी धोरण व कार्य योजना आखणे ;

(ट) विद्यापीठाचे प्रशासन, वित्तीय व मूल्यमापन कार्यक्रमांमध्ये तंत्रज्ञानाच्या वापराचे संनियंत्रण करणे ;

(ठ) प्रत्यक्ष शिक्षण व ई-अध्ययन साधने यांचे एकत्रीकरण करताना माहिती-प्रवाह-रूपरेषेचा वापर करण्यासाठी आणि तसेच आभासी व्याख्यान व प्रयोगशाळा यासंबंधातील पायाभूत सुविधा निर्माण करण्यासाठी कार्ययोजना व तंत्रज्ञान, वित्तीय गरजा व कार्यान्वयन स्तरावरील यंत्रणा तयार करणे ;

(ड) विद्यार्थी, अध्यापक, तांत्रिक व इतर कर्मचारी आणि इतर संबंधित माहिती यांवरील आधारसामग्रीच्या संग्रहनिर्मितीसाठी धोरणात्मक व कार्यान्वयन योजना तयार करणे ;

(ढ) संपूर्ण विद्यापीठ विभाग व विद्यापीठ यंत्रणा यासाठी कार्यप्रणाली (सॉफ्टवेअर), हार्डवेअर व प्रणाली (नेटवर्किंग) खरेदीकरिता सल्ला देणे ;

(ण) संमिश्र अध्ययनामध्ये तंत्रज्ञानाचा वापर, ई-अध्ययन साधने तयार करणे, आणि बहुविध माध्यमाचा (मल्टी-मिडिया) वापर करताना अध्यापक प्रशिक्षण याकरिता सहाय्य करणे व सल्ला देणे ;

(त) परिसंस्थांतील विद्यार्थी, अध्यापक तसेच इतर कर्मचारी सदस्यांची आधारसामग्री निर्माण करणे, तिची दर्जावाढ व परिरक्षण करणे यासाठी आधारसामग्री संग्रह कक्षाची निर्मिती करण्याकरिता यथोचित धोरण व कार्यपद्धती तयार करणे आणि विशिष्ट ओळख क्रमांक देणे ;

(थ) माहिती तंत्रज्ञान मंडळाची उद्दिष्टे पार पाडण्यासाठी विद्यापीठ प्राधिकरणांकडून नेमून देण्यात येतील अशी इतर कोणतीही कामे हाती घेणे.

राष्ट्रीय व  
आंतरराष्ट्रीय  
साहचर्य मंडळ.

५१. (१) विद्यापीठाचा प्रमुख राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय विद्यापीठांशी व परिसंस्थांशी असलेला दुवा जोपासणे, प्रस्थापित करणे, राखणे आणि बळकट करणे यांसाठी राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय साहचर्य मंडळ असेल.

(२) मंडळाची वर्षातून किमान तीन वेळा बैठक होईल.

(३) राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय साहचर्य मंडळामध्ये पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :-

(क) कुलगुरू—अध्यक्ष ;

(ख) प्र-कुलगुरू ;

(ग) विद्याशाखांचे अधिष्ठाते आणि सहयोगी अधिष्ठाते, कोणतेही असल्यास ;

(घ) कुलगुरूने नामनिर्देशित केलेला, निवडून आलेल्या सदस्यांमधील व्यवस्थापन परिषदेचा एक सदस्य ;

(ङ) कुलगुरूने नामनिर्देशित केलेला, विद्यापीठांच्या पदव्युत्तर विभागातील एक वरिष्ठ प्राध्यापक ;

(च) कुलगुरूने नामनिर्देशित करावयाचे दोन प्राचार्य, त्यांपैकी एक स्वायत्त किंवा अधिकारप्रदत्त स्वायत्त महाविद्यालये किंवा अधिकारप्रदत्त स्वायत्त परिसंस्था यांमधील असेल आणि एक संलग्न महाविद्यालयामधील असेल ;

(छ) राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय साहचर्यासंबंधात विशेष नेपुण्य दिसून येणाऱ्या उद्योगांमधून आयोगाने नामनिर्देशित करावयाचा एक तज्ज्ञ ;

(ज) संचालक, नवोपक्रम, नवसंशोधन व सहाचर्य मंडळ-सदस्य-सचिव.

५२. राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय साहचर्य मंडळाचे अधिकार व कर्तव्ये पुढीलप्रमाणे असतील :-

(क) प्रमुख राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय विद्यापीठे व परिसंस्था यांच्याबरोबर आंतरसाहचर्य वाढविण्यासाठी दीर्घकालीन धोरण व कार्ययोजना यांवर काम करणे ;

(ख) शैक्षणिक साधनसंपत्तीचे आदानप्रदान करणे, संयुक्त संशोधन आणि विकास व अध्ययनक्रम चालविणे, राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय विद्यापीठे, महाविद्यालये व परिसंस्था यांच्याबरोबर संयुक्त पदवी कार्यक्रम चालविणे यांसाठी राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय अभिकरणे, विद्यापीठे, महाविद्यालये व परिसंस्था यांच्याबरोबर सहयोग करण्याची प्रक्रिया विकसित करणे ;

(ग) उद्योग क्षेत्र आणि इतर संस्था यांमधील अध्यापक किंवा संशोधन व विकास शास्त्रज्ञ किंवा तज्ज्ञ यांनी विद्यापीठाचे विभाग, महाविद्यालये व परिसंस्था यांना भेटी देणे किंवा विद्यापीठाचे विभाग, महाविद्यालये व परिसंस्था यांमधील अध्यापकांनी उद्योगक्षेत्र व इतर संस्थांना भेटी देणे यांसाठी यंत्रणा विकसित करणे आणि तसेच अशा अभ्यागतांसाठी इतर आनुषंगिक (लॉजिस्टिक) सहाय्य देण्याबाबतचा तपशील तयार करणे ;

(घ) विद्यापीठ विभाग, महाविद्यालय व परिसंस्था यांमधील अध्यापक व विद्यार्थी यांनी राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय विद्यापीठे किंवा महाविद्यालये व परिसंस्थांना भेटी देणे किंवा राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय विद्यापीठे किंवा महाविद्यालये व परिसंस्था यांमधील अध्यापक व विद्यार्थी यांनी विद्यापीठ विभाग, महाविद्यालये व परिसंस्थांना भेटी देणे यांसाठी यंत्रणा विकसित करणे आणि तसेच अशा भेटीसाठी अर्थसंकल्पीय तरतुदी आणि आनुषंगिक (लॉजिस्टिक) सहाय्य याबाबतचा तपशील तयार करणे ;

राष्ट्रीय व  
आंतरराष्ट्रीय  
साहचर्य  
मंडळाचे  
अधिकार व  
कर्तव्ये.

(ड) विदेशी विद्यार्थी व स्थलांतरित भारतीय विद्यार्थी, यांना त्यांच्या प्रवेशासाठी व इतर सांविधिक औपचारिकता पूर्ण करण्यात सहाय्य करण्याची यंत्रणा तयार करणे ;

(च) विदेशी विद्यार्थी व स्थलांतरित भारतीय विद्यार्थी यांनी भारताच्या इतर भागास भेटी देणे, यांसारख्या सांस्कृतिक व इतर कार्यक्रमांचे आयोजन करणे ;

(छ) विदेशी विद्यार्थ्यांसाठी आणि स्थलांतरित भारतीय विद्यार्थ्यांसाठी जर विद्यापीठाने कोणत्याही इतर आनुषंगिक (लॉजिस्टिक) सुविधा निर्माण केल्या असल्यास, त्यासाठी व्यवस्था करणे ;

(ज) मंडळाच्या कार्यक्रमांसाठी आणि विदेशी विद्यार्थी व भारतीय स्थलांतरित विद्यार्थी यांना विविध सेवा देण्याकरिता अर्थसंकल्पीय तरतूद करणे ;

(झ) राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय साहचर्य मंडळाची उद्दिष्टे पार पाडण्यासाठी विद्यापीठ प्राधिकरणांकडून नेमून देण्यात येतील अशी अन्य कोणतीही कामे हाती घेणे.

नवोपक्रम, ५३. (१) नवोपक्रमाच्या संकल्पनेचा प्रसार करण्यासाठी आणि ज्यामुळे अंतिमतः उपक्रम निर्मिती नवसंशोधन व होते अशा नवसंशोधन प्रक्रियेद्वारे नवनवीन कल्पना, कार्यकारी प्रतिमानांमध्ये पोषक वातावरण निर्मिती उपक्रम मंडळ. करण्याकरिता व ती रुजवण्याकरिता एक नवोपक्रम, नवसंशोधन व उपक्रम मंडळ असेल.

(२) नवोपक्रम, नवसंशोधन व उपक्रम मंडळाची उद्दिष्टे साध्य करण्यासाठी विद्यापीठ एक स्वतंत्र नवोपक्रम, नवसंशोधन व उपक्रम केंद्र स्थापन करील. हे केंद्र, मंडळाकडून वेळोवेळी नेमून देण्यात येतील असे अधिकार वापरील व अशी कर्तव्ये पार पाडील.

(३) नवोपक्रम, नवसंशोधन व उपक्रम मंडळामध्ये पुढील सदस्यांचा समावेश असेल,—

(क) कुलगुरू—अध्यक्ष ;

(ख) प्र-कुलगुरू ;

(ग) विद्याशाखांचे अधिष्ठाते आणि सहयोगी अधिष्ठाते, कोणतेही असल्यास ;

(घ) आयोगाने उत्पादन, माहिती व संदेशवहन तंत्रज्ञान, जैव-विज्ञान व तंत्रज्ञान, कृषी उद्योग व सेवा उद्योग यांमधून नामनिर्देशित केलेले पाच ख्यातनाम उद्योगपती ;

(ड) विद्यापीठाचे मुख्यालय ज्या जिल्ह्यात आहे त्या जिल्ह्याच्या अग्रणी बँकेमधील, कुलगुरूने नामनिर्देशित करावयाचा एक वरिष्ठ व्यवस्थापक;

(च) नवोपक्रम, संशोधन व विकास यांमध्ये कार्यरत असणारे, कुलगुरूने नामनिर्देशित केलेल्या विद्यालयांमधील दोन अध्यापक ;

(छ) नवोपक्रम, संशोधन व विकास यांमध्ये कार्यरत असणारे, कुलगुरूने नामनिर्देशित केलेल्या महाविद्यालयांमधील दोन अध्यापक ;

(ज) उप-सचिवाच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जा नसलेला, माहिती व तंत्रज्ञान विभागाचा प्रतिनिधी ;

(झ) संचालक, नवोपक्रम, नवसंशोधन व साहचर्य मंडळ—सदस्य-सचिव.

(४) मंडळाच्या, वर्षभरात घ्यावयाच्या किमान तीन बैठकी असतील.



५४. नवोपक्रम, नवसंशोधन व उपक्रम मंडळाचे अधिकार व कर्तव्ये पुढीलप्रमाणे असतील :-

नवोपक्रम,  
नवसंशोधन व  
उपक्रम  
मंडळाचे  
अधिकार व  
कर्तव्ये.

(क) विद्यापीठ विभाग, महाविद्यालये आणि महाराष्ट्र राज्य आणि इतर राज्यांमधील विविध उद्योग यांमध्ये करण्यात येणारे विविध संशोधन आणि विकास कामे यांमधील सह-अस्तित्व आणि सहकार्य यांसाठी धोरणात्मक आणि कार्यात्मक स्तरावरील यंत्रणेमध्ये सहकार्य निर्माण करणे ;

(ख) परिणामकारक धोरण यंत्रणेच्या मार्फत सहकार्य निर्माण करणे आणि लहान, मध्यम व मोठे उद्योग स्थापन करण्यासाठी चांगल्या कल्पनांचे उत्पादित वस्तू प्रक्रिया सेवा व संशोधन योग्य पद्धतीमध्ये (स्केलेबल मोड) रूपांतरण करण्यासाठी यंत्रणेला सहाय्य करणे ;

(ग) राष्ट्रीय आणि जागतिक स्तरावर बौद्धिक संपदा हक्कांचे संरक्षण करण्यास पाठिंबा देण्यासाठी यंत्रणा स्थापन करणे ;

(घ) तरुण उद्योजकांना कार्यात्मक, कायदेविषयक, व्यवसाय आदर्श निर्माण व वित्तीय साहाय्य यांमध्ये मार्गदर्शन व मदत करण्यासाठी यंत्रणा तयार करणे ;

(ङ) नवोपक्रम, नवसंशोधन व उपक्रम केंद्राद्वारे, करावयाची कार्ये, प्रकल्प व योजना तयार करणे ;

(च) नवोपक्रम, नवसंशोधन व उपक्रम केंद्राच्या कार्याचा वार्षिक कार्यक्रम तयार करणे आणि त्याचा नियतकालिक आढावा घेणे ;

(छ) नवोपक्रम, नवसंशोधन व उपक्रम केंद्राचा वार्षिक अर्थसंकल्प तयार करणे ;

(ज) नवोपक्रम, नवसंशोधन व उपक्रम केंद्राच्या कार्याचे अवेक्षण व संनियंत्रण करणे ;

(झ) व्यवस्थापन परिषदेला नवोपक्रम, नवसंशोधन व उपक्रम केंद्राच्या कामाचा वार्षिक अहवाल सादर करणे ;

(ञ) नवोपक्रम, नवसंशोधन व उपक्रम मंडळाची उद्दिष्टे पार पाडण्यासाठी विद्यापीठ प्राधिकरणाकडून नेमून देण्यात येईल असे कोणतेही अन्य काम हाती घेणे.

५५. (१) महाविद्यालये, परिसंस्था व विद्यापीठ विभाग यांमधील विद्यार्थ्यांची विविध सांस्कृतिक विद्यार्थी विकास व कल्याण कार्यक्रमांची आखणी करण्यासाठी व त्यांचे अवेक्षण करण्यासाठी एक विद्यार्थी विकास मंडळ मंडळ. मंडळ असेल. विद्यार्थी विकास मंडळाची कामे विद्यार्थी विकास संचालकाद्वारे पार पाडण्यात येतील.

(२) विद्यार्थी विकास मंडळामध्ये पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :-

(क) कुलगुरू—अध्यक्ष ;

(ख) प्र-कुलगुरू ;

(ग) कुलगुरूने नामनिर्देशित केलेली प्रायोगिक कला क्षेत्रामधील एक व्यावसायिक व्यक्ती ;

(घ) कुलगुरूने नामनिर्देशित केलेली कला व ललित कला क्षेत्रामधील एक व्यावसायिक व्यक्ती ;

(ङ) कुलगुरूने नामनिर्देशित केलेले सांस्कृतिक किंवा कल्याण कार्यक्रमांशी संबंधित असलेले दोन अध्यापक त्यांपैकी एक महिला असेल ;

(च) विद्यापीठ विद्यार्थी परिषदेचे पदाधिकारी ;

(छ) व्यवस्थापन परिषदेने प्रत्येक जिल्ह्यासाठी नामनिर्देशित करावयाचे सांस्कृतिक व विद्यार्थी कल्याण कार्यक्रमाचे जिल्हा समन्वयक ;

(ज) विद्यापीठाच्या राष्ट्रीय सेवा योजनेचे संचालक ;

(झ) संचालक, विद्यार्थी विकास मंडळ, सदस्य-सचिव.

विद्यार्थी विकास  
मंडळाचे  
अधिकार व  
कर्तव्ये.

५६. (१) विद्यार्थी विकास मंडळाचे अधिकार व कर्तव्ये पुढीलप्रमाणे असतील :—

(क) महाविद्यालये व विद्यापीठ विभाग यांमधील सांस्कृतिक व विद्यार्थी विकास कार्यक्रमाच्या प्रचालनासाठी आवश्यक त्या उपाययोजना करणे ;

(ख) विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमांच्या बाबतीत प्रादेशिक व राष्ट्रीय मंडळांशी दुवा साधणे आणि त्यांच्यासह विविध कार्यक्रमांचे एकत्रितरीत्या प्रचालन करणे ;

(ग) प्रायोगिक कला, केवळ कला व रंग चित्रकला कौशल्ये या क्षेत्रातील आकलन होण्यासाठी, अभिरूची व कौशल्ये यांच्या प्रोत्साहनाकरिता महाविद्यालये व विद्यापीठ विभागांमध्ये कार्यक्रम हाती घेणे ;

(घ) महाविद्यालये, परिसंस्था आणि विद्यापीठ यांना समाजाच्या अधिक जवळ आणण्यासाठी विद्यापीठ-स्तरीय स्पर्धा, कौशल्य विकास कार्यशाळा, सहभागक्षम कार्यक्रम आयोजित करणे ;

(ङ) गट (राजकीय पक्ष वगळता), समाज व अन्य व्यावसायिक मंडळे यांना, विद्यार्थी विकास मंडळाच्या कामांमध्ये सहभागी करून घेण्यासाठी त्यांच्याशी संपर्क साधणे ;

(च) कमवा व शिका योजना, शैक्षणिक कर्ज, कुलगुरू साहाय्य निधी, दाननिधी योजना, विद्यार्थी आदानप्रदान योजना, इत्यादींसह विद्यार्थ्यांच्या विकासाच्या अभिनव योजना तयार करणे, त्या विकसित करणे आणि राबविणे ;

(छ) विद्यार्थ्यांच्या तक्रारी दूर करण्यासाठी आणि विद्यार्थ्यांचा लैंगिक छळ व रॅगिंग करण्यास प्रतिबंध करण्यासाठी यंत्रणा उभारणे आणि मंडळाचा वार्षिक अहवाल तयार करणे व तो मान्यतेसाठी अधिसभेकडे सादर करणे ;

(ज) विद्यार्थ्यांचा विकास व संस्कृती यासंबंधात आयोगाच्या शिफारशी अंमलात आणण्याकरिता यंत्रणा उभारणे ;

(झ) विविध प्रादेशिक, राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय स्तरीय स्पर्धा आणि सांस्कृतिक, मनोरंजनात्मक व अन्य कार्यक्रमां यांमधील योग्य प्रशिक्षित संघांचा सहभाग सुनिश्चित करण्यासाठी आवश्यक त्या उपाययोजना करणे ;

(ञ) व्यवसाय समुपदेशन, मानसिकदृष्ट्या समुपदेशन आणि पुनर्वसन करण्यासाठी आणि दिव्यांग विद्यार्थ्यांच्या (डिफरन्टली एबल स्टुडन्ट्स) उन्नतीसाठी योजना तयार करणे, विकसित करणे आणि राबविणे ;

(ट) विद्यापीठ व संलग्न महाविद्यालये यांतील राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) व राष्ट्रीय छात्र सेना (एनसीसी) यांच्या कार्यक्रमांचे समन्वयन करणे ;

(ठ) आदेशांद्वारे विहित केल्याप्रमाणे, परीक्षांच्या संबंधित वेळापत्रकांच्या दरम्यान आंतरविद्यापीठीय किंवा राष्ट्रीय अथवा आंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक स्पर्धांमध्ये किंवा राष्ट्रीय छात्र सेना, राष्ट्रीय सेवा योजनेच्या कार्यक्रमांमध्ये सहभागी होणाऱ्या विद्यार्थ्यांच्या परीक्षेच्या संबंधात पर्यायी व्यवस्था करण्याकरिता सक्षम प्राधिकरणाला शिफारस करणे ;

(ड) विद्यार्थी विकास मंडळाची व विद्यार्थी विकास कक्षाची उद्दिष्टे पूर्ण करता यावीत म्हणून विद्यापीठ प्राधिकरणाकडून नेमून देण्यात येईल असे कोणतेही अन्य काम हाती घेणे.

(२) विद्यार्थ्यांना सहाय्य करण्यासाठी आणि विद्यार्थ्यांच्या तक्रारींचे सत्वर निवारण करण्यासाठी तरतूद करण्याकरिता कार्यकारी स्तरीय यंत्रणा उभारण्याकरिता विद्यापीठामध्ये आणि महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्थांमध्ये एक विद्यार्थी विकास कक्ष आणि विद्यार्थी तक्रार निवारण कक्ष असेल. हे कक्ष खालीलप्रमाणे असतील-

(क) विद्यार्थी विकास कक्ष, -

विद्यार्थ्यांना त्यांच्या दैनंदिन जीवनाशी संबंधित विविध पैलूंमधील व त्यांचे शैक्षणिक कार्य, व्यक्तिमत्त्व विकास व विद्यापीठ परिसरातील निकोप जीवनाशी संबंधित इतर पैलू यामधील प्रश्न व अडचणी यांमध्ये साहाय्य करण्यासाठी एक विद्यार्थी विकास कक्ष असेल. संचालक, विद्यार्थी विकास हा विद्यापीठातील अशा कक्षाच्या प्रमुखपदी असेल. विद्यार्थी विकास कक्षामध्ये विद्यापीठ परिसरातील अध्यापकांमधून कुलगुरूने नामनिर्देशित केलेल्या इतर सात सदस्यांचा समावेश असेल आणि विद्यापीठ विद्यार्थी परिषदेचा अध्यक्ष व सचिव हे पदसिद्ध सदस्य असतील. प्रत्येक महाविद्यालयामध्ये व मान्यताप्राप्त परिसंस्थेमध्ये विद्यार्थी विकास कक्ष असेल आणि त्याच्या प्रमुखपदी उपप्राचार्य किंवा प्राचार्यानी नामनिर्देशित केलेला वरिष्ठ अध्यापक असेल आणि अध्यापक, महिला अध्यापक, सामाजिक कार्यकर्ता, समुपदेशक यांचा समावेश करण्यासाठी प्राचार्याने नामनिर्देशित केलेले इतर चार सदस्य असतील आणि महाविद्यालय विद्यार्थी परिषदेचे पदाधिकारी हे पदसिद्ध सदस्य असतील.

(ख) विद्यार्थी तक्रार निवारण कक्ष,-

विद्यार्थ्यांच्या तक्रारी दूर करण्यासाठी आणि अशा तक्रारी कमी करण्यासाठी आणि त्यास अटकाव करण्यासाठी निरनिराळे मार्ग व साधने उच्चतर प्राधिकरणांना सुचविण्यासाठी विद्यापीठामध्ये आणि प्रत्येक महाविद्यालय व मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांमध्ये विद्यार्थी तक्रार निवारण कक्ष असेल. विद्यार्थी तक्रार निवारण कक्षाची कामकाजविषयक कार्यकारी यंत्रणा ही, विद्यापीठ अनुदान आयोग (तक्रार निवारण) विनियम, २०१२ किंवा त्या त्या वेळी अंमलात असलेले इतर कोणतेही विनियम यांच्या तरतुदींनुसार तयार केलेल्या परिनियमांद्वारे विहित केल्याप्रमाणे असेल.

५७. (१) क्रीडा संस्कृतीच्या प्रचालनासाठी आणि खेळांशी संबंधित कार्यक्रमांकडे लक्ष देण्यासाठी क्रीडा व विद्यापीठामध्ये एक क्रीडा व शारीरिक शिक्षण मंडळ असेल. मंडळाची कामे संचालक, क्रीडा व शारीरिक शिक्षण यांच्याकडून पार पाडण्यात येतील. शारीरिक शिक्षण मंडळ.

(२) क्रीडा व शारीरिक शिक्षण मंडळामध्ये पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :—

- (क) कुलगुरू—अध्यक्ष ;
- (ख) प्र-कुलगुरू ;
- (ग) विविध क्रीडा क्षेत्रातील विश्वसनीयता सिद्ध केलेले, कुलगुरूंनी नामनिर्देशित केलेले तीन व्यावसायिक ;
- (घ) ज्या जिल्ह्यामध्ये विद्यापीठाचे मुख्यालय आहे त्या जिल्ह्याचा जिल्हा क्रीडा अधिकारी ;
- (ङ) व्यवस्थापन परिषदेने विद्यापीठाच्या शारीरिक शिक्षण विभागातील नामनिर्देशित केलेला एक अध्यापक ;
- (च) व्यवस्थापन परिषदेने संलग्न, संचालित किंवा स्वायत्त महाविद्यालयांमधून नामनिर्देशित केलेले दोन क्रीडा अध्यापक ;
- (छ) एक वर्षाचा पदावधी असलेला क्षेत्रीय किंवा विभागीय अध्यक्ष (प्रमुख महाविद्यालयाचा प्राचार्य) व सचिव (प्रमुख महाविद्यालयाचा शारीरिक शिक्षण संचालक) ;
- (ज) विद्यापीठ विद्यार्थी परिषदेचा अध्यक्ष, सचिव ;
- (झ) कलम ९९, पोट-कलम (४), उप-खंड (ख) च्या उप-खंड (पाच) अन्वये, विद्यापीठ विद्यार्थी परिषदेच्या अध्यक्षाने विद्यापीठ विद्यार्थी परिषदेच्या क्रीडा क्षेत्रातून नामनिर्देशित केलेला एक विद्यार्थी सदस्य ;
- (ञ) संचालक, क्रीडा व शारीरिक शिक्षण—सदस्य-सचिव.

क्रीडा व  
शारीरिक  
शिक्षण मंडळाचे  
अधिकार व  
कर्तव्ये.

५८. क्रीडा व शारीरिक शिक्षण मंडळाला पुढील अधिकार व कर्तव्ये असतील :—

- (क) महाविद्यालयांमधील आणि विद्यापीठ विभागांमधील क्रीडा क्षेत्रातील क्रीडा संस्कृती व कार्यक्रम यांच्या प्रचालनासाठी आवश्यक त्या उपाययोजना करणे ;
- (ख) विविध क्रीडा क्षेत्रांमधील प्रादेशिक व राष्ट्रीय मंडळांशी दुवा साधणे आणि त्यांच्यासोबत संयुक्तरीत्या विविध कार्यक्रमांचे प्रचालन करणे ;
- (ग) क्रीडा व शारीरिक शिक्षण मंडळाच्या कार्यामध्ये गट, संस्था आणि इतर व्यावसायिक मंडळे यांना सहभागी करून घेता यावे यासाठी त्यांच्याशी संपर्क साधणे ;
- (घ) क्रीडा क्षेत्रांमधील विद्यापीठाचे धोरण आणि तसेच राष्ट्रीय धोरण यानुसार विविध खेळांमध्ये अभिरूची तसेच कौशल्ये यांच्या प्रचालनासाठी महाविद्यालये, मान्यताप्राप्त परिसंस्था व विद्यापीठ विभाग यांमध्ये उपक्रम हाती घेणे ;
- (ङ) समाजाला, महाविद्यालये, परिसंस्था व विद्यापीठ यांच्या जवळ आणण्यासाठी विविध क्रीडा प्रकार क्षेत्रांमधील विद्यापीठस्तरीय स्पर्धा, क्रीडा कौशल्ये विकास शिबिरे, सहभागी कार्यक्रम तसेच प्रशिक्षण कार्यशाळा यांचे आयोजन करणे ;
- (च) विविध क्रीडा प्रकारातील सुप्रशिक्षित संघांना प्रादेशिक, राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय स्तरीय कार्यक्रम व स्पर्धा यांमध्ये सहभाग घेण्यास प्रोत्साहन देणे ;

(छ) आदेशाद्वारे विहित केल्याप्रमाणे, परीक्षांच्या संबंधित वेळापत्रकांच्या दरम्यान आंतरविद्यापीठीय किंवा राष्ट्रीय अथवा आंतरराष्ट्रीय क्रीडा स्पर्धांमध्ये किंवा कार्यक्रमांमध्ये सहभागी होणाऱ्या विद्यार्थ्यांच्या परीक्षेच्या संबंधात पर्यायी व्यवस्था करण्यासाठी सक्षम प्राधिकरणाला शिफारस करणे ;

(ज) क्रीडा व शारीरिक शिक्षण मंडळाची उद्दिष्टे पूर्ण करता यावी यासाठी विद्यापीठ प्राधिकरणाकडून नेमून देण्यात येईल असे अन्य कोणतेही काम हाती घेणे.

५९. (१) संशोधन कार्याची जोपासना करणे, त्यास चालना देणे व बळकटी आणणे यासाठी संशोधन मंडळ तसेच विद्यापीठ विभाग, महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांमधील संशोधन कार्यासाठी योजना तयार करणे, समन्वय प्रस्थापित करणे, पर्यवेक्षण करणे व वित्तीय व्यवस्था उभी करणे, यासाठी एक संशोधन मंडळ असेल.

(२) संशोधन मंडळामध्ये पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :—

(क) कुलगुरू—अध्यक्ष ;

(ख) प्र-कुलगुरू ;

(ग) विद्याशाखांचे अधिष्ठाते आणि सहयोगी अधिष्ठाते, कोणतेही असल्यास ;

(घ) कुलगुरूने नामनिर्देशित केलेले राष्ट्रीय किंवा आंतरराष्ट्रीय ख्यातीचे अनुभवसिद्ध चार विख्यात संशोधक, केवळ व उपयोजित विज्ञान व तंत्रज्ञान, मानवशास्त्रे, वाणिज्य, लेखे व वित्तव्यवस्था आणि आंतर- विद्याशाखीय अभ्यास यांमधील प्रत्येकी एक संशोधक ;

(ङ) कुलगुरूने विद्यापीठ विभागांमधून नामनिर्देशित केलेले दोन अध्यापक ;

(च) संशोधन संस्कृतीचा भक्कम पाया असणारी महाविद्यालये किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांमधून कुलगुरूने नामनिर्देशित केलेले दोन अध्यापक ;

(छ) कुलपतीने नामनिर्देशित करावयाच्या जागतिक प्रवाह तसेच प्रादेशिक प्रश्नांशी सुपरिचित आहेत असे विज्ञान, वाणिज्य, कृषि, बँक व्यवसाय, वित्त, उद्योग, बौद्धिक संपदा अधिकार, इत्यादी विविध क्षेत्रांतील आठ विख्यात व्यक्ती ;

(ज) संचालक, नवोपक्रम, नवसंशोधन व साहचर्य मंडळ—सदस्य-सचिव.

(३) संशोधन मंडळाची बैठक वर्षातून किमान तीन वेळा होईल.

६०. संशोधन मंडळाचे अधिकार व कर्तव्ये पुढीलप्रमाणे असतील :—

(क) विद्यापीठ, महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांमधील संशोधन कार्याच्या प्रचालनासाठी दीर्घमुदतीच्या धोरणानुसार व कार्यतंत्रानुसार कार्य करणे ;

(ख) व्यक्तिगत व गटस्तरावर उदयोन्मुख क्षेत्रांमध्ये संशोधन हाती घेण्यासाठी अध्यापकांना सल्ला व प्रोत्साहन देणे ;

(ग) संशोधन व विकास पायाभूत सुविधांचे आदानप्रदान करण्यासाठी अध्यापकांमध्ये समन्वय प्रस्थापित करून आणि तसेच धोरण तयार करण्यासाठी व ते स्पष्ट करण्यासाठी आंतरविद्याशाखीय संशोधन कार्यक्रमांचे प्रचालन करणे ;

संशोधन  
मंडळाचे  
अधिकार व  
कर्तव्ये.

(घ) संशोधन विद्यार्थ्यांसाठी सर्व विद्याशाखांमधील संशोधन चर्चासत्रे आयोजित करण्याकरिता विद्यापीठ विभाग, महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्थांना प्रोत्साहन देणे ;

(ङ) विविध विद्याशाखांची संशोधन विषयक नियतकालिके, प्रबंधिका प्रसिद्ध करणे ;

(च) विद्यापीठ अनुदान आयोग आणि अन्य नियामक मंडळांच्या निकषांशी अनुरूप विद्यावाचस्पती (पीएच.डी.) पदवीच्या संशोधनाचा दर्जा राखण्यासाठी धोरण निश्चित करणे ;

(छ) विद्यापीठ विभाग, महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांमध्ये एकल पद्धतीने किंवा समूह उपक्रमानुसार किंवा उद्योग आणि अन्य संशोधन व विकास प्रयोगशाळा यांच्या सहकार्याने केलेल्या कार्यासाठी संशोधन व विकास आधारसामग्री निर्माण करणे ;

(ज) शिक्षण देणे, प्रत्यक्ष शिक्षण व ई-शिक्षण, ई-शिक्षणाचा परिणाम आणि अध्ययनावरील आभासी वर्ग खोल्या आणि विद्यार्थ्यांचे आकलन, मुक्त दूरस्थ शिक्षण व पारंपरिक शिक्षण यामध्ये काम करणे व संशोधन सुरू करणे ;

(झ) संशोधन कार्यासाठी निधी उभारण्याकरिता प्रयत्न करणे तसेच अध्यापक, विद्यापीठ विभाग, महाविद्यालये आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांना सहाय्य करणे ;

(ञ) विद्यापीठाच्या संशोधन कार्यासाठी अर्थसंकल्प तयार करणे ;

(ट) संशोधन कार्यात वाढ करण्यासाठी उद्योगांकडून निधी उभारणे ;

(ठ) विद्यापीठाच्या अधिकारक्षेत्रातील प्रदेशाशी संबंधित असलेल्या समस्या व प्रश्न निश्चित करणे आणि पद्धतशीर संशोधन करून अशा समस्या व प्रश्न मिटविण्यासाठी विशेष पुढाकार घेणे ;

(ड) संशोधक व उद्योग समूह यांमध्ये सहकार्य निर्माण करण्यासाठी दीर्घ मुदतीची धोरणे व कार्यतंत्रे यांनुसार कार्य करणे ; जेणेकरून संशोधनविषयक ज्ञान व तंत्रज्ञानाच्या हस्तांतरणास आणि संशोधनातून उत्पादक रूपांतरणास चालना मिळेल ;

(ढ) मूलभूत व उपयोजित संशोधन प्रकल्पांना चालना देणे, ते हाती घेणे आणि त्यांत सहभागी होणे यांसाठी उद्योगांना प्रोत्साहन देणे ;

(ण) राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय उद्योग समूहांच्या सहभागातून त्यांच्या सहाय्याने मध्यवर्ती संशोधन प्रयोगशाळा स्थापन करणे ;

(त) संशोधन मंडळाची उद्दिष्टे पूर्ण करण्यासाठी विद्यापीठ प्राधिकरणांकडून नेमून देण्यात येईल असे अन्य कोणतेही काम हाती घेणे.

प्राधिकरणांचे  
अधिकार, कार्ये  
व कर्तव्ये.

६१. या अधिनियमाच्या अन्य कोणत्याही तरतुदींअन्वये निर्धारित करण्यात आले नसतील अशी विद्यापीठाच्या प्राधिकरणांची रचना, त्यांचे अधिकार, कार्ये आणि कर्तव्ये ही परिणियमांद्वारे विहित करण्यात आल्याप्रमाणे असतील.

६२. (१) या अधिनियमान्वये घटित करण्यात आलेल्या प्रत्येक प्राधिकरणाची मुदत १ सप्टेंबरपासून सुरु होईल आणि ती उक्त दिनांकापासून पाच वर्षे इतकी असेल आणि प्रत्येक प्राधिकरणाच्या सदस्यांची मुदत ही, -मग तो सदस्य कोणत्याही दिनांकाला त्या पदावर आलेला असो ते लक्षात न घेता- उक्त पाच वर्षांचा कालावधी संपेल त्याचवेळी समाप्त होईल.

प्राधिकरणांच्या सदस्यांचा पदावधी.

(२) प्राधिकरणाची मुदत संपण्याच्या किमान ३ महिने अगोदर निवडणूक, नामनिर्देशन व स्वीकृतीची प्रक्रिया सुरु करण्यात येईल आणि ती त्या वर्षाच्या ३० नोव्हेंबरच्या आत पूर्ण करण्यात येईल.

६३. या अधिनियमात किंवा त्याखाली करण्यात आलेल्या परिनियमांमध्ये काहीही अंतर्भूत असले तरी, ज्याबाबतीत विद्यापीठाचा अधिकारी म्हणून किंवा विद्यापीठाच्या कोणत्याही प्राधिकरणाचा किंवा मंडळाचा सदस्य म्हणून निवडून आलेली, नामनिर्देशित केलेली, नियुक्त केलेली किंवा यथास्थिति, स्वीकृत केलेली व्यक्ती, अशा पदाच्या, प्राधिकरणाच्या किंवा मंडळाच्या संबंधातील या अधिनियमाच्या संबंधित तरतुदीद्वारे किंवा त्याअन्वये विनिर्दिष्ट केलेल्या अधिकाऱ्यांच्या किंवा सदस्यांच्या कोणत्याही प्रवर्गातील असा अधिकारी किंवा सदस्य म्हणून अशा प्रकारे निवडून येण्यास, नामनिर्देशित केली जाण्यास, नियुक्त केली जाण्यास किंवा स्वीकृत केला जाण्यास पात्र असल्यामुळे ती अशा प्रवर्गाची असण्याचे बंद झाल्याबरोबर लगेचच विद्यापीठाचा असा अधिकारी किंवा अशा प्राधिकरणाचा किंवा मंडळाचा सदस्य असण्याचे बंद होईल आणि असा अधिकारी किंवा सदस्य म्हणून तिने आपले पद रिक्त केले असल्याचे मानण्यात येईल.

सदस्यत्वाची समाप्ती.

६४. एखादी व्यक्ती, पुढील कारणांवरून कोणत्याही प्राधिकरणांची, मंडळांची व समितीची सदस्य होण्यास आणि प्राधिकरणे, मंडळे आणि समित्या यांना मतदान करण्यास निरह ठरेल :-

प्राधिकरणाच्या सदस्यत्वासाठी निरहता.

(क) ती व्यक्ती, विकल मनाची असेल व एखाद्या सक्षम न्यायालयाने तिला तसे घोषित केलेले असेल ; किंवा

(ख) ती अमुक्त नादार असेल ; किंवा

(ग) ज्यात नैतिक अधःपतनाचा अंतर्भाव असेल अशा कोणत्याही अपराधाबद्दल जी दोषी ठरली असेल ; किंवा

(घ) ती खाजगी शिकवण्या घेत असेल किंवा खाजगी शिकवणी वर्ग चालवत असेल ; किंवा

(ङ) कोणत्याही परीक्षा घेताना व मूल्यमापन करताना, कोणत्याही प्रकारे व कोठेही अनुचित व्यवहार केल्याबद्दल किंवा त्याला चालना दिल्याबद्दल जिला शिक्षा झालेली असेल ; किंवा

(च) तिने या अधिनियमाच्या, परिनियमांच्या किंवा आदेशांच्या तरतुदींचे पालन करण्याचे जाणीवपूर्वक टाळले असेल किंवा नकार दिला असेल किंवा विद्यापीठाच्या हिताकरिता हानिकारक असेल अशी कोणतीही कृती केली असेल ; किंवा

(छ) तिला गैरव्यवहार केल्याबद्दल सक्षम प्राधिकाऱ्याकडून कोणत्याही प्रकारची शिक्षा झालेली असेल ; किंवा

(ज) तिच्या पदीय दर्जामुळे, तिला परीक्षेसंबंधात आणि मूल्यमापनासंबंधात माहीत असलेली कोणतीही गोपनीय बाब, कोणत्याही रीतीने, ती लोकांसमोर उघड करील किंवा उघड करवील :

परंतु, खंड (ङ) व (छ) च्या बाबतीत, त्या व्यक्तीचा मतदानाचा हक्क, उक्त खंडाखालील शिक्षेच्या कालावधीमध्ये निलंबित ठेवण्यात येईल.

लागोपाठच्या दुसऱ्या मुदतीकरिता सदस्य ६५. व्यवस्थापन परिषदेचा कोणताही सदस्य किंवा अभ्यास मंडळाचा अध्यक्ष म्हणून, निवडून आलेली, नामनिर्देशित केलेली, नियुक्त केलेली किंवा यथास्थिति, स्वीकृत केलेली कोणतीही व्यक्ती, लागोपाठच्या दुसऱ्या मुदतीकरिता पात्र असणार नाही :

असण्यास अपात्र असणे.

परंतु, या अधिनियमाच्या प्रारंभाच्या दिनांकास, जी कोणतीही व्यक्ती, विद्यापीठाच्या व्यवस्थापन परिषदेची पहिल्यांदा सदस्य होती-मग ती असा सदस्य किंवा अभ्यास मंडळाचा अध्यक्ष म्हणून निवडून आली असेल, नियुक्त केली असेल, नामनिर्देशित केली असेल किंवा यथास्थिति, स्वीकृत केली असेल तर-ती या अधिनियमाच्या प्रारंभानंतर, पहिल्यांदा नियुक्त केली असेल, नामनिर्देशित केली असेल, निवडून आली असेल, स्वीकृत केली असेल तर तिने, लागोपाठच्या मुदतीकरिता लाभ घेतला असल्याचे मानण्यात येणार नाही.

प्राधिकरणाच्या निर्णयाची निर्णायकता.

६६. या अधिनियमाच्या तरतुदींद्वारे किंवा तदन्वये अन्यथा तरतूद करण्यात आली असेल त्याव्यतिरिक्त, इतर बाबतीत, विद्यापीठाच्या प्रत्येक प्राधिकरणाला, ते कार्यरत असताना आणि या अधिनियमाच्या तरतुदींद्वारे किंवा तदन्वये त्याला देण्यात आलेल्या अधिकारांचा वापर करित असताना आणि नेमून दिलेली कामे किंवा कर्तव्ये पार पाडीत असताना, या अधिनियमाच्या तरतुदींद्वारे किंवा तदन्वये त्यास नेमून दिलेल्या बाबींसंबंधी कार्यवाही करण्याची आणि निर्णय घेण्याची आणि त्याला नेमून दिलेली कामे किंवा कर्तव्ये पार पाडण्याची अनन्य अधिकारिता असेल.

प्रमाणशीर प्रतिनिधित्वाद्वारे निवडणूक घेणे.

६७. (१) कलम ९९ च्या पोटकलम (२) चे खंड (क) ते (ड) आणि पोटकलम (३) चे खंड (क) ते (ड) यांमध्ये निर्दिष्ट केलेल्या पदाच्या निवडणुकां व्यतिरिक्त या अधिनियमाखालील विद्यापीठाच्या कोणत्याही प्राधिकरणाची किंवा मंडळाची प्रत्येक निवडणूक, प्रमाणशीर प्रतिनिधित्व पद्धतीनुसार, एकल संक्रमणीय मताद्वारे व परिनियमांद्वारे विहित केल्याप्रमाणे घेण्यात येईल.

(२) अधिनियमात विनिर्दिष्ट केलेला नसेल असा निवडणुकीच्या संबंधातील इतर तपशील हा, परिनियमांद्वारे विहित करण्यात आल्याप्रमाणे असेल.

सदस्यत्वाचा राजीनामा.

६८. (१) पदसिद्ध सदस्याव्यतिरिक्त, अन्य सदस्य आपल्या स्वतःच्या सहीने राजीनामा देऊ शकेल. कुलपतीने नामनिर्देशित केलेली व्यक्ती, कुलपतीच्या नावे पत्र लिहून राजीनामा देऊ शकेल आणि अन्य कोणताही सदस्य कुलगुरूच्या नावे पत्र लिहून राजीनामा देऊ शकेल. कुलपतीने किंवा यथास्थिति, कुलगुरूने राजीनामा स्वीकारल्यानंतर किंवा, राजीनाम्याच्या दिनांकापासून तीस दिवस पूर्ण झाल्यावर, यापैकी जे अगोदर घडेल तेव्हापासून ती व्यक्ती सदस्य असण्याचे बंद होईल.

(२) कोणत्याही प्राधिकरणावर किंवा मंडळावर नामनिर्देशित केलेली, निवडून आलेली, नियुक्त केलेली किंवा स्वीकृत केलेली व्यक्ती, त्या प्राधिकरणाच्या किंवा मंडळाच्या पूर्वपरवानगीशिवाय लागोपाठच्या तीन बैठकींना अनुपस्थित राहिल तर, तिने आपले सदस्यत्व सोडले असल्याचे मानण्यात येईल आणि ती, ज्या तिसऱ्या बैठकीस अनुपस्थित राहिली असेल त्या बैठकीच्या दिनांकापासून ती सदस्य असण्याचे बंद होईल :

परंतु, असा सदस्य मागील वर्षामधील किमान एका बैठकीत उपस्थित राहिलेला असावा.

प्राधिकरणांची बैठक.

६९. (१) या अधिनियमाद्वारे, अन्यथा तरतूद करण्यात आली असेल त्याव्यतिरिक्त इतर बाबतीत, विद्यापीठाकडून गठीत करण्यात आलेल्या प्राधिकरणांच्या, मंडळांच्या किंवा समित्यांच्या, कोणत्याही असल्यास, बैठकीच्या कामकाजाच्या संबंधातील सर्व बाबी, परिनियमांद्वारे विहित करण्यात आल्याप्रमाणे असतील.



(२) प्राधिकरणाची किंवा मंडळाची बैठक, त्याच्या अध्यक्षाने ठरविलेल्या दिनांकास, त्याच्या सचिवाने दिलेल्या नोटिशीद्वारे बोलाविण्यात येईल.

(३) अन्यथा तरतूद केलेले असेल त्याव्यतिरिक्त अन्य बाबतीत, बैठकीची गणपूर्ती, सर्वसाधारणपणे विद्यमान सदस्यांच्या एक तृतीयांश इतक्या संख्येने होईल. बैठकीची गणपूर्ती होत नसेल तर, अध्यक्ष त्याच दिवशी किंवा नंतरच्या दिनांकास विशिष्ट वेळेपर्यंत बैठक स्थगित करील आणि पुढे चालू ठेवलेल्या बैठकीच्या पुढील दिवशी गणपूर्तीची आवश्यकता असणार नाही.

(४) ज्याबाबतीत या परिणियमांद्वारे किंवा तदन्वये विद्यापीठाच्या कोणत्याही प्राधिकरणाच्या किंवा मंडळाच्या बैठकीचे अध्यक्षपद, अध्यक्ष किंवा सभापती यांनी स्वीकारण्याची तरतूद केली नसेल किंवा ज्याबाबतीत अशा प्रकारे तरतूद करण्यात आलेला अध्यक्ष किंवा सभापती अनुपस्थित असेल व कोणत्याही अन्य व्यक्तीने अध्यक्षपद स्वीकारण्याची तरतूद करण्यात आलेली नसेल त्याबाबतीत, उपस्थित असलेले सदस्य, त्यांच्यातून एका व्यक्तीची बैठकीचे अध्यक्षपद भूषविण्यासाठी निवड करतील.

(५) अन्यथा तरतूद करण्यात आली असेल त्याव्यतिरिक्त इतर बाबतीत, कार्यसूचीवरील सर्व बाबी, प्रश्न, विषय किंवा प्रस्ताव यांवर उपस्थित असलेल्या सदस्यांच्या बहुमताने निर्णय घेण्यात येईल. अध्यक्षस मते देता येईल. समसमान मते पडतील त्याबाबतीत, अध्यक्षस निर्णायक मत देता येईल. सचिव हा सदस्य नसेल तर, त्यास विचारविमर्शात भाग घेण्याचा हक्क असेल, परंतु त्यास मतदानाचा हक्क असणार नाही.

७०. (१) व्यवस्थापन परिषदेव्यतिरिक्त विद्यापीठाच्या कोणत्याही प्राधिकरणाच्या किंवा इतर मंडळाच्या पदसिद्ध सदस्याव्यतिरिक्त किंवा कुलपतीने नामनिर्देशित केलेल्या सदस्याव्यतिरिक्त एखाद्या सदस्याचे पद, त्याचा नेहमीचा पदावधी संपण्यापूर्वी रिक्त होईल तेव्हा, पोट-कलम (३) अन्वये गठीत करण्यात आलेल्या स्थायी समितीकडून असे रिक्त पद एखाद्या व्यक्तीस नामनिर्देशित करून, भरण्यात येईल, जी अन्यथा त्याच प्रवर्गातून उक्त प्राधिकरणावर किंवा मंडळावर निवडून येण्यास पात्र असणारी व्यक्ती असेल.

प्रासंगिक रिक्त पद व ते स्थायी समितीने भरणे.

(२) विद्यापीठाच्या व्यवस्थापन परिषदेच्या पदसिद्ध सदस्याव्यतिरिक्त, एखाद्या सदस्याचे पद रिक्त होईल त्याबाबतीत, ते पद शक्य तितक्या लवकर, प्राधिकरणाने, मंडळाने किंवा संबंधित अधिकाऱ्याने नामनिर्देशन किंवा निवडणूक किंवा, यथास्थिति, स्वीकृती याद्वारे भरण्यात येईल. अशा प्रकारे नामनिर्देशित केलेली, निवडून दिलेली किंवा स्वीकृत केलेली व्यक्ती ही, अन्यथा त्याच प्रवर्गातून उक्त प्राधिकरणावर किंवा मंडळावर नामनिर्देशित करण्यास किंवा निवडून येण्यास किंवा स्वीकृत करण्यास पात्र असलेली व्यक्ती असेल. अशा प्रकारे नामनिर्देशित करण्यात आलेली, निवडून आलेली किंवा स्वीकृत करण्यात आलेली व्यक्ती ही ज्याच्या पदावर तिचे नामनिर्देशन झाले असेल त्या सदस्याने, जर ते पद रिक्त झाले नसते तर, जितक्या मुदतीकरता ते पद धारण केले असते तितक्याच मुदतीकरता ते पद धारण करील.

(३) पोट-कलम (१) मध्ये नमूद केलेली रिक्त पदे भरण्याकरिता असलेल्या स्थायी समितीची रचना पुढीलप्रमाणे असेल :-

- (क) प्र-कुलगुरू-अध्यक्ष ;
- (ख) व्यवस्थापन परिषदेवर कुलपतीने नामनिर्देशित केलेली एक व्यक्ती ;
- (ग) व्यवस्थापन परिषदेने नामनिर्देशित केलेला एक अधिष्ठाता ;
- (घ) व्यवस्थापन परिषदेने नामनिर्देशित केलेला त्या परिषदेचा एक निर्वाचित सदस्य ;
- (ङ) अधिसभेने आपल्या सदस्यांमधून नामनिर्देशित केलेला एक प्राचार्य ;
- (च) अधिसभेने आपल्या सदस्यांमधून नामनिर्देशित केलेला एक अध्यापक ;
- (छ) अधिसभेने आपल्या सदस्यांमधून नामनिर्देशित केलेला एक पदवीधर ;
- (ज) कुलसचिव-सदस्य-सचिव.

(४) स्थायी समितीची मुदत १ सप्टेंबर रोजी सुरू होईल आणि ती उक्त दिनांकापासून पाच वर्षांकरिता असेल. सदस्यांची मुदत, सदस्याने ज्या दिनांकास त्याचे पद ग्रहण केले आहे तो दिनांक विचारात न घेता पाच वर्षांचा उक्त कालावधी समाप्त झाल्यावर संपुष्टात येईल.

#### प्रकरण पाच

#### परिनियम, आदेश आणि विनियम

परिनियम व  
त्याचे विषय.

७१. या अधिनियमाच्या तरतुदींना अधीन राहून, परिनियमांमध्ये पुढे दिलेल्या सर्व किंवा यांपैकी कोणत्याही बाबींसाठी तरतूद करता येईल :-

- (१) सन्मान्य पदव्या आणि विद्याप्रावीण्य प्रदान करणे ;
- (२) उप परिसर, विद्यापीठ विभाग, परिसंस्था, संचालित महाविद्यालये, उच्च शिक्षण परिसंस्था, संशोधन किंवा विशेषीकृत अभ्यास परिसंस्था व वसतिगृहे सुरू करणे व ती चालविणे ;
- (३) या अधिनियमाच्या कोणत्याही तरतुदींन्वये निर्धारित न केलेल्या विद्यापीठाच्या प्राधिकरणांची रचना, अधिकार, कर्तव्ये व कार्ये ;
- (४) विद्यापीठ विभाग किंवा परिसंस्था किंवा संचालित महाविद्यालये बंद करणे ;
- (५) विद्यापीठ प्राधिकरणांच्या बैठकांमध्ये कामकाज करण्यासंबंधीच्या कार्यपद्धतीचे नियम ;
- (६) विद्यापीठांची उद्दिष्टे साध्य करण्यासाठी विद्यापीठाच्या निधींचा विनियोग करणे ;
- (७) राज्य शासनाच्या मान्यतेस अधीन राहून, विद्यापीठ विभाग किंवा परिसंस्था, संलग्न महाविद्यालये आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांना स्वायत्त दर्जा देण्यासाठीचे निकष ;

(८) व्यक्तींकडून किंवा संघटनांकडून विश्वस्त निधी, मृत्युपत्रित देणग्या, देणग्या, दाननिधी व अनुदाने स्वीकारणे आणि त्यांचे व्यवस्थापन करणे ;

(९) राज्य शासन किंवा केंद्र सरकार किंवा स्थानिक प्राधिकरण यांनी व्यवस्थापन केलेली व चालविलेली महाविद्यालये किंवा परिसंस्था खेरीजकरून, विद्यापीठाचे, संलग्न महाविद्यालयांचे आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्थांचे कसूरदार अध्यापक, अधिकारी आणि अन्य कर्मचारी यांच्याविरुद्ध शिस्तभंगाची कारवाई करणे ;

(१०) विद्यापीठाच्या, महाविद्यालयांच्या व मान्यताप्राप्त परिसंस्थांच्या विद्यार्थ्यांच्या निवासस्थानाच्या, वर्तणुकीच्या आणि शिस्तीसंबंधीच्या शर्ती, आणि पुढील बाबींचा अंतर्भाव असणारी शिस्तभंग किंवा गैरवर्तणूक याबाबत त्यांच्याविरोधात करावयाची कारवाई :—

(क) परीक्षेच्या वेळी गैरप्रकार करणे किंवा त्यांना अपप्रेरणा देणे ;

(ख) मूल्यमापन व परीक्षाविषयक प्रभारी अधिकाऱ्याने किंवा विद्यापीठाच्या कोणत्याही अधिकाऱ्याने किंवा प्राधिकाऱ्याने केलेल्या कोणत्याही अधिकृत चौकशीस हजर राहण्यास किंवा साक्ष देण्यास नकार देणे ; किंवा

(ग) विद्यापीठात अगर विद्यापीठाच्या बाहेर गैरशिस्त किंवा अन्यथा आक्षेपार्ह वर्तणूक ;

(११) विद्यार्थ्यांच्या तक्रारींचे निवारण करण्याकरिता यंत्रणा व कार्यपद्धती ;

(१२) विद्यापीठ, महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांमधील विद्यार्थी परिषदेची कार्ये व कर्तव्ये ;

(१३) विविध प्राधिकरणे व परिसंस्था यांच्या निवडणुका घेण्याची कार्यपद्धती ;

(१४) महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांमधील अध्यापकांच्या नियुक्त्या आणि निलंबन किंवा त्यांना पदावरून दूर करणे यास मान्यता देण्याकरिताच्या शर्ती व कार्यपद्धती ;

(१५) महाविद्यालये, मान्यताप्राप्त परिसंस्था, सभागृहे आणि वसतिगृहे यांची तपासणी करणे ;

(१६) व्यवस्थापनाच्या हस्तांतरणास परवानगी देताना अनुसरावयाची कार्यपद्धती ;

(१७) या अधिनियमाअन्वये कुलगुरूद्वारे प्राधिकरणे, मंडळे, व समित्या यांवर सदस्यांचे नामनिर्देशन करताना अनुसरावयाची मानके व कार्यपद्धती ;

(१८) महाविद्यालये व परिसंस्था यांना संलग्नीकरण देणे व ते काढून घेणे याची मानके ;

(१९) राज्य शासनाच्या मान्यतेस अधीन राहून, लोकहितास्तव, विद्यापीठाने एखाद्या महाविद्यालयाचे किंवा परिसंस्थेचे व्यवस्थापन हस्तांतरित करणे आणि अशा प्रकारे ते व्यवस्थापन हस्तांतरित करण्याच्या शर्ती ;

(२०) राज्य शासनाने मान्यता दिल्याप्रमाणे, विद्यापीठाचे आणि संलग्न महाविद्यालयांचे राज्य शासन किंवा केंद्र सरकार किंवा स्थानिक प्राधिकरण यांच्याकडून चालविली जाणारी महाविद्यालये किंवा परिसंस्था खेरीज करून, विद्यापीठाचे व संलग्न महाविद्यालयांचे अध्यापक, अधिकारी व इतर

कर्मचारी यांचे नियतकालिक प्रशिक्षण व प्रगत प्रशिक्षण, क्षेत्रीय अनुभव, प्रतिनियुक्ती, मूल्यमापन यांसह अर्हता, सेवाप्रवेश, आचारसंहिता, पदावधी, कर्तव्ये आणि सेवाशर्ती राज्य शासनाने मान्यता दिल्याप्रमाणे सेवानिवृत्ती लाभ यांची तरतूद करण्याची आणि त्यांची सेवा समाप्त करण्याची रीत ; परंतु, हे, या संदर्भातील राज्य शासनाच्या धोरणांचे उल्लंघन करणारे असणार नाही ;

(२१) कलम ९८ च्या पोट-कलम (७) अन्वये खरेदीसाठी अनुसरावयाची कार्यपद्धती ;

(२२) या अधिनियमाच्या तरतुदींची अंमलबजावणी करण्यासाठी परिनियमाद्वारे विहित करण्यात यावयाची किंवा आवश्यक असेल अशी कोणतीही बाब.

परिनियम कसे करावयाचे.

७२. (१) अधिसभेला, यात यापुढे तरतूद केलेल्या रीतीने परिनियम तयार करता येतील, त्यात सुधारणा करता येतील किंवा त्यांचे निरसन करता येईल.

(२) व्यवस्थापन परिषदेकडून पुढीलप्रमाणे परिनियम समिती गठीत करण्यात येईल :-

(क) अध्यक्ष म्हणून व्यवस्थापन परिषदेच्या निर्वाचित सदस्यांमधील त्या परिषदेचा एक सदस्य ;

(ख) एक अधिष्ठाता ;

(ग) विद्यापीठ विभागाचा किंवा संलग्न महाविद्यालयांचा एक प्राध्यापक ;

(घ) संलग्न महाविद्यालयाचा एक प्राचार्य ;

(ङ) विद्यापीठाचा कुलसचिव ;

(च) सदस्य सचिव म्हणून विद्यापीठाचा विधि अधिकारी,

अशी परिनियम समिती, मागील पूर्ववर्ती कलमामध्ये निर्दिष्ट केलेल्या संबंधित बाबींच्या परिनियमांचा मसुदा तयार करील व तो प्रस्तावित करील आणि तो अधिसभेच्या शिफारशीकरिता व्यवस्थापन परिषदेला सादर करील.

(३) व्यवस्थापन परिषदेला आवश्यक वाटल्यास, त्याच्यापुढे विचारार्थ असलेल्या कोणत्याही मसुदा परिनियमांच्या संबंधात, विद्यापीठाच्या कोणत्याही अधिकाऱ्याचे, प्राधिकरणाचे किंवा संस्थेचे मत मागविता येईल.

(४) अधिसभेने मंजूर केलेला प्रत्येक परिनियम कुलपतीकडे सादर करण्यात येईल जो त्यास आपली अनुमती देईल किंवा ती रोखून ठेवील किंवा पुनर्विचारासाठी व्यवस्थापन परिषदेकडे परत पाठवील. कुलपतीला, अशा परिनियमाच्या अंमलबजावणीमुळे राज्य शासनावर वित्तीय अथवा अन्यथा अपेक्षित भार असेल, तर मसुदा परिनियम राज्य शासनाकडे विचारार्थ पाठविता येईल.

(५) अधिसभेने मंजूर केलेला कोणताही परिनियम, कुलपतीकडून अनुमती देण्यात येईपर्यंत विधिग्राह्य ठरणार नाही किंवा अंमलात येणार नाही.

(६) पूर्ववर्ती पोट-कलमांत काहीही अंतर्भूत असले तरी, कुलपतीस, स्वाधिकारे किंवा राज्य शासनाच्या सल्ल्याने, तो विनिर्दिष्ट करील अशा कोणत्याही बाबीच्या संबंधात परिनियमांमध्ये तरतुदी करण्याविषयी निदेश देता येतील आणि अधिसभेने असे निदेश प्राप्त झाल्यापासून साठ दिवसांच्या आत, त्यांचा अवलंब सुरू करण्यात कसूर केली तर, कुलपतीस, अधिसभेने अशा निदेशांचे अनुपालन करणे तिला शक्य न झाल्याबद्दलची कारणे, कोणतीही असल्यास कळवली असतील तर, त्या कारणांचा विचार केल्यानंतर, त्याबाबतीत योग्य असे परिनियम करता येतील किंवा परिनियमांत योग्य अशा सुधारणा करता येतील.

(७) अधिसभा, एकतर स्वतःहून किंवा व्यवस्थापन परिषदेच्या प्रस्तावावरून, परिनियमाच्या मसुद्यावर विचार करील. व्यवस्थापन परिषदेने प्रस्तावित न केलेल्या मसुद्याच्या बाबतीत, अधिसभा, त्यावर विचार करण्यापूर्वी, व्यवस्थापन परिषदेचे मत मागवील :

परंतु, व्यवस्थापन परिषदेने, मसुदा मिळाल्याच्या दिनांकापासून तीन महिन्यांच्या आत, तिचे मत सादर करण्यात कसूर केल्यास, अधिसभा मसुद्यावर विचार करण्याची कार्यवाही सुरू करील.

(८) अधिसभेस, आवश्यक वाटल्यास, त्याच्यापुढे विचारार्थ असलेल्या कोणताही मसुदा परिनियमाच्या संबंधात विद्यापीठाच्या कोणत्याही अधिकाऱ्याचे, प्राधिकरणाचे किंवा संस्थेचे मत मागविता येईल :

परंतु, जर असा कोणताही मसुदा, परिनियम विद्याविषयक बाबींशी संबंधित असेल तर, अधिसभा त्यावर विचार करण्यापूर्वी, विद्यापरिषदेचे मत मागवील.

(९) व्यवस्थापन परिषद, मसुदा परिनियमाच्या मंजूरीसाठी अधिसभेकडे शिफारस करील आणि अधिसभेने मंजूर केलेला प्रत्येक परिनियम कुलपतीकडे सादर करण्यात येईल.

(१०) पूर्ववर्ती पोट-कलमांमध्ये काहीही अंतर्भूत असले तरी, राज्य शासनाला विषयांबाबत एकरूप परिनियम **राजपत्रात** प्रसिद्ध करून ते विहित करण्याचा अधिकार असेल, जे विद्यापीठांवर बंधनकारक असतील.

**७३.** या अधिनियमाच्या तरतुदींना अधीन राहून, पुढील सर्व किंवा पुढीलपैकी कोणत्याही आदेश व त्यांचे बाबींसाठी आदेशात तरतूद करता येईल :— विषय.

(१) ज्या शर्तींअन्वये विद्यार्थ्यांना पदवी, पदविका, प्रमाणपत्रे व इतर विद्याविषयक विशेषोपाधी यांच्या अभ्यास पाठ्यक्रमांना प्रवेश देण्यात येईल अशा शर्ती ;

(२) या अधिनियमाखाली शुल्क निश्चिती समितीकडून पाठ्यक्रमांसाठी व अध्ययनक्रमांसाठी स्वीकृत करावयाचे शुल्क, इतर शुल्क व आकार निश्चित करावयाची मानके व प्रक्रिया ;

(३) महाविद्यालये व परिसंस्था यांच्या संलग्नतेसाठी व मान्यतेसाठी शुल्क ;

(४) परीक्षकांच्या नेमणुका व कर्तव्ये यांचे नियमन करणाऱ्या शर्ती ;

(५) परीक्षा, इतर चाचण्या घेणे व मूल्यमापन करणे आणि ज्यामधून परीक्षकांना उमेदवारांचे मूल्यमापन करता येईल किंवा त्यांची परीक्षा घेता येईल अशी रीत ;

(६) विद्यापीठाच्या अध्यापकांची मान्यता आणि विद्यापीठ विभाग, महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांमध्ये शिकविण्यासाठी अर्हताप्राप्त म्हणून व्यक्तींना, ज्या शर्तीच्या अधीन राहून, मान्यता देण्यात येईल त्या शर्ती ;

(७) विद्यार्थ्यांच्या स्थानांतरणाशी संबंधित महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांच्याकडून पालन करावयाची किंवा अंमलात आणावयाची मानके ;

(८) विकलांग व्यक्तींसाठी (समान संधी, हक्कांचे संरक्षण आणि पूर्ण सहभाग) अधिनियम, १९९६ १९९५ याच्या तरतुदीनुसार आणि विद्यापीठ अनुदान आयोगाने वेळोवेळी प्रसिद्ध केलेली मार्गदर्शक-चा १- तत्त्वे व निदेश यांनुसार एक कक्ष स्थापन करण्याच्या तरतुदींसह समान संधी कक्षाची रचना, अधिकार, कर्तव्ये व कार्ये ;

(९) विद्यापीठ आणि संलग्न महाविद्यालयांमधील विद्यार्थ्यांचे रॅगिंग करण्यास प्रतिबंध करण्याकरिता यंत्रणा ;

(१०) कामाच्या ठिकाणी महिलांचा लैंगिक छळ (प्रतिबंध, मनाई व निवारण) अधिनियम, २०१३ २०१३ याच्या तरतुदीनुसार विद्यापीठ आणि संलग्न महाविद्यालये यातील अध्यापक, कर्मचारी, विद्यार्थी यांच्या लैंगिक छळास प्रतिबंध व लैंगिक छळ, घटना यांच्याशी संबंधित तक्रारींचे निवारण आणि लैंगिक छळ करण्यात सहभागी असणाऱ्यांना शिक्षा यांकरिता यंत्रणा ; चा १४.

(११) हा अधिनियम किंवा परिनियम याद्वारे किंवा तदन्वये आदेशाद्वारे विहित करावयाची आहे किंवा या अधिनियमाच्या तरतुदी अंमलात आणण्यासाठी आवश्यक आहे अशी कोणतीही विद्याविषयक बाब.

आदेश व ते तयार करणे.

७४. (१) व्यवस्थापन परिषदेला, यात यापुढे तरतूद केलेल्या रीतीने आदेश तयार करता येतील, त्यात सुधारणा करता येतील किंवा ते निरसित करता येतील.

(२) अधिष्ठाता मंडळ, कलम ७३ मध्ये निर्दिष्ट केलेल्या बाबींशी संबंधित आदेशांचा मसुदा तयार करील व तो प्रस्तावित करील.

(३) विद्याविषयक बाबींशी संबंधित कोणताही आदेश हा, त्याचा प्रस्ताव विद्यापरिषदेने प्रस्तावित केला असल्याखेरीज व्यवस्थापन परिषदेकडून काढण्यात येणार नाही, त्यात सुधारणा केली जाणार नाही किंवा तो निरसित केला जाणार नाही.

(४) व्यवस्थापन परिषदेने तयार केलेले सर्व आदेश, बैठकीच्या दिनांकापासून किंवा ती निदेश देईल अशा दिनांकापासून अंमलात येतील, परंतु, असा तयार केलेला प्रत्येक आदेश, बैठकीच्या दिनांकापासून दोन आठवड्यांच्या आत, कुलपतीला सादर करण्यात येईल. कुलपतीला, सादर आदेश प्राप्त झाल्यापासून चार आठवड्यांच्या आत, त्याची अंमलबजावणी स्थगित ठेवण्याबाबत व्यवस्थापन परिषदेस निदेश देण्याचा अधिकार असेल, आणि तो, शक्य तितक्या लवकर, त्यावरील त्याचा आक्षेप व्यवस्थापन परिषदेला कळवील. त्याला, व्यवस्थापन परिषदेचे अभिप्राय प्राप्त झाल्यानंतर स्थगित ठेवणारा आदेश एकतर मागे घेता येईल किंवा तो नामंजूर करता येईल व त्याचा निर्णय अंतिम असेल.

७५. (१) या अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये विहित केलेल्या तरतुदींना अधीन राहून, व्यवस्थापन विनियम. परिषदेस, या अधिनियमाशी, परिनियमांशी व आदेशांशी सुसंगत असे विनियम, पुढील गोष्टींसाठी करता येतील :-

(क) अधिछात्रवृत्ती परिस्थान, प्रवासी अधिछात्रवृत्ती, शिष्यवृत्ती, छात्रवृत्ती, पदक व बक्षिसे प्रदान करणे ;

(ख) परस्परंच्या फायद्याच्या शैक्षणिक कार्यक्रमांसाठी अन्य विद्यापीठे, परिस्थान व संघटना यांच्याशी सहयोग करणे ;

(ग) ज्या शर्तींअन्वये पदव्या, पदविका, प्रमाणपत्रे व इतर विद्याविषयक विशेषोपाधी यांच्या अभ्यास पाठ्यक्रमांसाठी विद्यार्थ्यांना प्रवेश देण्यात येईल अशा शर्ती ;

(घ) विद्यापीठाचे अभिलेख जतन करणे ;

(ङ) विनियमांद्वारे तरतूद करावयाची आहे किंवा करता येईल अशा सर्व किंवा कोणत्याही बाबींसाठी हा अधिनियम, परिनियम किंवा आदेशाद्वारे किंवा तदन्वये तरतूद करणे ;

(च) व्यवस्थापन परिषदेच्या मते, या अधिनियमाच्या, परिनियमांच्या किंवा आदेशांच्या प्रयोजनार्थ, ज्या सर्व अशैक्षणिक बाबींसाठी तरतूद आवश्यक आहे, त्या, सर्व अशैक्षणिक बाबी.

(२) विद्यापरिषदेला, या अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये विहित केलेल्या तरतुदींना अधीन राहून, या अधिनियमाशी, परिनियमांशी व आदेशांशी सुसंगत, विद्याविषयक बाबींशी संबंधित विनियम, करता येतील.

(३) अधिष्ठाता मंडळ, पोट-कलमे (१) व (२) मध्ये निर्दिष्ट केलेल्या बाबींची आणि हा अधिनियम, परिनियम किंवा आदेश याद्वारे किंवा तदन्वये ज्या सर्व किंवा कोणत्याही बाबींची विनियमाद्वारे तरतूद करावयाची आहे किंवा तरतूद करता येईल अशा सर्व किंवा कोणत्याही बाबींची तरतूद करणाऱ्या विनियमांचा मसुदा तयार करील आणि तो व्यवस्थापन परिषदेच्या किंवा, यथास्थिति, विद्यापरिषदेच्या मान्यतेसाठी ठेवील.

प्रकरण सहा

### महाराष्ट्र राज्य उच्च शिक्षण व विकास आयोग

७६. (१) महाराष्ट्र राज्य उच्च शिक्षण व विकास आयोग स्थापन करण्यात येईल.

(२) महाराष्ट्र राज्य उच्च शिक्षण व विकास आयोगाची रचना पुढीलप्रमाणे असेल :-

|                               |    |             |
|-------------------------------|----|-------------|
| (क) मुख्यमंत्री               | .. | अध्यक्ष ;   |
| (ख) उच्च व तंत्रशिक्षण मंत्री | .. | उपाध्यक्ष ; |
| (ग) वित्त मंत्री              | .. | सदस्य ;     |
| (घ) वैद्यकीय शिक्षण मंत्री    | .. | सदस्य ;     |
| (ङ) उद्योग मंत्री             | .. | सदस्य ;     |

महाराष्ट्र राज्य उच्च शिक्षण व विकास आयोग.

- (च) कौशल्य विकास व उद्योजकता मंत्री . . . सदस्य ;
- (छ) उच्च व तंत्र शिक्षण राज्यमंत्री . . . सदस्य ;
- (ज) राज्य विधानपरिषद व . . . सदस्य ;  
विधानसभेतील विरोधी पक्षनेता
- (झ) महाराष्ट्र विधानसभेच्या अध्यक्षांने . . . सदस्य ;  
नामनिर्देशित केलेले महाराष्ट्र विधानसभेचे  
तीन सदस्य.
- (ञ) महाराष्ट्र विधानपरिषदेच्या सभापतीने . . . सदस्य ;  
नामनिर्देशित केलेले महाराष्ट्र विधानपरिषदेचे  
दोन सदस्य.
- (ट) कुलपतीने नामनिर्देशित करावयाचे दोन . . . सदस्य ;  
ख्यातनाम उद्योगपती.
- (ठ) कुलपतीने नामनिर्देशित केलेला, वास्तव . . . सदस्य ;  
जीवनाशी दुवा साधणारे शिक्षण देण्याचा  
अनुभव असणारा वित्तीय किंवा वाणिज्यिक  
किंवा शिक्षण किंवा विधि व न्याय क्षेत्रातील  
एक विख्यात व्यावसायिक.
- (ड) कुलपतीने नामनिर्देशित केलेले, तंत्र-सामाजिक . . . सदस्य ;  
विकासकार्यात ख्याती असलेले दोन शास्त्रज्ञ  
किंवा तंत्रज्ञ किंवा सामाजिक नेते.
- (ढ) कुलपतीने नामनिर्देशित केलेला, शिक्षणाचे . . . सदस्य ;  
स्वरूप, शिक्षणाची भूमिका व शिक्षण देणे  
यांत सुधारणा करण्याचा अनुभव असणारा  
एक शिक्षणतज्ज्ञ.
- (ण) कुलपतीने नामनिर्देशित केलेले, राज्यातील . . . सदस्य ;  
सार्वजनिक व खाजगी विद्यापीठांचे दोन कुलगुरू.
- (त) कुलपतीने नामनिर्देशित केलेले, सामाजिक . . . सदस्य ;  
विकासाशी शिक्षणाची सांगड घालण्यामध्ये  
स्वतःचे योगदान असलेले दोन प्राचार्य.
- (थ) कुलपतीने नामनिर्देशित केलेले किमान . . . सदस्य ;  
पंधरा वर्षे अध्यापन व संशोधनाचा अनुभव  
असलेले विद्यापीठांमधील किंवा  
महाविद्यालयांमधील दोन ख्यातनाम वरिष्ठ  
अध्यापक.
- (द) सचिव, उच्च व तंत्र शिक्षण विभाग . . . सदस्य ;
- (ध) सचिव, वैद्यकीय शिक्षण व औषधिद्रव्ये . . . सदस्य ;  
विभाग



|   |    |              |
|---|----|--------------|
| (न) सचिव, नियोजन विभाग  | .. | सदस्य ;      |
| (प) सचिव, वित्त विभाग   | .. | सदस्य ;      |
| (फ) सचिव, शालेय शिक्षण विभाग                                    | .. | सदस्य ;      |
| (ब) सचिव, उद्योग विभाग  | .. | सदस्य ;      |
| (भ) सचिव, कौशल्य विकास व उद्योजकता विकास विभाग                  | .. | सदस्य ;      |
| (म) संचालक, तंत्र शिक्षण  | .. | सदस्य ;      |
| (य) संचालक, उच्च शिक्षण   | .. | सदस्य ;      |
| (यक) संचालक, वैद्यकीय शिक्षण व संशोधन                           | .. | सदस्य ;      |
| (यख) सहसचिव, विद्यापीठ अनुदान आयोगाचे पश्चिम क्षेत्रीय कार्यालय | .. | सदस्य ;      |
| (यग) आयोगाचा मुख्य कार्यकारी अधिकारी                            | .. | सदस्य-सचिव : |

परंतु, जर उच्च व तंत्र शिक्षण, उद्योग, वैद्यकीय शिक्षण, कौशल्य विकास व उद्योजकता किंवा वित्त खाते मुख्यमंत्र्याकडे असेल तर, त्यास इतर कोणत्याही मंत्र्याला सदस्य म्हणून नियुक्त करता येईल.

(३) आयोगाच्या नियुक्त केलेल्या सदस्यांचा पदावधी पाच वर्षे इतका असेल आणि तो विधानसभेच्या कालावधी इतकाच असेल.

(४) आयोगाची बैठक एका वर्षात किमान दोनदा घेण्यात येईल.

(५) आयोग हा, राज्यातील उच्च शिक्षणासाठीचे प्रभारी व जबाबदार असे राज्य शासनाचे प्राधिकरण असेल. आयोग हा, नियोजन, संनियंत्रण, समन्वयन व मूल्यमापन करणारे प्राधिकरण असेल आणि तंत्र शिक्षण, वैद्यकीय शिक्षण, व्यवस्थापन शिक्षण, व्यावसायिक शिक्षण, जैवविज्ञान व तंत्रज्ञान यांसारखी व भविष्यात ज्ञानाच्या क्षितिजावर उदयास येतील अशी शिक्षणातील उदयोन्मुख क्षेत्रे यांसह उच्च शिक्षणासाठी तज्ञ मंडळ म्हणून काम करील. आयोग हा राज्य शासन, सार्वजनिक व खाजगी विद्यापीठे, खाजगी कौशल्य शिक्षण प्रदाता परिसंस्था व उद्योग यांसारख्या विविध हितसंबंधितांमध्ये साहचर्य निर्माण करील.

**७७.** (१) आयोगाची कार्ये व कर्तव्ये पुढीलप्रमाणे असतील :-

आयोगाची कार्ये व कर्तव्ये.

(क) संबंधित विद्यापीठाशी विचारविनिमय केल्यानंतर, उच्च शिक्षणासाठी सुविधांचे समन्यायी वाटप सुनिश्चित करून, उच्च शिक्षणाची महाविद्यालये व संस्था असणाऱ्या ठिकाणांसाठी प्रत्येक विद्यापीठाकरिता पाच वर्षांच्या सम्यक योजनेकरिता मार्गदर्शकतत्त्वे तयार करणे ;

(ख) विद्यापीठाने सादर केलेल्या सर्वसमावेशक सम्यक योजनेला मान्यता देणे ;

(ग) सार्वजनिक व खाजगी विद्यापीठांकरिता आणि शैक्षणिक माहिती व संदेशवहन तंत्रज्ञान जाळ्याकरिता तसेच अतिरिक्त साधनसंपत्ती उभारण्यासाठी व निर्धोचे वाटप करण्यासाठी नवीन मार्ग व साधनांचे समन्वेषण करण्याबाबत राज्य शासनाला सल्ला देणे ;

(घ) राज्यातील विविध प्रकारच्या शैक्षणिक संस्थांमधील केवळ तांत्रिक व व्यावसायिक शिक्षणातील मुख्य व क्षेत्र विनिर्दिष्ट कौशल्ये यांमध्ये सहकार्य व सहअस्तित्व राखणे यासाठी धोरणात्मक व कार्यात्मक स्तरावर समन्वय साधणे ;

(ड) शिक्षण देताना, शिक्षणामध्ये तंत्रज्ञानाचा वापर करताना, शिक्षणाचे प्रशासन व नियमन आदींमध्ये राष्ट्रीय व जागतिक पातळीवर होत असलेला विकास जाणून घेणे व त्याचा मागोवा घेणे व त्या बदलानुरूप राज्यातील शिक्षणपद्धतीमध्ये यथोचित धोरण व कार्यतंत्र विकसित करणे ;

(च) शैक्षणिक परिसंस्थांमधील विविध विद्या शाखांतील व निरनिराळ्या विद्याशाखांबाहेरील शुद्ध व उपयोजित क्षेत्रातील सर्व विषयांमधील संशोधन संस्कृती तसेच संशोधन संस्कृतीद्वारे उद्योगांमधील गरजा व मागण्या यांमधील परिणामकारक धोरणामार्फत समन्वय साधणे ;

(छ) विविध शैक्षणिक परिसंस्था व राज्य, केंद्र व औद्योगिक संशोधन आणि विकास प्रयोगशाळा यांमध्ये शैक्षणिक व ज्ञान स्रोत सुविधांच्या सहभागासाठी धोरण व कृतियोजना तयार करणे ;

(ज) राष्ट्रीय जाळ्यांशी क्रमबद्ध असे शैक्षणिक माहिती संदेशवहनाचे जाळे स्थापन करणे व त्याचे परिरक्षण करणे आणि तसेच भौगोलिक आवाका वाढवणे की ज्यामुळे प्रत्येक शैक्षणिक संस्था ही शैक्षणिक माहिती संदेशवहनाच्या जाळ्यात आणता येईल आणि वेळोवेळी तंत्रज्ञान बदलांचा मागोवा घेणे व जाळे अद्ययावत करणे ;

(झ) राष्ट्रीय ज्ञान आयोग, माहिती व संदेशवहन तंत्रज्ञान आणि मानव संसाधन विकास मंत्रालय यांच्याशी साहचर्य प्रस्थापित करणे ;

(ञ) प्रगत वातावरणात (फ्रंटलाइन) अध्यापन-अध्ययन प्रक्रियांकरिता डिजीटल स्वरूपात ई-अध्ययन साहित्य व आभासी प्रयोग व आधारभूत साहित्य यांचा संग्रहसाठी निर्माण करणे ;

(ट) शैक्षणिक परिसंस्थांचे प्रशासन, मूल्यमापन व नियमन यांसाठी तंत्रज्ञानाचा वापर होण्यासाठी आणि माहिती व संदेशवहन तंत्रज्ञानाच्या वापराद्वारे ही कामे पार पाडण्यासाठी ई-प्लॅटफॉर्मच्या स्थापनेस चालना देण्याकरिता एक धोरण व कृतियोजना विकसित करणे ;

(ठ) राज्यातील तसेच राष्ट्रीय स्तरावरील शैक्षणिक, संशोधन आणि विकास परिसंस्थांमधील विविध ज्ञानस्रोत केंद्रांच्या जाळ्याच्या निर्मितीद्वारे माहिती व संदेशवहन तंत्रज्ञानाचा वापर करून संशोधनाची व्याप्ती व दर्जा यात वाढ करणारी संशोधन जर्नल्स, संशोधन व तंत्रज्ञान परीक्षणे यांच्या आदानप्रदानासाठी वाव देणे ;

(ड) समाजाचे एकूण अग्रक्रम, दृष्टिकोन व गरजा आणि उच्च शिक्षणाकडून असणाऱ्या अपेक्षा लक्षात घेऊन, उच्च शिक्षणाच्या क्षेत्रातील विविध विषयांवर अध्ययनक्रम तयार करणे ;

(ढ) विद्यापीठांमधील शिक्षणाचा दर्जा निश्चित करण्याच्या व त्यात एकरूपता राखण्याच्या संबंधात राज्य शासनाला सल्ला देणे ;

(ण) निरनिराळ्या शैक्षणिक परिसंस्थांमधील सहकार्य व समन्वय यास चालना देण्यासंबंधात सल्ला देणे आणि एकीकडे विद्यापीठ व दुसरीकडे उद्योग आणि इतर संघटना यांच्यात आदानप्रदान करण्यास कितपत वाव आहे ते पाहणे ;

(त) उद्योग व इतर साधने यांच्यामधून उच्च शिक्षणासाठी अतिरिक्त साधनसंपत्ती उभारण्यासाठी मार्ग व साधने सुचवणे ;

(थ) विद्यापीठांनी हाती घेतलेल्या विविध उपक्रमांकरिता आंतर-विद्यापीठ कार्यक्रमासंबंधात सल्ला देणे ;

(द) विद्यापीठांचे अध्यापक, महाविद्यालयाचे अध्यापक आणि विद्यापीठ विभागाचे अध्यापक यांच्यामध्ये अधिकाधिक सहकार्य व आदानप्रदान व अदलाबदल करण्याच्या कार्यक्रमासंबंधात सल्ला देणे ;

(ध) उच्च शिक्षणाच्या क्षेत्रातील अध्यापन, संशोधन व विस्तार यांच्याशी संबंधित विविध उपक्रमांकरिता आंतर-विद्यापीठ कार्यक्रम सुरू करणे ;

(न) महाविद्यालये, शैक्षणिक परिसंस्था आणि विद्यापीठे यांचा विस्तार आणि दर्जा कायम राखणे यांकरिता, शैक्षणिक, प्रशासकीय, नियामक आणि वित्तीय कार्यवाही एकत्रित करून अधिक हितावह करण्यासाठी आणि निरनिराळ्या सूचना, सल्ले आणि विशिष्ट शिफारशी विचारात घेणे आणि त्यांना उपयोगात आणण्याकरिता कार्यतंत्र तयार करणे ;

(प) अध्यापकांसाठीच्या अध्यापन-अध्ययन प्रक्रियेतील ज्ञान व तंत्रज्ञानाचा वापर यात वाढ करण्याकरिता योजना तयार करणे व तिची अंमलबजावणी करणे ;

(फ) शिक्षण व संशोधन यांमधील अनुभव असलेल्या शिक्षण तज्ञांकरिता व्यासपीठ तयार करणे, जे शैक्षणिक चौकट, अभ्यासक्रम, शिक्षण देण्याच्या पद्धती, विद्यार्थ्यांचे मूल्यमापन सुधारणांकरिता आणि कार्यान्वयन कार्यतंत्राकरितादेखील मुख्य भाग बनेल ;

(ब) प्राचार्य, परिसंस्थांचे व विभागांचे प्रमुख यांच्याकरिता मुख्य कामगिरी दर्शकांचा वापर करून आणि विद्यापीठ व उच्च शिक्षण परिसंस्थांमधील अध्यापक यांच्याकरिता शैक्षणिक कामगिरी दर्शकांचा वापर करून कामगिरीवर आधारित मूल्यांकन पद्धतीच्या संबंधात शिफारशी करणे ;

(भ) शैक्षणिक, नियामक व पायाभूत सोयी या क्षेत्रांत ज्या संस्थांचे कार्य सातत्याने कमी दर्जाचे असेल अशा उच्च शिक्षण परिसंस्थांच्या पुनर्रचनेसाठी आवश्यक ती पावले उचलण्याच्या शिफारशी करणे ;

(म) राष्ट्रीय व जागतिक मूल्यांकन आणि अधिस्वीकृती अभिकरणांशी परस्पर आदानप्रदान करणे आणि महाविद्यालये, शैक्षणिक परिसंस्था आणि विद्यापीठे यांमध्ये पद्धतशीर एकूण दर्जा निर्धारण व कार्यक्रमानिहाय निर्धारण प्रक्रिया हाती घेणे ;

(य) राज्यातील अध्यापक, शिक्षणतज्ञ व उद्योगतज्ञ, महाविद्यालये, शैक्षणिक परिसंस्था व विद्यापीठे यांची एक आधारसामग्री तयार करणे ;

(यक) प्रवेश पातळीवर जेव्हा विद्यार्थी महाविद्यालयात प्रवेश घेतात तेव्हा, विशिष्ट ओळख क्रमांकाचा वापर करून भारतीय विद्यार्थ्यांची एक आधारसामग्री तयार करणे ;

(यख) परदेशी विद्यार्थ्यांकरिता, माहिती संकलन व आधारसामग्री निर्मिती कक्ष स्थापन करणे ;

(यग) विद्यापीठांचे वार्षिक वित्तीय अंदाज, इतर मार्ग, संशोधन व विकास, संमंत्रणा, प्रशिक्षण-निकौशल्य विकास कार्यक्रम, परदेशी विद्यार्थ्यांकरिता विशेष कार्यक्रम आणि इतर कोणतेही तत्सम कार्यक्रम यांद्वारे त्यांची भांडवलनिर्मिती यावरील माहिती ठेवणे आणि ज्यामुळे विद्यापीठाची वित्तीय स्थिती मजबूत होईल अशा वित्तीय साधनांच्या निर्मितीसाठीचे विविध मार्ग तयार करणे ;

(यघ) प्रादेशिक असमतोल दूर करण्याकरिता आणि मागास प्रवर्ग, ग्रामीण व आदिवासी समाज, महिला व असे कोणतेही विनिर्दिष्ट गट यांना उच्च शिक्षण उपलब्ध करण्याकरिता पावले उचलणे व अशी पावले उचलण्यात यावीत याकरिता राज्य शासन व विद्यापीठ यांना शिफारस करणे ;

(यड) शैक्षणिक व इतर पायाभूत सुविधांचा सहभाग असण्यासाठी राज्यातील सर्व शैक्षणिक संस्थांमधील सहकार्य व परस्पर संपर्क यांचा आढावा घेणे आणि तो अधिकाधिक कार्यक्षम व परिणामक करणारे मार्ग व साधने सुचविणे ;

(यच) सामाजिक विकासासह एकात्मिक शिक्षणाकरिता, महाविद्यालये व विद्यापीठे, सार्वजनिक व खाजगी दोन्हीही, यांनी स्वीकृत केलेली योजना व पद्धती यांचा आढावा घेणे आणि सामाजिक विकासावर अशा योजनेचा होणाऱ्या परिणामाचा अभ्यास करणे आणि ती अधिकाधिक कार्यक्षम व परिणामक करण्यासाठी मार्ग व साधने सुचविणे ;

(यछ) कलम ७८ च्या पोट-कलम (४) खाली सादर केलेल्या महाराष्ट्र राज्य राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियानाच्या अहवालावर विचार करणे ;

(यज) शैक्षणिक गुणवत्ता, प्रशासकीय सुधारणा व वित्तीय सुधारणा यांचे ध्येय लक्षात घेऊन विशिष्ट वार्षिक निष्पत्तीसह ध्येयवादी योजना विकसित करणे ;

(२) आयोगाची कार्ये व कर्तव्ये पार पाडण्यासाठी पुढीलप्रमाणे एक व्यवस्थापन मंडळ असेल :—

|   |     |             |
|---|-----|-------------|
| (क) उच्च व तंत्रशिक्षण, मंत्री  | . . | अध्यक्ष ;   |
| (ख) उच्च व तंत्रशिक्षण, राज्यमंत्री   | . . | उपाध्यक्ष ; |
| (ग) सचिव, उच्च व तंत्रशिक्षण विभाग  | . . | सदस्य ;     |
| (घ) कुलपतीने नामनिर्देशित केलेला राष्ट्रीय व जागतिक कीर्तीचा ख्यातनाम शिक्षणतज्ञ  | . . | सदस्य ;     |
| (ङ) सल्लागार, नियोजन व समन्वयन  | . . | सदस्य ;     |
| (च) सल्लागार, दर्जा व गुणवत्ता हमी  | . . | सदस्य ;     |
| (छ) सल्लागार, मुक्त शिक्षण स्रोत व अध्यापक प्रशिक्षण  | . . | सदस्य ;     |
| (ज) सल्लागार, नेटवर्किंग व पूरक सेवा  | . . | सदस्य ;     |
| (झ) सल्लागार, वित्तव्यवस्था व साधनसंपत्ती निर्मिती  | . . | सदस्य ;     |
| (ञ) सल्लागार, परीक्षा व मूल्यमापन   | . . | सदस्य ;     |
| (ट) कुलपतीने नामनिर्देशित केलेला एक नामांकित उद्योगपती  | . . | सदस्य ;     |
| (ठ) कुलपतीने नामनिर्देशित केलेला सार्वजनिक विद्यापीठांचा एक कुलगुरू   | . . | सदस्य ;     |
| (ड) कुलपतीने नामनिर्देशित केलेला वित्त, लेखांकन, विधि क्षेत्रातील व इतर संलग्न क्षेत्रातील एक व्यावसायिक तज्ञ   | . . | सदस्य ;     |
| (ढ) कुलपतीने नामनिर्देशित केलेला गुणवत्ता प्रमाणित राष्ट्रीय मूल्यांकन व अधिस्वीकृती परिषदेची अ श्रेणी अधिस्वीकृतीप्राप्त महाविद्यालयाचा एक प्राचार्य | . . | सदस्य ;     |
| (ण) कुलपतीने नामनिर्देशित केलेला, विद्यापीठामधील किंवा महाविद्यालयामधील एक प्राध्यापक   | . . | सदस्य ;     |
| (त) संचालक, उच्च शिक्षण   | . . | सदस्य ;     |
| (थ) संचालक, तंत्रशिक्षण   | . . | सदस्य ;     |
| (द) आयोगाचा मुख्य कार्यकारी अधिकारी,  | . . | सदस्य-सचिव. |

(३) आयोगाचे एक प्रशासकीय कार्यालय असेल, जे आयोगाचे प्रशासन आणि आयोगाची धोरणे, योजना व शिफारशी यांची अंमलबजावणी करण्यासाठी जबाबदार असेल. प्रशासकीय कार्यालयामध्ये, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, आवश्यक असतील असे इतर अधिकारी व कर्मचारीवर्ग यांचा समावेश असेल.

(४) आयोगाच्या मुख्य कार्यकारी अधिकाऱ्याची नियुक्ती राज्य शासनाकडून करण्यात येईल आणि तो राज्य शासनाच्या थेट पर्यवेक्षणाखाली, निदेशनाखाली व नियंत्रणाखाली काम करील.

(५) प्रशासकीय कार्यालयाचा मुख्य कार्यकारी अधिकारी व कर्मचारीवर्ग यांची वित्तलब्धी, सेवेच्या अटी व शर्ती नियुक्तीची अर्हता व पद्धती ह्या राज्य शासनाकडून, निर्धारित करण्यात येतील त्याप्रमाणे असतील.

(६) मुख्य कार्यकारी अधिकारी,—

(एक) आयोगाची सर्व कार्ये व कर्तव्ये पार पाडण्यासाठी जबाबदार असणारा, आयोगाच्या प्रशासकीय कार्यालयाचा मुख्य कार्यकारी अधिकारी असेल ;

(दोन) प्रशासकीय कार्यालयाचे व आयोगाचे प्रशासन व संपूर्ण कामकाजाचे नेतृत्व करील, पर्यवेक्षण करील व संनियंत्रण करील ;

(तीन) आयोगाची धोरणे, योजना व शिफारशी यांची अंमलबजावणी करण्यासाठी जबाबदार असेल ;

(चार) आयोगाची धोरणे, योजना व शिफारशी यांच्या अंमलबजावणीसाठी तंत्रज्ञानाधारित कार्यान्वयन यंत्रणा स्थापन करील ;

(पाच) राज्यातील सार्वजनिक व खाजगी विद्यापीठांचे कुलगुरू, प्राचार्य आणि सर्व शैक्षणिक परिसंस्थांचे व्यवस्थापन यांच्याशी साहचर्य व समन्वय स्थापन करील ;

(सहा) कुलपतीच्या निदेशानुसार आयोगाची बैठक बोलावील ;

(सात) आयोगाची कार्ये पूर्ण करण्यासाठी व कर्तव्ये पार पाडण्यासाठी आवश्यक असतील अशी चर्चासत्रे, कार्यशाळा, बैठकी आयोजित करील ;

(आठ) उच्च व तंत्र शिक्षण विभागाला सादर करण्यासाठी, आयोगाचे आवश्यक ते वार्षिक वित्तीय अंदाजपत्रक व वित्तीय विवरणपत्र तयार करील ;

(नऊ) आयोगाचा वार्षिक अहवाल, वार्षिक लेखापरीक्षा अहवाल तयार करील ;

(दहा) प्रशासकीय कार्यालय व आयोग यांच्या लेखांची नियमितपणे लेखापरीक्षा करवून घेईल ;

(अकरा) त्याच्या नियंत्रणाखाली काम करणाऱ्या प्रशासकीय कार्यालयाचे अधिकारी व इतर कर्मचारी यांचे नियुक्ती व शिस्तविषयक प्राधिकारी असेल ;

(बारा) प्रशासकीय कार्यालयाच्या कर्मचाऱ्यांच्या अटी व सेवाशर्तीचे नियम तयार करील ;

(तेरा) कुलपतीने त्याला प्रदान केले असतील अशी इतर कार्ये, अधिकार व कर्तव्ये यांचा वापर करील ;

(चौदा) आयोगाची उद्दिष्टे, कार्ये व कर्तव्ये पार पाडण्यासाठीच्या अशा सर्व कृती करील ;

(पंधरा) आयोगाकडून व राज्य शासनाकडून नेमून देण्यात येईल असे इतर कोणतेही काम हाती घेईल.

(७) व्यवस्थापन मंडळावरील सल्लागारांची निवड व नियुक्ती, राज्य शासनाने **राजपत्रात** प्रसिद्ध केलेल्या आदेशाद्वारे विनिर्दिष्ट करण्यात येईल त्याप्रमाणे केलेली असेल.

(८) या कलमातील कोणत्याही गोष्टीमुळे, आयोगाला विद्यापीठाच्या कामकाजाच्या व्यवस्थापनातील कोणतीही कार्यकारी स्वरूपाची कामे पार पाडण्याचा अधिकार मिळणार नाही.

महाराष्ट्र राज्य  
राष्ट्रीय उच्चतर  
शिक्षा परिषद.

**७८.** (१) महाराष्ट्र राज्य राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा परिषद (यात यापुढे ज्याचा निर्देश "रूसा" असा करण्यात आला आहे) म्हणून संबोधण्यात येणारी एक परिषद असेल.

(२) पोट-कलम (१) अन्वये परिषद ही अखंड परंपरा व सामायिक मोहोर असणारी एक निगम निकाय असेल आणि तिला, तिच्या विरुद्ध किंवा तिच्या नावाने दावा दाखल करता येईल.

(३) राज्य शासन, **राजपत्रातील** अधिसूचनेद्वारे पोट-कलम (१) अन्वये परिषदेची रचना, कार्ये व जबाबदाऱ्या विनिर्दिष्ट करील. त्या भारत सरकारच्या रूसाच्या मार्गदर्शकतत्वांशी अनुरूप असतील :

परंतु, अशी प्रत्येक अधिसूचना काढल्यानंतर, ती शक्य तितक्या लवकर, राज्य विधानमंडळाच्या प्रत्येक सभागृहासमोर ठेवण्यात येईल.

(४) पोट-कलम (१) अन्वये परिषद तिच्या प्रत्येक कार्यक्रमाचा वार्षिक अहवाल कलम ७६ अन्वये आयोगास पाठवील.

#### प्रकरण सात

#### अध्यापक आणि कर्मचारी यांच्या तक्रारींचे निवारण

तक्रार निवारण  
समिती.

**७९.** (१) प्रत्येक विद्यापीठामध्ये, राज्य शासन, केंद्र सरकार किंवा स्थानिक प्राधिकरण यांनी व्यवस्थापन केलेल्या व चालविलेल्या संस्थांव्यतिरिक्त, विद्यापीठांचे, संलग्न व स्वायत्त महाविद्यालयांचे आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्थांचे अध्यापक व इतर कर्मचारी यांच्या, राज्य शासन व त्यांचे अधिकारी यांच्या विरुद्धच्या तक्रारीव्यतिरिक्त, इतर सर्व प्रकारच्या आणि विद्यापीठाच्या व महाविद्यालय न्यायाधिकरणाच्या अधिकारक्षेत्रात येत नाहीत अशा तक्रारींवर कार्यवाही करण्यासाठी एक तक्रार निवारण समिती असेल.

(२) विद्यापीठ, तक्रार निवारण समितीला प्रशासकीय साहाय्य देण्यासाठी सहायक कुलसचिवापेक्षा कमी दर्जाचा नसेल अशा विद्यापीठाच्या अधिकाऱ्याच्या अध्यक्षतेखाली एक तक्रार निवारण कक्ष स्थापन करील ;

(३) तक्रार निवारण समितीमध्ये पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :-

(क) कुलगुरुने नामनिर्देशित केलेला, जिल्हा न्यायाधीशाच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जाचा नसेल असा सेवानिवृत्त न्यायाधीश -अध्यक्ष ;

(ख) कुलगुरुने नामनिर्देशित केलेला एक अधिष्ठाता ;

(ग) कुलपतीने व्यवस्थापन परिषदेवर नामनिर्देशित केलेली व्यक्ती ;

(घ) कुलसचिव ;

(ड) अधिसभेने आपल्या सदस्यांमधून नामनिर्देशित केलेला, अनुसूचित जाती किंवा अनुसूचित जमाती किंवा निरधिसूचित जमाती (विमुक्त जाती) किंवा भटक्या जमाती किंवा इतर मागासवर्गातील एक अध्यापक आणि एक अध्यापकेतर कर्मचारी ;

(च) विद्यापीठाचा विधि अधिकारी-सदस्य सचिव.

(४) तक्रार निवारण समितीचा अध्यक्ष म्हणून सेवानिवृत्त न्यायाधीशाचे आणि सदस्य म्हणून अधिष्ठात्याचे नामनिर्देशन हे, कुलगुरू प्रत्येक प्रकरणी वेळोवेळी निश्चित करील अशा, एकूण तीन वर्षांपेक्षा अधिक नसेल अशा कालावधीसाठी असेल.

(५) तक्रार निवारण समितीचा अध्यक्ष म्हणून नामनिर्देशित केलेला सेवानिवृत्त न्यायाधीश, विद्यापीठाकडून निश्चित करण्यात येईल असे पारिश्रमिक व वाहनभत्ता मिळण्यास हक्कदार असेल.

(६) तक्रार निवारण समिती व्यवहार्य असेल तेथवर, तक्रार दाखल केल्याच्या दिनांकापासून तीन महिन्यांच्या आत कायदानुसार तक्रारीची सुनावणी, समझोता करील व त्यावर निर्णय देईल.

(७) दोन्ही पक्षकारांना आपले म्हणणे मांडण्याची वाजवी संधी दिल्यानंतर, न्यायाधिकरणाच्या अधिकारक्षेत्रात नसलेल्या कर्मचाऱ्यांच्या सेवेसंबंधीची गाऱ्हाणी किंवा तक्रारी विचारार्थ स्वीकारणे व त्यावर निर्णय देणे हे तक्रार निवारण समितीसाठी कायदेशीर असेल.

८०. (१) कलम ८१ च्या पोट-कलम (१) मध्ये विनिर्दिष्ट केलेल्या बाबीसंदर्भात, या विद्यापीठांचे विद्यापीठ व कर्मचारी आणि त्यांचे संबंधित विद्यापीठ यांच्यामधील आणि राज्य शासन, केंद्र सरकार किंवा स्थानिक महाविद्यालय प्राधिकरण यांनी व्यवस्थापन केलेल्या व चालविलेल्या संस्था व त्यांचे संबंधित व्यवस्थापन या न्यायाधिकरण.

१९८३ चा तसेच महाराष्ट्र कृषि विद्यापीठ अधिनियम, १९८३, महाराष्ट्र पशु आणि मत्स्यव्यवसाय विज्ञान विद्यापीठ अधिनियम, १९९८ व महाराष्ट्र आरोग्य विज्ञान विद्यापीठ अधिनियम, १९९८ यांद्वारे नियमित १९९८ चा केलेल्या, राज्यातील एक किंवा अधिक विद्यापीठांकरिता एक किंवा अधिक विद्यापीठ व महाविद्यालय १९९९ चा न्यायाधिकरणे असतील. १०.

(२) न्यायाधिकरणामध्ये राज्य शासनाने नियुक्त करावयाचा पीठासीन अधिकारी याचा समावेश असेल.

(३) जर एखादी व्यक्ती,—

(क) उच्च न्यायालयाची न्यायाधीश आहे किंवा होती ; किंवा

(ख) उच्च न्यायालयाची न्यायाधीश म्हणून नियुक्ती करण्यास ती अर्हताप्राप्त आहे,

असे असल्याशिवाय न्यायाधिकरणाचा पीठासीन अधिकारी म्हणून नियुक्ती केली जाण्यास अर्हताप्राप्त असणार नाही :

परंतु, खंड (ख) अन्वये नियुक्त करावयाची व्यक्ती ही, मुंबई येथील उच्च न्यायालयाच्या मुख्य न्यायमूर्तीने शिफारस केलेल्या तीन व्यक्तींच्या नामिकेमधील असेल.

(४) न्यायाधिकरणाचा पीठासीन अधिकारी म्हणून एखाद्या व्यक्तीची नियुक्ती ही, पूर्णवेळ तत्वावर केलेली असेल आणि ती, राज्य शासन, प्रत्येक प्रकरणी, वेळोवेळी निश्चित करील अशा, एकूण तीन वर्षांपेक्षा अधिक नसलेल्या कालावधीसाठी केलेली असेल.

(५) पीठासीन अधिकाऱ्याचे पारिश्रमिक आणि सेवेच्या इतर शर्ती या राज्य शासनाने ठरवून दिल्याप्रमाणे असतील.

(६) विद्यापीठ, या अधिनियमाखालील न्यायाधिकरणाची कामे पार पाडण्यासाठी आवश्यक असेल असा, लिपिकीय कर्मचारीवर्ग न्यायाधिकरणाला उपलब्ध करून देईल.

(७) पीठासीन अधिकाऱ्यास व त्याच्या दिमतीला असलेल्या कर्मचारीवर्गास अनुज्ञेय असलेले पारिश्रमिक, निवृत्तीवेतन, भविष्यनिर्वाह निधी, अंशदान, रजा भत्ता आणि इतर भत्ते व सोयी यांसाठी होणारा सर्व खर्च हा, राज्य शासनाकडून आदेशाद्वारे विनिर्दिष्ट करता येईल अशा प्रमाणात विद्यापीठाकडून किंवा विद्यापीठाकडून भागविण्यात येईल.

(८) पीठासीन अधिकाऱ्यास, आपल्या स्वाक्षरीने आपल्या पदाचा लेखी राजीनामा देता येईल आणि राज्य शासनाने त्याचा राजीनामा स्वीकारल्यानंतर किंवा राजीनामा दिल्याच्या दिनांकापासून तीस दिवसांचा कालावधी समाप्त झाल्याच्या दिनांकापासून, यापैकी जे आधी घडेल तेव्हापासून, त्याने पद धारण करणे बंद होईल.

(९) न्यायाधिकरणाच्या पीठासीन अधिकाऱ्याचे पद तात्पुरते रिक्त होईल ते खेरीजकरून एरव्ही, ते पद रिक्त झाल्यास, राज्य शासन, शक्य तितक्या लवकर, परंतु, कोणत्याही परिस्थितीत तीन महिन्यांच्या आत, असे रिक्त पद भरण्यासाठी दुसऱ्या अर्हताप्राप्त व्यक्तीची नियुक्ती करील. तात्पुरत्या रिक्त पदाच्या बाबतीत, राज्य शासनास, पीठासीन अधिकारी परत कामावर रुजू होईपर्यंत इतर न्यायाधिकरणाच्या पीठासीन अधिकाऱ्याकडे त्याचा प्रभार देता येईल. पूर्वीच्या पीठासीन अधिकाऱ्यासमोर प्रलंबित असेल असे कोणतेही कामकाज, त्याच्या उत्तराधिकाऱ्यास पद रिक्त झाले तेव्हा, ते कामकाज ज्या टप्प्यापर्यंत आले होते तेथून पुढे चालू ठेवता येईल व निकालात काढता येईल.

अपील  
करण्याचा  
अधिकार.

८१. (१) त्या त्या वेळी अंमलात असलेल्या कोणत्याही कायद्यात किंवा संविदेत काहीही अंतर्भूत असले तरी,—

(क) ज्याला विद्यापीठाने किंवा व्यवस्थापनाने बडतर्फ केले असेल किंवा पदावरून काढून टाकले असेल किंवा अन्यथा ज्याची सेवा समाप्त केली असेल किंवा ज्याला सक्तीने सेवानिवृत्त केले असेल किंवा ज्याला पदावनत केले असेल आणि जो व्यथित झाला असेल ; किंवा

(ख) जो या अधिनियमान्वये स्थापन केलेल्या तक्रार निवारण समितीच्या निर्णयाने व्यथित झाला असेल ;

अशा राज्य शासनाकडून, केंद्र सरकारकडून किंवा स्थानिक प्राधिकरणाकडून व्यवस्थापन करण्यात आणि चालविण्यात येत असेल असे महाविद्यालय किंवा परिसंस्था वगळता, या अधिनियमान्वये नियमन केलेल्या कोणत्याही विद्यापीठातील किंवा इतर कोणत्याही विद्यापीठाच्या संलग्न महाविद्यालयातील किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थेतील कोणत्याही अध्यापक किंवा अन्य कर्मचारी यास वरील अपील करण्याचा हक्क असेल व अशा कोणत्याही आदेशावरील अपील न्यायाधिकरणाकडे दाखल करण्यात येईल :

परंतु, एखाद्या बाबीचा निर्णय, या अधिनियमाच्या प्रारंभाच्या दिनांकाला न्यायालयाकडून किंवा न्यायाधिकरणाकडून आधीच करण्यात आला असेल किंवा ती बाब अशा न्यायालयासमोर किंवा न्यायाधिकरणासमोर प्रलंबित असेल किंवा हा अधिनियम अंमलात येण्याच्या दिनांकापूर्वी कोणत्याही वेळी बडतर्फाचा, पदावरून काढून टाकण्याचा, अन्यथा सेवासमाप्तीचा, सक्तीच्या सेवानिवृत्तीचा किंवा पदावनतीचा आदेश किंवा तक्रार निवारण समितीचा निर्णय देण्यात आला असेल आणि ज्या बाबतीत अपील दाखल करण्याची मुदत टळून गेली असेल अशा कोणत्याही प्रकरणी असे कोणतेही अपील न्यायाधिकरणाकडे दाखल करता येणार नाही.



(२) कर्मचाऱ्यांस, बडतर्फीचा, पदावरून काढून टाकण्याचा, अन्यथा सेवा समाप्तीचा, सक्तीच्या सेवानिवृत्तीचा किंवा पदावनतीचा आदेश किंवा यथास्थिति, तक्रार निवारण समितीचा निर्णय मिळाल्याच्या दिनांकापासून तीस दिवसांच्या आत त्यास न्यायाधिकरणाकडे असे अपील दाखल करता येईल :

परंतु, असा आदेश, या अधिनियमाच्या प्रारंभाच्या दिनांकापूर्वी देण्यात आला असेल त्याबाबतीत, असा आदेश किंवा निर्णय मिळाल्याच्या दिनांकापासून तीस दिवसांची मुदत समाप्त झाली नसेल तर, असे अपील करता येईल.

(३) पोट-कलम (२) मध्ये काहीही अंतर्भूत असले तरीही, तीस दिवसांच्या उक्त मुदतीत अपील दाखल न करण्यास, अपीलकारास पुरेसे कारण होते याबद्दल, न्यायाधिकरणाची खात्री पटल्यास, न्यायाधिकरणास, त्याच्याकडे उक्त मुदतीनंतर करण्यात आलेले अपील दाखल करून घेता येईल.

(४) प्रत्येक अपिलासोबत विहित करण्यात आलेले शुल्क भरण्यात येईल. ते शुल्क परत करण्याजोगे असणार नाही व ते विद्यापीठ निधीमध्ये जमा करण्यात येईल :

परंतु, राज्य शासनाने **राजपत्रातील** अधिसूचनेद्वारे, वेळोवेळी त्यास योग्य वाटेल अशी शुल्कामध्ये सुधारणा करणे कायदेशीर असेल.

१९०८ ८२. (१) अपिलांची सुनावणी करण्याच्या आणि ती निकालात काढण्याच्या प्रयोजनांसाठी न्यायाधिकरणास, दिवाणी प्रक्रिया संहिता, १९०८ अन्वये अपील न्यायालयाकडे जे अधिकार निहित केलेले असतात तसेच अधिकार असतील व त्यास, ज्याविरुद्ध अपील करण्यात आले असेल त्या कोणत्याही आदेशाची अंमलबजावणी, त्यास लादणे योग्य वाटेल अशा शर्तीवर तहकूब करण्याचा देखील अधिकार असेल. तसेच या अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये त्याला प्रदान करण्यात आले असतील असे इतर अधिकार असतील.

न्यायाधिकरणाचे सर्वसाधारण अधिकार व कार्यपद्धती.

(२) न्यायाधिकरणाचा पीठासीन अधिकारी, न्यायाधिकरणाने आपले काम चालविण्यासाठी अनुसारावयाची कार्यपद्धती तसेच, ज्या ठिकाणी व ज्यावेळी ते आपल्या बैठकी घेईल ते ठिकाण किंवा ठिकाणे व वेळ निश्चित करील.

(३) प्रत्येक अपिलाचा निर्णय, शक्य तितक्या लवकर करण्यात येईल. न्यायाधिकरण प्रत्येक प्रकरणी, त्यास अपील मिळाल्याच्या दिनांकापासून तीन महिन्यांच्या आत अपिलावर निर्णय घेण्याचा आटोकाट प्रयत्न करील. या कालावधीमध्ये एखादे अपील निकालात काढणे न्यायाधिकरणास शक्य झाले नाही तर, त्याबद्दलची कारणे न्यायाधिकरण आपल्या अभिलेखांमध्ये नमूद करून ठेवील.

८३. (१) एखादे अपील मिळाल्यावर, दोन्ही पक्षकारांना आपले म्हणणे मांडण्याची वाजवी संधी दिल्यानंतर, ते अपील कलम ८० च्या पोट-कलम (१) मध्ये विनिर्दिष्ट केलेल्या बाबींपैकी कोणत्याही बाबींशी संबंधित नाही, किंवा त्याने चालविण्यायोग्य नाही किंवा विद्यापीठाच्या किंवा व्यवस्थापनाच्या आदेशांमध्ये किंवा तक्रार निवारण समितीच्या निर्णयामध्ये हस्तक्षेप करण्यास पुरेसे कारण नाही याबाबत न्यायाधिकरणाची खात्री पटल्यास, त्यास ते अपील फेटाळता येईल.

उचित अनुतोष व निदेश देण्याचे न्यायाधिकरणाचे अधिकार.

(२) दोन्ही पक्षकारांस आपले म्हणणे मांडण्याची वाजवी संधी दिल्यानंतर किंवा एखाद्या अपिलाबाबत, बडतर्फीचा, पदावरून काढून टाकण्याचा, अन्यथा सेवा समाप्त करण्याचा, सक्तीच्या सेवानिवृत्तीचा किंवा पदावनतीचा आदेश किंवा तक्रार निवारण समितीचा निर्णय यामुळे त्या त्या वेळी अंमलात असलेल्या कोणत्याही कायद्याच्या, संविदेच्या किंवा सेवेच्या शर्तीचे उल्लंघन झाले होते किंवा अन्यथा तो आदेश किंवा निर्णय अवैध किंवा अयोग्य होता, असा निर्णय न्यायाधिकरणाने दिला तर, न्यायाधिकरणास, यथास्थिति, विद्यापीठाचा किंवा व्यवस्थापनाचा आदेश किंवा यथास्थिति, तक्रार निवारण समितीचा निर्णय अंशतः किंवा पूर्णतः रद्द करता येईल व विद्यापीठास किंवा व्यवस्थापनास पुढील निदेश देता येईल,—

एच ४०२६-१५

(क) कर्मचाऱ्यास पुन्हा त्या पदावर किंवा न्यायाधिकरण विनिर्दिष्ट करील अशा खालच्या पदावर पुन्हा नेमणे ;

(ख) कर्मचाऱ्यास, त्याने पदावनतीपूर्वी धारण केलेला दर्जा किंवा न्यायाधिकरण विनिर्दिष्ट करील असा कोणताही खालचा दर्जा प्राप्त करून देणे ;

(ग) न्यायाधिकरण विनिर्दिष्ट करील अशा कालावधीच्या वित्तलब्धीची थकबाकी, देय रकमा व इतर आर्थिक लाभ कर्मचाऱ्यास देणे ;

(घ) बडतर्फी, पदावरून काढून टाकणे, अन्यथा सेवा समाप्त करणे, सक्तीची सेवासमाप्ती किंवा यथास्थिति, पदावनती याऐवजी न्यायाधिकरण विनिर्दिष्ट करील अशी त्यापेक्षा कमी शिक्षा देणे ;

(ङ) कर्मचाऱ्यास पुन्हा कामावर न घेण्याचा निर्णय घेण्यात आला असेल अशा प्रकरणात किंवा कोणत्याही इतर योग्य प्रकरणात, कर्मचाऱ्यास गमवावी लागलेली नोकरी आणि त्यानंतर योग्य ती नोकरी मिळण्याची किंवा न मिळण्याची शक्यता या गोष्टी विचारात घेऊन, भरपाई म्हणून न्यायाधिकरण विनिर्दिष्ट करील त्याप्रमाणे कर्मचाऱ्यांच्या सहा महिन्यांच्या वित्तलब्धीपेक्षा अधिक नसेल इतकी रक्कम कर्मचाऱ्यास देणे ; किंवा

(च) प्रकरणातील परिस्थिती विचारात घेऊन, न्यायाधिकरण विनिर्दिष्ट करील असा अन्य अनुतोष कर्मचाऱ्यास देणे व अशा इतर शर्तीचे पालन करणे ;

(३) न्यायाधिकरणाने ज्या कोणत्याही देय रकमा कर्मचाऱ्यास देण्यासंबंधी निदेश दिले असतील अशा देय रकमा, यथास्थिति, विद्यापीठास किंवा व्यवस्थापनास देय असलेल्या अनुदानामधून कापून घेता येतील व थेट त्या कर्मचाऱ्यास देता येतील अशी शिफारस न्यायाधिकरणाने राज्य शासनाकडे करणे हे कायदेशीर असेल.

(४) पोट-कलम (२) अन्वये न्यायाधिकरणाने दिलेला कोणताही निदेश, दोन्ही पक्षकारांना लेखी कळविण्यात येईल व त्या निदेशामध्ये विनिर्दिष्ट केलेल्या कालावधीच्या आत विद्यापीठ किंवा व्यवस्थापन त्याचे पालन करील, असा कालावधी विद्यापीठास किंवा व्यवस्थापनास निदेश मिळाल्याच्या दिनांकापासून दोन महिन्यांपेक्षा कमी असणार नाही इतका असेल.

न्यायाधिकरणाचा  
निर्णय अंतिम व  
बंधनकारक  
असणे.

८४. त्या त्या वेळी अंमलात असलेल्या कोणत्याही कायद्यामध्ये किंवा संविदेमध्ये काहीही अंतर्भूत असले तरी, न्यायाधिकरणाने निर्णयार्थ दाखल करून घेतलेल्या आणि निकालात काढलेल्या कोणत्याही अपिलावरील न्यायाधिकरणाचा निर्णय अंतिम असेल आणि तो, कर्मचारी व विद्यापीठ किंवा यथास्थिति, व्यवस्थापन यांवर बंधनकारक असेल , आणि न्यायाधिकरणाने निर्णय दिलेल्या कोणत्याही बाबींच्या संबंधात, कोणत्याही न्यायालयात किंवा इतर कोणत्याही न्यायाधिकरणासमोर किंवा प्राधिकरणासमोर कोणताही दावा, अपील किंवा इतर कायदेशीर कार्यवाही दाखल करता येणार नाही.

८५. (१) जर विद्यापीठ किंवा यथास्थिति, व्यवस्थापन हे, न्यायाधिकरणाने कलम ८३ अन्वये दिलेल्या कोणत्याही निदेशाचे, त्यात विनिर्दिष्ट करण्यात आलेल्या कालावधीत, किंवा न्यायाधिकरणाकडून परवानगी देण्यात येईल अशा वाढीव कालावधीत पालन करण्यात कोणत्याही वाजवी कारणाशिवाय कसूर करील तर, विद्यापीठाला किंवा यथास्थिति, व्यवस्थापनाला अपराध सिद्ध झाला तर,—

न्यायाधिकरणाच्या निदेशांचे पालन करण्यात कसूर केल्याबद्दल व्यवस्थापनाला शास्ती.

(क) पहिल्या उल्लंघनाबद्दल, एक लाख रुपयांपर्यंत असू शकेल इतक्या द्रव्यदंडाची शिक्षा होईल :

परंतु, न्यायाधिकरणाच्या न्यायनिर्णयामध्ये नोंदवावयाच्या, विरुद्ध असलेल्या विशेष आणि पुरेशा कारणांच्या अभावी, हा द्रव्यदंड दहा हजार रुपयांपेक्षा कमी असणार नाही ;

(ख) दुसऱ्या आणि नंतरच्या उल्लंघनासाठी पाच लाख रुपयांपर्यंत असू शकेल इतक्या द्रव्यदंडाची शिक्षा होईल :

परंतु, न्यायाधिकरणाच्या न्यायनिर्णयामध्ये नोंदवावयाच्या, विरुद्ध असलेल्या विशेष व पुरेशा कारणाअभावी, हा द्रव्यदंड पाच हजार रुपयांपेक्षा कमी असणार नाही :

परंतु आणखी असे की, न्यायाधिकरणाने दिलेल्या निदेशात विनिर्दिष्ट करण्यात आलेल्या कालावधीत किंवा न्यायाधिकरणाने परवानगी दिलेल्या अशा वाढीव कालावधीत, त्या निदेशाचे पालन करण्यात आले नाही, आणि निदेशाचे उल्लंघन करणे चालू राहिल त्याबाबतीत, सिद्धापराधी व्यक्तीने असे उल्लंघन असा अपराध सिद्ध झाल्यानंतर जितके दिवस चालू ठेवले असेल त्या प्रत्येक दिवसासाठी पाचशे रुपये एवढ्या आणखी द्रव्यदंडाची शिक्षा देण्यात येईल.

(२) (क) या कलमाखालील उल्लंघन करणारे विद्यापीठ, किंवा यथास्थिति, व्यवस्थापन एक संस्था असेल त्या बाबतीत, असे उल्लंघन करण्यात आले होते त्यावेळी संस्थेची प्रभारी असलेली आणि संस्थेची कार्ये पार पाडण्यासाठी तिला जबाबदार असलेली प्रत्येक व्यक्ती, तसेच परिसंस्था यांना त्या उल्लंघनासाठी दोषी मानण्यात येईल आणि त्या त्यांच्याविरुद्ध कार्यवाही केली जाण्यास आणि तदनुसार शिक्षा दिली जाण्यास पात्र ठरतील :

परंतु, कोणत्याही व्यक्तीने उल्लंघन तिच्या नकळत घडले किंवा उल्लंघन घडू नये म्हणून तिने सर्व दक्षता घेतली होती असे सिद्ध केले तर, या पोट-कलमामध्ये अंतर्भूत असलेल्या कोणत्याही गोष्टीमुळे ती व्यक्ती शिक्षेस पात्र ठरणार नाही.

(ख) खंड (क) मध्ये काहीही अंतर्भूत असले तरी, एखादे उल्लंघन संस्थेकडून करण्यात आले असेल आणि ते उल्लंघन विद्यापीठाच्या व्यवस्थापन परिषदेच्या किंवा त्या संस्थेचा कोणताही अध्यक्ष, सभापती, सचिव, सदस्य, प्राचार्य किंवा व्यवस्थापक किंवा इतर अधिकारी किंवा कर्मचारी यांच्या संमतीने करण्यात आले आहे किंवा त्याने दुर्लक्ष केल्यामुळे झाले आहे किंवा त्याने केलेल्या कोणत्याही दुर्लक्षाशी त्याचा संबंध लावण्याजोगा आहे हे सिद्ध करण्यात आले तर, अशी व्यवस्थापन परिषद, अध्यक्ष, सभापती, सचिव, सदस्य, प्राचार्य किंवा व्यवस्थापक किंवा इतर संबंधित अधिकारी किंवा कर्मचारी यांना त्या उल्लंघनासाठी दोषी समजण्यात येईल आणि ते त्यांच्याविरुद्ध कार्यवाही केली जाण्यास आणि तदनुसार शिक्षा केली जाण्यास पात्र असतील.

एच ४०२६-१५अ

**स्पष्टीकरण.**—या कलमाच्या प्रयोजनासाठी “ संस्था ” याचा अर्थ, सोसायटी नोंदणी अधिनियम, १८६० अन्वये नोंदणी करण्यात आलेली संस्था किंवा महाराष्ट्र विश्वस्त व्यवस्था अधिनियम, या अन्वये नोंदणी करण्यात आलेले सार्वजनिक विश्वस्त मंडळ, किंवा इतर कोणताही निगम निकाय, असा आहे आणि त्यामध्ये, जिच्या व्यवस्थापनाखाली एक किंवा अधिक महाविद्यालये किंवा परिसंस्था चालविण्यात येतात आणि जिला विद्यापीठाचे विशेषाधिकार प्रदान करण्यात येतात अशा संघटनेचा किंवा व्यक्तीच्या संस्थेचाही समावेश होतो—मग ती कोणत्याही नावाने संबोधण्यात येत असेल.

१८६०  
चा २१.  
१९५०  
चा मुंबई  
२१.

### प्रकरण आठ

#### प्रवेश, परीक्षा, मूल्यमापन व विद्यार्थ्यांशी संबंधित इतर बाबी

**प्रवेश. ८६.** समाजाच्या दुर्बल घटकांसाठी असलेल्या राज्य शासनाच्या, आरक्षण धोरणास अधीन राहून, विद्यापीठ विभाग, संलग्न महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांमधील सर्व शिक्षणक्रमांना, राज्य शासनाने केलेले व राजपत्रात प्रसिद्ध केलेले किंवा विद्यापीठाने काढलेल्या आदेशाद्वारे केलेले कोणतेही नियम करण्यात आले असल्यास, त्यानुसार स्पर्धात्मक गुणाच्या आधारावर प्रवेश देण्यात येईल :

परंतु, संपूर्ण राज्यातील विद्यार्थ्यांच्या हिताच्या दृष्टीने, राज्य शासनाने आदर्श नियम तयार केले असतील त्या बाबतीत, विद्यापीठ ते स्वीकारील आणि असे नियम, विद्यासत्राच्या प्रारंभापूर्वी विद्यापीठाकडून प्रसिद्ध करण्यात येतील :

परंतु आणखी असे की, शिस्तीचे पालन करण्याच्या दृष्टीने संबंधित प्राधिकाऱ्याला, कोणत्याही शैक्षणिक अध्ययनक्रमाच्या प्रवेशाच्या वेळी असेल त्याखेरीज एखाद्या विद्यार्थ्याला प्रवेश नाकारण्याचा अधिकार असेल.

**प्रवेशासंबंधीचे विवाद. ८७.** विद्यापीठ विभाग, संलग्न महाविद्यालये किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांमधील प्रवेशासंबंधीचे सर्व विवाद हे कलम ५६ च्या पोटकलम (२) च्या उप-खंड (ख) नुसार विद्यापीठाच्या विद्यार्थी तक्रार निवारण कक्षाकडून अभिनिर्णीत करण्यात येतील.

**परीक्षा व मूल्यमापन. ८८.** प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष संपण्यापूर्वी, विद्यापीठ, स्वतः त्याच्याकडून किंवा त्याच्या अधिकारितेतील कोणत्याही संलग्न महाविद्यालयाकडून किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थांकडून घेण्यात येणाऱ्या पुढील शैक्षणिक वर्षातील परीक्षांचे आणि जेथे लागू असेल तेथे, अशा प्रत्येक पाठ्यक्रमाच्या मूल्यमापनासाठी पसंतीवर आधारित श्रेयांक पद्धतीचे वेळापत्रक तयार करील आणि ते प्रसिद्ध करील. तसे न झाल्यास, विद्यापीठाच्या संबंधित प्राधिकरणास किंवा अधिकाऱ्यास तीस दिवसांच्या आत त्याबाबतचा कारण दर्शविणारा अहवाल कुलपतीच्या कार्यालयाला सादर करावा लागेल आणि यासंबंधात कुलपतीचे निदेश किंवा निर्णय अंतिम व बंधनकारक असतील.

**स्पष्टीकरण एक.**—“ परीक्षेचे वेळापत्रक ” याचा अर्थ परीक्षांच्या योजनेचा भाग असलेल्या प्रत्येक प्रश्नपत्रिकेची वेळ, दिवस व दिनांक यांचा तपशील दिलेला तक्ता, असा आहे आणि त्यामध्ये प्रात्यक्षिक परीक्षांच्या तपशिलाचाही समावेश असेल.

**स्पष्टीकरण दोन.**—“ पसंतीवर आधारित श्रेयांक पद्धती ” याचा अर्थ, मूल्यमापन असा आहे, ज्यामध्ये निरंतर मूल्यमापनाचा एक भाग म्हणून आवश्यक त्या शैक्षणिक कार्याच्या समाप्तीच्या लगतनंतर किंवा सत्राच्या शेवटी विद्यार्थ्यांनी ग्रहण केलेल्या अभ्यासक्रमाच्या प्रतिमानाचे निर्धारण करण्यात येईल :

परंतु, विद्यापीठाला, त्याच्या नियंत्रणाबाहेरील कारणांमुळे व परिस्थितीमुळे उक्त वेळापत्रकाचे पालन करता आले नाही तर, ते व्यवहार्य असेल तितक्या लवकर कुलपती व राज्य शासन यांना एक अहवाल सादर करील. या अहवालात प्रसिद्ध केलेल्या वेळापत्रकाचे पालन का करता आले नाही त्याची तपशीलवार कारणे नमूद करण्यात येतील.

८९. विद्यापीठ, त्याने घेतलेल्या प्रत्येक परीक्षेचा निकाल त्या विशिष्ट पाठ्यक्रमाच्या परीक्षेच्या निकाल जाहीर अखेरच्या दिनांकापासून तीस दिवसांच्या आत जाहीर करण्याचा आटोकाट प्रयत्न करील आणि तो कोणत्याही परिस्थितीत त्या अखेरच्या दिनांकापासून उशिरात उशिरा म्हणजे पंचेचाळीस दिवसांच्या आत घोषित करील :

परंतु, पूर्वाक्त पंचेचाळीस दिवसांच्या कालावधीच्या आत कोणत्याही परीक्षेचा व मूल्यमापनाचा निकाल घोषित करणे कोणत्याही कारणाने अंततः विद्यापीठाला शक्य झाले नाही तर, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळाचा संचालक अशा विलंबाची कारणे नमूद असलेला एक तपशीलवार अहवाल तयार करील आणि तो कुलगुरूमार्फत कुलपतीला आणि राज्य शासनाला सादर करील. त्याबाबत कुलपतीचा निदेश अंतिम व बंधनकारक असेल.

९०. विद्यापीठाने यथास्थिति, कलमे ८८ व ८९ मध्ये विनिर्दिष्ट करण्यात आलेल्या वेळापत्रकाचे पालन केले नाही केवळ याच कारणावरून कोणतीही परीक्षा किंवा मूल्यमापन किंवा परीक्षेचा किंवा मूल्यमापनाचा निकाल अवैध ठरणार नाही.

वेळापत्रकाचे पालन न केल्यामुळे परीक्षा आणि मूल्यमापन अवैध ठरणार नाही.

९१. क्रीडा, सांस्कृतिक कार्यक्रम व इतर पाठ्येतर कार्यक्रम यांसाठी यथास्थिति, आपापल्या वर्गांचे, महाविद्यालयाचे किंवा विद्यापीठाचे प्रतिनिधित्व करण्यासाठी ज्या विद्यार्थ्यांची निवड करण्यात येईल, त्याची निवड इतर कोणत्याही निकषावर न करता केवळ खुल्या स्पर्धेमधून सर्वस्वी गुणवत्तेच्या आधारावरच करण्यात यावी यासाठी विद्यापीठ, योग्य ते परिणियम, आदेश व विनियम तयार करील.

क्रीडा व अभ्यासेतर कार्यक्रम.

प्रकरण नऊ

### समित्या व परिषदा

९२. या अधिनियमान्वये पुढील समित्या व परिषदा घटित करण्यात येतील :-

समित्या व परिषदा.

- (एक) सल्लागार परिषद ;
- (दोन) वित्त व लेखा समिती ;
- (तीन) अंतर्गत गुणवत्ता हमी समिती ;
- (चार) ज्ञान स्रोत समिती ;
- (पाच) महाविद्यालय विकास समिती ;
- (सहा) खरेदी समिती ;
- (सात) विद्यार्थी परिषद ;
- (आठ) इमारत व बांधकाम समिती ;
- (नऊ) शुल्क निश्चिती समिती ;
- (दहा) माजी विद्यार्थी समिती ;

सल्लागार  
परिषद.

१३. सल्लागार परिषदेमध्ये पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :-

(१) (क) कुलपतीने नामनिर्देशित करावयाचा,—

(एक) ज्याला युवकांसाठी रोजगाराच्या संधी निर्माण करण्याचा आणि शैक्षणिक-औद्योगिक कार्यक्षेत्रातील जागतिक प्रवाहांचा सखोल अनुभव आहे, असा ख्यातनाम उद्योगपती—अध्यक्ष ;

(दोन) ज्याला संशोधन व विकासविषयक धोरणे व कृतियोजना यांसंबंधात कार्यवाही करणाऱ्या राष्ट्रीय आणि जागतिक संस्थांमधील कार्याचा अनुभव आहे, अशी कीर्ती असलेला ख्यातनाम शास्त्रज्ञ—सदस्य ;

(तीन) ज्याला सर्वसामान्य लोकांबरोबर काम करण्याचा अनुभव आहे आणि शैक्षणिक व सामाजिक सुधारणांमधील परस्पर दुव्यांचे आकलन आहे, असा ख्यातनाम समाजनेता—सदस्य ;

(चार) ज्याला जागतिक उच्च शिक्षणाच्या नवनवीन प्रवाहांची ओळख आहे, असा ख्यातनाम शिक्षणतज्ज्ञ—सदस्य ;

(पाच) ज्याला उच्च व व्यवसाय शिक्षणामधील राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय स्तरावरील सखोल अनुभव आहे, असा माहिती व दळणवळण तंत्रज्ञान तज्ज्ञ—सदस्य ;

(ख) पदसिद्ध सदस्य ;

(सहा) कुलगुरू—सदस्य ;

(सात) प्र-कुलगुरू—सदस्य-सचिव.

(२) परिषदेचे अधिकार व कर्तव्ये पुढीलप्रमाणे असतील :-

(एक) शिक्षण, संशोधन आणि विकास, प्रशासन यांसंबंधीचे अहवाल व कृतियोजना सादर करून त्याद्वारे कुलगुरूला सल्ला देणे, वित्तीय साधनसंपत्ती व सुशासन निर्माण करणे, जेणेकरून विद्यापीठ शैक्षणिकदृष्ट्या सशक्त, प्रशासनिकदृष्ट्या कार्यक्षम होईल आणि आर्थिकदृष्ट्या त्याची एक भक्कम व्यवस्था निर्माण होईल ;

(दोन) विद्यापीठ व्यवस्थेच्या संपूर्ण कामकाजाचे संनियंत्रण करण्यासाठी एक कार्यतंत्र व धोरण निश्चित करणे आणि कार्याचा लेखाजोखा ठेवणे आणि विद्यापीठाची प्रगती आणि त्याच्या कार्यात्मक सक्रियतेचे परिणाम आणि समाजातील त्याची अनन्यता यांबाबतची माहिती देणे आणि सूक्ष्म विश्लेषण करणे आणि भाष्य करणे ;

(तीन) उपायात्मक यथार्थदर्शी नियोजनासंबंधी विद्यापीठाला सल्ला देणे ;

(चार) परिषदेच्या अध्यक्षास विद्यापीठाच्या वृद्धीकरता महत्त्वाचे वाटेल असे इतर कोणतेही काम हाती घेणे ;

(पाच) विद्यापीठाचा विकास, प्रगती, कामकाज यांबाबतचा नियतकालिक अहवाल कुलपतीला सादर करणे ;

(सहा) आयोगाने योजिल्याप्रमाणे विभिन्न सुधारणांचा आणि त्यांबाबतच्या धोरणाचा लेखाजोखा ठेवणे.

(३) सल्लागार परिषदेची दरवर्षी किमान दोन वेळा बैठक होईल.

१४. (१) विद्यापीठाच्या आर्थिक व्यवहारांचे नियोजन, समन्वय आणि त्यावर देखरेख ठेवण्यासाठी वित्त व लेखा समिती असेल. उपलब्ध तरतुदी लक्षात घेऊन ही समिती लेखांच्या वाढत्या खर्चाची समिती आणि नवीन खर्चाचा समावेश असणाऱ्या नवीन प्रस्तावांची तपासणी करील.

(२) वित्त व लेखा समितीमध्ये पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :-

(क) कुलगुरू-अध्यक्ष ;

(ख) प्र- कुलगुरू ;

(ग) लेखा व कोषागारे संचालक किंवा लेखा व कोषागारे उपसंचालकाच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जा नसलेला त्याचा प्रतिनिधी ;

(घ) व्यवस्थापन परिषदेमधून कुलपतीने नामनिर्देशित केलेली व्यक्ती ;

(ङ) कुलगुरूने विद्यापरिषदेतील नामनिर्देशित केलेली एक व्यक्ती ;

(च) व्यवस्थापन परिषदेने नामनिर्देशित केलेले दोन तज्ज्ञ, त्यापैकी एक व्यक्ती ही लेखांकन आणि लेखापरीक्षा क्षेत्रातील तज्ज्ञ असेल आणि दुसरी व्यक्ती ही वित्त क्षेत्रातील तज्ज्ञ असेल ;

(छ) कुलसचिव ;

(ज) वित्त व लेखा अधिकारी-सदस्य-सचिव.

(३) समितीच्या बैठकीच्या गणपूर्तीची संख्या चार एवढी असेल.

(४) पदसिद्ध सदस्यांव्यतिरिक्त, समितीचे इतर सर्व सदस्य पाच वर्षांच्या मुदतीकरिता पद धारण करतील आणि लागोपाठ दुसऱ्या मुदतीसाठी ते पात्र असणार नाहीत.

(५) समितीची वर्षातून किमान चार वेळा बैठक घेण्यात येईल.

(६) वित्त व लेखा समिती :-

(क) वित्त व लेखा अधिकाऱ्याकडून सादर करावयाचे वार्षिक लेखा विवरणपत्र, लेखापरीक्षा केलेल्या लेखांचे अंतिम विवरणपत्र आणि लेखापरीक्षण अहवाल व त्याचा अनुपालन अहवाल आणि वार्षिक वित्तीय विवरणपत्र यांची तपासणी करील व त्यावर विचार करील आणि मान्यतेसाठी त्याची व्यवस्थापन परिषदेकडे आणि त्यानंतर अधिसभेकडे शिफारस करील ;

(ख) उपलब्ध तरतुदी विचारात घेऊन, वाढत्या खर्चाची आणि नवीन खर्चाचा समावेश असणाऱ्या सर्व नवीन प्रस्तावांची तपासणी करील ;

(ग) उत्पादक कामासाठी असलेल्या कर्जातून मिळणाऱ्या उत्पन्नासह विद्यापीठाचे उत्पन्न आणि साधनसंपत्ती यांवर आधारित अशा संपूर्ण वर्षाच्या आवर्ती व अनावर्ती खर्चाच्या मर्यादांची व्यवस्थापन परिषदेकडे शिफारस करील ;

(घ) विद्यापीठाची मत्ता व साधनसंपत्तीची उत्पादक गुंतवणूक व त्यांचे व्यवस्थापन याबाबत व्यवस्थापन परिषदेकडे शिफारस करील ;

- (ड) विद्यापीठाच्या विकासासाठी अधिक साधनसंपत्ती वाढवण्याच्या शक्यतांचा शोध घेईल ;
- (च) व्यवस्थापन परिषदेने नियुक्त केलेल्या लेखापरीक्षकाकडून विद्यापीठाच्या लेखाची लेखापरीक्षा करून घेण्यासाठी आवश्यक ती कार्यवाही करील ;
- (छ) विद्यापीठाच्या मालमत्तेच्या व निधीच्या प्रशासनाशी संबंधित बाबींवर व्यवस्थापन परिषदेला सल्ला देईल ;
- (ज) राज्य शासनाकडून मिळालेला निधी, मत्ता आणि इतर स्रोत यांच्या संबंधात राज्य शासनाने वेळोवेळी काढलेल्या आदेशांची योग्य प्रकारे अंमलबजावणी होत असल्याबद्दल सुनिश्चिती करील ;
- (झ) व्यवस्थापन परिषद, विद्यापरिषद किंवा विद्यापीठाचे इतर कोणतेही प्राधिकरण, मंडळ किंवा समिती अथवा कोणताही अधिकारी यांच्याकडून तिच्याकडे विचारार्थ सोपवलेल्या वित्तीय बाबीसंबंधात सल्ला देईल ;
- (ञ) तिच्या निदर्शनास येईल अशी, वित्तीय बाबीसंबंधातील कोणतीही चूक किंवा अनियमितता कुलगुरूला कळवील, जेणेकरून कुलगुरूला, बाबीसंबंधीच्या गंभीरतेचे निर्धारण केल्यानंतर सत्वर योग्य ती कार्यवाही करता येईल किंवा ती बाब व्यवस्थापन परिषदेकडे विचारार्थ पाठवता येईल ;
- (ट) राज्य शासनाकडून नियुक्त करण्यात आलेल्या लेखापरीक्षकांकडून लेखापरीक्षेसाठी विद्यापीठ, महाविद्यालये आणि परिसंस्थांचे वार्षिक लेखे खुले केले जातात याची सुनिश्चिती करील ;
- (ठ) वित्तीय स्रोतांचे व्यवस्थापन, लेखे ठेवणे, लेखे ठेवण्याची कार्यक्षमता आणि लेखापरीक्षेच्या कार्यपद्धती उंचावण्यासाठी आधुनिक तंत्रज्ञानाचा वापर करण्यासाठी आयोगाने सुचविलेल्या विविध सुधारणांचा अभ्यास करील ;
- (ड) विद्यापीठ प्राधिकरणांकडून नेमून देण्यात येतील अशी इतर कोणतीही कार्ये आणि कामे पार पाडील.

अंतर्गत गुणवत्ता  
हमी समिती.

१५. (१) विद्यापीठाच्या सर्व शैक्षणिक कार्यक्रमांच्या गुणवत्ता हमी आणि गुणवत्ता वृद्धीची योजना आखणे, त्यांना मार्गदर्शन करणे आणि त्यांचे संनियंत्रण करणे यांकरिता विद्यापीठात अंतर्गत गुणवत्ता हमी समिती असेल.

(२) विद्यापीठातील अंतर्गत गुणवत्ता हमी समिती ही, विद्यापीठ अनुदान आयोग व राज्य शासन यांनी वेळोवेळी काढलेल्या मार्गदर्शक तत्वांनुसार घटित करण्यात येईल आणि ती त्याप्रमाणे कार्य करील.

(३) आवश्यक ती गुणवत्तावृद्धी उपाययोजनांसाठीच्या कामाचा पाठपुरावा करण्यासाठी विद्यापीठाच्या व्यवस्थापन परिषदेकडून वार्षिक गुणवत्ता हमी अहवालास मान्यता देण्यात येईल. विद्यापीठ, राष्ट्रीय मूल्यांकन व अधिस्वीकृती परिषद किंवा इतर अधिस्वीकृती मंडळांकडे नियमितपणे वार्षिक गुणवत्ता हमी अहवाल सादर करील.

(४) प्रत्येक महाविद्यालयात आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्थेत अंतर्गत गुणवत्ता हमी समिती असेल जी विद्यापीठ अनुदान आयोग आणि राज्य शासन यांनी वेळोवेळी काढलेल्या मार्गदर्शक तत्वांप्रमाणे घटित करण्यात येईल व ती त्याप्रमाणे कार्य करील.



(५) महाविद्यालये आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्था, आपले वार्षिक गुणवत्ता हमी अहवाल नियमितपणे संलग्न विद्यापीठ, राज्यस्तरीय गुणवत्ता हमी मंडळे आणि राष्ट्रीय अधिस्वीकृती मंडळे यांना सादर करतील.

(६) विद्यापीठ आपल्या अधिकारितेतील महाविद्यालये आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांतील अंतर्गत गुणवत्ता हमी समित्यांच्या कामकाजाचे संनियंत्रण करील.

१६. (१) ज्ञान स्रोत केंद्र, मुद्रण व इलेक्ट्रॉनिक सामग्री आणि विद्यापीठाच्या संबंधित सेवा ज्ञानस्रोत समिती. यांचे प्रशासन, रचना आणि देखभाल करण्यासाठी एक ज्ञान स्रोत समिती असेल.

(२) ज्ञान स्रोत समितीमध्ये पुढील सभासदांचा समावेश असेल :—

- (क) कुलगुरु—अध्यक्ष ;
- (ख) कुलगुरुने नामनिर्देशित केलेला विद्याशाखेचा एक अधिष्ठाता ;
- (ग) कुलगुरुने नामनिर्देशित केलेला विद्यापीठ विभागाचा किंवा विद्यापीठ परिसंस्थेचा एक प्रमुख ;
- (घ) कुलगुरुने नामनिर्देशित केलेले दोन सदस्य, त्यांपैकी एक सदस्य हा उद्योग क्षेत्रातील असेल आणि दुसरा सदस्य हा राष्ट्रीय स्तरावरील संघटनेतील ग्रंथपाल असेल ;
- (ङ) कुलसचिव ;
- (च) वित्त आणि लेखा अधिकारी ;
- (छ) संचालक, ज्ञान स्रोत केंद्र-सदस्य-सचिव.

(३) पदसिद्ध सदस्यांव्यतिरिक्त, ज्ञान स्रोत समितीचे सर्व नामनिर्देशित सदस्य हे तीन वर्षांच्या कालावधीसाठी पद धारण करतील.

(४) ज्ञान स्रोत समितीची वर्षातून किमान तीन वेळा बैठक घेण्यात येईल.

(५) ज्ञान स्रोत समिती,—

(क) ज्ञान स्रोत केंद्र, दस्तऐवजीकरण सेवा आणि ॲनॉलॉग व डिजिटल स्वरूपातील अभिलेख ठेवण्यासाठी योग्य त्या व्यवस्थेची आणि सहाय्याची तरतूद करील ;

(ख) ज्ञान स्रोत केंद्राचे आणि ॲनॉलॉग व डिजिटल अशा दोन्ही स्वरूपातील दस्तऐवजीकरण सेवांचे आधुनिकीकरण व सुधारणा करण्यासाठी सुलभ व कार्यात्मक योजनेची तरतूद करील ;

(ग) ज्ञान स्रोत केंद्राच्या सेवांसाठी आणि त्यांच्या वापरासाठी विद्यार्थी व इतरांकडून आकारावयाचे शुल्क आणि इतर आकार यांची विद्या परिषदेकडे शिफारस करील ;

(घ) व्यवस्थापन परिषदेच्या मान्यतेसाठी, ज्ञान स्रोत केंद्राच्या विकासासाठीचे वार्षिक अंदाजपत्रक आणि प्रस्ताव तयार करील ;

(ङ) ज्ञान स्रोत केंद्राच्या कामकाजावरील वार्षिक अहवाल कुलगुरुला सादर करील ;

(च) प्रादेशिक, राष्ट्रीय आणि आंतरराष्ट्रीय ग्रंथालये व माहिती केंद्रे यांबरोबर संपर्क जाळे प्रस्थापित करील ;

(छ) यांसंबंधातील सर्व माहितीचे आणि महाविद्यालये, विद्यापीठ विभाग किंवा परिसंस्था व विद्यापीठाची प्रशासकीय कार्यालये यांच्या कामकाजाशी संबंधित आणि महाविद्यालये, मान्यताप्राप्त परिसंस्था आणि विद्यापीठ यांच्या मूल्यांकनाशी आणि अधिस्वीकृतीशी संबंधित सर्व प्रशासकीय, प्रशासन, शैक्षणिक व इतर दस्तऐवज माहिती व आधारसामग्री यांच्याशी संबंधित माहिती ठेवील ;

(ज) ज्ञान स्रोत केंद्राची उद्दिष्टे पार पाडण्यासाठी विद्यापीठ प्राधिकरणांकडून नेमून देण्यात येईल असे इतर कोणतेही काम हाती घेईल.

महाविद्यालय  
विकास  
समिती.

९७. (१) प्रत्येक संलग्न, स्वायत्त, अधिकारप्रदत्त स्वायत्त महाविद्यालय किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांसाठी पुढील सदस्यांचा समावेश असलेली एक स्वतंत्र महाविद्यालय विकास समिती असेल :-

- (क) व्यवस्थापनाचा अध्यक्ष किंवा त्याची नामनिर्देशित व्यक्ती-पदसिद्ध अध्यक्ष ;
- (ख) व्यवस्थापनाचा सचिव किंवा त्याची नामनिर्देशित व्यक्ती ;
- (ग) प्राचार्य किंवा परिसंस्था प्रमुखाद्वारे नामनिर्देशित करावयाचा एक विभागप्रमुख ;
- (घ) पूर्णकालिक मान्यताप्राप्त अध्यापकांनी त्यांच्यामधून निवडून दिलेले महाविद्यालयातील किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थेतील तीन अध्यापक, यांपैकी किमान एक महिला असेल ;
- (ङ) नियमित अध्यापकेतर कर्मचारीवर्ग यांनी त्यांच्यामधून निवडून दिलेला एक अध्यापकेतर कर्मचारी ;
- (च) व्यवस्थापनाने प्राचार्याशी विचारविनिमय करून, शिक्षण, उद्योग, संशोधन आणि समाजसेवा या क्षेत्रातून नामनिर्देशित केलेले चार स्थानिक सदस्य, यांपैकी किमान एक जण हा, माजी विद्यार्थी असेल ;
- (छ) समन्वयक, महाविद्यालय अंतर्गत गुणवत्ता हमी समिती ;
- (ज) महाविद्यालय विद्यार्थी परिषदेचे सभापती व सचिव ;
- (झ) महाविद्यालयाचा प्राचार्य किंवा परिसंस्थेचा प्रमुख, सदस्य-सचिव.

(२) राज्य शासनाकडून व्यवस्था पाहण्यात येणारी किंवा चालवण्यात येणारी महाविद्यालये किंवा परिसंस्था यांच्याकरिता असलेल्या महाविद्यालय विकास समितीमध्ये पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :-

- (क) महाविद्यालयाचा प्राचार्य किंवा परिसंस्थेचा प्रमुख-अध्यक्ष ;
- (ख) उच्च शिक्षण संचालकाने पदनिर्देशित केलेला, सह संचालक-पदसिद्ध सदस्य ;
- (ग) पूर्णकालिक मान्यताप्राप्त अध्यापकांनी आपल्यामधून निवडून दिलेले महाविद्यालयातील किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थांतील तीन अध्यापक ;
- (घ) नियमित अध्यापकेतर कर्मचारीवर्गाने आपल्यामधून निवडून दिलेला एक अध्यापकेतर कर्मचारी ;
- (ङ) उच्च शिक्षण संचालकाने प्राचार्याशी विचारविनिमय करून, शिक्षण, उद्योग, संशोधन आणि समाजसेवा या क्षेत्रातून नामनिर्देशित केलेले आणि किमान पदव्युत्तर पदवी धारण करणारे चार स्थानिक सदस्य यांपैकी किमान एकजण हा माजी विद्यार्थी असेल ;
- (च) महाविद्यालयाच्या अंतर्गत गुणवत्ता हमी समितीचा समन्वयक, पदसिद्ध सदस्य ;
- (छ) महाविद्यालय विद्यार्थी परिषदेचा अध्यक्ष व सचिव आणि ;
- (ज) महाविद्यालयाच्या प्राचार्याने किंवा परिसंस्थेच्या प्रमुखाने नामनिर्देशित केलेला एक विभाग प्रमुख-सदस्य सचिव.

(३) महाविद्यालय, विकास समितीची बैठक वर्षातून किमान चार वेळा घेईल.

(४) निवडलेल्या आणि नामनिर्देशित केलेल्या सदस्यांची मुदत निवडून आल्याच्या किंवा नामनिर्देशित केल्याच्या दिनांकापासून पाच वर्षे इतकी असेल. अशा सदस्याचे कोणतेही पद रिक्त झाले तर, ते रिक्त पद प्राचार्याकडून तीन महिन्यांच्या आत भरण्यात येईल आणि अशा प्रकारे नियुक्त झालेला सदस्य, पद रिक्त झाले नसते तर आधीच्या सदस्याने जितक्या मुदतीसाठी ते पद धारण केले असते तितक्याच उर्वरित मुदतीकरिता ते पद धारण करील.

(५) महाविद्यालय विकास समिती :-

(क) शैक्षणिक, प्रशासकीय आणि पायाभूत सुविधाविषयक वाढ यासंबंधात महाविद्यालयाचा सर्वांगीण सर्वसमावेशक विकास आराखडा तयार करील आणि अभ्यासविषयक, अभ्यासानुवर्ती, पाठ्येतर कार्यक्रम यांमधील अत्युच्च गुणवत्तेमध्ये वाढ करण्याच्या दृष्टीने महाविद्यालयाला सक्षम करील ;

(ख) महाविद्यालयाचा एकूण अध्यापन कार्यक्रम किंवा वार्षिक वेळापत्रक ठरवील ;

(ग) नवीन विद्याविषयक पाठ्यक्रम सुरू करण्याबाबत आणि अतिरिक्त अध्यापक व प्रशासकीय पदांची निर्मिती करण्याबाबत व्यवस्थापनाकडे शिफारस करील ;

(घ) महाविद्यालयामध्ये कोणतेही स्वयं सहाय्यित असे कोणतेही पाठ्यक्रम असतील तर त्याचा आढावा घेईल आणि त्यांच्या सुधारणेकरिता शिफारशी करील ;

(ङ) महाविद्यालयामध्ये संशोधन संस्कृती, सल्ला आणि विस्तार कार्यक्रमांना उत्तेजन देण्यासाठी व ते बळकट करण्यासाठी व्यवस्थापनाला विशिष्ट शिफारशी करील ;

(च) अध्यापन व संशोधनाला बळकट करण्यासाठी विद्याविषयक सहयोगांना उत्तेजन देण्यासाठी व्यवस्थापनाला विशिष्ट शिफारशी करील ;

(छ) अध्यापन व अध्ययन प्रक्रियेत माहिती व संदेशवहन तंत्रज्ञानाच्या वापराला उत्तेजन देण्यासाठी व्यवस्थापनाला विशिष्ट शिफारशी करील ;

(ज) अध्यापनातील सुधारणांसंबंधी व महाविद्यालयाच्या कर्मचाऱ्यांसाठी योग्य प्रशिक्षण कार्यक्रम याबाबत विशिष्ट शिफारशी करील ;

(झ) महाविद्यालयाचे किंवा परिसंस्थेचे वार्षिक वित्तीय अंदाज (अर्थसंकल्प) व वित्तीय विवरणपत्रे तयार करील आणि मान्यतेसाठी व्यवस्थापनाकडे शिफारस करील ;

(ञ) वार्षिक वित्तीय अंदाजात (अर्थसंकल्प) तरतूद केली नसेल अशा नवीन खर्चासाठी प्रस्ताव तयार करील ;

(ट) महाविद्यालयातील किंवा परिसंस्थेतील विद्यार्थ्यांच्या व कर्मचाऱ्यांच्या कल्याण कार्यक्रमांबाबत शिफारशी करील ;

(ठ) अंतर्गत गुणवत्ता हमी समितीच्या अहवालावर चर्चा करील व योग्य शिफारशी करील ;

(ड) वैधानिक मानकांचे अनुपालन करून विविध कार्यक्रमांसाठी योग्य प्रवेश परीक्षा कार्यपद्धती तयार करील ;

(ढ) महाविद्यालयामध्ये वार्षिक दिन, क्रीडा महोत्सव, सांस्कृतिक महोत्सव इत्यादींसारखे मोठे वार्षिक महोत्सव आयोजित करील ;

(ण) महाविद्यालयाची किंवा परिसंस्थेची शिस्त, सुरक्षितता व सुरक्षा या प्रश्नांबाबत हाती घ्यावयाच्या योग्य उपाययोजनांविषयी प्रशासनाला शिफारस करील ;

(त) निरीक्षण अहवाल, स्थानिक चौकशी अहवाल, लेखापरीक्षा अहवाल, राष्ट्रीय मूल्यांकन व अधिस्वीकृती परिषदेचा (नॅक) अहवाल, इत्यादींवर विचार करील व त्यावर उचित शिफारशी करील ;

(थ) महाविद्यालय किंवा परिसंस्थेच्या विद्यार्थी व कर्मचारी वर्ग यांना विविध पारितोषिके, पदके व पुरस्कार वितरित करण्यासाठी शिफारस करील ;

(द) ३० जून रोजी संपणाऱ्या वर्षासाठी समितीने केलेल्या कामाचा वार्षिक अहवाल तयार करील आणि तो अशा महाविद्यालयाच्या व्यवस्थापनास व विद्यापीठास सादर करील ;

(ध) व्यवस्थापनाकडून व विद्यापीठाकडून सोपविण्यात येतील अशी इतर कर्तव्ये पार पाडील व अशा इतर अधिकारांचा वापर करील.

खरेदी समिती. १८. (१) ज्यामध्ये प्रत्येक बाबीचे स्वतंत्र मूल्य एकावेळी दहा लाखांहून अधिक असेल अशा, विद्यापीठाच्या खरेदीच्या सर्व बाबी हाताळण्यासाठी एक खरेदी समिती असेल.

(२) समितीमध्ये पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :-

(क) कुलगुरू - अध्यक्ष ;

(ख) प्र-कुलगुरू ;

(ग) व्यवस्थापन परिषदेवरील कुलपतीने नामनिर्देशित केलेली व्यक्ती ;

(घ) व्यवस्थापन परिषदेने नामनिर्देशित केलेले विद्यापीठ विभागांचे किंवा विद्यापीठ परिसंस्थांचे दोन प्रमुख ;

(ङ) व्यवस्थापन परिषदेने, त्या परिषदेच्या निर्वाचित सदस्यांमधून नामनिर्देशित केलेला त्या परिषदेचा एक सदस्य ;

(च) कुलगुरूने प्राधान्याने उद्योगसमूहातील सामग्री व्यवस्थापन क्षेत्रातील नामनिर्देशित केलेला एक तज्ज्ञ ;

(छ) कुलसचिव ; आणि

(ज) वित्त व लेखा अधिकारी, सदस्य-सचिव.

(३) वित्त व लेखा अधिकाऱ्याच्या अनुपस्थितीत कुलसचिव हा समितीचा सचिव म्हणून काम करील.

(४) खरेदी समिती, ज्यांच्यासाठी खरेदी करावयाची आहे त्या विद्यापीठ विभागाच्या किंवा परिसंस्थेच्या प्रमुखाला आमंत्रित करील.

(५) पदसिद्ध सदस्यांव्यतिरिक्त समितीचे इतर सर्व सदस्य तीन वर्षांच्या मुदतीकरिता पद धारण करतील आणि त्याच विद्यापीठात सलग दुसऱ्या मुदतीसाठी पद धारण करण्यास पात्र नसतील.

(६) जेथे प्रत्येक बाबीची विशिष्ट किंमतही एका वेळी दहा लाखांपेक्षा अधिक नसेल तेथे अशा बाबींच्या बाबतीत विद्यापीठाच्या सर्व खरेदीसंबंधीच्या सर्व बाबी ह्या, परिनियमांद्वारे विहित करण्यात येतील.

(७) खरेदी समितीचे अधिकार व कर्तव्ये आणि तिच्या बैठकांची कार्यपद्धती परिनियमांद्वारे विहित करण्यात येईल त्याप्रमाणे असेल.

११. (१) पोट-कलम (४) चा खंड (ख) मध्ये विनिर्दिष्ट केल्याप्रमाणे एक विद्यापीठ विद्यार्थी विद्यार्थी परिषद. परिषद असेल, व विद्यार्थ्यांच्या कल्याणासाठी आणि अधिक चांगल्या प्रकारच्या सामुदायिक जीवनासाठी विविध विद्यार्थी संघांच्या पाठ्येतर कार्यक्रमांचे प्रचालन करण्याकरिता व त्याबाबतीत समन्वय साधण्याकरिता, विद्यापीठाच्या विभागांकरिता एक विद्यापीठ विभाग विद्यार्थी परिषद आणि विद्यापीठाच्या प्रत्येक संचालित महाविद्यालय किंवा परिसंस्था आणि प्रत्येक संलग्न महाविद्यालय यांच्याकरिता एक महाविद्यालय विद्यार्थी परिषद असेल. या परिषदा कोणत्याही राजकीय चळवळींमध्ये भाग घेणार नाहीत.

(२) विद्यापीठ विभाग विद्यार्थी परिषदेत पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :—

(क) सर्व विद्यापीठ विभागांत पूर्णवेळ अभ्यासक्रम शिकणाऱ्या विद्यार्थ्यांचा समावेश असणाऱ्या निर्वाचक गणाद्वारे निवडण्यात आलेला सभापती ;

(ख) सर्व विद्यापीठ विभागांत पूर्णवेळ अभ्यासक्रम शिकणाऱ्या विद्यार्थ्यांचा समावेश असणाऱ्या निर्वाचक गणाद्वारे निवडण्यात आलेला सचिव ;

(ग) सर्व विद्यापीठ विभागांत पूर्णवेळ अभ्यासक्रम शिकणाऱ्या विद्यार्थ्यांचा समावेश असणाऱ्या निर्वाचक गणाद्वारे निवडण्यात आलेली एक महिला प्रतिनिधी ;

(घ) सर्व विद्यापीठ विभागांमध्ये पूर्णवेळ अभ्यासक्रम शिकणाऱ्या विद्यार्थ्यांचा समावेश असणाऱ्या निर्वाचक गणाद्वारे, अनुसूचित जाती किंवा अनुसूचित जमाती किंवा निरधिसूचित जमाती (विमुक्त जाती) किंवा भटक्या जमाती किंवा इतर मागासवर्ग यांच्यामधून निवडण्यात आलेला एक प्रतिनिधी ;

(ङ) त्या विभागामध्ये पूर्णवेळ अभ्यासक्रम शिकणाऱ्या विद्यार्थ्यांचा समावेश असणाऱ्या निर्वाचक गणातून निवडून दिलेला प्रत्येक विभागामधील एक विद्यार्थी ;

(च) जे विद्यार्थी विहित केलेल्या निकषाच्या आधारावर अनुक्रमे राष्ट्रीय सेवा योजना, राष्ट्रीय छात्र सेना, क्रीडा व सांस्कृतिक कार्ये यांमध्ये सहभागी झालेल्या विद्यार्थ्यांमधून कुलगुरुने नामनिर्देशित केलेल्या प्रत्येकी (क) राष्ट्रीय सेवा योजना (ख) राष्ट्रीय छात्र सेना (ग) क्रीडा आणि (घ) सांस्कृतिक कार्ये यांमधील प्रत्येकी एक विद्यार्थी ;

(छ) संचालक, विद्यार्थी विकास हा पदसिद्ध सदस्य असेल.

(३) प्रत्येक परिसंस्था, संचालित महाविद्यालय किंवा संलग्न महाविद्यालय यांच्याकरिता असलेल्या महाविद्यालय विद्यार्थी परिषदेमध्ये पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :—

(क) त्या महाविद्यालयामध्ये पूर्णवेळ अभ्यासक्रम शिकणाऱ्या विद्यार्थ्यांचा समावेश असणाऱ्या निर्वाचक गणाद्वारे निवडण्यात आलेला सभापती ;

(ख) त्या महाविद्यालयामध्ये पूर्णवेळ अभ्यासक्रम शिकणाऱ्या विद्यार्थ्यांचा समावेश असणाऱ्या निर्वाचक गणाद्वारे निवडण्यात आलेला सचिव ;

(ग) त्या महाविद्यालयामध्ये पूर्णवेळ अभ्यासक्रम शिकणाऱ्या विद्यार्थ्यांचा समावेश असणाऱ्या निर्वाचक गणाद्वारे निवडून दिलेली एक महिला प्रतिनिधी ;

(घ) त्या महाविद्यालयामध्ये पूर्णवेळ अभ्यासक्रम शिकणाऱ्या विद्यार्थ्यांचा समावेश असणाऱ्या निर्वाचक गणाद्वारे, त्यांच्यामधून आळीपाळीने अनुसूचित जाती किंवा अनुसूचित जमाती किंवा निरधिसूचित जमाती (विमुक्त जाती) किंवा भटक्या जमाती किंवा इतर मागासवर्ग यांच्यामधील एक प्रतिनिधी :

परंतु, विद्यापीठ या खंडाच्या प्रयोजनासाठी प्रत्येक महाविद्यालयाकरिता आरक्षणाचा प्रवर्ग चिड्ड्या टाकून काढलेल्या सोडतीद्वारे निश्चित करील ;

(ङ) महाविद्यालयामध्ये पूर्णवेळ अभ्यासक्रम शिकणाऱ्या विद्यार्थ्यांचा समावेश असणाऱ्या निर्वाचक गणाद्वारे निवडून दिलेला प्रत्येक वर्गामधील एक विद्यार्थी ;

(च) विहित केलेल्या निकषाच्या आधारावर अनुक्रमे राष्ट्रीय सेवा योजना, राष्ट्रीय छात्र सेना, क्रीडा व सांस्कृतिक कार्ये यांमध्ये सहभागी झालेल्या विद्यार्थ्यांमधून प्राचार्याने नामनिर्देशित केलेला (क) राष्ट्रीय सेवा योजना (ख) राष्ट्रीय छात्र सेना (ग) क्रीडा आणि (घ) सांस्कृतिक कार्ये यांमधील प्रत्येकी एक विद्यार्थी ;

(छ) महाविद्यालयाच्या प्राचार्याकडून नियुक्त केलेल्या विद्यार्थी परिषदेचा समन्वयक म्हणून एक वरिष्ठ अध्यापक आणि संचालक, क्रीडा व शारीरिक शिक्षण, राष्ट्रीय नमुना सर्वेक्षण कार्यक्रम अधिकारी आणि कायमस्वरूपी निमंत्रित म्हणून राष्ट्रीय छात्रसेना अधिकारी.

(४) (क) पुढील सदस्यांचा समावेश असणारा एक विद्यापीठ विद्यार्थी संघ असेल :—

(एक) विद्यापीठ विभाग विद्यार्थी परिषद आणि प्रत्येक महाविद्यालय विद्यार्थी परिषद यांचे सभापती ;

(दोन) विद्यापीठ विभाग विद्यार्थी परिषद आणि प्रत्येक महाविद्यालय विद्यार्थी परिषद यांचे सचिव ;

(तीन) विद्यापीठ विभाग विद्यार्थी परिषद आणि प्रत्येक महाविद्यालयाची विद्यार्थी परिषद यांच्या महिला प्रतिनिधी ;

(चार) विद्यापीठ विभाग विद्यार्थी परिषद आणि प्रत्येक महाविद्यालयाची विद्यार्थी परिषद यांच्यातील अनुसूचित जाती किंवा अनुसूचित जमाती किंवा निरधिसूचित जमाती (विमुक्त जाती) किंवा भटक्या जमाती किंवा इतर मागासवर्ग यांच्यामधील विद्यार्थी प्रतिनिधी.

(ख) विद्यापीठ विद्यार्थी परिषदेमध्ये पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :—

(एक) विद्यापीठ विद्यार्थी संघाच्या सदस्यांनी त्यांच्यामधून निवडून दिलेला सभापती ;

(दोन) विद्यापीठ विद्यार्थी संघाच्या सदस्यांनी त्यांच्यामधून निवडून दिलेला सचिव ;

(तीन) विद्यापीठ विद्यार्थी संघाच्या सदस्यांनी त्यांच्यामधून निवडून दिलेली एक महिला प्रतिनिधी ;

(चार) विद्यापीठ विद्यार्थी संघाच्या विद्यार्थी सदस्यांनी त्यांच्यामधून आळीपाळीने निवडून दिलेला अनुसूचित जाती किंवा अनुसूचित जमाती किंवा निरधिसूचित जमाती, (विमुक्त जाती) किंवा भटक्या जमाती किंवा इतर मागासवर्ग किंवा विशेष मागास प्रवर्ग यांच्यामधील एक प्रतिनिधी ;

(पाच) विहित निकषांच्या आधारावर अनुक्रमे जे विद्यार्थी राष्ट्रीय सेवा योजना, राष्ट्रीय छात्रसेना, क्रीडा व सांस्कृतिक कार्ये यांमध्ये सहभागी झालेले आहेत अशा विद्यापीठ विभागांच्या आणि संलग्न महाविद्यालयांच्या विद्यार्थ्यांमधून संचालक, विद्यार्थी विकास यांच्याशी विचारविनिमय करून, विद्यापीठ विद्यार्थी परिषदेच्या सभापतीने नामनिर्देशित केलेला (क) राष्ट्रीय सेवा योजना, (ख) राष्ट्रीय छात्रसेना, (ग) क्रीडा व (घ) सांस्कृतिक कार्ये यांमधील प्रत्येकी एक विद्यार्थी ;

(सहा) विद्यार्थी विकास संचालक मंडळ ; संचालक, क्रीडा व शारीरिक शिक्षण ; संचालक, आजीवन शिक्षण व विस्तार हे कायमस्वरूपी निर्मात्रित असतील.

(५) विद्यापीठ विद्यार्थी परिषदेच्या पहिल्या बैठकीच्या अध्यक्षस्थानी कुलगुरु असेल आणि त्याला योग्य वाटतील असे इतर अधिकारी त्या बैठकीस उपस्थित असतील.

(६) कोणताही विद्यार्थी, जर त्याची/तिची पूर्णवेळ विद्यार्थी म्हणून नावनोंदणी झाली असेल तरच कोणत्याही विद्यार्थी परिषदेचा सदस्य होण्यास किंवा सदस्य म्हणून चालू राहण्यास पात्र असेल.

(७) निवडणुकीच्या कालावधीमध्ये महाविद्यालयाच्या किंवा परिसंस्थेच्या किंवा विद्यापीठाच्या हजेरीपटावरील विद्यार्थी वगळता कोणत्याही व्यक्तीस, कोणत्याही नात्याने निवडणूक प्रक्रियेत भाग घेण्याची परवानगी देण्यात येणार नाही. या शर्तीचे उल्लंघन करणारा कोणताही विद्यार्थी किंवा उमेदवार हा, त्याच्याविरुद्ध शिस्तभंगाची कारवाई केली जाण्यास त्याचबरोबर त्याची उमेदवारी रद्द केली जाण्यास पात्र असेल.

(८) विद्यापीठ विभाग विद्यार्थी परिषद, प्रत्येक परिसंस्था, संचालित महाविद्यालय किंवा संलग्न महाविद्यालय विद्यार्थी परिषद आणि विद्यापीठ विद्यार्थी परिषद यांचा अर्थसंकल्प, बैठकीची वारंवारता ही परिणियमांद्वारे विहित करण्यात येईल त्याप्रमाणे असेल ;

(९) विद्यार्थी परिषदेच्या विद्यार्थी सदस्यांची निवडणूक ही, प्रत्येक वर्षी, शैक्षणिक वर्ष सुरू झाल्यानंतर शक्य तितक्या लवकर विहित करण्यात येईल अशा दिनांकास घेण्यात येईल. निवडून आलेल्या विद्यार्थी सदस्यांचा पदावधी हा, दरम्यानच्या कालावधीत या अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये विनिर्दिष्ट केलेल्या कोणत्याही निरहंता त्यांनी आपल्यावर ओढवून घेतलेल्या नसतील तर निवडणुकीच्या दिनांकापासून सुरू होऊन शैक्षणिक वर्षाच्या शेवटच्या दिवसापर्यंत असेल, आणि त्यानंतर तो समाप्त होईल.

(१०) विद्यार्थी परिषदेच्या एक तृतीयांश सदस्यांनी बैठकीची गणपूर्ती होईल. बैठकीचे कामकाज चालविण्यासंबंधीची कार्यपद्धती आणि अशा इतर बाबी परिणियमांद्वारे विहित करण्यात येतील त्याप्रमाणे असतील. दर तीन महिन्यांतून किमान एकदा परिषदेची बैठक घेण्यात येईल.

(११) निवडणुकीची प्रक्रिया, अधिकार व कर्तव्ये, निवडणूक घेणारे प्राधिकरण, अशा निवडणुका घेणारी यंत्रणा, उमेदवार व निवडणूक प्रशासक यांच्यासाठी आचारसंहिता आणि अशा निवडणुकीच्या संबंधातील तक्रार निवारण यंत्रणा ही, राज्य शासनाकडून **राजपत्रात** प्रसिद्ध केलेल्या आदेशाद्वारे विनिर्दिष्ट करण्यात येईल त्याप्रमाणे असेल.

(१२) या कलमाच्या तरतुदी ह्या, राज्य शासनाने पोट-कलम (११) अन्वये आदेश काढल्यानंतर, अशा आदेशात विनिर्दिष्ट करण्यात येईल अशा दिनांकापासून अंमलात येतील.

इमारत व बांधकाम समिती. १००. (१) विद्यापीठातील पायाभूत सुविधांचा विकास करण्यासंबंधातील अनेक लहान व मोठी बांधकामे कार्यक्षमतेने व कालबद्ध रीतीने पार पाडण्यासाठी एक इमारत व बांधकाम समिती असेल.

(२) इमारत व बांधकाम समितीमध्ये पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :-

(क) कुलगुरू - अध्यक्ष ;

(ख) प्र-कुलगुरू ;

(ग) व्यवस्थापन परिषदेवर कुलपतीने नामनिर्देशित केलेली व्यक्ती ;

(घ) विद्यापीठ ज्या प्रदेशात आहे त्या प्रदेशाचा प्रभार असणारा सार्वजनिक बांधकाम विभागाचा मुख्य अभियंता, किंवा त्या प्रदेशातील कार्यकारी अभियंत्याच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जा नसलेली त्याची नामनिर्देशित व्यक्ती ;

(ङ) कुलगुरुने नामनिर्देशित केलेला खाजगी क्षेत्रातील एक प्रख्यात अभियंता ;

(च) कुलगुरुने नामनिर्देशित केलेला खाजगी क्षेत्रातील एक प्रख्यात वास्तुविशारद ;

(छ) कुलसचिव ;

(ज) वित्त व लेखा अधिकारी ;

(झ) विद्यापीठाचा कार्यकारी अभियंता - सदस्य-सचिव.

(३) पदसिद्ध सदस्यांव्यतिरिक्त, समितीचे सर्व सदस्य पाच वर्षांच्या मुदतीसाठी पद धारण करतील आणि ते लागोपाठच्या दुसऱ्या मुदतीसाठी पात्र असणार नाहीत.

(४) जर एखाद्या सदस्याचे पद रिक्त झाले असेल तर ते पद कुलगुरुकडून एक महिन्यांच्या आत भरण्यात येईल आणि अशा प्रकारे नियुक्त केलेला सदस्य पद रिक्त झाले नसते तर अगोदरच्या सदस्याने जितक्या मुदतीकरिता ते पद धारण केले असते तितक्याच उर्वरित मुदतीकरिता ते पद धारण करील.

(५) इमारत व बांधकाम समिती,—

(क) व्यवस्थापन परिषदेच्या निदेशान्वये आणि संपूर्ण अधीक्षणाखाली, सार्वजनिक बांधकाम विभागाच्या अधिकरणामार्फत करावयाच्या मोठ्या बांधकामांसह सर्व प्रकारची कामे करून घेण्यासाठी जबाबदार असेल ;

(ख) अर्थसंकल्पातील निधीच्या उपलब्धतेच्या अधीन राहून, परिरक्षणाच्या कामांना प्रशासकीय मान्यता आणि वित्तीय मंजूरी देईल ;

(ग) सर्व लहान आणि मोठ्या बांधकामांच्या संदर्भात, व्यवस्थापन परिषदेस शिफारस करील आणि प्रशासकीय मान्यता आणि खर्चास मंजूरी मिळवेल ;

(घ) परिरक्षणाची कामे, लहान बांधकामे आणि मोठी बांधकामे स्वतंत्रपणे विनिर्दिष्ट करून आगामी वर्षात करावयाच्या “ बांधकामाच्या कार्यक्रमाची ” वित्त व लेखा समितीमार्फत व्यवस्थापन परिषदेला शिफारस करील ;



(ड) विद्यापीठाच्या कामांसाठी अनुभवसिद्ध व गुणवंत अशा दहा ते बारा वास्तुविशारदांची आणि इतर विशेषीकृत सल्लागारांची एक नामिका तयार करील आणि तिला व्यवस्थापन परिषदेची मान्यता घेईल. अशी नामिका कुलपतींच्या मान्यतेच्या अधीन असेल व त्याला योग्य वाटतील असे फेरबदल त्यात करता येतील ;

(च) लहान व मोठ्या बांधकामांना व्यवस्थापन परिषदेची प्रशासकीय मान्यता आणि खर्चास मंजूरी मिळाल्यावर, विद्यापीठाचा कार्यकारी अभियंता किंवा विद्यापीठाच्या मान्यताप्राप्त वास्तुविशारदांच्या नामिकेमधून प्रकल्पासाठी निवडलेला वास्तुविशारद यांनी तयार केलेल्या अशा बांधकामांचे नकाशे व अंदाजपत्रक मिळवील;

(छ) कंत्राटदारांचा तांत्रिक अनुभव आणि परिरक्षणाची कामे व लहान बांधकामे पार पाडण्याची आर्थिक क्षमता याच्या आधारावर मान्यताप्राप्त कंत्राटदारांची एक यादी ठेवील ;

(ज) समितीला आवश्यक वाटेल अशी तांत्रिक छाननी करण्यासाठी जबाबदार असेल ;

(झ) काळजीपूर्वक छाननी केल्यानंतर, परिरक्षणाच्या कामांसाठी आणि मोठ्या बांधकामांसाठी प्राप्त झालेल्या निविदा स्वीकारण्यासाठी जबाबदार असेल ;

(ञ) विद्यापीठाच्या तांत्रिक कर्मचाऱ्यांच्या कामावर सर्वसाधारण देखरेख ठेवील ; आणि विशेष करून, अभिलेख व माहिती अद्ययावत ठेवली जात असल्याबाबत व नाकारण्यात आलेल्या निविदा वाजवी कालावधीसाठी ठेवल्या जात असल्याबाबत खातरजमा करील ;

(ट) परिरक्षणाची कामे व लहान बांधकामांच्या संदर्भात, जर वास्तुविशारद नियुक्त केला असेल तर, त्याने अंतिमतः मान्यता दिलेल्या आराखड्यानुसार, विद्यापीठाच्या कार्यकारी अभियंत्याने, काम पूर्ण झाल्याचे प्रमाणित केले असल्याबाबत खातरजमा करील ;

(ठ) आवश्यकता असेल तेव्हा वास्तुविशारद सल्लागारांचे सहकार्य घेईल व त्यांच्याबरोबर विचारविमर्श करील ;

(ड) निविदेत समाविष्ट नसलेले दर ठरवील आणि परिरक्षणाच्या आणि लहान बांधकामांच्या संबंधात कंत्राटदारांशी असणारे दावे आणि विवाद मिटवील :

परंतु, असे कोणतेही दावे किंवा विवाद यांच्या संबंधातील निर्णयामुळे, प्रकल्पाच्या मंजूर अंदाजित खर्चापेक्षा अधिक खर्च होण्याची शक्यता असल्यास, अशा अधिक खर्चासाठी व्यवस्थापन परिषदेची पूर्व मंजूरी घेण्यात येईल, या शर्तीच्या अधीन राहून सार्वजनिक बांधकाम विभागाकडे सोपविण्यात आलेल्या मोठ्या बांधकामांच्या संबंधात, असे दर किंवा दावे अथवा विवाद सार्वजनिक बांधकाम विभागाकडून मिटविण्यात येतील ;

(ढ) परिनियमांद्वारे तिला प्रदान करण्यात येईल अशा इतर अधिकारांचा वापर करील व अशी इतर कर्तव्ये पार पाडील.

(६) समितीच्या अध्यक्षाला परिरक्षणाच्या आणि लहान बांधकामांच्या बाबतीत, बांधकामाच्या मासिक चालू लेखा देयकांच्या प्रदानास, वास्तुविशारदाची नियुक्ती केली असल्यास असे देयक, वास्तुविशारदाने तपासले आहे व ते विद्यापीठाच्या कार्यकारी अभियंत्याने ' प्रदानासाठी योग्य ' असे प्रमाणित केले आहे, याच्या अधीन राहून, मंजूरी देण्याचा अधिकार असेल. अशा प्रकारे चुकती केलेली देयके समितीच्या पुढच्या बैठकीत मान्यतेसाठी मांडण्यात येतील.

(७) आकस्मिक निकडीमुळे तात्काळ कार्यवाही करण्याची आवश्यकता आहे असे मानण्यास समितीच्या अध्यक्षास वाजवी कारणे असतील तर, त्याला समितीच्या अधिकारांचा वापर करता येईल. अध्यक्षाकडून अशा प्रकरणांची माहिती समितीच्या पुढच्या बैठकीत देण्यात येईल.

(८) विद्यापीठातील सर्व प्रकारची बांधकामे करण्याची कार्यपद्धती आणि समितीच्या बैठकींमध्ये कामकाज चालविण्याची कार्यपद्धती, परिणियमांद्वारे विहित करण्यात येईल त्याप्रमाणे असेल.

शुल्क निश्चिती समिती.

१०१. (१) स्वायत्त महाविद्यालये व स्वायत्त परिसंस्था यांच्याव्यतिरिक्त विद्यापीठ, महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांनी व्यवस्थापन केलेल्या व चालविलेल्या आणि राज्य शासन, केंद्र सरकार व स्थानिक प्राधिकरणे यांच्याकडून त्यांचे व्यवस्थापन केलेल्या व चालविलेल्या प्रत्येक पदवीपूर्व व पदव्युत्तर पाठ्यक्रमांचे किंवा अध्ययनक्रमांचे वास्तव मूल्य ठरविण्यासाठी एक शुल्क निश्चिती समिती असेल.

(२) शुल्क निश्चिती समिती ही अधिष्ठाता मंडळाच्या शिफारशीवरून विविध पाठ्यक्रम किंवा अध्ययनक्रम यांचे शिकवणी शुल्क, इतर शुल्क व आकार ठरवील आणि मान्यतेकरिता विद्यापरिषदेकडे शिफारस करील.

(३) शुल्क निश्चिती समितीमध्ये पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :-

(क) सेवानिवृत्त कुलगुरु किंवा विद्यापीठ किंवा त्याच्या अधिकारितेतील कोणतेही महाविद्यालय किंवा परिसंस्था यांच्याशी संबंधित नसेल असा, शिक्षणाच्या क्षेत्रात व्यापक अनुभव असलेला प्रख्यात शिक्षणतज्ज्ञ ; अध्यक्ष

(ख) संबंधित विद्याशाखेचा अधिष्ठाता ;

(ग) व्यवस्थापन परिषदेवर कुलपतीने नामनिर्देशित केलेली व्यक्ती ;

(घ) विद्यापीठ किंवा त्याच्या अधिकारितेतील महाविद्यालय किंवा परिसंस्था यांच्याशी संबंधित नसेल असा कुलगुरुने नामनिर्देशित केलेला एक वित्तीय तज्ज्ञ, विशेषकरून सनदी लेखापाल ;

(ङ) विद्यापीठ किंवा त्याच्या अधिकारितेतील महाविद्यालय किंवा परिसंस्था यांच्याशी संबंधित नसेल असा कुलगुरुने नामनिर्देशित केलेला एक कायदेविषयक तज्ज्ञ ;

(च) कुलसचिव किंवा त्याने नामनिर्देशित केलेली उप कुलसचिवाच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जा नसलेली व्यक्ती-सदस्य सचिव.

(४) समितीच्या बैठकीची गणपूर्ती ही किमान तीन सदस्यांना होईल.

(५) पदसिद्ध सदस्यांखेरीज समितीचे सर्व सदस्य पाच वर्षांच्या मुदतीकरिता पद धारण करतील आणि ते लागोपाठच्या दुसऱ्या मुदतीकरिता पात्र असणार नाहीत.

(६) वर काहीही अंतर्भूत केलेले असले तरी, राज्य शासनास, शुल्क निश्चिती व तिचे विनियमन करणारी सांविधिक यंत्रणा विकसित करता येईल व ती, राज्य शासनाने याबाबतीत विनिर्दिष्ट केल्याप्रमाणे विविध प्रकारची महाविद्यालये आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांना बंधनकारक असेल.

(७) सर्वसाधारणपणे विविध पाठ्यक्रम किंवा अध्ययनक्रम यांकरिता शुल्क निश्चिती समितीने शिफारस केलेले आणि विद्यापरिषदेने अंतिमरीत्या मान्यता दिलेले शिकवणी शुल्क, इतर शुल्क आणि आकार लागू असतील. परंतु, स्वायत्त महाविद्यालय व स्वायत्त परिसंस्था, आणि राज्य शासन, केंद्र सरकार आणि स्थानिक प्राधिकरणे यांच्याकडून व्यवस्थापन केले जात असेल किंवा चालविल्या जात असतील अशा परिसंस्था यांच्यातिरिक्त ज्या महाविद्यालयाची आणि स्वायत्त परिसंस्थेची, विद्या परिषदेने विहित केले असेल आणि मान्यता दिली असेल अशा शुल्काव्यतिरिक्त वेगळे शुल्क आकारण्याची इच्छा असेल, अशा कोणत्याही महाविद्यालयास आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्थेस शुल्क निश्चिती समितीकडे तसा प्रस्ताव सादर करता येईल आणि शुल्क निश्चिती समिती, अशा अर्जदार महाविद्यालयाकडून किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थेकडून पुरविण्यात येणाऱ्या निरनिराळ्या अतिरिक्त सुविधांच्या निर्धारणाच्या आणि मूल्यमापनाच्या आधारे अशा महाविद्यालयांतील किंवा परिसंस्थेतील विशिष्ट पाठ्यक्रमांचे किंवा अध्ययनक्रमांचे शिकवणी शुल्क, इतर शुल्क व आकार निश्चित करील. याबाबतचा शुल्क निश्चिती समितीचा निर्णय अंतिम असेल आणि तो अर्जदार महाविद्यालय आणि परिसंस्था यांच्यावर बंधनकारक असेल.

(८) आदेशामध्ये विहित केलेल्या मानकांच्या आधारे शुल्क निश्चितीच्या प्रस्तावांची तपासणी करण्याकरिता व त्यावर विचार करण्याकरिता समितीची वर्षातून किमान दोनदा बैठक होईल आणि ती आवश्यक वाटतील तितक्या बैठकी घेईल. समिती, शैक्षणिक वर्षे सुरू होण्यापूर्वी किमान सहा महिने अगोदर विविध पाठ्यक्रम किंवा अध्ययनक्रम यांचे शिकवणी शुल्क, इतर शुल्क व आकार ठरवील.

१०२. (१) या अधिनियमाच्या, परिनियमाच्या आणि आदेशांच्या तरतुदींना अधीन राहून, कुलगुरु आणि निवड समितीने तयार केलेला गुणवत्ताक्रम आणि शिफारशी यांनुसार विद्यापीठ अध्यापकांची नियुक्ती करील.”;

विद्यापीठ  
अध्यापकांची  
निवड व  
नियुक्ती .

(२) विद्यापीठ अध्यापकांची नियुक्ती करण्याची शिफारस करणाऱ्या निवड समितीमध्ये पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :-

- (क) कुलगुरु, किंवा कुलगुरुच्या निदेशानुसार प्र-कुलगुरु - अध्यक्ष
- (ख) प्राध्यापकाच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जा नसलेली, कुलपतीने नामनिर्देशित केलेली एक व्यक्ती ;
- (ग) सदस्य-सचिव म्हणून संबंधित विद्याशाखेचा अधिष्ठाता ;
- (घ) कुलगुरुने नामनिर्देशित केलेला विद्यापीठ विभागाचा प्रमुख किंवा कुलगुरुने नामनिर्देशित केलेला संबंधित बहुविद्याशाखीय परिसंस्थेच्या प्रशाळेचा प्रमुख ;
- (ङ) ज्या विषयासाठी अध्यापकाची निवड करावयाची असेल अशा विषयाचे विशेष ज्ञान असलेल्या, विद्यापरिषदेने शिफारस केलेल्या विद्यापीठाशी संबंधित नसलेल्या सहापेक्षा अधिक नसतील अशा तज्ज्ञांच्या नामिकेतून व्यवस्थापन परिषदेने नामनिर्देशित केलेले तीनपेक्षा अधिक नसतील इतके तज्ज्ञ ;
- (च) कुलपतीने नामनिर्देशित केलेली प्राध्यापक किंवा प्राचार्य यांच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जा नसलेली अनुसूचित जाती किंवा अनुसूचित जमाती किंवा निरधिसूचित जमाती (विमुक्त जाती) किंवा भटक्या जमाती किंवा इतर मागासवर्ग यांमधील एक व्यक्ती ;
- (छ) व्यवस्थापन परिषदेने नामनिर्देशित करावयाचा, व्यवस्थापन परिषदेचा सदस्य असलेला एक प्राचार्य ;

(ज) संचालक, उच्च शिक्षण किंवा त्याने नामनिर्देशित केलेली सह संचालकाच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जा नसलेली व्यक्ती ;

(झ) संचालक, तंत्र शिक्षण किंवा त्याने नामनिर्देशित केलेली सह संचालकाच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जा नसलेली व्यक्ती :

परंतु, खंड (घ) मध्ये निर्देशिलेला प्रमुख, जो सहयोगी प्राध्यापक असून सहायक प्राध्यापकाची निवड करण्याकरिता असलेल्या निवड समितीचा सदस्य असेल.

(३) निवडीद्वारे भरावयाच्या विद्यापीठ अध्यापकाच्या प्रत्येक पदाची, विहित केल्याप्रमाणे, विद्यापीठ विभाग व निर्धारित करावयाची आंतरविद्याशाखीय अभ्यास मंडळाच्या शिफारशीवरून कुलगुरुने किमान अर्हता व अतिरिक्त अर्हता, वित्तलब्धी व भरावयाच्या पदांची संख्या अनुसूचित जाती किंवा अनुसूचित जमाती किंवा निरधिसूचित जमाती (विमुक्त जाती) किंवा भटक्या जमाती किंवा इतर मागासवर्ग किंवा यांमधील सदस्यांकरिता राखीव असतील अशा पदांची संख्या या तपशिलांसह कुलगुरुने मान्यता दिलेल्या मसुद्यानुसार यथोचितरीत्या व मोठ्या प्रमाणावर जाहिरात देण्यात येईल आणि जाहिरातीला अनुसरून अर्जदारांनी ज्या मुदतीत आपले अर्ज सादर करता येतील, अशा वाजवी मुदतीस मान्यता देण्यात येईल.

(४) प्रत्येक निवड समितीच्या बैठकीचा दिनांक, प्रत्येक सदस्यास अशा बैठकीच्या किमान तीस दिवस आधी नोटीस देता येईल अशा रीतीने निश्चित करण्यात येईल आणि प्रत्येक उमेदवाराचा तपशील, प्रत्येक सदस्यास बैठकीच्या दिनांकापूर्वी किमान सात दिवस आधी मिळू शकेल अशा रीतीने त्याच्याकडे पाठविण्यात येईल :

परंतु, निवड समितीस प्राध्यापकाच्या पदासाठी, ज्या उमेदवारांनी अर्ज केला असेल आणि जे तिच्या पुढे उपस्थित झाले असतील अशा उमेदवारांऐवजी, ज्यांनी अर्ज केला नसेल किंवा तिच्यापुढे उपस्थित राहिले नसतील, मात्र जे यथोचितरीत्या अर्हताप्राप्त असतील आणि ज्यांच्या नावे असाधारण अशी उच्च शैक्षणिक कामगिरी नमूद असेल किंवा जे विशेषीकृत विषयांमध्ये कार्यनिपुण असतील किंवा ज्यांचे असाधारण शैक्षणिक योगदान असेल ते लेखी नमूद करून अशा अन्य कोणत्याही व्यक्तींच्या नावांची, नियुक्तीसाठी शिफारस करता येईल.

(५) प्रत्येक निवड समितीच्या बैठकीची गणपूर्ती चार सदस्यांनी मिळून होईल, ज्यातील किमान दोन सदस्य हे, पोट-कलम (२) च्या खंड (ड) अन्वये नामनिर्देशित केलेल्या व्यक्ती असतील.

(६) प्रत्यक्षपणे बाधित झालेल्या कोणत्याही व्यक्तीने केलेल्या विनंतीअर्जावरून किंवा कुलपतीने स्वाधिकारे आवश्यक असल्याप्रमाणे किंवा आवश्यक ठरली असेल अशी, चौकशी करून किंवा चौकशी केल्यानंतर किंवा ज्या अध्यापकांच्या नियुक्त्यांना बाधा पोचण्याची शक्यता आहे अशा अध्यापकांकडून विद्यापीठाच्या कोणत्याही प्राधिकाऱ्याने किंवा अधिकाऱ्याने कोणत्याही वेळी घेतलेल्या स्पष्टीकरणांसह, मिळविलेली किंवा मिळविण्यात आलेली अशी स्पष्टीकरणे ही, त्या त्या वेळी अंमलात असलेल्या कायदानुसार नव्हती असे त्यास वाटल्यास, कुलपतीस, अशा अध्यापकांच्या सेवेच्या शर्तीशी संबंधित करारामध्ये काहीही अंतर्भूत असले तरी, कुलगुरुने अध्यापकास एक महिन्याची नोटीस दिल्यानंतर किंवा अशा नोटीशीऐवजी एक महिन्याचे वेतन दिल्यानंतर, त्याची नियुक्ती रद्द करण्याचा निदेश आदेशाद्वारे देता येईल आणि कुलगुरु त्या निदेशाचे तात्काळ पालन करील आणि नवीन निवड करण्याची उपाययोजना करील. अशा रीतीने जिची नियुक्ती रद्द करण्यात आली आहे अशी व्यक्ती त्याच पदाकरिता पुन्हा अर्ज करण्यास पात्र असेल.

(७) मागील पूर्ववर्ती पोट-कलमान्वये, कुलपतीने काढलेला कोणताही आदेश हा अंतिम असेल आणि कुलगुरूकडून आदेशाची प्रत प्राप्त झाल्यापासून तीन दिवसांच्या आत ती संबंधित अध्यापकाला देण्यात येईल.

(८) त्याची सेवा समाप्त केल्यानंतर कोणत्याही कालावधीसाठी, विद्यापीठाच्या निधीमधून कोणत्याही व्यक्तीला वेतन किंवा भत्ता या स्वरूपात कोणतेही प्रदान केलेले नाही याची सुनिश्चिती करणे हे कुलगुरूचे कर्तव्य असेल, आणि असे कोणतेही प्रदान प्राधिकृत करणारा किंवा देणारा कोणताही प्राधिकारी किंवा अधिकारी हा, विद्यापीठाला अशा प्रकारे प्रदान केलेल्या रकमेची प्रतिपूर्ती करण्यास जबाबदार असेल.

(९) कुलगुरु, विहित कार्यपद्धतीनुसार अनुदानित विद्यापीठ अध्यापकांच्या रिक्त जागा भरण्याची प्रक्रिया सुरू करण्यापूर्वी, इतर विद्यापीठांमध्ये सामावून घेण्यासाठी, संचालक, उच्च शिक्षण याने ठेवलेल्या अनुदानित विद्यापीठाच्या अतिरिक्त अध्यापकांच्या सूचीवर कोणतीही योग्य व्यक्ती उपलब्ध आहे किंवा कसे याबाबत संचालक, उच्च शिक्षण याच्याकडून खात्री करून घेईल आणि असा अनुदानित अध्यापक उपलब्ध असल्यास, कुलगुरु त्या अध्यापकाची नियुक्ती करील.

१०३. (१) राजीनामा, रजा किंवा कोणतेही कारण यापैकी विद्यापीठाच्या अध्यापकाच्या तात्पुरत्या रिक्त पदावर नियुक्ती करावयाची असल्यास, एका वर्षापेक्षा अधिक कालावधीकरिता अध्यापकांची तात्पुरती रिक्त ते पद रिक्त राहिले असेल तर, कलम १०२ च्या तरतुदीनुसार निवड समितीच्या शिफारशीवरून, नियुक्ती करण्यात येईल. निवड समितीची गणपूर्ती तीन सदस्यांनी होईल :

परंतु, जर एक वर्षापेक्षा कमी कालावधीकरिता पद रिक्त राहिले असेल तर किंवा अध्यापनाच्या दृष्टीने, ते रिक्त पद ताबडतोब भरणे आवश्यक आहे याबद्दल कुलगुरूची खात्री पटली असेल तर, त्याला स्थानिक निवड समितीच्या शिफारशीवरून एका वर्षापेक्षा अधिक नसेल इतक्या कालावधीसाठी यथोचित अर्हताप्राप्त व्यक्तीची नियुक्ती करता येईल.

(२) स्थानिक निवड समितीमध्ये पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :—

- (क) कुलगुरु-अध्यक्ष ;
- (ख) संबंधित विद्याशाखेचा अधिष्ठाता ;
- (ग) संबंधित विभागप्रमुख ;
- (घ) कुलगुरुने नामनिर्देशित केलेली एक तज्ज्ञ व्यक्ती :

परंतु, विभागप्रमुख हा अधिष्ठाताही असेल तर, कुलगुरु एकाऐवजी दोन व्यक्तींना नामनिर्देशित करील ;

(ङ) कुलगुरुने नामनिर्देशित केलेला, प्राचार्य किंवा अध्यापक यांच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जाचा नसलेला, अनुसूचित जाती किंवा अनुसूचित जमाती किंवा निरधिसूचित जमाती (विमुक्त जाती) किंवा भटक्या जमाती किंवा इतर मागासवर्ग किंवा विशेष मागास प्रवर्ग यांमधील एक सदस्य ;

(च) व्यवस्थापन परिषदेने नामनिर्देशित करावयाचा व्यवस्थापन परिषदेचा सदस्य असलेला एक प्राचार्य किंवा प्राध्यापक;

(छ) संचालक, उच्च शिक्षण किंवा त्याने नामनिर्देशित केलेली सह संचालक, उच्च शिक्षण याच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जा नसलेली व्यक्ती ; आणि

(ज) संचालक, तंत्र शिक्षण किंवा त्याने नामनिर्देशित केलेली सह संचालक, तंत्र शिक्षण याच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जा नसलेली व्यक्ती :

परंतु, पूर्वोक्तप्रमाणे एक वर्ष संपण्यापूर्वी कुलगुरु, कलम १०२ च्या तरतुदीनुसार नियुक्तीद्वारे पद भरण्यासाठी उपाययोजना करील.

संचालित  
महाविद्यालयांच्या  
प्राचार्यांची  
नियुक्ती व  
निवड.

१०४. संचालित महाविद्यालयांचे प्राचार्य किंवा विद्यापीठाद्वारे चालविण्यात येणाऱ्या विद्यापीठ परिसंस्था किंवा पदव्युत्तर केंद्रे किंवा उप परिसर यांचे संचालक किंवा प्रमुख यांची निवड करणाऱ्या निवड समितीमध्ये पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :-

(क) कुलगुरू-अध्यक्ष ;

(ख) कुलपतीने व्यवस्थापन परिषदेवर नामनिर्देशित केलेली व्यक्ती ;

(ग) व्यवस्थापन परिषदेने नामनिर्देशित केलेले दोन तज्ज्ञ आणि विद्या परिषदेने नामनिर्देशित केलेला एक तज्ज्ञ जे त्यांच्या अधिकारितेखाली विद्यापीठाशी, महाविद्यालयांशी किंवा परिसंस्थांशी संबंधित नाहीत ;

(घ) कुलगुरूने नामनिर्देशित केलेला प्राचार्य किंवा प्राध्यापक यांच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जाचा नसलेला अनुसूचित जाती किंवा अनुसूचित जमाती किंवा निरधिसूचित जमाती (विमुक्त जाती) किंवा भटक्या जमाती किंवा इतर मागासवर्ग यांमधील एक सदस्य ;

(ङ) व्यवस्थापन परिषदेने नामनिर्देशित करावयाचा, व्यवस्थापन परिषदेचा सदस्य असलेला एक प्राचार्य ;

(च) संचालक, उच्च शिक्षण, किंवा त्याने नामनिर्देशित केलेली, सह संचालक, उच्च शिक्षण याच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जा नसलेली व्यक्ती ;

(छ) संचालक, तंत्र शिक्षण किंवा त्याने नामनिर्देशित केलेली, सह संचालक, तंत्र शिक्षण याच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जा नसलेली व्यक्ती.

विद्यापीठाचे  
अधिकारी व  
कर्मचारी,  
संलग्न  
महाविद्यालयांचे  
प्राचार्य,  
अध्यापक व  
इतर कर्मचारी  
यांच्यासाठी  
निवड समित्या.

१०५. (१) पुढील पदांच्या नियुक्तीसाठी योग्य उमेदवारांच्या शिफारशी करण्यासाठी निवड समिती असेल :-

(क) अधिष्ठाता ;

(ख) विद्यापीठ उप-परिसरांचे संचालक ;

(ग) कुलसचिव ;

(घ) संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ ;

(ङ) वित्त व लेखा अधिकारी ;

(च) संचालक, क्रीडा व शारीरिक शिक्षण ;

(छ) संचालक, नवोपक्रम, नवसंशोधन व साहचर्य ;

(ज) संचालक, आजीवन शिक्षण व विस्तार ;

(२) निवड समितीत पुढील व्यक्तींचा समावेश असेल :-

(क) कुलगुरु-अध्यक्ष ;

(ख) कुलपतीने व्यवस्थापन परिषदेवर नामनिर्देशित केलेली व्यक्ती ;

(ग) विद्यापीठाशी किंवा त्यांच्या अधिकारितेखाली संलग्न महाविद्यालयाशी किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थेशी संबंधित नाहीत असे, भरावयाच्या पदाशी संबंधित क्षेत्राबाबत ज्यांना विशेष ज्ञान आहे असे कुलपतीने नामनिर्देशित केलेले दोन तज्ज्ञ ;

(घ) अनुसूचित जाती किंवा अनुसूचित जमाती किंवा निरधिसूचित जमाती (विमुक्त जाती) किंवा भटक्या जमाती किंवा इतर मागासवर्ग यांमधून प्राचार्य किंवा प्राध्यापक यांच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जा नसलेली, कुलगुरुने नामनिर्देशित केलेली एक व्यक्ती ;

(ङ) व्यवस्थापन परिषदेने नामनिर्देशित करावयाचा, व्यवस्थापन परिषदेचा सदस्य असलेला एक निर्वाचित प्राचार्य किंवा अध्यापक ;

(च) संचालक, उच्च शिक्षण, किंवा त्याने नामनिर्देशित केलेली सह संचालक, उच्च शिक्षण याच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जा नसलेली व्यक्ती ;

(छ) कुलसचिव, सदस्य-सचिव :

परंतु, जेथे कुलसचिव एखाद्या पदाकरिता स्वतःच उमेदवार असेल तर अशा प्रकरणात प्र-कुलगुरु हा सदस्य-सचिव असेल.

(३) पोट-कलम (१) मध्ये नमूद केलेल्या सर्व पदांची यथोचितरीत्या व मोठ्या प्रमाणावर जाहिरात देण्यात येईल.

(४) प्रत्येक निवड समितीच्या बैठकीचा दिनांक, प्रत्येक सदस्यास त्यासंबंधी किमान तीस दिवसांची नोटीस देता येईल अशा रीतीने निश्चित करण्यात येईल आणि प्रत्येक उमेदवाराचा तपशील, प्रत्येक सदस्यास बैठकीच्या दिनांकापूर्वी किमान सात दिवस आधी मिळू शकेल अशा रीतीने त्याच्याकडे पाठविण्यात येईल.

(५) पोट-कलम (१) मध्ये निर्दिष्ट केलेल्या पदावरील नियुक्तीच्या बाबतीत, प्रत्यक्षपणे बाधित झालेल्या कोणत्याही व्यक्तीच्या विनंतीअर्जावरून किंवा कुलपतीने, स्वतःहून, कोणत्याही वेळी आवश्यक केली असेल किंवा आवश्यक करण्यात येईल अशी, विद्यापीठाच्या कोणत्याही प्राधिकाऱ्याकडून किंवा अधिकाऱ्याकडून चौकशी केल्यानंतर किंवा जिची नियुक्ती बाधित होण्याची शक्यता असेल अशा व्यक्तीच्या खुलाशांसह असे खुलासे घेतल्यानंतर किंवा ते प्राप्त केल्यानंतर, जर ती नियुक्ती त्यावेळी अंमलात असलेल्या कायदानुसार करण्यात आली नसेल तर, अशा व्यक्तीच्या सेवाशर्तीसंबंधीच्या संविदेत काहीही अंतर्भूत असले तरी, कुलपतीस, आदेशाद्वारे, अशा व्यक्तीला एक महिन्याची नोटीस दिल्यानंतर, किंवा अशा नोटीशीऐवजी तिच्याकडून एक महिन्याचे वेतन जमा करून तिची नियुक्ती समाप्त करण्याचा निदेश कुलगुरूला देता येईल, आणि कुलगुरू तात्काळ त्या निदेशाचे अनुपालन करील आणि नवीन निवड करण्यासाठी उपाय योजील. जिची नियुक्ती अशा प्रकारे समाप्त करण्यात आली असेल अशी व्यक्ती, त्या पदासाठी पुन्हा अर्ज करण्यास पात्र असेल.

(६) निकटपूर्ववर्ती पोटकलमान्वये कुलपतीने दिलेला कोणताही आदेश अंतिम असेल आणि त्या आदेशाची प्रत मिळाल्यापासून तीन दिवसांच्या आत त्या आदेशाची एक प्रत कुलगुरूकडून संबंधित व्यक्तीवर बजावण्यात येईल.

(७) कोणत्याही व्यक्तीला, तिची सेवा समाप्त केल्यानंतर, कोणत्याही कालावधीची, वेतनाच्या किंवा भत्त्याच्या स्वरूपातील कोणतीही रक्कम विद्यापीठाच्या निधीतून दिली नसल्याची सुनिश्चिती करणे हे, कुलगुरूचे कर्तव्य असेल, आणि अशी कोणतीही रक्कम प्राधिकृत करणारा किंवा ती देणारा कोणताही प्राधिकारी किंवा अधिकारी अशा प्रदान केलेल्या रकमेची प्रतिपूर्ती करण्यास दायी असेल.

(८) निवड समिती आणि विद्यापीठाच्या अन्य अधिकाऱ्यांच्या नियुक्तीची पद्धत राज्य शासन **राजपत्रात** विहित करील त्याप्रमाणे असेल.

(९) कोणत्याही संलग्न महाविद्यालयाचे व्यवस्थापन, विहित कार्यपद्धतीनुसार अनुदानित अध्यापक व इतर अनुदानित कर्मचाऱ्यांची रिक्त पदे भरण्याची प्रक्रिया सुरू करण्यापूर्वी, संचालक, उच्च शिक्षण यांच्याकडून इतर महाविद्यालयांमध्ये सामावून घेण्यासाठी संचालक, उच्च शिक्षण याने ठेवलेल्या अतिरिक्त अनुदानित व्यक्तींच्या सूचीवर कोणतीही योग्य व्यक्ती उपलब्ध आहे किंवा कसे याबाबत संचालक, उच्च शिक्षण यांच्याकडून खात्री करून घेईल आणि अशी व्यक्ती उपलब्ध असल्यास, संचालक, उच्च शिक्षण याने दिलेल्या निदेशानुसार व्यवस्थापन त्या व्यक्तीची नियुक्ती करील :

परंतु, अतिरिक्त अध्यापक व इतर कर्मचारी यांना सामावून घेण्याची ही प्रक्रिया केवळ अनुदानित अध्यापकांना व अनुदानित इतर कर्मचाऱ्यांना लागू असेल.

(१०) संलग्न महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांच्या प्राचार्यांची व अध्यापकांची नियुक्ती करण्याकरिता असलेली निवड समिती, निवड प्रक्रिया व निवडीची पद्धत ही, विद्यापीठ अनुदान आयोगाची मार्गदर्शक तत्त्वे व निदेश यांनुसार राज्य शासन **राजपत्रात** विहित करील त्याप्रमाणे असेल.

इतर समित्या. १०६. या अधिनियमान्वये घटित करण्यात आलेल्या समित्यांशिवाय, विद्यापीठाच्या प्राधिकरणांना कोणत्याही विशिष्ट कामाकरिता योग्य अटी व निर्देश यांसह समिती नियुक्त करता येईल व अशा समितीमध्ये, अशा समितीने घटित केलेल्या त्याच प्राधिकरणाचे सदस्य तसेच प्राधिकरणास नामनिर्देशित करता येईल अशा अन्य व्यक्ती यांचाही समावेश असेल.



**परवानगी, संलग्नीकरण व मान्यता**

१०७. (१) विद्यापीठ प्रत्येक पाच वर्षांनी एक सर्वसमावेशक सम्यक योजना तयार करील आणि आयोगाकडून मान्यता मिळवील. विशेषतः विद्यापीठाच्या अधिकारितेतील सेवारहित व न्यूनविकसित क्षेत्रांच्या गरजांचा योग्य तो विचार करून उच्च शिक्षणाच्या सुविधांचे सर्वसमावेशक समन्यायी वाटप होण्याची सुनिश्चिती होईल अशा रीतीने उच्च शिक्षणाच्या महाविद्यालयांची व परिसंस्थांची स्थाने निश्चित करण्यासाठी, अशी योजना तयार करील. अशी योजना, अधिष्ठाता मंडळाकडून तयार करण्यात येईल आणि व्यवस्थापन परिषदेमार्फत ती योजना विद्यापरिषद व अधिसभा यांच्यापुढे ठेवण्यात येईल.

(२) सम्यक योजनेमध्ये त्या प्रदेशाच्या सामाजिक व आर्थिक गरजांचा, नोकरीच्या उपलब्ध संधींचा व उद्योगाच्या आवश्यकतांचा अभ्यास करून निर्धारित करण्यात येईल अशा परवानगी द्यावयाच्या नवीन पाठ्यक्रमांचा आणि विद्याशाखांचा समावेश असेल आणि व्यापक प्रवेश, समन्याय, गुणवत्ता संशोधन, संबद्धता आणि दर्जा याबाबतची राष्ट्रीय व राज्य उद्दिष्टे साध्य करण्यासाठी ती सम्यक योजना राज्य शासन आणि राष्ट्रीय उच्च शैक्षणिक धोरण यांच्या धोरणांनुसार व त्यांच्या योजनांशी अनुरूप असली पाहिजे.

(३) सम्यक योजनेत, विविध प्रदेशातील उच्च शिक्षणाच्या महाविद्यालयांना आणि परिसंस्थांना परवानगी द्यावयाचे विषय, नवीन तुकड्यांची संख्या आणि सॅटेलाईट केंद्रे याबद्दलची मागणी विचारात घेतल्यानंतर त्याकरिता तरतूद करण्यात येईल आणि ती सम्यक योजना, कलम ७६ खालील आयोगाच्या योजनांशी अनुरूप असेल आणि तिला त्यानंतर त्याची मान्यता देण्यात येईल.

(४) सम्यक योजना तयार करताना जेथे एकूण नावनोंदणीचे प्रमाण हे राष्ट्रीय सरासरी पेक्षा कमी आहे अशा जिल्ह्यांना तसेच आदिवासी, डोंगराळ व दुर्गम क्षेत्रांना त्याशिवाय राखून ठेवलेल्या दर्जात्मक, सर्वसमावेशक उन्नती, सामाजिक समर्पकता आणि मूल्यशिक्षण यांना पसंतीक्रम देण्यात येईल.

(५) विद्यापीठ, उच्च शिक्षणाची महाविद्यालये व परिसंस्था यांच्या ठिकाणासाठी सम्यक योजनेशी अनुरूप अशी वार्षिक योजना दरवर्षी तयार करण्याकरिता कालबद्ध कार्यक्रम सुरू करील आणि तो कालबद्ध कार्यक्रम, ज्या वर्षात उच्च शिक्षणाची नवीन महाविद्यालये किंवा परिसंस्था सुरू करावयाची असतील त्या वर्षाच्या आधीचे शैक्षणिक वर्ष संपण्यापूर्वी प्रसिद्ध करील.

(६) विद्यापीठ, स्थानिक उद्योगांसाठी आवश्यक असलेली कौशल्य पद्धती, व्यापार व वाणिज्य यासंबंधात महिला, विद्यार्थी, मागासवर्ग, आदिवासी जमाती व त्यांच्याशी संबंधित अन्य घटक यांसारख्या सामाजिक व आर्थिक दृष्ट्या वंचित असलेल्या युवकांच्या प्रादेशिक गरजा आणि त्याबाबतच्या युवकांच्या आकांक्षा यासाठी उच्च शिक्षणाच्या सुविधांच्या आवश्यक बाबींसंबंधात प्रत्येक पाच वर्षांमध्ये विद्यापीठाच्या भौगोलिक अधिकारिता क्षेत्रात पद्धतशीर क्षेत्रीय सर्वेक्षण हाती घेईल. विद्यापीठ, विद्यापीठाच्या सम्यक योजना विकसित करताना अशा क्षेत्रीय सर्वेक्षणाचे निष्कर्ष उपयोगात आणिल आणि अशी वैज्ञानिक आधारसामग्री विकसित करील.

संलग्नीकरण १०८. (१) संलग्नीकरणासाठी किंवा मान्यतेसाठी अर्ज करणारे व्यवस्थापन आणि ज्यांच्या आणि मान्यता महाविद्यालयाला किंवा परिसंस्थेला संलग्नीकरण किंवा मान्यता देण्यात आलेली आहे असे यांकरिता शर्ती. व्यवस्थापन पुढीलप्रमाणे हमी देईल आणि पुढील शर्तीचे अनुपालन करील :-

(क) अधिनियम आणि त्याखालील परिनियम, आदेश व विनियम यांच्या तरतुदींचे आणि विद्यापीठाच्या व राज्य शासनाच्या स्थायी आदेशांचे आणि निदेशांचे अनुपालन करण्यात येईल ;

(ख) या अधिनियमाच्या कलम ९७ मध्ये तरतूद केल्याप्रमाणे संलग्न महाविद्यालयांकरिता तरतूद केलेली एक स्वतंत्र महाविद्यालय विकास समिती असेल ;

(ग) अभ्यास पाठ्यक्रमासाठी प्रवेश दिलेल्या विद्यार्थ्यांची संख्या विद्यापीठाद्वारे आणि राज्य शासनाद्वारे वेळोवेळी, विहित केलेल्या मर्यादेपेक्षा अधिक नसेल ;

(घ) विहित करण्यात येईल त्याप्रमाणे अध्यापनासाठी व संशोधनासाठी आवश्यक असलेल्या इमारती, प्रयोगशाळा, ग्रंथालये, पुस्तके, साधनसामग्री, वसतीगृहे, व्यायामशाळा इत्यादी यांसारख्या योग्य व पर्याप्त भौतिक सुविधा असतील ;

(ङ) महाविद्यालयाची किंवा परिसंस्थेची वित्तीय साधने, अशाप्रकारे असतील की, ज्यामुळे त्यांच्या सततच्या देखभालीसाठी आणि कामकाजासाठी योग्य ती तरतूद करता येईल ;

(च) संलग्न महाविद्यालये आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांच्या अध्यापक व अध्यापकेतर कर्मचाऱ्यांची संख्या व अर्हता आणि संलग्न महाविद्यालयाच्या व मान्यताप्राप्त परिसंस्थांच्या कर्मचारी वर्गाच्या सेवेच्या अटी व शर्ती आणि वित्तलब्धी या, विद्यापीठाने व राज्य शासनाने विनिर्दिष्ट केल्याप्रमाणे असतील आणि त्या अभ्यास पाठ्यक्रम, अध्यापन किंवा प्रशिक्षण किंवा संशोधन यांच्याकरिता कार्यक्षमतेने योग्य ती तरतूद करण्यास पुरेशा असतील ;

(छ) संलग्न करावयाच्या महाविद्यालयाच्या सर्व अध्यापक व अध्यापकेतर कर्मचाऱ्यांच्या सेवा आणि सुविधा या, परीक्षा घेण्यासाठी व मूल्यमापन करण्यासाठी आणि विद्यापीठाच्या इतर उपक्रमांना चालना देण्यासाठी उपलब्ध करून देण्यात येतील ;

(ज) हा अधिनियम, परिनियम, आदेश व विनियम यांच्या तरतुदींन्वये कुलपती, कुलगुरु आणि विद्यापीठाचे इतर अधिकारी यांना प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकारांचा वापर करून त्यांनी दिलेले निदेश आणि आदेश यांचे अनुपालन करणे अनिवार्य असेल ;

(झ) विद्यापीठाच्या पूर्वपरवानगीशिवाय, व्यवस्थापनामध्ये कोणताही बदल किंवा त्यांचे हस्तांतरण किंवा महाविद्यालयाच्या किंवा परिसंस्थेच्या स्थानात बदल करण्यात येणार नाही ;

(ञ) विद्यापीठाच्या पूर्वपरवानगीशिवाय महाविद्यालय किंवा परिसंस्था बंद करण्यात येणार नाही ;

(ट) कलम १२१ अन्वये महाविद्यालय किंवा परिसंस्था यांची संलग्नता रद्द करण्यात किंवा मान्यता काढून घेण्यात आल्यास किंवा ती बंद करण्यात आल्यास, व्यवस्थापन हे त्यांच्याकडून वसूल करावयाची नुकसानभरपाई किंवा भरपाई यासंबंधीच्या विद्यापरिषदेच्या निर्णयाचे पालन करील आणि ते त्या निर्णयाची अंमलबजावणी करील.

(२) दुसऱ्या विद्यापीठाचा भाग असलेल्या उच्च शिक्षणविषयक कोणत्याही महाविद्यालयाचा किंवा परिसंस्थेचा मूळ विद्यापीठाद्वारे “ना हरकत प्रमाणपत्र” देण्यात आल्याशिवाय संलग्नीकरणासाठी किंवा मान्यतेसाठी यथास्थिति विचार केला जाणार नाही.

१०९. (१) उच्च शिक्षणविषयक नवीन महाविद्यालये किंवा परिसंस्था सुरू करण्यासाठीचे किंवा नवीन अभ्यास पाठ्यक्रम, विषय, विद्याशाखा, अतिरिक्त तुकड्या किंवा सॅटेलाईट केंद्रे सुरू करण्यासाठीचे प्रस्ताव विद्यापीठाकडून मागविण्यात येतील आणि त्यावर विचार करण्यात येईल.

(२) कलम १०७ अन्वये तयार केलेल्या सम्यक योजनेशी सुसंगत नसेल असे उच्च शिक्षणाचे नवीन महाविद्यालय किंवा परिसंस्था सुरू करण्यासाठीचा कोणताही अर्ज विद्यापीठाकडून विचारात घेतला जाणार नाही.

(३) (क) उच्च शिक्षणाचे नवीन महाविद्यालय किंवा परिसंस्था सुरू करण्यासाठी इरादा पत्र मागणारे व्यवस्थापन, ज्यावर्षी इरादा पत्र मागवले असेल त्या वर्षाच्या अगोदरच्या वर्षाच्या सप्टेंबर महिन्याच्या शेवटच्या दिवसापूर्वी विद्यापीठाच्या कुलसचिवाकडे विहित नमुन्यात अर्ज करील.

(ख) आवश्यक बाबींची पूर्तता करतील आणि विहित कालावधीत प्राप्त होतील, केवळ असेच अर्ज विद्यापीठाकडून स्वीकारण्यात येतील आणि विचारात घेण्यात येतील.

(ग) विहित केलेल्या उपरोक्त कालमर्यादेत प्राप्त झालेल्या अशा सर्व अर्जांची अधिष्ठाता मंडळाकडून छाननी करण्यात येईल आणि ते अर्ज, ज्यावर्षी असा अर्ज विद्यापीठाला प्राप्त झाला असेल त्या वर्षाच्या ३० नोव्हेंबर रोजी किंवा त्यापूर्वी, व्यवस्थापन परिषदेच्या मान्यतेसह राज्य शासनाकडे पाठविण्यात येतील. विद्यापीठ, अर्जासोबत, व्यवस्थापन परिषदेला उचित वाटतील त्याप्रमाणे, संबद्ध कारणांनी यथोचितरित्या पुष्टी दिलेल्या आपल्या शिफारशी सादर करील ;

(घ) विद्यापीठाने शिफारस केलेल्या अर्जांपैकी, राज्य शासनास, खंड (ग) अन्वये विद्यापीठाच्या शिफारशीनंतर, लगतनंतरच्या वर्षाच्या ३१ जानेवारी रोजी किंवा त्यापूर्वी इरादा पत्र देता येईल. इरादा पत्र मागणाऱ्या व्यवस्थापनाची योग्यता, उच्च शिक्षणाच्या परिसंस्थांच्या ठिकाणासंबंधातील राज्यस्तरीय अग्रक्रम इत्यादी प्रस्तुत घटक विचारात घेऊन, राज्य शासनास आपल्या निरपवाद स्वेच्छानिर्णयानुसार योग्य व उचित वाटेल त्याप्रमाणे अशा परिसंस्थाना इरादा पत्र देता येईल. राज्य शासनाकडून विद्यापीठाला, या खंडामध्ये विनिर्दिष्ट केलेल्या दिनांकास किंवा त्यापूर्वी इरादा पत्राविषयी कळविण्यात येईल :

परंतु, अपवादात्मक प्रकरणांमध्ये व कारणे लेखी नमूद करून, उच्च शिक्षणाच्या महाविद्यालयाला किंवा परिसंस्थेला इरादा पत्र देण्यासाठी, विद्यापीठाने शिफारस न केलेल्या कोणत्याही अर्जास राज्य शासनाकडून मान्यता देता येईल ;

(ङ) राज्य शासनाकडून देण्यात आलेले असे इरादापत्र निकटतम पुढील वर्षाच्या ३१ जानेवारीपर्यंत वैध असेल. व्यवस्थापन, अशा कालावधीमध्ये, इरादापत्रात नमूद केलेल्या आवश्यक शर्तीचे पालन करील आणि परिसंस्था सुरू करण्याकरिता शैक्षणिक व पायाभूत सुविधा आणि सिद्धता यांच्या सद्यस्थितीबाबतचा अनुपालन अहवाल अंतिम मान्यता मिळण्यासाठी आवश्यक असलेल्या कागदपत्रांसह, विद्यापीठाला सादर करील ;

(च) उपरोक्त कालमर्यादेत मिळालेल्या अशा अनुपालन अहवालाची अधिष्ठाता मंडळाद्वारे छाननी करण्यात येईल आणि ज्या उपरोक्त कालमर्यादेत अनुपालन अहवाल प्राप्त झाला असेल त्या कालमर्यादेतील मे च्या पहिल्या दिवशी किंवा त्याआधी व्यवस्थापन परिषदेच्या मंजूरीसह राज्य शासनाकडे पाठविला जाईल. अधिष्ठाता मंडळाच्या, व्यवस्थापन परिषदेने मंजूरी दिलेल्या शिफारशींना व्यवस्थापन परिषदेला उचित वाटेल अशा संबद्ध कारणांनी यथोचितरित्या पुष्टी देण्यात येईल :

नवीन  
महाविद्यालय  
किंवा नवीन  
पाठ्यक्रम,  
विषय,  
विद्याशाखा,  
तुकडी सुरू  
करण्यासाठी  
परवानगी  
देण्याची  
कार्यपद्धती.

परंतु, खंड (ड) मध्ये विनिर्दिष्ट केलेल्या कालमर्यादेत, जर व्यवस्थापन इरादा पत्रातील शर्तीचे अनुपालन करण्यात कसूर करील तर, इरादा पत्र व्यपगत झाल्याचे समजण्यात येईल :

परंतु तसेच, अपवादात्मक प्रकरणात आणि कारणे लेखी नमूद करून राज्य शासन, विद्यापीठाने योग्यरीत्या प्रक्रिया केलेल्या व्यवस्थापनाच्या अर्जावर वेळोवेळी, इरादा पत्राची वैधता, एकूण बारा महिन्यांपेक्षा जास्त नसेल अशा आणखी कालावधीसाठी वाढवू शकेल ;

(छ) खंड (च) खालील विद्यापीठाचा अहवाल विचारात घेतल्यानंतर, राज्य शासनाच्या अर्थसंकल्पीय तरतुदी, आणि इतर संबद्ध घटक, नवीन परिसंस्था चालू करण्याची परवानगी मागणाऱ्या व्यवस्थापनाची योग्यता इत्यादी लक्षात घेऊन, राज्य शासन, आपल्या निरपवाद स्वेच्छानिर्णयानुसार, त्यास योग्य आणि उचित वाटेल त्याप्रमाणे अशा व्यवस्थापनास अंतिम मंजूरी देऊ शकेल. या खंडाखालील अंतिम मंजूरी ही, असे नवीन महाविद्यालय किंवा परिसंस्था चालू करण्याच्या प्रस्तावित वर्षाच्या १५ जून रोजी किंवा त्यापूर्वी देण्यात येईल. अशी मान्यता राज्य शासनाकडून विद्यापीठाला कळविण्यात येईल. त्यानंतर दिलेल्या मान्यता ह्या, विद्यापीठाकडून केवळ त्यानंतरच्या शैक्षणिक वर्षातच अंमलात आणल्या जातील:

परंतु, तसेच अपवादात्मक प्रकरणांमध्ये आणि कारणे लेखी नमूद करून, राज्य शासनास, विद्यापीठाने शिफारस न केलेल्या कोणत्याही अनुपालन अहवालास मान्यता देता येईल.

(४) (क) नवीन अभ्यास पाठ्यक्रम, विषय, विद्याशाखा, अतिरिक्त तुकड्या किंवा सॅटेलाइट केंद्रे सुरू करण्यासाठी परवानगी मागणारे व्यवस्थापन, ज्या वर्षापासून परवानगी मागितली असेल त्या वर्षाच्या अगोदरच्या वर्षाच्या सप्टेंबर महिन्याच्या शेवटच्या दिवसापूर्वी विद्यापीठाच्या कुलसचिवाकडे विहित नमुन्यात अर्ज करील ;

(ख) जे अर्ज आवश्यकतांची पूर्तता करतील आणि जे विहित केलेल्या मुदतीच्या आत प्राप्त होतील केवळ असेच अर्ज विद्यापीठाकडून स्वीकारले जातील आणि ते विचारात घेतले जातील.

(ग) उपरोक्त विहित कालमर्यादेच्या आत प्राप्त झालेल्या अशा सर्व अर्जांची अधिष्ठाता मंडळाकडून छाननी करण्यात येईल आणि ते, व्यवस्थापन परिषदेच्या मान्यतेने, त्या वर्षाच्या १ एप्रिल रोजी किंवा त्यापूर्वी, व्यवस्थापन परिषदेस योग्य वाटतील अशा संबद्ध कारणांनी यथोचित पुष्टी दिलेल्या शिफारशीसह राज्य शासनाकडे पाठविण्यात येतील.

(घ) विद्यापीठाने शिफारस केलेल्या अर्जांपैकी, राज्य शासनास, इतर संबद्ध घटक, राज्य शासनाची अर्थसंकल्पीय तरतुद, इतर संबद्ध घटक, परवानगी मागणाऱ्या व्यवस्थापनाची योग्यता, इत्यादी बाबी विचारात घेऊन, त्याच्या पूर्ण विवेकानुसार त्याला योग्य व उचित वाटतील अशा परिसंस्थांना त्या वर्षाच्या १५ जून रोजी किंवा त्यापूर्वी परवानगी देता येईल :

परंतु असे असले तरी, अपवादात्मक प्रकरणांमध्ये आणि विद्यापीठाने शिफारस न केलेल्या कोणत्याही अर्जाच्या बाबतीत, राज्य शासनास, कारणे लेखी नमूद करून मान्यता देता येईल.

(५) राज्य शासन, पोट-कलम (३) खालील इरादापत्र देण्यासाठीच्या किंवा, यथास्थिति, पोट-कलम (४) अन्वये अंतिम मान्यता देण्यासाठीचा कोणताही अर्ज थेट विचारात घेणार नाही.

(६) विद्यापीठ, नवीन अभ्यास पाठ्यक्रम, विषय, विद्याशाखा किंवा अतिरिक्त तुकडी किंवा सॅटेलाईट केंद्र सुरू करण्यासाठीचे उच्च शिक्षणाच्या विद्यमान महाविद्यालयांचे किंवा परिसंस्थांचे अर्ज, जर,—

(क) ते, अधिस्वीकृती अभिकरणाच्या मानकांनुसार अधिस्वीकृती किंवा पुनर्र अधिस्वीकृती मिळण्यासाठी पात्र आणि अपेक्षित असले तरीसुद्धा, एकतर राष्ट्रीय मूल्यांकन व अधिस्वीकृती परिषदेकडून किंवा राष्ट्रीय अधिस्वीकृती मंडळाकडून अधिस्वीकृत किंवा पुनर्र अधिस्वीकृत करण्यात आले नसतील ; आणि

(ख) राज्य शासनाने निर्धारित केलेल्या शर्तींचे ते अनुपालन करीत नसतील तर, राज्य शासनाकडे पाठविणार नाही.

(७) या अधिनियमात किंवा त्या त्या वेळी अंमलात असलेल्या इतर कोणत्याही कायद्यात काहीही अंतर्भूत असले तरी,—

(क) कोणतेही व्यवस्थापन, राज्य शासनाच्या पूर्वपरवानगीखेरीज राज्यात उच्च शिक्षणाचे एखादे नवीन महाविद्यालय किंवा परिसंस्था स्थापन करणार नाही किंवा सुरू करणार नाही ;

(ख) कोणतेही व्यवस्थापन, राज्य शासनाच्या पूर्वपरवानगीखेरीज, कोणताही नवीन अभ्यास पाठ्यक्रम, विषय, किंवा विद्याशाखा, किंवा अतिरिक्त तुकडी किंवा सॅटेलाईट केंद्रे सुरू करणार नाही.

स्पष्टीकरण.—या पोट-कलमाच्या प्रयोजनार्थ, “ उच्च शिक्षणाचे नवीन महाविद्यालय किंवा परिसंस्था स्थापन करणे किंवा सुरू करणे ” आणि “ नवीन अभ्यास पाठ्यक्रम, विषय, विद्याशाखा, अतिरिक्त तुकडी किंवा सॅटेलाईट केंद्र सुरू करणे ” या शब्दप्रयोगात, राज्य शासनाकडून विना सहायक अनुदान तत्त्वावर उच्च शिक्षणाचे असे महाविद्यालय किंवा परिसंस्था स्थापन करणे किंवा सुरू करणे ; आणि असा कोणताही अभ्यास पाठ्यक्रम, विषय किंवा विद्याशाखा किंवा अतिरिक्त तुकडी किंवा सॅटेलाईट केंद्र सुरू करणे, यांचा अंतर्भाव होतो.

(८) असामान्य परिस्थितीत विशिष्ट विद्याशाखांच्या नवीन तुकड्या सुरू करणे समर्थनीय असेल त्याबाबतीत, राज्य शासनास, कारणे लेखी नमूद करून, अशा नवीन तुकड्या सुरू करण्यासाठी परवानगी देण्याबाबतची जलदगती पद्धती आणि त्यांसंबंधीचे निकष आणि कार्यपद्धती घोषित करून तिचा अवलंब करण्याचा प्राधिकार असेल :

परंतु, अशा असामान्य परिस्थितीत परवानगी देण्याची कार्यपद्धती ही, ज्या शैक्षणिक वर्षात अशा नवीन तुकड्या सुरू करावयाच्या असतील त्या वर्षाच्या ३१ ऑगस्टच्या आत पूर्ण करण्यात येईल :

परंतु आणखी असे की, जलदगती पद्धतीने नवीन तुकड्या सुरू करण्याबाबतच्या अर्जावर विद्यापीठाकडून यथोचित कार्यवाही करण्यात येईल. आवश्यक त्या शर्तींचे अनुपालन केल्यावर, जर विद्यापीठाने अशा नवीन तुकड्या सुरू करण्यासाठीच्या प्रस्तावाची शासनाकडे शिफारस केली असेल तर, ज्या शैक्षणिक वर्षात अशा नवीन तुकड्या सुरू करावयाच्या असतील त्या शैक्षणिक वर्षाच्या ३१ ऑगस्टपर्यंत राज्य शासनाकडून कोणत्याही स्वरूपाची प्रतिकूल माहिती कळविण्यात आली नाही तर, अशी परवानगी राज्य शासनाकडून मिळाली असल्याचे मानण्यात येईल.

(९) राज्य शासनास, पोट-कलम (३) किंवा, यथास्थिति, पोट-कलम (४) च्या तरतुदी अंमलात आणण्याच्या प्रयोजनासाठी, **राजपत्रातील** अधिसूचनेद्वारे, उक्त पोट-कलमांच्या प्रयोजनासाठी अनुसरावयाची कार्यपद्धती निर्धारित करता येईल.

संलग्नीकरण  
करण्यासाठी  
कार्यपद्धती.

**११०.** (१) राज्य शासनाकडून परवानगी मिळाल्यावर, विद्यापीठाची विद्या परिषद उच्च शिक्षणाचे नवीन महाविद्यालय किंवा परिसंस्था किंवा यथास्थिति, नवीन अभ्यास-पाठ्यक्रम, विषय, विद्याशाखा, अतिरिक्त तुकड्या किंवा सॅटेलाईट केंद्रे यांना पहिल्या वेळेच्या संलग्नीकरणास मंजूरी देण्याबाबत विचार करील.

(२) विद्यापरिषद पुढील बाबतीत निर्णय घेईल :—

(क) संलग्नीकरणास मंजूरी द्यावयाची किंवा नाकारावयाची ;

(ख) पूर्णतः किंवा अंशतः संलग्नीकरणास मंजूरी द्यावयाची ;

(ग) विषय, अभ्यास पाठ्यक्रम व प्रवेश द्यावयाच्या विद्यार्थ्यांची संख्या ;

(घ) संलग्नीकरणास मंजूरी देताना किंवा मंजूरी देण्यासाठी विनिर्दिष्ट करता येतील अशा, कोणत्याही असल्यास, शर्ती व अशा शर्तीचे अनुपालन करण्याचा वाजवी कालावधी :

परंतु, अशा कालावधीमध्ये अशा शर्तीचे अनुपालन करण्यात कसूर केल्यास, संलग्नीकरणास दिलेली मंजूरी रद्द करण्यात आली असल्याचे मानण्यात येईल आणि विद्यापीठाकडून संबंधित व्यवस्थापनास याबाबतीत काहीही कळविण्याची आवश्यकता असणार नाही.

(३) प्र-कुलगुरु, जर संलग्नीकरणाचा अर्ज मंजूर करण्यात आला असेल तर, पुढील माहितीसह विद्यापरिषदेचा निर्णय, उच्च शिक्षणाचे नवीन महाविद्यालय किंवा परिसंस्था किंवा नवीन अभ्यास पाठ्यक्रम, विषय, विद्याशाखा, अतिरिक्त तुकड्या किंवा सॅटेलाईट केंद्रे सुरू करण्याच्या संबंधात राज्य शासनाने मंजूरी दिल्याच्या दिनांकापासून एका महिन्याच्या आत व्यवस्थापनास कळवील व त्याची एक प्रत संचालक, उच्च शिक्षण याला पाठवील :—

(क) ज्यांच्या संलग्नीकरणास मंजूरी देण्यात आलेली आहे असे अभ्यास पाठ्यक्रम, विषय, विद्याशाखा वा अतिरिक्त तुकड्या ;

(ख) प्रवेश द्यावयाच्या विद्यार्थ्यांची संख्या ;

(ग) ज्या शर्ती पूर्ण करण्याच्या अधीन राहून, संलग्नीकरणास मंजूरी देण्यात आली असेल त्या शर्ती आणि अशा शर्तीचे अनुपालन करण्यासाठीचा ठराविक कालावधी.

(४) महाविद्यालय किंवा परिसंस्था अधिस्वीकृती किंवा, यथास्थिति, पुनर्रअधिस्वीकृती मिळण्यासाठी पात्र आणि अपेक्षित असेल आणि असे महाविद्यालय किंवा परिसंस्था अधिस्वीकृतीच्या किंवा पुनर्रअधिस्वीकृतीच्या आवश्यकतांची पूर्तता करण्यात कसूर करील तेव्हा, अशा महाविद्यालयाला किंवा परिसंस्थेला विद्यापीठाकडून कोणतीही संलग्नता देण्यात येणार नाही :

परंतु, या पोट-कलमातील कुठलीही गोष्ट विद्याशाखेच्या, अतिरिक्त तुकडीच्या, अभ्यास पाठ्यक्रमाच्या, विषयाच्या किंवा सॅटेलाईट केंद्राच्या नैसर्गिक वाढीच्या संलग्नतेसंबंधात लागू होणार नाही.

(५) विद्यापीठाकडून उच्च शिक्षणाचे महाविद्यालय किंवा परिसंस्था किंवा नवीन अभ्यास पाठ्यक्रम, विषय, विद्याशाखा वा अतिरिक्त तुकडी यांच्या संलग्नीकरणास मंजूरी देण्यात आल्याशिवाय कोणत्याही विद्यार्थ्याला महाविद्यालयात किंवा परिसंस्थेत प्रवेश देण्यात येणार नाही.

१११. (१) पाच वर्षांहून कमी नसेल इतक्या कालावधीसाठी संशोधन किंवा विशेष अभ्यासक्रम यांमध्ये सक्रिय असलेल्या व मान्यता मिळण्याची मागणी करित असलेल्या परिसंस्थेचे व्यवस्थापन, खालील बाबींच्या संबंधातील पूर्ण माहितीसह, ज्या वर्षापासून मान्यतेची मागणी करण्यात आली असेल त्यावर्षाच्या आधीच्या वर्षाच्या सप्टेंबर महिन्याच्या शेवटच्या दिवसापूर्वी विद्यापीठाच्या कुलसचिवाकडे अर्ज करील,—

(क) व्यवस्थापनाची रचना व तिचा कर्मचारीवर्ग ;

(ख) ज्या विषयांसाठी व अभ्यास पाठ्यक्रमांसाठी आणि संशोधन कार्यक्रमांसाठी मान्यता मागितलेली आहे ते विषय व अभ्यास पाठ्यक्रम ;

(ग) ज्यांच्याकरिता तरतूद केलेली आहे अशी निवासव्यवस्था, साधनसामग्री व त्या विद्यार्थ्यांची संख्या ;

(घ) संशोधनासाठी मार्गदर्शन करण्यास मान्यताप्राप्त असलेल्या किंवा या प्रयोजनासाठी विद्यापीठाकडून मान्यता मिळण्यास योग्य असलेल्या परिसंस्थेचा स्थायी, अभ्यागत व मानसेवी कर्मचारीवर्ग ; त्यांचा अनुभव, परिसंस्थेत केलेल्या संशोधन कार्याचा पुरावा, परिसंस्थेद्वारा प्रकाशित केलेली प्रकाशने, अहवाल, आद्याक्षरमुद्रा, पुस्तके ;

(ङ) आकारलेले किंवा आकारण्याचे प्रस्तावित असलेले शुल्क आणि इमारती, साधनसामग्री यांवरील आणि परिसंस्थेच्या नियमित देखभालीसाठी व तिच्या कार्यक्षम कामकाजासाठी केलेल्या भांडवली खर्चासाठी केलेली तरतूद.

(२) जे अर्ज आवश्यक बाबींची पूर्तता करतील केवळ असेच अर्ज विद्यापीठाकडून स्वीकारण्यात येतील व ते विचारात घेतले जातील.

(३) अशा सर्व अर्जांची अधिष्ठाता मंडळाकडून छाननी करण्यात येईल. अधिष्ठाता मंडळास, त्यास आवश्यक वाटेल अशी आणखी कोणतीही माहिती मागविता येईल आणि ते व्यवस्थापनाला आवश्यक बाबींची पूर्तता करण्यास सांगील.

(४) जर अधिष्ठाता मंडळाने अर्ज विचारात घेण्याचे ठरविले तर, मान्यता देण्यासाठी सर्व आवश्यक बाबींची प्रत्यक्ष पडताळणी करण्याकरिता, त्यास संबंधित विषयाचे किंवा क्षेत्राचे विशेष ज्ञान असलेल्या व्यक्तींच्या समितीद्वारे चौकशी करवून घेता येईल.

(५) समिती परिसंस्थेला भेट देईल व तिला उचित वाटतील अशा संबद्ध कारणांनी यथोचितरीत्या पुष्टी दिलेल्या अशा शिफारशीसह, अधिष्ठाता मंडळाला त्याबाबतचा अहवाल सादर करील.

(६) असा चौकशीचा अहवाल विचारात घेतल्यानंतर व त्यास आवश्यक वाटेल अशी आणखी चौकशी केल्यानंतर, अधिष्ठाता मंडळ संबद्ध कारणांनी यथोचितरीत्या पुष्टी दिलेल्या, त्यास उचित वाटतील अशा शिफारशीसह, अर्ज पूर्णतः अथवा अंशतः मंजूर करण्याचा किंवा नाकारण्याचा प्रस्ताव आणि चौकशी समितीचा अहवाल, कुलगुरूला सादर करील.

(७) कुलगुरू, अधिष्ठाता मंडळाने सादर केलेल्या प्रस्तावावर विचार केल्यानंतर एकतर, तो मंजूर करील किंवा नाकारील. कुलगुरूचा याबाबतचा निर्णय अंतिम व बंधनकारक असेल.

(८) प्र-कुलगुरू, कुलगुरूच्या निर्णयाची प्रत व्यवस्थापनाला कळवील आणि त्याची प्रत संचालक, उच्च शिक्षण याला अग्रेषित करील.

(९) पोट-कलम (१) ते (८) मध्ये निर्धारित केलेली प्रक्रिया सहा महिन्यांच्या आत पूर्ण करण्यात येईल.

खाजगी  
कौशल्य  
शिक्षण प्रदाता  
परिसंस्थेस  
मान्यता  
देण्याची  
कार्यपद्धती.

११२. (१) कौशल्यविषयक अर्हता व शैक्षणिक आराखडा यांसंबंधातील राष्ट्रीय, राज्यस्तरीय धोरणानुसार विद्यापीठाकडून विहित करण्यात आलेल्या विविध पदव्या, पदविका, प्रगत पदविका व प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम यांसाठी आणि असे पाठ्यक्रम चालविण्याच्या प्रक्रियेत सहभागी असलेले तज्ज्ञ यांच्याकरिता विद्यापीठाकडून मान्यता मागणाऱ्या, खाजगी कौशल्य शिक्षण प्रदाता परिसंस्थांचे व्यवस्थापन, विहित नमुन्यात, त्या खाजगी कौशल्य शिक्षण प्रदाता परिसंस्थांकडून चालविण्यात येणाऱ्या अध्ययनक्रमांची संपूर्ण माहिती आणि नमुन्यामध्ये मागितलेली इतर माहिती यांसह, ज्या वर्षापासून मान्यता मागण्यात आली असेल त्याच्या अगोदरच्या वर्षाच्या सप्टेंबर महिन्याच्या शेवटच्या दिवसापूर्वी, कुलसचिवाकडे अर्ज करील.

(२) जे अर्ज आवश्यक बाबींची पूर्तता करतील व विहित कालमर्यादेत प्राप्त होतील केवळ तेच अर्ज विद्यापीठाकडून स्वीकारण्यात येतील व ते विचारात घेतले जातील.

(३) अधिष्ठाता मंडळ अशा सर्व अर्जांची छाननी करील. अधिष्ठाता मंडळ, मान्यता मिळण्यासाठी सादर केलेल्या अर्जांमधील अथवा कागदपत्रांमधील विसंगती व्यवस्थापनाला कळवील आणि आवश्यक त्या बाबींची पूर्तता करण्यास व्यवस्थापनाला सांगील.

(४) खाजगी कौशल्य शिक्षण प्रदाता परिसंस्थांच्या खरेपणाबाबत खात्री पटल्यानंतर, अधिष्ठाता मंडळ, मान्यता मंजूर करण्याच्या प्रयोजनासाठी कौशल्य शिक्षण, उद्योग व विद्याविषय यांमधील तज्ज्ञांच्या समितीद्वारे तपासणी करवून घेण्याचे निदेश देईल.

(५) समिती परिसंस्थेला भेट देईल व तिला उचित वाटतील अशा संबद्ध कारणांनी यथोचितरीत्या पुष्टी दिलेल्या अशा शिफारशीसह, अधिष्ठाता मंडळाला त्याबाबतचा अहवाल सादर करील.

(६) अशा चौकशीच्या अहवालावर विचार केल्यानंतर आणि त्यास आवश्यक वाटेल अशी आणखी चौकशी केल्यावर, अधिष्ठाता मंडळ, संबद्ध कारणांनी यथोचितरीत्या पुष्टी देऊन, त्यास उचित वाटतील अशा शिफारशी व अशा चौकशी समितीचा अहवाल यासह, अर्ज अंशतः किंवा पूर्णतः मंजूर करण्याचा किंवा नाकारण्याचा प्रस्ताव कुलगुरूंना सादर करील.

(७) अधिष्ठाता मंडळाने सादर केलेल्या प्रस्तावांवर विचार करून, कुलगुरूस, तो मंजूर करता येईल किंवा नाकारता येईल आणि कुलगुरूचा याबाबतचा निर्णय अंतिम व बंधनकारक असेल.

(८) प्र-कुलगुरू, कुलगुरूचा निर्णय व्यवस्थापनाला कळवील.

(९) ज्या वर्षात खाजगी कौशल्य शिक्षण प्रदाता, परिसंस्थेचा, विविध पदव्या, पदविका, प्रगत पदविका व प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम सुरू करण्याचा उद्देश असेल त्याकरिता पोट-कलम (२) ते (८) मध्ये निर्धारित केलेल्या प्रक्रियेसाठी विद्यापीठाकडून त्या वर्षाच्या ३० एप्रिलपर्यंत वेळापत्रक प्रसिद्ध करण्यात येईल आणि ती प्रक्रिया, त्या वर्षाच्या ३० एप्रिलपर्यंत पूर्ण करण्यात येईल.



(१०) ही मान्यता पाच वर्षांच्या कालावधीसाठी वैध असेल. पोट-कलमे (१) ते (८) मध्ये निर्दिष्ट केलेली कार्यपद्धती, वेळोवेळी, अशी मान्यता पुढे चालू ठेवण्याकरिता योग्य त्या फेरफारांसह, लागू करण्यात येईल.

(११) मान्यताप्राप्त खाजगी कौशल्य शिक्षण प्रदाता संस्था, चाचणी परीक्षा घेईल, निकाल घोषित करील आणि निरनिराळ्या कार्यक्रमांसाठी प्रमाणपत्र, पदविका, प्रगत पदविका व पदवी प्रदान करण्याची विद्यापीठाला शिफारस करील.

(१२) व्यवस्थापनाला, खाजगी कौशल्य शिक्षण प्रदाता परिसंस्था बंद करावयाची असल्यास, बंद करण्याची कारणे संपूर्णपणे नमूद करून आणि इमारत व साधनसामग्री या स्वरूपातील मत्ता, त्याचे मूळ मूल्य, प्रचलित बाजारमूल्य आणि विद्यापीठ अनुदान आयोग, राज्य शासन यांच्याकडून अथवा सार्वजनिक निधीकरण अभिकरणे यांच्याकडून आतापर्यंत प्राप्त झालेली अनुदाने यांचा स्पष्टपणे उल्लेख करून त्याच्या अगोदरच्या ऑगस्ट महिन्याच्या पहिल्या दिनांकास वा त्यापूर्वी कुलसचिवाकडे अर्ज करील.

(१३) असा अर्ज प्राप्त झाल्यावर, कुलगुरु अशी खाजगी कौशल्य शिक्षण प्रदाता परिसंस्था बंद करण्याची परवानगी देण्यात यावी किंवा कसे याचे निर्धारण व निर्णय करण्यासाठी, त्यास योग्य वाटेल अशी चौकशी करवून घेईल. कुलगुरुस, ती परिसंस्था अन्य व्यवस्थापनाकडे हस्तांतरित करून अशी परिसंस्था बंद करण्याची कार्यवाही टाळता येईल किंवा कसे, याची तपासणी करता येईल.

(१४) कुलगुरूने अशी संस्था बंद करण्याबाबत शिफारस करण्याचे ठरविल्यास, अधिष्ठाता मंडळ व्यवस्थापनाकडून वसूल करावयाच्या हानीचे व भरपाईचे प्रमाण आणि विद्यापीठ अनुदान आयोग, राज्य शासन किंवा अन्य सार्वजनिक निधीकरण अभिकरणे यांनी दिलेल्या निधीचा वापर करून निर्मित मत्ता, अन्य व्यवस्थापनाकडे हस्तांतरित करण्यात याव्यात किंवा कसे याविषयी एक अहवाल तयार करील व तो व्यवस्थापन परिषदेला सादर करील.

(१५) कुलगुरू, व्यवस्थापन परिषदेच्या पूर्वसहमतीने खाजगी कौशल्य शिक्षण प्रदाता परिसंस्था बंद करण्याबाबत अनुमती द्यावयाची किंवा कसे याबाबत ठरवील.

(१६) अशी परिसंस्था बंद करण्याबाबतची प्रक्रिया ही, टप्प्याटप्प्याने करण्यात येईल. जेणेकरून, कौशल्य शिक्षण प्रदाता खाजगी परिसंस्थेमध्ये अगोदरच प्रवेश घेतलेल्या विद्यार्थ्यांचे नुकसान होणार नाही, आणि पहिल्या वर्षाचे वर्ग बंद करण्यात येतील व कोणताही नवीन प्रवेशास प्रवेश दिला जाणार नाही. अशी परिसंस्था टप्प्याटप्प्याने बंद करण्याबाबतची प्रक्रिया ही विहित करण्यात येईल त्याप्रमाणे असेल.

अधिकारप्रदत्त  
स्वायत्त  
कौशल्य  
विकास  
महाविद्यालयास  
मान्यता देणे.

११३. (१) मान्यतेसाठी अर्ज करणाऱ्या अधिकारप्रदत्त स्वायत्त कौशल्य विकास महाविद्यालयाचे व्यवस्थापन पुढील हमी देईल व तिचे अनुपालन करील :-

(क) हा अधिनियम आणि त्याखाली, केलेले परिनियम, आदेश, आणि विनियम यांच्या तरतुदींचे आणि विद्यापीठाच्या स्थायी आदेशांचे आणि निदेशांचे पालन करण्यात येईल ;

(ख) विद्यापीठाद्वारे विहित करण्यात येईल त्याप्रमाणे, आधुनिक सुविधा असलेल्या इमारती, वर्ग खोल्या यांसारख्या भौतिक सुविधा, आवश्यकता असल्यास, आवश्यक साहित्य असणाऱ्या कौशल्य विकास प्रयोगशाळा, ग्रंथालय व ज्ञानग्रहण सुविधा, माहिती व संदेशवहन तंत्रज्ञान संलग्नता आणि इतर सुविधा असतील ;

(ग) महाविद्यालयाचे वित्तीय स्रोत अशा महाविद्यालयाची नियमित देखभाल आणि कामकाज यासाठी तरतूद करण्याकरीता असतील ;

(घ) विद्यापीठाने विहित केल्याप्रमाणे प्रमुख शैक्षणिक व तांत्रिक कर्मचारीवर्ग असेल आणि विद्यापीठाने विहित केल्याप्रमाणे महाविद्यालयाच्या कर्मचाऱ्यांच्या वित्तलब्धी व सेवेच्या अटी व शर्ती असतील ;

(ङ) महाविद्यालयाचा जे अध्ययनक्रम चालविण्याचा हेतू आहे अशा विविध अध्ययनक्रमासाठी व्यावसायिक अनुभव देण्याकरिता आवश्यक असलेल्या उद्योगाशी व व्यवसायाशी आणि तसेच त्या अध्ययनक्रमासाठी अभ्यागत अध्यापक किंवा प्रशिक्षक म्हणून कार्य करतील अशा उद्योग किंवा व्यवसायातील तज्ज्ञांच्या नामिकेशी समन्वय साधेल ;

(च) परीक्षा घेण्यासाठी, मूल्यमापन करण्यासाठी आणि विद्यापीठाच्या इतर कार्यक्रमांना चालना देण्यासाठी महाविद्यालयाचे सर्व अध्यापन कर्मचारी, अभ्यागत अध्यापक किंवा तज्ज्ञ, सहाय्यभूत व तांत्रिक कर्मचारीवर्ग यांच्या सेवा आणि महाविद्यालयाच्या सुविधा, उपलब्ध करून देण्यात येतील ;

(छ) विद्यापीठाच्या पूर्वपरवानगीशिवाय, व्यवस्थापनामध्ये कोणताही बदल किंवा त्यांचे हस्तांतरण करण्यात येणार नाही ;

(ज) विद्यापीठाच्या परवानगीशिवाय महाविद्यालय बंद करण्यात येणार नाही ;

(झ) महाविद्यालयाची अर्हता रद्द करण्यात आली असेल किंवा मान्यता काढून घेण्यात आली असेल किंवा ते बंद करण्यात आले असेल अशावेळी, विविध अध्ययनक्रमांसाठी नोंदणी केलेल्या विद्यार्थ्यांची अंतिम तुकडी जोपर्यंत प्रशिक्षित होत नाही, तिचे मूल्यन किंवा मूल्यमापन होत नाही आणि विद्यापीठाकडून त्यांचे निकाल जाहीर करण्यात येत नाहीत व त्यांना अध्ययनक्रम पूर्ण झाल्याचे समुचित प्रमाणपत्र देण्यात येत नाही, तोपर्यंत महाविद्यालय त्याचे कार्य सुरू ठेवील आणि त्याची कर्तव्ये पार पाडील.

(२) विद्यापीठाकडून मान्यता मागणाऱ्या महाविद्यालयाचे व्यवस्थापन, ज्या वर्षापासून मान्यता मागावयाची असेल त्याच्या अगोदरच्या वर्षाच्या सप्टेंबर महिन्याच्या अखेरच्या दिनांकापूर्वी महाविद्यालयामध्ये चालविण्यात येणाऱ्या प्रस्तावित अध्ययनक्रमांची माहिती देऊन, कौशल्यविषयक अर्हता व शैक्षणिक आराखडा यांसंबंधातील राष्ट्रीय, राज्यस्तरीय धोरणानुसार विद्यापीठाकडून विहित करण्यात आलेल्या विविध पदव्या, पदविका, प्रगत पदविका व प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम यांसाठी विहित केलेल्या नमुन्यात विद्यापीठाच्या कुलसचिवाकडे अर्ज करील, ज्यामध्ये महाविद्यालयाच्या अभ्यासक्रमाशी संबंधित माहिती, शिक्षण देण्याची पद्धती, आवश्यक विद्याविषयक व कौशल्य प्रशिक्षणविषयक पायाभूत सुविधांची निर्मिती, समुचित उद्योग किंवा व्यवसाय यांच्याबरोबर साहचर्य, अध्यापक आणि तज्ज्ञ यांची शैक्षणिक अर्हता व क्षेत्रानुभव यांसह आणि विद्यार्थ्यांच्या मूल्यनाबाबतची अन्य पूरक माहिती, तसेच मान्यता मागणाऱ्या महाविद्यालयाचा वित्तीय तपशील यांचा समावेश असेल ;

(३) विहित केलेल्या कालमर्यादेमध्ये मिळालेले आणि आवश्यकतांची पूर्तता करणारे अर्जक केवळ विद्यापीठाकडून स्वीकारण्यात येतील आणि त्यावर विचार करण्यात येईल.

(४) अधिष्ठाता मंडळ अशा सर्व अर्जांची छाननी करील व त्याचा अहवाल कुलगुरुला पाठवील आणि विद्यापीठ, मान्यता मिळण्यासाठी सादर केलेल्या अर्जामधील किंवा कागदपत्रांमधील विसंगती व्यवस्थापनाला कळवील आणि आवश्यक त्या बाबींची पूर्तता करण्यास व्यवस्थापनाला सांगील.

(५) अधिष्ठाता मंडळाचे प्रस्तावाच्या खरेपणाबाबत समाधान झाले तर, ते, मान्यता देण्याच्या प्रयोजनार्थ कौशल्य शिक्षणातील, उद्योगातील तसेच विद्याविषयामधील तज्ज्ञ व्यक्तीच्या समितीकडून तपासणी करून घेण्याची व्यवस्था करील.

(६) समिती परिसंस्थेस भेट देईल आणि तिला उचित वाटतील अशा संबद्ध कारणांनी यथोचितरीत्या पुष्टी दिलेल्या अशा शिफारशीसह अधिष्ठाता मंडळाला त्याबाबतचा अहवाल सादर करील.

(७) अशा चौकशीचा अहवाल विचारात घेतल्यानंतर आणि त्यांना आवश्यक वाटेल अशी आणखी चौकशी केल्यावर, अधिष्ठाता मंडळ, आणि उचित वाटतील अशा संबद्ध कारणांनी यथोचितरीत्या पुष्टी दिलेल्या शिफारशीसह, अर्जास अंशतः किंवा पूर्णतः मान्यता देण्यासाठी किंवा अर्ज नाकारण्यासाठी, प्रस्ताव आणि चौकशी समितीचा अहवाल कुलगुरूस सादर करील.

(८) कुलगुरू, अधिष्ठाता मंडळाने सादर केलेल्या प्रस्तावावर विचार केल्यानंतर, एकतर त्या प्रस्तावास मंजुरी देईल किंवा तो नाकारील आणि कुलगुरूचा याबाबतचा निर्णय अंतिम व बंधनकारक असेल.

(९) ज्या वर्षात अधिकारप्रदत्त स्वायत्त कौशल्य विकास महाविद्यालयाचा विविध पदवी, पदविका, प्रगत पदविका आणि प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम सुरू करण्याचा उद्देश असेल त्याकरिता पोट-कलम (२) ते (८) मध्ये निर्धारित केलेल्या प्रक्रियेसाठी विद्यापीठाकडून वेळापत्रक प्रसिद्ध करण्यात येईल आणि ती प्रक्रिया त्या वर्षाच्या ३० एप्रिल पर्यंत पूर्ण करण्यात येईल.

(१०) प्र-कुलगुरू, जे व्यवस्थापन मान्यता मिळवू इच्छित असेल त्या व्यवस्थापनास, त्या वर्षाच्या ३० एप्रिल रोजी किंवा त्यापूर्वी कुलगुरूचा निर्णय कळवील.

(११) मान्यता पाच वर्षासाठी वैध असेल. पोट-कलमे (१) ते (१०) मध्ये वेळोवेळी, निर्दिष्ट केलेली कार्यपद्धती, मान्यता पुढे चालू ठेवण्याकरिता, योग्य त्या फेरफारांसह, लागू असेल.

(१२) मान्यताप्राप्त अधिकारप्रदत्त स्वायत्त कौशल्य विकास महाविद्यालय मूल्यन करील, निकाल जाहीर करील आणि विविध अध्ययनक्रमांकरिता संयुक्त प्रमाणपत्र, पदविका, प्रगत पदविका आणि पदवी प्रदान करण्यासाठी विद्यापीठाला शिफारस करील.

(१३) अधिकारप्रदत्त स्वायत्त कौशल्य विकास महाविद्यालय बंद करू इच्छिणारे व्यवस्थापन, आधीच्या वर्षाच्या १ ऑगस्टला किंवा त्यापूर्वी महाविद्यालय बंद करण्यासंबंधीची सर्व कारणे नमूद करून व इमारती व साधनसामग्री यांच्या रूपात असलेली मत्ता, त्यांची मूळ किंमत, प्रचलित बाजारमूल्य आणि त्यास, एकतर विद्यापीठ अनुदान आयोगाकडून, राज्य शासनाकडून किंवा सार्वजनिक निधीकरण अभिकरणांकडून आतापर्यंत मिळालेली अनुदाने यांचा विनिर्देश करून, अगोदरच्या वर्षाच्या ऑगस्टच्या पहिल्या दिवशी किंवा त्यापूर्वी कुलसचिवांकडे अर्ज करील.

(१४) असा अर्ज मिळाल्यावर, ते महाविद्यालय बंद करण्यास परवानगी देण्यात यावी किंवा कसे याचे निर्धारण व निर्णय करण्यासाठी कुलगुरूस, त्यास योग्य वाटेल अशी चौकशी करण्याची व्यवस्था करील. ती परिसंस्था अन्य व्यवस्थापनाकडे हस्तांतरित करून, ती परिसंस्था बंद करण्याची कार्यवाही टाळता येईल किंवा कसे याची तपासणी करता येईल.

(१५) कुलगुरूने महाविद्यालय किंवा परिसंस्था बंद करण्याची शिफारस करण्याचे ठरविल्यास, तो, व्यवस्थापनाकडून वसूल करावयाच्या हानीचे किंवा नुकसानभरपाईचे प्रमाण आणि विद्यापीठ अनुदान आयोग, राज्य शासन किंवा इतर सार्वजनिक निधीकरण अभिकरणे यांनी दिलेल्या निधीचा वापर करून निर्मित मत्ता इतर व्यवस्थापनाकडे, हस्तांतरित करण्यात याव्यात किंवा कसे याबाबतीत अहवाल तयार करील व तो व्यवस्थापन परिषदेला सादर करील.

(१६) कुलगुरू, व्यवस्थापन परिषदेच्या पूर्वसहमतीने ते महाविद्यालय बंद करण्यास परवानगी द्यावी किंवा कसे ते ठरवील.

(१७) महाविद्यालयात आधीच प्रवेश घेतलेल्या विद्यार्थ्यांना बाधा पोहचू नये या दृष्टीने महाविद्यालये बंद करण्याची प्रक्रिया टप्प्याटप्प्याने करण्यात येईल व पहिल्या वर्षाचे वर्ग प्रथम बंद करण्यात येतील आणि कोणालाही नव्याने प्रवेश दिला जाणार नाही. टप्प्याटप्प्याने बंद करण्याची पद्धती ही विहित करण्यात येईल त्याप्रमाणे असेल.

संलग्नीकरण  
किंवा मान्यता  
चालू ठेवणे.

११४. (१) कलम ११० ची पोट-कलमे (१) ते (३) यांमध्ये विहित करण्यात आलेली कार्यपद्धती, संलग्नता चालू ठेवण्याबाबत विचार करण्यासाठी, वेळोवेळी योग्य त्या फेरफारांसह लागू असेल.

(२) मान्यता देण्यासाठी कलम १११ मध्ये विहित करण्यात आलेली कार्यपद्धती, मान्यता चालू ठेवण्याबाबत विचार करण्यासाठी योग्य त्या फेरफारांसह लागू असेल.

संलग्नीकरण  
किंवा मान्यता  
यांचा विस्तार.

११५. संलग्न महाविद्यालयास किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थेस, जादा अभ्यास पाठ्यक्रमांकरिता संलग्नीकरणासाठी किंवा मान्यतेसाठी अर्ज करता येईल. विद्यापीठ, कलमे १०८, १०९, ११० व १११ यांमध्ये विहित केलेल्या कार्यपद्धतीचे, ती जेथवर लागू असेल तेथवर, पालन करील.

११६. कमीत कमी पाच वर्षे संलग्न महाविद्यालय किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था म्हणून असलेले स्थायी संलग्नीकरण संलग्न महाविद्यालय किंवा परिसंस्था किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था, स्थायी संलग्नीकरणासाठी किंवा व मान्यता. मान्यतेसाठी अर्ज करील. अधिष्ठाता मंडळ अर्जावर विचार करील आणि त्याची छाननी करील आणि विद्यापरिषदेकडे शिफारस करील. संलग्नीकरणाच्या किंवा मान्यतेच्या सर्व शर्ती, संलग्न महाविद्यालय किंवा परिसंस्था किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था समाधानकारकपणे पूर्ण करित आहे याबद्दल आणि त्यांनी विद्यापीठाकडून व संबंधित नियामक मंडळांकडून वेळोवेळी विहित करण्यात आलेल्या उच्च शैक्षणिक व प्रशासकीय दर्जा प्राप्त केलेला आहे याबद्दल विद्यापरिषदेची खात्री पटली तर, विद्यापरिषद, त्या महाविद्यालयाला किंवा, यथास्थिति, परिसंस्थेला स्थायी संलग्नीकरण किंवा मान्यता देईल.

११७. (१) प्रत्येक संलग्न महाविद्यालय व मान्यताप्राप्त परिसंस्था, महाविद्यालयाचा किंवा महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांची तपासणी व अहवाल. मान्यताप्राप्त परिसंस्थेचा विद्याविषयक दर्जा व विद्याविषयक प्रशासनाचा दर्जा ठरवणे विद्यापीठाला शक्य व्हावे म्हणून विद्यापीठ निदेश देईल असे अहवाल, विवरणे व इतर तपशील सादर करील.

(२) प्र-कुलगुरू, त्याने त्याबाबतीत नियुक्त केलेल्या एका किंवा अधिक समित्यांकडून प्रत्येक विद्यापीठ विभागाची किंवा परिसंस्थेची, संलग्न महाविद्यालयाची किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थेची, प्रत्येक तीन वर्षांतून किमान एकदा तपासणी करण्याची व्यवस्था करील आणि त्या समितीमध्ये पुढील सदस्यांचा समावेश असेल :-

(क) संबंधित विद्याशाखेचा अधिष्ठाता-अध्यक्ष ;

(ख) विद्यापरिषदेकडून नामनिर्देशित करण्यात येईल अशी, विद्यापीठाशी अथवा त्याच्या अधिकारितेतील कोणत्याही संलग्न महाविद्यालयाशी किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थेशी संबंधित नसलेली एक तज्ज्ञ व्यक्ती ;

(ग) व्यवस्थापन परिषदेकडून नामनिर्देशित करण्यात यावयाची एक तज्ज्ञ व्यक्ती ;

(घ) अधिसभेकडून नामनिर्देशित करण्यात यावयाची एक तज्ज्ञ व्यक्ती :

परंतु, अशा समितीवरील कोणताही सदस्य संबंधित महाविद्यालय किंवा परिसंस्थेच्या व्यवस्थापनाशी संबंधित नसेल.

(३) समिती आपला अहवाल प्र-कुलगुरूकडे, त्याच्या विचारार्थ आणि आवश्यक त्या पुढील कार्यवाहीसाठी सादर करील.

महाविद्यालयाच्या ठिकाणाचे स्थानांतरण. **११८.** (१) उच्च शिक्षणाच्या महाविद्यालयाला किंवा परिसंस्थेला, फक्त त्याच जिल्ह्यामध्ये आपले ठिकाण बदलण्याची परवानगी देण्यात येईल.

(२) विद्यापीठाची व्यवस्थापन परिषद महाविद्यालयाला आपले ठिकाण बदलण्याची परवानगी देण्यापूर्वी, पोट-कलम (३) मध्ये निर्देशिलेले मुद्दे विचारात घेईल.

(३) राज्य शासनाची सहमती घेतल्यानंतर विद्यापीठाकडून परवानगी देण्यात येईल :

परंतु,—

(क) अशा स्थानांतरणामुळे महाविद्यालय जेथून स्थानांतरित करण्यात येत असेल त्या ठिकाणाच्या शैक्षणिक विकासाला अडथळा येता कामा नये ;

(ख) जर असे नवीन ठिकाण हे, वार्षिक सम्यक योजनेत दर्शविल्याप्रमाणे, उच्च शिक्षणाचे नवीन महाविद्यालय किंवा परिसंस्था सुरू करण्याच्या ठिकाणापासून पाच किलोमीटरच्या परीघाच्या आत असल्यासच, अशा नवीन ठिकाणी होणाऱ्या स्थानांतरणास मुभा देण्यात येईल ; आणि

(ग) नवीन ठिकाणामधील पायाभूत सोयी व अन्य सुविधा, विहित मानकांनुसार पर्याप्त असाव्यात ;

(४) जर महाविद्यालय नैसर्गिक आपत्तीच्या कारणावरून एका ठिकाणाहून दुसऱ्या ठिकाणी स्थानांतरित करण्यात येत असेल तर, त्या बाबतीत विद्यापीठाकडून आकस्मिक परवानगी देण्यात येईल आणि राज्य शासनाकडून यथावकाश मंजूरी देण्यात येईल.

व्यवस्थापनाचे हस्तांतरण. **११९.** विद्यापीठाची व्यवस्थापन परिषद, राज्य शासनाच्या परवानगीच्या अधीन राहून परिनियमांमध्ये विहित केल्याप्रमाणे, महाविद्यालयांच्या आणि परिसंस्थांच्या व्यवस्थापनाच्या हस्तांतरणाच्या प्रस्तावांचा विचार करील.

संलग्नीकरण किंवा मान्यता काढून घेणे. **१२०.** (१) जर संलग्न महाविद्यालय किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था, कलम १०८ मध्ये तरतूद केल्याप्रमाणे संलग्नीकरणाच्या किंवा मान्यतेच्या शर्तीचे अनुपालन करण्यात किंवा कलम ९७ मध्ये तरतूद केल्याप्रमाणे महाविद्यालय विकास समितीला योग्यरीत्या कार्य करण्यास मोकळीक देण्यात किंवा अधिनियमान्वये काढलेल्या निदेशानुसार कार्यवाही करण्यात कसूर करील किंवा विद्यापीठाच्या हितसंबंधाला किंवा त्याने निर्धारित केलेल्या मानकांना बाधा पोहचेल अशा रीतीने, महाविद्यालय किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था चालवीत असेल तर, अधिष्ठाता मंडळ, संलग्नीकरण किंवा मान्यता याद्वारे महाविद्यालयाला किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थेला प्रदान करण्यात आलेले विशेषाधिकार अंशतः किंवा पूर्णतः का काढून घेण्यात येऊ नयेत किंवा त्यात फेरबदल का करण्यात येऊ नयेत, याबाबतची कारणे दाखवा नोटीस व्यवस्थापनाला पाठवू शकेल.

(२) अधिष्ठाता मंडळ, ज्या कारणामुळे कार्यवाही करण्याचे प्रस्तावित करीत आहे ती कारणे नमूद करील व नोटीशीची एक प्रत महाविद्यालयाचा प्राचार्य किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थेचा प्रमुख यांच्याकडे पाठवील. नोटीशीच्या उत्तरादाखल व्यवस्थापनाने किती मुदतीत आपले लेखी निवेदन सादर केले पाहिजे ती मुदतही ते, त्या नोटीशीत विनिर्दिष्ट करील, ही मुदत तीस दिवसांपेक्षा कमी असणार नाही.

(३) असे लेखी निवेदन मिळाल्यावर, किंवा पोट-कलम (१) अन्वये दिलेल्या नोटिशीत विनिर्दिष्ट केलेली मुदत संपल्यावर, अधिष्ठाता मंडळ, असे विशेषाधिकार काढून घेण्याबाबतच्या किंवा त्यात फेरबदल करण्याबाबतच्या प्रस्तावासह किंवा त्या प्रस्तावाशिवाय, नोटीस किंवा लेखी निवेदन कोणतेही असल्यास, विद्यापरिषदेपुढे मांडील.

(४) विद्यापरिषद, महाविद्यालये किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांमध्ये शिकणाऱ्या विद्यार्थ्यांचे हित लक्षात घेऊन, यासंदर्भात कुलगुरूकडे कार्यवाहीबाबत शिफारस करील आणि कुलगुरू आवश्यक तो आदेश देईल.

१२१. (१) राज्य शासनाच्या पूर्वपरवानगीखेरीज, एखाद्या संलग्न महाविद्यालयाच्या किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थेच्या व्यवस्थापनास, संलग्न महाविद्यालय किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था बंद करण्याची अनुमती देण्यात येणार नाही.

संलग्न  
महाविद्यालये  
किंवा  
मान्यताप्राप्त  
परिसंस्था बंद  
करणे.

(२) महाविद्यालय किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था बंद करू इच्छिणारे व्यवस्थापन, आधीच्या वर्षाच्या १ ऑगस्ट रोजी किंवा त्यापूर्वी, (महाविद्यालय किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था) बंद करण्यासंबंधीची सर्व कारणे नमूद करून आणि इमारती व साधनसामग्री यांच्या रूपात असलेली मत्ता, त्यांची मूळ किंमत, प्रचलित बाजारमूल्य आणि त्यास, एकतर विद्यापीठ अनुदान आयोगाकडून, राज्य शासनाकडून किंवा सार्वजनिक वित्तपुरवठा संस्थांकडून आतापर्यंत मिळालेली अनुदाने यांचा निर्देश करून विद्यापीठाकडे अर्ज करील.

(३) असा अर्ज मिळाल्यावर, संलग्न महाविद्यालय किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था बंद करण्यास परवानगी देण्यात यावी किंवा कसे याचे निर्धारण व निर्णय करण्यासाठी विद्यापरिषद, तिला योग्य वाटेल अशी चौकशी करण्याची व्यवस्था करील. ती परिसंस्था अन्य व्यवस्थापनाकडे हस्तांतरित करून, महाविद्यालय किंवा परिसंस्था बंद करण्याची बाब टाळता येईल किंवा कसे याचीही तपासणी विद्यापरिषदेस करता येईल.

(४) विद्यापरिषदेने, बंद करण्याची शिफारस करण्याचे ठरविल्यास, विद्यापीठ अनुदान आयोग, राज्य शासन किंवा इतर सार्वजनिक वित्त पुरवठा करणाऱ्या संस्था यांच्याकडून पुरविण्यात आलेल्या निधीचा वापर करून निर्माण करण्यात आलेल्या मत्तांबद्दल व्यवस्थापनाकडून वसूल करावयाच्या नुकसानभरपाईच्या किंवा भरपाईच्या रकमेचे प्रमाण, यासंबंधात अहवाल तयार करील व तो व्यवस्थापन परिषदेला सादर करील.

(५) त्यानंतर, विद्यापरिषद, व्यवस्थापन परिषदेच्या पूर्वसहमतीने व राज्य शासनाच्या मान्यतेने, संलग्न महाविद्यालयाला किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थेला, ते महाविद्यालय किंवा ती मान्यताप्राप्त परिसंस्था बंद करण्यास परवानगी द्यावी किंवा कसे ते ठरवील.

(६) विद्यापीठ, राज्य शासनाच्या पूर्वमान्यतेने आणि यासंबंधात विहित केलेली कार्यपद्धती अनुसरल्यानंतर, ते महाविद्यालय किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था अन्य व्यवस्थापनाकडे हस्तांतरित करील.

(७) संलग्न महाविद्यालयात किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थेत आधीच प्रवेश दिलेल्या विद्यार्थ्यांचे नुकसान होऊ नये या दृष्टीने, महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्था बंद करण्याची प्रक्रिया टप्प्याटप्प्याने करण्यात येईल व पहिल्या वर्षाचे वर्ग प्रथम बंद करण्यात येतील आणि कोणालाही नव्याने प्रवेश दिला जाणार नाही. (महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त परिसंस्था) टप्प्याटप्प्याने बंद करण्याची पद्धती ही, विहित करण्यात येईल त्याप्रमाणे असेल.

(८) संलग्न महाविद्यालये किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था बंद करण्यासाठी पोट-कलमे (१) ते (७) मध्ये निर्देशिलेली कार्यपद्धती, विद्याशाखा अभ्यास पाठ्यक्रम किंवा सॅटेलॉईट केंद्रे यांना बंद करण्यासाठीही, योग्य त्या फेरफारांसह, लागू होईल.

स्वायत्त  
विद्यापीठ  
विभाग किंवा  
परिसंस्था,  
महाविद्यालय  
किंवा  
मान्यताप्राप्त  
परिसंस्था.

१२२. (१) स्वायत्त दर्जा मिळविण्यासाठी, विद्यापीठ विभाग किंवा परिसंस्था, संलग्न महाविद्यालय किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांना विद्यापीठाकडे अर्ज करता येईल. व्यवस्थापन परिषदेस, विद्यापरिषदेच्या शिफारशीवरून स्वायत्त दर्जा प्रदान करता येईल.

(२) अध्यापक व विद्यार्थी, यांचा विद्याव्यासंग व गुणोत्कर्ष करण्यासाठी पोषक अशा बौद्धिक वातावरणाचा विकास व जोपासना करण्याकरिता, स्वायत्त विद्यापीठ विभाग किंवा परिसंस्था किंवा संलग्न महाविद्यालय किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था, शैक्षणिक स्वातंत्र्य व विद्याव्यासंग या गोष्टींना चालना देण्याचे उद्दिष्ट समोर ठेवून काम करील.

(३) स्वायत्त विद्यापीठ विभाग किंवा परिसंस्था किंवा संलग्न महाविद्यालय किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था, परिनियमांमध्ये विहित करण्यात येईल त्याप्रमाणे त्याची प्राधिकरणे किंवा मंडळे घटित करू शकेल आणि अधिकारांचा वापर करू शकेल व कार्ये पार पाडू शकेल व विद्यापीठाचे प्रशासकीय, विद्याविषयक, आणि इतर कार्यक्रम पार पाडू शकेल.

(४) स्वायत्त विद्यापीठ विभाग किंवा परिसंस्था किंवा संलग्न महाविद्यालय किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था, परिनियमांमध्ये विहित केलेली कार्यपद्धती अनुसरल्यानंतर, स्वतःचे अभ्यास पाठ्यक्रम विहित करू शकेल, स्वतःच्या अध्यापन पद्धती विकसित करू शकेल आणि तिथे शिक्षण घेणाऱ्या विद्यार्थ्यांसाठी परीक्षा व चाचणी परीक्षा घेऊ शकेल आणि पदव्या, पदविका किंवा प्रमाणपत्रे देण्याची विद्यापीठाला शिफारस करू शकेल. स्वायत्त विद्यापीठ विभाग किंवा परिसंस्था किंवा संलग्न महाविद्यालय किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांना या अधिनियमाच्या तरतुदी व परिनियम आणि विद्यापीठ अनुदान आयोगाने वेळोवेळी घालून दिलेली मार्गदर्शक तत्त्वे यांच्या अधीन राहून, पूर्ण विद्याविषयक व प्रशासकीय स्वायत्तता असेल.

अधिकारप्रदत्त  
स्वायत्त  
महाविद्यालये.

१२३. (१) विद्यापीठ अनुदान आयोगाने उत्कृष्टताक्षम किंवा उत्कृष्ट महाविद्यालय म्हणून ज्यांची निवड केली असेल किंवा ज्यांनी राज्य शासनाकडून राजपत्राद्वारे विहित करावयाचा उच्चस्तरीय दर्जा प्राप्त केला असेल अशा संलग्न स्वायत्त महाविद्यालयांस अधिकारप्रदत्त स्वायत्त दर्जा मिळविण्यासाठी विद्यापीठाकडे अर्ज करता येईल. विद्यापरिषदेच्या शिफारशीवरून व्यवस्थापन परिषदेस अशा महाविद्यालयाला अधिकार प्रदत्त स्वायत्त दर्जा प्रदान करता येईल.

(२) अधिकारप्रदत्त स्वायत्ततेचा दर्जा देणे व तो पुढे चालू ठेवणे याकरिताची मानके व कार्यपद्धती, परिनियमांद्वारे, विहित करण्यात येईल त्याप्रमाणे असेल.

(३) अधिकारप्रदत्त स्वायत्त महाविद्यालयास, आपली प्राधिकरणे किंवा मंडळे गठीत करता येतील आणि परिनियमांद्वारे विहित करण्यात येईल अशा अधिकारांचा वापर करता येईल व प्रशासकीय, विद्याविषयक, वित्तीय व विद्यापीठाचे इतर कामकाजविषयक कार्ये पार पाडता येईल.

(४) अधिकारप्रदत्त स्वायत्त महाविद्यालय, स्वायत्त महाविद्यालयाद्वारे उपभोगण्यात येणाऱ्या अधिकारांबरोबरच परिनियमांद्वारे आणि राज्य शासन व विद्यापीठ अनुदान आयोग यांच्या मार्गदर्शक तत्वांद्वारे विहित करण्यात येईल अशा, सर्व विशेषाधिकारांचाही उपभोग घेईल.



१२४. (१) विद्यापीठ अनुदान आयोगाने संभाव्य उत्कृष्टताक्षम किंवा उत्कृष्ट महाविद्यालय म्हणून अधिकारप्रदत्त ज्यांची निवड केली असेल किंवा ज्यांनी राज्य शासनाकडून राजपत्राद्वारे विहित करावयाचा उच्चस्तरीय स्वायत्त समूह दर्जा प्राप्त केला असेल अशा महाविद्यालयांचा व परिसंस्थांचा समावेश असलेल्या, एकाच व्यवस्थापनाच्या परिसंस्था. किंवा शैक्षणिक संस्थेच्या, संलग्न, स्वायत्त महाविद्यालयांच्या किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थांच्या गटास, अधिकारप्रदत्त स्वायत्त समूह परिसंस्थेचा दर्जा मिळण्यासाठी विद्यापीठाकडे अर्ज करता येईल. विद्यापरिषदेच्या शिफारशीवरून व्यवस्थापन परिषदेस अशा महाविद्यालयाच्या किंवा परिसंस्थांच्या गटाला अधिकारप्रदत्त स्वायत्त समूह परिसंस्थांचा दर्जा प्रदान करता येईल.

(२) अधिकारप्रदत्त स्वायत्त समूह परिसंस्थांचा दर्जा देणे व तो पुढे चालू ठेवणे याकरिताची मानके व कार्यपद्धती, परिनियमांद्वारे विहित करण्यात येईल त्याप्रमाणे असेल.

(३) अधिकारप्रदत्त स्वायत्त समूह परिसंस्थेस, आपली प्राधिकरणे किंवा मंडळे घटित करता येतील आणि परिनियमांद्वारे आणि राज्य शासन व विद्यापीठ अनुदान आयोग याच्या मार्गदर्शक तत्वांद्वारे विहित करण्यात येईल अशा अधिकारांचा वापर करता येईल व प्रशासकीय, विद्याविषयक, वित्तीय व विद्यापीठाचे इतर कामकाजविषयक कार्य पार पाडता येईल.

प्रकरण अकरा

### नाव नोंदणी, पदव्या व दीक्षांत समारंभ

१२५. सर्व पदव्युत्तर शिक्षण, अध्यापन, प्रशिक्षण आणि संशोधन आणि संशोधन, सहयोग व भागीदारी विद्यापीठाकडून, संलग्न महाविद्यालयांकडून आणि मान्यताप्राप्त परिसंस्थांकडून सामान्यतः विद्यापीठ क्षेत्रात विहित करण्यात येईल अशा रीतीने चालवण्यात येईल. पदव्युत्तर अध्यापन व संशोधन.

१२६. विद्यापीठाचा विद्यार्थी म्हणून नाव नोंदणी करण्यात येणाऱ्या व्यक्तीकडे, विहित करण्यात येतील अशा अर्हता असतील आणि ती व्यक्ती विहित करण्यात येतील अशा शर्तीची पूर्तता करील. विद्यार्थ्यांची नाव नोंदणी.

१२७. (१) विद्यापीठ विभाग व विद्यापीठाकडून चालविण्यात येणाऱ्या परिसंस्था व महाविद्यालये यांमधील विद्यार्थ्यांशी संबंधित अशी शिस्त व शिस्तभंगाची कारवाई यासंबंधातील सर्व अधिकार कुलगुरूकडे निहित असतील. शिस्तविषयक अधिकार आणि विद्यार्थ्यांमधील शिस्त.

(२) कुलगुरूस, आदेशाद्वारे, पोट-कलम (१) खालील त्याचे सर्व किंवा कोणतेही अधिकार, त्यास योग्य वाटेल त्याप्रमाणे, याबाबतीत तो नामनिर्देशित करील अशा, इतर अधिकाऱ्याकडे सोपविता येतील.

(३) कुलगुरूस आपल्या अधिकारांचा वापर करून, आदेशाद्वारे कोणत्याही विद्यार्थ्यांची किंवा विद्यार्थ्यांची हकालपट्टी करण्यात यावी किंवा विनिर्दिष्ट मुदतीसाठी त्याला किंवा त्यांना काढून टाकण्यात यावे किंवा संचालित महाविद्यालयातील, परिसंस्थेतील किंवा विद्यापीठाच्या विभागातील एका किंवा अनेक पाठ्यक्रमांसाठी विनिर्दिष्ट मुदतीकरिता प्रवेश देऊ नये किंवा विद्यापीठाद्वारे विहित करण्यात येईल त्याप्रमाणे द्रव्यदंडाची शिक्षा देण्यात यावी, किंवा विभाग, संचालित महाविद्यालय किंवा विद्यापीठाकडून चालविण्यात येणारी परिसंस्था यांच्याकडून घेण्यात येणाऱ्या परीक्षेस किंवा परीक्षांना बसण्यास पाच वर्षांहून अधिक नसेल एवढ्या विनिर्दिष्ट मुदतीसाठी मनाई करण्यात यावी किंवा तो किंवा ते विद्यार्थी ज्या परीक्षेला किंवा परीक्षांना बसला असेल किंवा बसले असतील, त्या परीक्षेचा किंवा परीक्षांचा त्या विद्यार्थ्यांचा किंवा विद्यार्थ्यांचा निकाल रद्द करण्यात यावा, असा निदेश देता येईल :

परंतु, कुलगुरू, संबंधित विद्यार्थ्यांला एक वर्षापेक्षा अधिक कालावधीसाठी काढून टाकण्यात आले असेल तर, त्याला आपली बाजू मांडण्याची वाजवी संधी देईल.

एच ४०२६-२०

(४) कुलगुरूच्या अधिकारांना कोणत्याही प्रकारे बाध येऊ न देता, संचालित महाविद्यालयांचे प्राचार्य, विद्यापीठाच्या परिसंस्थांचे प्रमुख आणि विद्यापीठ विभाग प्रमुख यांना त्यांच्या प्रभाराखालील विद्यार्थ्यांच्या बाबतीत योग्य ती शिस्त राखण्यासाठी आवश्यक असतील अशा सर्व अधिकारांचा वापर करण्याचा प्राधिकार असेल.

(५) विद्यापीठाच्या विद्यार्थ्यांची शिस्त व योग्य वर्तणूक आणि शिस्तीचा भंग केल्याच्या किंवा गैरवर्तणुकीबाबत त्यांच्याविरुद्ध करावयाची कार्यवाही यासंबंधातील तरतुदी ह्या परिनियमांद्वारे विहित करण्यात येतील त्याप्रमाणे असतील व त्या विद्यापीठाची सर्व संचालित महाविद्यालये व विद्यापीठ विभाग किंवा परिसंस्था, संलग्न महाविद्यालये व मान्यताप्राप्त संस्था यांच्या सर्व विद्यार्थ्यांना लागू होतील.

(६) विद्यार्थ्यांकरिता शिस्त व योग्य वर्तणूक यासंबंधातील परिनियम आणि शिस्तीचा भंग किंवा गैरवर्तणूक याकरिता त्यांच्याविरुद्ध केलेली कार्यवाही ही देखील विद्यापीठ, संलग्न महाविद्यालये किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्था यांच्या माहिती पुस्तिकेमध्ये प्रसिद्ध करण्यात येईल आणि त्याची एक प्रत प्रत्येक विद्यार्थ्यांला देण्यात येईल. विद्यापीठाकडून व संलग्न महाविद्यालयाकडून चालविण्यात येणाऱ्या महाविद्यालयांचे प्राचार्य आणि परिसंस्थांचे प्रमुख यांना, त्यांना आवश्यक वाटतील त्यानुसार परिनियमांशी विसंगत नसतील असे, शिस्त व योग्य वर्तणूक यासंबंधीची अतिरिक्त मानके विहित करता येतील आणि अशा मानकांची एक प्रत प्रत्येक विद्यार्थ्यांला पुरविण्यात येईल.

(७) प्रवेशाच्या वेळी प्रत्येक विद्यार्थी, तो स्वतः विद्यापीठाच्या कुलगुरूच्या आणि विद्यापीठाच्या इतर अधिकाऱ्यांच्या आणि प्राधिकरणे अथवा मंडळे यांच्या आणि संचालित महाविद्यालयांची व मान्यताप्राप्त परिसंस्थांची प्राधिकरणे किंवा मंडळे यांच्या शिस्तविषयक अधिकारितेच्या अधीन असेल आणि विद्यापीठाच्या उच्च दर्जाच्या प्रशासकीय अधिकाऱ्यांने त्याबाबतीत केलेल्या परिनियमांचे आणि संचालित महाविद्यालयांचे प्राचार्य व विद्यापीठाच्या परिसंस्थांचे आणि संलग्न महाविद्यालयांचे प्रमुख यांनी केलेले पूरक नियम, जेथवर लागू होतील तेथवर, त्यांचे पालन करील व ते त्याला बंधनकारक राहतील अशा अर्थाच्या प्रतिज्ञापत्रावर स्वाक्षरी करील.

(८) विद्यापीठाकडून चालविण्यात येत नसेल अशा संलग्न महाविद्यालयाच्या किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थेच्या विद्यार्थ्यांविरुद्ध करावयाच्या शिस्तभंगविषयक कारवाईशी संबंधित सर्व अधिकार, संलग्न महाविद्यालयाचा प्राचार्य किंवा मान्यताप्राप्त परिसंस्थेचा प्रमुख यांच्याकडे निहित असतील आणि पोट-कलम (६) व (७) च्या तरतुदी, त्याखाली केलेल्या परिनियमांसह, योग्य त्या फेरफारांसह, अशा महाविद्यालयांना, परिसंस्थांना व त्यातील विद्यार्थ्यांना लागू असतील.

पदव्या, १२८. (१) व्यवस्थापन परिषदेस, विद्यापरिषदेकडून शिफारस करण्यात येतील अशा पदव्या, पदविका, पदविका, प्रमाणपत्रे व विद्याविषयक इतर विशेषोपाधी सुरू करता येईल आणि प्रदान करता येतील. प्रमाणपत्रे व विद्याविषयक इतर विशेषोपाधी (२) व्यवस्थापन परिषदेस, विद्यापरिषदेकडून शिफारस करण्यात येईल त्याप्रमाणे, डी. एस.सी (विज्ञान विद्यावाचस्पती) व डी.लिट (वाडमय विद्यावाचस्पती) यांसारख्या संशोधनपर आधारित सर्वोच्च पदव्या सुरू करता येतील आणि त्या प्रदान करता येतील.

(३) कुलपतीस, नैतिक अधःपतनाचा ज्यात अंतर्भाव होतो अशा अपराधाबद्दल न्यायालयाने एखाद्या व्यक्तीला दोषी ठरविले असेल तर, लबाडीने कोणतीही पदवी किंवा पदविका किंवा प्रमाणपत्र, पाठ्यक्रम यांना प्रवेश घेण्याची मागणी केली असल्याचे आढळून आले असेल तर, किंवा लबाडीने अशी पदवी किंवा पदविका किंवा प्रमाणपत्र किंवा अन्य कोणतीही विद्याविषयक इतर विशेषोपाधी मिळवली आहे असे आढळून आले असेल तर, व्यवस्थापन परिषद व विद्यापरिषद यांनी केलेल्या शिफारशीवरून आणि अशा प्रत्येक प्राधिकरणाच्या सभेस हजर असणाऱ्या सदस्यांच्या दोन तृतीयांशापेक्षा कमी नसेल इतक्या पुष्टी दिलेल्या बहुमताने-अशा बहुमतामध्ये अशा प्रत्येक प्राधिकरणाच्या निम्न्यापेक्षा कमी नसतील इतके सदस्य असतील-पदवी किंवा पदविका किंवा प्रमाणपत्र अथवा इतर कोणतीही विद्याविषयक विशेषोपाधी कायमची किंवा कुलपतीस योग्य वाटेल अशा मुदतीसाठी काढून घेता येईल. संबंधित व्यक्तीस, स्वतःच्या बचावाची संधी दिल्याखेरीज या कलमान्वये अशी कोणतीही कारवाई करण्यात येणार नाही.

१२९. (१) कोणत्याही व्यक्तीस, कोणतीही चाचणी परीक्षा किंवा परीक्षा किंवा मूल्यमापन परीक्षा सन्मान्य पदवी देण्यास भाग न पाडता, केवळ तिचे श्रेष्ठ स्थान, नैपुण्य व सार्वजनिक सेवा यामुळे सन्मान्य पदवी किंवा विद्याविषयक इतर विशेषोपाधी मिळण्यास ती पात्र व योग्य आहे, केवळ याच कारणांवरून त्या व्यक्तीला अशी सन्मान्य पदवी किंवा विद्याविषयक इतर विशेषोपाधी प्रदान करण्याबाबत व्यवस्थापन परिषदेला विचार करता येईल व अधिसभेला शिफारस करता येईल, आणि अशा शिफारशीला, अधिसभेच्या सभेला हजर असणाऱ्या सदस्यांच्या दोन तृतीयांशापेक्षा कमी नसेल इतक्या, एकूण सदस्यसंख्येच्या निम्न्यापेक्षा कमी नसतील इतक्या सदस्यांच्या बहुमताने पुष्टी मिळाली तर, ती शिफारस यथोचितरीत्या संमत करण्यात आली असल्याचे मानण्यात येईल :

परंतु, कुलगुरूने कुलपतीची पूर्वमान्यता मिळवलेली असल्याखेरीज, व्यवस्थापन परिषद, त्यासंबंधीचा कोणताही प्रस्ताव विचारार्थ स्वीकारणार नाही किंवा विचारात घेणार नाही.

(२) व्यवस्थापन परिषदेस, अधिसभेच्या प्रस्तावावर निर्णय घेता येईल, मात्र, कुलगुरूने कुलपतीची पूर्वमान्यता मिळवलेली असल्याखेरीज अधिसभा त्यासंबंधीचा कोणताही प्रस्ताव विचारार्थ स्वीकारणार नाही किंवा विचारात घेणार नाही.

१३०. विद्यापीठाचा दीक्षांत समारंभ हा, पदव्या, पदव्युत्तर पदविका प्रदान करण्याकरिता किंवा इतर दीक्षांत समारंभ कोणत्याही प्रयोजनांकरिता परिनियमांद्वारे विहित करण्यात आलेल्या रीतीने, शैक्षणिक वर्षातून किमान एकदा करण्यात येईल.

१३१. (१) पोट-कलम (२) च्या तरतुदीस अधीन राहून, पुढील व्यक्तींना, विद्यापीठाकडून नोंदणीकृत ठेवण्यात येणाऱ्या नोंदणीकृत पदवीधरांच्या किंवा नोंदणीकृत पदवीधर असल्याचे मानण्यात येणाऱ्या पदवीधर व्यक्तींच्या नोंदवहीत आपली नावे नोंदवण्याचा हक्क असेल, त्या व्यक्ती अशा,—

(क) विद्यापीठाच्या पदवीधर असलेल्या व्यक्ती ;

(ख) ज्यामधून नवीन तत्सम विद्यापीठाची स्थापना करण्यात आली आहे त्या मूळ विद्यापीठाच्या पदवीधर असलेल्या व्यक्ती :

परंतु, मूळ विद्यापीठामध्ये नोंदणीकृत पदवीधर म्हणून ज्यांची नोंदणी झाली आहे परंतु, जे नवीन विद्यापीठाच्या अधिकारिते राहात आहेत अशा पदवीधरांना नवीन विद्यापीठाची नोंदणीकृत पदवीधर म्हणून नोंदणी करण्याकरिता, नवीन विद्यापीठाकडे अर्ज करावा लागेल आणि नवीन विद्यापीठामध्ये एकदा नोंदणी झाल्यावर ते आपोआप मूळ विद्यापीठाचे नोंदणीकृत पदवीधर म्हणून असण्याचे बंद होतील.

(२) जी व्यक्ती,—

(क) विकल मनाची असेल व एखाद्या सक्षम न्यायालयाने तिला तसे घोषित केलेले असेल ; किंवा

(ख) अमुक्त नादार असेल ; किंवा

(ग) ज्यात नैतिक अधःपतनाचा अंतर्भाव असेल अशा एखाद्या अपराधाबद्दल जिला दोषी ठरविण्यात आले असेल ; किंवा

(घ) लबाडीच्या मार्गाने एखादी पदवी मिळविली असेल ; किंवा

(ङ) राज्यात कायद्याद्वारे स्थापन केलेल्या इतर कोणत्याही विद्यापीठाची नोंदणीकृत पदवीधर असेल ;

ती व्यक्ती पदवीधरांच्या नोंदवहीत आपल्या नावाची नोंद करून घेण्यास किंवा नोंदणीकृत पदवीधर असण्यास अर्ह असणार नाही,

(३) नोंदणीकृत पदवीधर होऊ इच्छिणारी प्रत्येक व्यक्ती, परिनियमांद्वारे विहित करण्यात येईल अशा नमुन्यात कुलसचिवांकडे अर्ज करील आणि अशी फी भरील.

(४) कुलगुरू, त्यास योग्य वाटेल अशी चौकशी केल्यानंतर, एखादी व्यक्ती नोंदणीकृत पदवीधर असण्यास हक्कदार आहे किंवा कसे याबाबत निर्णय देईल. एखाद्या व्यक्ती नोंदणीकृत पदवीधरांच्या नोंदवहीत आपल्या नावाची नोंद करून घेण्यास किंवा नोंदणीकृत पदवीधर असण्यास हक्कदार आहे किंवा कसे, किंवा, ती, नोंदणीकृत पदवीधर होण्यास अर्हताप्राप्त नाही किंवा कसे याबाबत कोणताही प्रश्न उपस्थित झाल्यास, त्याचा निर्णय कुलगुरू, त्यास योग्य वाटेल अशी चौकशी केल्यानंतर करील आणि त्याचा निर्णय अंतिम असेल.

(५) कलम २८ च्या पोट-कलम (२) च्या खंड (न) अन्वये, अधिसभेच्या सदस्यांच्या निवडणुकीकरिता नोंदणीकृत पदवीधर म्हणून नाव नोंदवलेल्या व्यक्तींमधून निर्वाचन गणाची रचना करण्यात येईल आणि त्या प्रयोजनासाठी एक जाहीर नोटीस प्रसिद्ध करून, विहित केल्याप्रमाणे मतदार यादी तयार करण्यात येईल. या नोटीशीद्वारे अशा मतदार यादीमध्ये नाव नोंदणी करण्यास इच्छुक असणाऱ्या नोंदणीकृत पदवीधरांना अशा नाव नोंदणीसाठी विहित नमुना भरणे आवश्यक असेल.

पदवीधरांच्या नोंदवहीतून नाव काढून टाकणे. **१३२.** (१) कुलगुरूस, व्यवस्थापन परिषदेने केलेल्या व तिच्या सभेत उपस्थित असलेल्या सदस्यांच्या दोन तृतीयांशापेक्षा कमी नसेल इतक्या बहुमताने, अशा बहुमतात तिच्या निम्म्याहून कमी नसतील इतक्या सदस्यांचा समावेश असेल, पुष्टी दिलेल्या शिफारशीवरून, अशा कोणत्याही व्यक्तीचे नाव कुलगुरूस योग्य वाटेल अशा मुदतीसाठी कलम १३१ च्या पोट-कलम (२) मध्ये नमूद केलेल्या कारणांसाठी पदवीधरांच्या नोंदवहीतून काढून टाकता येईल.

(२) संबंधित व्यक्तीस, परिनियमांद्वारे विहित केल्याप्रमाणे बचावासाठी आपली बाजू मांडण्याची संधी दिल्याखेरीज, या कलमान्वये कोणतीही कार्यवाही करण्यात येणार नाही.

**विद्यापीठ निधी, लेखे व लेखापरीक्षा**

१३३. (१) आगामी वित्तीय वर्षाकरिता विद्यापीठाचे वार्षिक वित्तीय अंदाज (अर्थसंकल्प) वित्तीय वार्षिक वित्तीय वर्ष सुरू होण्यापूर्वी किमान दोन महिने आधी वित्त व लेखा समितीच्या निदेशान्वये वित्त व लेखा अंदाज. अधिकाऱ्यांकडून तयार करण्यात येतील.

(२) त्यानंतर, वित्त व लेखा अधिकारी, व्यवस्थापन परिषदेने आणि अधिसभेने मान्य केलेल्या वार्षिक वित्तीय अंदाजांच्या अर्थसंकल्पाच्या प्रती कुलपती, महाराष्ट्र राज्य उच्च शिक्षण व विकास आयोग आणि राज्य शासन यांना पाठवील.

(३) राज्य शासनाचे जे वित्तीय वर्ष असेल तेच विद्यापीठाचे वित्तीय वर्ष असेल.

१३४. (१) विद्यापीठ पुढील निधी स्थापन करील :-

विद्यापीठ निधी.

(क) सर्वसाधारण निधी ;

(ख) वेतन निधी,-

(एक) राज्य शासनाने मान्यता दिलेल्या सर्व पदांकरिता ;

(दोन) इतर सर्व पदांकरिता, स्वतंत्रपणे ;

(ग) विश्वस्त निधी ;

(घ) विकास व कार्यक्रम निधी ;

(ङ) आकस्मिकता निधी ;

(च) विद्यापीठाच्या मते, स्थापन करणे आवश्यक असेल असा इतर कोणताही निधी.

(२) पुढील रकमा सर्वसाधारण निधीचा भाग असतील, किंवा त्यामध्ये त्यांचा भरणा करण्यात येईल :-

(क) राज्य शासन किंवा केंद्र सरकार किंवा विद्यापीठ अनुदान आयोग यांच्याकडून मिळालेले वेतनेतर अंशदान किंवा अनुदान ;

(ख) शुल्क, इतर शुल्क व आकार यांमधून मिळणाऱ्या उत्पन्नासह, अन्य कोणत्याही मार्गाने विद्यापीठाला मिळणारे सर्व उत्पन्न ;

(ग) राज्य शासनाच्या परवानगीने बँकांकडून किंवा अन्य कोणत्याही अधिकरणाकडून कर्जाऊ घेतलेल्या कोणत्याही रकमा ;

(घ) अन्य कोणत्याही मार्गाने किंवा अधिकरणाकडून मिळालेल्या रकमा.

(३) वेतन निधीमध्ये, राज्य शासन, केंद्र सरकार किंवा विद्यापीठ अनुदान आयोग यांच्याकडून मिळालेल्या सर्व रकमांचा किंवा वेतन व भत्ते यांच्या पूर्णतः किंवा अंशतः प्रदानापोटी मिळालेल्या कोणत्याही इतर स्थायी दानाचा किंवा अंशदानाचा समावेश होईल. वेतन व भत्ते देण्याच्या प्रयोजनांव्यतिरिक्त अन्य प्रयोजनांसाठी या निधीमधील कोणत्याही रकमेचा वापर करण्यात येणार नाही.

(४) विश्वस्त व्यवस्था, मृत्युपत्रित देणग्या, देणग्या, स्थायी दाने, अर्थसहाय्य व तत्सम अनुदाने यांपासून मिळणारे सर्व उत्पन्न किंवा पैसा यांचा मिळून विश्वस्त निधी होईल.

(५) (क) विद्यापीठ विकास व कार्यक्रम निधीमध्ये, राज्य शासनाकडून मिळालेली सर्व पायाभूत विकास अनुदाने, विकास व संशोधन यासाठी विद्यापीठ अनुदान आयोगाकडून मिळालेली सर्व अंशदाने आणि केंद्र सरकारची इतर निधीकरण अभिकरणे, संयुक्त राष्ट्रे व त्यांच्या संलग्न संस्था, इतर आंतरराष्ट्रीय अभिकरणे, उद्योग, बँका व वित्त संस्था किंवा इतर कोणतीही व्यक्ती किंवा संस्था यांच्याकडून मिळालेली अनुदाने यांचा समावेश होईल.

(ख) या निधीमधील कोणत्याही रकमेचे विद्यापीठाच्या इतर कोणत्याही निधीसाठी विनियोजन करण्यात येणार नाही किंवा इतर कोणत्याही प्रयोजनासाठी ती खर्च करण्यात येणार नाही.

(ग) विकास व कार्यक्रम निधी हा, वित्तव्यवस्था करणाऱ्या अभिकरणाच्या कार्यक्रमांच्या उद्दिष्टांशी सुसंगत पद्धतीने आणि व्यवस्थापन परिषदेने मंजूर करावयाचा व मान्यता द्यावयाचा खर्च व लेखापरीक्षा यांवरील त्यांच्या मार्गदर्शक तत्त्वानुसार वापरण्यात येईल.

(६) विद्यापीठाकडे विद्यापीठ लेख्याच्या स्वतंत्र शीर्षाखाली एक आकस्मिकता निधी असेल व ते तो ठेवील आणि कोणताही अकल्पित खर्च भागविण्याच्या प्रयोजनासाठीच तो वापरण्यात येईल.

(७) पूर्वोक्त प्रयोजनांसाठी जिचा ताबडतोब किंवा नजिकच्या दिनांकाला वापर करता येणार नसेल अशी, या निधीच्या जमाखाती असलेली अतिरिक्त रक्कम, त्यातून उर्पाजित होणाऱ्या रकमांसह वेळोवेळी राष्ट्रीयीकृत किंवा अनुसूचित बँकांमध्ये जमा करण्यात येईल अथवा राज्य शासनाचा ज्यात वित्तीय सहभाग आहे अशा महामंडळाच्या इतर कोणत्याही समभागांमध्ये किंवा रोख्यांमध्ये गुंतवण्यात येईल.

वार्षिक लेखे व लेखापरीक्षा. १३५. (१) विद्यापीठाचे लेखे, दुबार नोंद लेखांकन पद्धतीच्या व तत्त्वाच्या आधारे ठेवण्यात येतील आणि अनुसरावयाची लेखांकन पद्धती, राज्य शासनाने विहित केलेल्या महाराष्ट्र विद्यापीठे लेखा संहितेचे अनुपालन करणारी व्यापारी लेखांकन पद्धती असेल.

(२) विद्यापीठांच्या लेख्यांची दरवर्षी, किमान एकदा आणि कोणत्याही परिस्थितीत वित्तीय वर्ष संपल्यानंतर चार महिन्यांच्या आत, व्यवस्थापन परिषदेने, विद्यापीठाची कोणतीही प्राधिकरणे किंवा त्यांचे व्यवहार यांमध्ये ज्यांच्या भागीदारांचा कोणताही हितसंबंध असणार नाही अशा सनदी लेखापालांच्या भागीदारी संस्थांमधून नियुक्त केलेल्या लेखापरीक्षकांकडून लेखापरीक्षा करण्यात येईल. विद्यापीठ, असा लेखापरीक्षा अहवाल, लेखापरीक्षित अहवाल मिळाल्याच्या दिनांकापासून एक महिन्यांच्या आत कोणत्याही परिस्थितीत लेखापरीक्षा अहवालात नमूद केलेल्या अभिप्रायांचे अनुपालन करील आणि त्यातील विसंगतीबाबतचा अहवाल विद्यापीठाकडून प्रकाशित करण्यात येईल आणि त्याची एक प्रत, लेखापरीक्षकाच्या अहवालाच्या प्रतीसह एकत्रित कुलपती व राज्य शासनास वित्तीय वर्ष संपल्यानंतर एक वर्षाच्या आत सादर करील.

(३) लेखापरीक्षा झालेले लेखे विद्यापीठाद्वारे प्रसिद्ध केले जातील व त्यांची एक प्रत लेखापरीक्षकांच्या अहवालासह व अनुपालन अहवालासह, कुलपतीस आणि राज्य शासनास सादर केली जाईल व वित्तीय वर्ष संपल्यानंतर सहा महिन्यांच्या आत कोणत्याही परिस्थितीत अधिसभेसमोर मान्यतेसाठी सादर केली जाईल.

(४) राज्य शासन, त्यास प्राप्त झालेले विद्यापीठाचे लेखापरिक्षित वार्षिक लेखे राज्य विधानमंडळाच्या प्रत्येक सभागृहांपुढे मांडेल.

(५) राज्य शासनाने नियुक्त केलेल्या लेखापरीक्षकांकडून ठराविक कालांतरांनी, विद्यापीठाच्या लेख्यांची चाचणी दाखल लेखापरीक्षा किंवा पूर्ण लेखापरीक्षा करण्याकरिता राज्य शासन तरतूद करील.

१३६. (१) अधिष्ठाता मंडळ, प्रत्येक शैक्षणिक वर्षासाठी विद्यापीठ, त्याच्या अधिकारितेतील वार्षिक महाविद्यालये व परिसंस्था यांचे प्रशासनिक, विद्याविषयक संशोधन व विकासविषयक व अन्य कार्यक्रम अहवाल. समाविष्ट असलेला वार्षिक अहवाल तयार करील व तो विचारार्थ व्यवस्थापन परिषदेला सादर करील. व्यवस्थापन परिषदेकडून मिळालेल्या वार्षिक अहवालावर अधिसभा चर्चा करील व तो मान्य करील. अधिसभेने मान्य केलेला असा अहवाल, कुलपती व राज्य शासन यांना शैक्षणिक वर्ष संपल्यानंतर एका वर्षाच्या आत सादर करण्यात येईल.

(२) राज्य शासन, तो वार्षिक अहवाल राज्य विधानमंडळाच्या प्रत्येक सभागृहापुढे मांडण्याची व्यवस्था करील.

#### प्रकरण तेरा

#### श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी महिला विद्यापीठाकरिता विशेष तरतुदी

१३७. (१) हा अधिनियम व परिनियम यांच्या इतर तरतुदीबरोबरच या कलमात दिलेल्या तरतुदी श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी महिला विद्यापीठास लागू होतील.

(२) विद्यापीठाला या अधिनियमाद्वारे ज्या हद्दीच्या आतील अधिकार प्रदान करण्यात आलेले आहेत त्या प्रादेशिक हद्दीमध्ये संपूर्ण राज्याचा समावेश असेल : विशेष तरतुदी.

परंतु, विद्यापीठ त्याला व राज्य शासनाला लादणे योग्य वाटेल अशा शर्ती व आबंधनांच्या अधीन राहून, विद्यापीठाच्या विशेषाधिकारातील इतर कोणत्याही प्रदेशातील कोणतीही महिला शैक्षणिक परिसंस्था, संबंधित शासनाच्या मान्यतेने दाखल करून घेऊ शकेल.

(३) महाराष्ट्र राज्याच्या कोणत्याही भागातील किंवा अन्य कोणत्याही प्रदेशातील कोणत्याही विद्यार्थिनीस, विद्यापीठाची खाजगी विद्यार्थिनी म्हणून नाव नोंदविता येईल किंवा विद्यापीठाच्या पत्रव्यवहार पाठ्यक्रमासाठी किंवा अन्य कोणत्याही बहिस्थ पदवी किंवा पदविका पाठ्यक्रमासाठी प्रवेश घेता येईल.

(४) राज्यातील ज्या कोणत्याही संस्थेने, संघटनेने किंवा मंडळाने, केवळ विद्यार्थिनींसाठी सुरू केलेल्या किंवा चालवलेल्या महाविद्यालयाला किंवा परिसंस्थेला विद्यापीठाने संलग्न करून द्यावे किंवा मान्यता द्यावी अशी मागणी केली असेल त्या संस्थेने, संघटनेने किंवा मंडळाने, ज्या कोणत्याही अन्य विद्यापीठाच्या क्षेत्रात यथास्थिति, ते महाविद्यालय किंवा ती परिसंस्था स्थित होणार असेल किंवा स्थित असेल त्या क्षेत्रातील विद्यापीठाची परवानगी मागण्याची आवश्यकता असणार नाही. अशा कोणत्याही संस्थेकडून, संघटनेकडून किंवा मंडळांकडून अर्ज आल्यानंतर विद्यापीठास, त्या त्या वेळी अंमलात असलेल्या अन्य कोणत्याही कायद्यात काहीही अंतर्भूत असले तरी, ज्या कोणत्याही अन्य विद्यापीठाच्या क्षेत्रात, यथास्थिति, ते महाविद्यालय किंवा परिसंस्था स्थित होणार असेल किंवा स्थित असेल त्या क्षेत्रातील विद्यापीठाची परवानगी न मागता, राज्य शासनाच्या पूर्वमंजूरीने, किंवा यथास्थिति, मान्यतेने संलग्नीकरणास मान्यता देता येईल.

(५) विद्यापीठास, महिलांच्या शिक्षणाच्या हिताच्या दृष्टीने महाराष्ट्र राज्याबाहेर कोणत्याही प्रदेशात, संबंधित शासनाच्या मान्यतेने महाविद्यालय किंवा संशोधन परिसंस्था सुरू करता येईल किंवा चालविता येईल.

(६) विद्यापीठाशी संलग्न असलेली किंवा विद्यापीठाने मान्यता दिलेली कोणतीही शैक्षणिक परिसंस्था, विद्यापीठाच्या व राज्य शासनाच्या परवानगीखेरीज, कायद्याद्वारे स्थापित करण्यात आलेल्या अन्य कोणत्याही विद्यापीठाशी कोणत्याही प्रकारे संलग्न असणार नाही, किंवा त्या विद्यापीठाच्या कोणत्याही विशेषाधिकारांची मागणी करणार नाही.

(७) विद्यापीठाच्या अधिसभेचे पुढीलप्रमाणे अतिरिक्त सदस्य असतील :-

(क) कुलगुरूने नामनिर्देशित केलेले, महाराष्ट्र राज्यातील महिला शैक्षणिक संघटना किंवा मंडळे यांचे दोन प्रतिनिधी ;

(ख) कुलगुरूने नामनिर्देशित केलेले, श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी महिला विद्यापीठास विशेषाधिकार देण्यात आलेल्या, राज्याबाहेरील महिला शैक्षणिक संघटना किंवा मंडळे यांचे दोन प्रतिनिधी ;

(ग) कुलगुरूने नामनिर्देशित केलेला, अन्य प्रदेशांतील महिला शैक्षणिक संघटना किंवा मंडळे यांचा एक प्रतिनिधी.

(८) परिनियम किंवा आदेश किंवा विनियम तयार करण्याचे किंवा प्रशाळा, तंत्रनिकेतन, इत्यादी चालविणे यांसारखे अन्य कार्यक्रम हाती घेण्याचे अधिकार, विद्यापीठाला असतील.

(९) विद्यापीठाची परीक्षा मंडळे किंवा समित्या यांच्या कोणत्याही सदस्याची अपवादात्मक परिस्थितीत, तशी लेखी नोंद करून, मंडळाच्या लेखी मान्यतेखेरीज प्राश्निक, परीक्षक, नियामक किंवा निर्देशी म्हणून नियुक्ती केली जाणार नाही.

## प्रकरण चौदा

### संकीर्ण

नुकसानीबद्दल प्राधिकरणे आणि अधिकारी जबाबदार असणे. १३८. (१) विद्यापीठाच्या हिताचे योग्य प्रकारे रक्षण करण्यात येत आहे याबद्दल खात्री करून घेणे हे, विद्यापीठाच्या प्रत्येक प्राधिकरणाचे किंवा मंडळाचे आणि अधिकाऱ्याचे कर्तव्य असेल.

(२) विद्यापीठाच्या कोणत्याही प्राधिकरणाने किंवा मंडळाने किंवा अधिकाऱ्याने सद्भावनेने केलेली असेल त्या व्यतिरिक्त इतर बाबतीत, केलेली कोणतीही कृती ही, हा अधिनियम, परिनियम, आदेश किंवा विनियम यांच्या तरतुदीशी सुसंगत नसेल अशा कोणत्याही कृतीमुळे, अथवा त्याने हेतुपुरस्सर हयगय किंवा कसूर करून त्या तरतुदीशी सुसंगत अशी कृती न केल्यामुळे विद्यापीठाचे कोणतेही नुकसान किंवा हानी झाल्याचे आढळून आले तर, परिनियमांद्वारे विहित करण्यात आलेल्या कार्यपद्धतीनुसार, असे नुकसान किंवा हानी त्या प्राधिकरणाकडून किंवा मंडळाकडून किंवा त्याच्या संबंधित सदस्यांकडून संयुक्तपणे किंवा पृथकपणे किंवा, यथास्थिति, संबंधित अधिकाऱ्याकडून वसूल केली जाण्यास पात्र असेल.

राज्य विधान मंडळाचे आणि संसदेचे सदस्यत्व. १३९. (१) अध्यापक किंवा अध्यापकेतर कर्मचारी हा, त्यास राज्य विधानसभेचा किंवा विधानपरिषदेचा अथवा संसदेचा सदस्य म्हणून निवडून देण्यात किंवा नामनिर्देशित करण्यात आलेला आहे केवळ याच कारणावरून असा अध्यापक किंवा अध्यापकेतर कर्मचारी असण्याचे चालू राहण्यासाठी निरहं ठरणार नाही.



(२) राज्य विधानसभेचा किंवा विधानपरिषदेचा अथवा संसदेचा सदस्य म्हणून निवडून देण्यात किंवा नामनिर्देशित करण्यात आलेला अध्यापक, किंवा अध्यापकेतर कर्मचारी हा त्याचा विधानसभेच्या किंवा विधानपरिषदेच्या अथवा संसदेच्या सदस्यत्वाचा कालावधी बिनपगारी आणि बिनभत्ता रजा म्हणून मानला जाण्यास हक्कदार असेल.

(३) पोट-कलम (२) मध्ये निर्देशिलेला अध्यापक किंवा अध्यापकेतर कर्मचारी त्याच्या विधानसभेच्या किंवा विधानपरिषदेच्या अथवा संसदेच्या सदस्यत्वाचा कालावधी हा निवृत्तिवेतन, सेवाज्येष्ठता व वेतनवाढी यांच्या प्रयोजनासाठी हिशोबात घेतला जाण्यास देखील हक्कदार असेल.

१४०. हा अधिनियम किंवा कोणताही परिनियम, आदेश, किंवा विनियम किंवा नियम यांच्या अर्थउकलीसंबंधातील प्रश्न आणि कोणत्याही तरतुदीच्या अर्थउकलीसंबंधात किंवा विद्यापीठाचे कोणतेही प्राधिकरण किंवा मंडळ याचा विद्यापीठ प्राधिकरण किंवा सदस्य म्हणून एखादी व्यक्ती यथोचितरीत्या निवडून आली आहे किंवा तिची नेमणूक करण्यात आली आहे किंवा तिला नामनिर्देशित वा स्वीकृत करण्यात आले आहे किंवा सदस्य असण्यास ती हक्कदार मंडळ, इत्यादींच्या रचनेसंबंधातील विवाद आहे किंवा काय यासंबंधी कोणताही प्रश्न उपस्थित झाल्यास, कुलगुरू, प्रतिकूल परिणाम झालेल्या कोणत्याही व्यक्तीने किंवा मंडळाने विनंतीअर्ज केल्यावरून किंवा स्वाधिकारे, ती बाब कुलपतीकडे विचारार्थ पाठविल आणि कुलपती त्याला आवश्यक वाटेल असा सल्ला त्यावर घेतल्यानंतर, त्या प्रश्नांचा निर्णय करील आणि त्याचा निर्णय अंतिम असेल :

परंतु, अधिसभेच्या एक चतुर्थांशपेक्षा कमी नसतील एवढ्या सदस्यांनी सहीनिशी मागणी केल्यानंतर, कुलगुरुकडून असा निर्देश करण्यात येईल.

१४१. विद्यापीठाने किंवा त्याच्या कोणत्याही अधिकाऱ्यांनी, प्राधिकरणांनी किंवा मंडळानी सद्भावनापूर्वक कृती व आदेश केलेल्या सर्व कृती व काढलेले सर्व आदेश, या अधिनियमाच्या इतर तरतुदींना अधीन राहून, अंतिम असतील आणि त्यानुसार सद्भावनापूर्वक केलेल्या आणि हा अधिनियम व परिनियम, आदेश व विनियम यांच्या तरतुदींना अनुसरून केलेल्या किंवा काढलेल्या अथवा केल्याचे किंवा काढल्याचे अभिप्रेत असलेल्या कोणत्याही गोष्टीबद्दल, विद्यापीठाविरुद्ध किंवा त्याच्या अधिकाऱ्यांविरुद्ध, प्राधिकरणांविरुद्ध किंवा मंडळांविरुद्ध कोणताही दावा किंवा इतर न्यायालयीन कार्यवाही दाखल करण्यात येणार नाही किंवा ती चालवण्यात येणार नाही किंवा त्याच्याकडून कोणत्याही नुकसानभरपाईची मागणी करण्यात येणार नाही.

कृती व आदेश यांचे संरक्षण.

१४२. हा अधिनियम आणि परिनियम यांच्या तरतुदींच्या अधीन राहून, विद्यापीठाच्या कोणत्याही अधिकाऱ्यास किंवा प्राधिकरणास आदेशाद्वारे परिनियम, आदेश व विनियम करण्याच्या अधिकाराव्यतिरिक्त त्यांचे अन्य अधिकार, त्यांच्या नियंत्रणाखालील कोणत्याही इतर अधिकाऱ्याकडे किंवा प्राधिकरणाकडे, आणि अशा रीतीने सोपवलेल्या अधिकारांचा वापर करण्याची अंतिम जबाबदारी ही, उक्त अधिकार सोपविणाऱ्या अधिकाऱ्याकडे किंवा प्राधिकरणाकडे निहित असण्याचे चालू राहिल या शर्तीस अधीन राहून सोपविता येतील.

अधिकार सोपवणे.

कृती व कार्यवाही ही, केवळ रचनेतील दोष, रिक्त पदे, कार्यपद्धतीतील नियमबाह्यता इत्यादी कारणांवरून विधीअग्राह्य नसणे.

१४३. अधिसभेची किंवा व्यवस्थापन परिषदेची किंवा विद्यापरिषदेची किंवा विद्यापीठाच्या इतर कोणत्याही प्राधिकरणाची किंवा कोणत्याही मंडळाची किंवा कुलगुरूच्या नियुक्तीसाठी कुलपतीने नियुक्त केलेल्या समितीसह अन्य समितीची कोणतीही कृती किंवा कार्यवाही कोणत्याही वेळी केवळ पुढील कारणावरून विधीअग्राह्य असल्याचे मानण्यात येणार नाही :-

(क) अशा कोणत्याही प्राधिकरणाच्या, मंडळाच्या किंवा समितीच्या सदस्यांपैकी कोणतेही सदस्य हे, निर्वाचित, नियुक्त किंवा नामनिर्देशित करण्यात आलेले नाहीत किंवा स्वीकृत करण्यात आलेले नाहीत किंवा इतर कोणत्याही कारणामुळे त्याच्या रचनेच्या वेळी पद धारण करण्यास किंवा त्यांच्या कोणत्याही सभेस उपस्थित राहण्यास उपलब्ध नाहीत किंवा कोणतीही व्यक्ती एकापेक्षा अधिक नात्यांनी सदस्य आहे अथवा त्यांच्या रचनेमध्ये इतर काही दोष आहे, किंवा त्यांच्या सदस्यांपैकी एक किंवा अधिक सदस्यांची पदे रिक्त आहेत ;

(ख) अशा कोणत्याही प्राधिकरणाच्या, मंडळाच्या किंवा समितीच्या कार्यपद्धतीमध्ये, विचारांत कोणत्याही बाबीच्या गुणावगुणांना बाधक नसणारी अशी कोणतीही अनियमितता आहे आणि केवळ अशाच कोणत्याही कारणावरून कोणत्याही न्यायालयात अथवा कोणत्याही प्राधिकरणापुढे किंवा अधिकाऱ्यापुढे त्या कृतीच्या वा कार्यवाहीच्या विधिग्राह्यतेवर हरकत घेण्यात येणार नाही.

प्रकरण पंधरा

### नवीन विद्यापीठे स्थापन करणे

नवीन विद्यापीठ घटित करताना बाबींसाठी तरतुदी करण्याकरिता आदेश काढणे.

१४४. कलम ३ च्या पोट-कलम (२) अन्वये **राजपत्रातील** अधिसूचनेद्वारे कोणतेही नवीन विद्यापीठ किंवा त्या कलमाच्या पोट-कलम (६) खालील समूह विद्यापीठ घटित केले जाईल तेव्हा, राज्य शासनास, या अधिनियमात काहीही अंतर्भूत असले तरी, **राजपत्रात** प्रसिद्ध करण्यात आलेल्या एका किंवा त्याहून अधिक आदेशांद्वारे पुढीलपैकी सर्व किंवा कोणत्याही बाबींसाठी तरतूद करता येईल :-

(क) विद्यापीठाचा पहिला कुलगुरू आणि अन्य अधिकारी यांची नियुक्ती आणि ज्या पदावधीसाठी त्यांची नियुक्ती केली जाईल तो पदावधी ;

(ख) त्यास योग्य वाटेल अशा पद्धतीने पहिली व्यवस्थापन परिषद आणि विद्यापरिषद यांची घटना आणि ज्या मुदतीसाठी त्या काम करतील ती मुदत ;

(ग) ते विनिर्देश करील अशा फेरफारांसह असे परिनियमन, आदेश व विनियम चालू ठेवणे किंवा लागू करणे ;

परंतु, नवीन विद्यापीठाचा सक्षम प्राधिकारी ते विद्यापीठ स्थापन केल्यापासून दोन वर्षांच्या कालावधीच्या आत असे परिनियम, आदेश व विनियम एकतर संपूर्ण किंवा त्यास योग्य वाटतील अशा फेरबदलासह स्वीकारेल.

(घ) त्याच विद्यापीठांचे नोंदणीकृत पदवीधर म्हणून राहावयाचे की नवीन विद्यापीठाकडे नोंदणी करून घ्यावयाची यासंबंधात, त्या वेळच्या विद्यमान कोणत्याही विद्यापीठांच्या नोंदणीकृत पदवीधरांनी विकल्पाचा वापर करणे;

(ङ) या अधिनियमान्वये घटित करण्यात आलेली व्यवस्थापन परिषद, विद्या परिषद आणि अन्य प्राधिकरणे, मंडळे आणि समित्या यांचे सदस्यत्व चालू ठेवणे किंवा खंडित करणे ;

(च) विद्यमान विद्यापीठाची प्राधिकरणे किंवा मंडळे किंवा समित्या यांच्या सदस्यांचे सदस्यत्व खंडित केल्यामुळे रिक्त झालेली पदे भरणे ;

(छ) ज्या नवीन विद्यापीठाला क्षेत्र जोडण्यात आले आहे त्या नवीन विद्यापीठाच्या महाविद्यालयांचे संलग्नीकरण आणि परिसंस्थांची मान्यता पुढे चालू ठेवणे आणि ज्यामधून क्षेत्र वेगळे करण्यात आले आहे त्या विद्यमान विद्यापीठाने हे संलग्नीकरण आणि मान्यता खंडित करणे ;

(ज) विद्यमान विद्यापीठांच्या कोणत्याही कर्मचाऱ्यांची नवीन विद्यापीठाकडे बदली करणे आणि अशा कर्मचाऱ्यांना लागू होणाऱ्या अटी व सेवा शर्ती किंवा राज्य शासनास योग्य वाटतील असे, अंतिम लाभ देऊन विद्यमान विद्यापीठाच्या कर्मचाऱ्यांच्या सेवा समाप्त करणे :

परंतु, अशा प्रकारे बदली करण्यात आलेल्या कोणत्याही कर्मचाऱ्यांच्या सेवेच्या अटी व शर्तीमध्ये, त्यांचे नुकसान होईल अशा प्रकारे बदल केले जाणार नाहीत ;

(झ) मत्तांचे म्हणजेच जंगम किंवा स्थावर मालमत्ता यांचे, तसेच हक्क, संपादित केलेले कोणत्याही प्रकारचे हितसंबंध आणि असा आदेश काढण्यात येण्यापूर्वी पत्करलेली दायित्वे आणि बंधने यांचे हस्तांतरण; आणि

(ञ) राज्य शासनास योग्य वाटतील अशा अन्य पूरक, आनुषंगिक आणि परिणामस्वरूप तरतुदी.

#### प्रकरण सोळा

#### संक्रमणात्मक तरतुदी

१४५. या अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये अन्यथा तरतूद करण्यात आली असेल ते खेरीज करून, विद्यापीठाचे विद्यमान अधिकारी व कर्मचारी असणे चालू राहणे. या अधिनियमाच्या प्रारंभाच्या लागतपूर्वीच्या दिनांकाला कोणत्याही विद्यापीठाचा अधिकारी किंवा कर्मचारी-मग तो अध्यापन कर्मचारी असो किंवा अन्य कर्मचारी असो-म्हणून पद धारण करणारी प्रत्येक व्यक्ती, अशा दिनांकाच्या लागतपूर्वी, तिला लागू असलेल्या अटींवर व शर्तींवरच पद धारण करण्याचे चालू ठेवील आणि या अधिनियमाद्वारे किंवा त्याअन्वये त्यांना प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकारांचा वापर करतील आणि कर्तव्ये पार पाडतील.

१४६. (१) विद्यमान विद्यापीठाचे प्रत्येक प्राधिकरण, व्यवहार्य असेल तेथवर, परंतु या अधिनियमाच्या प्रारंभाच्या दिनांकापासून सहा महिन्यांच्या आत किंवा नंतर लागतच्या ३१ ऑगस्ट यापैकी जे नंतर घडेल त्यावेळेपर्यंत या अधिनियमाच्या तरतुदींनुसार पुनर्घटित करण्यात येईल. असे प्रत्येक प्राधिकरण हे, कुलगुरू अधिसूचनेद्वारे वेळोवेळी विनिर्दिष्ट करील अशा दिनांकापासून पुनर्घटित करण्यात आले असल्याचे मानण्यात येईल. प्राधिकरणांची पदे पुढे चालू राहणे आणि ती घटित करणे यांच्याशी संबंधित तरतुदी.

(२) या अधिनियमाच्या प्रारंभाच्या लागतपूर्वी कोणत्याही प्राधिकरणाची सदस्य म्हणून पद धारण करणारी प्रत्येक व्यक्ती अशा प्रारंभाच्या दिनांकास, उक्त पद धारण करणे चालू ठेवील आणि असे सदस्य असलेले प्राधिकरण, ज्या दिनांकास ते प्राधिकरण पुनर्घटित झाल्याचे मानण्यात आले असेल त्या दिनांकापर्यंत किंवा या अधिनियमाच्या प्रारंभाच्या दिनांकापासून सहा महिन्यांचा कालावधी संपेपर्यंत, यापैकी जे नंतर घडेल त्या कालावधीपर्यंत, या अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये त्याला प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकारांचा वापर करील आणि कर्तव्ये पार पाडील.

(शा. म. मु.)-एच ४०२६-२२-(४०१४-८-२०१७).

(३) कोणतेही प्राधिकरण ज्या दिनांकास पुनर्घटित झाल्याचे मानण्यात आले असेल तो दिनांक किंवा सहा महिन्यांचा कालावधी पूर्ण होईल तो दिनांक - यापैकी जे अगोदर घडेल त्या दिनांकास - या कलमान्वये पदावर असणे पुढे चालू राहिलेल्या, विद्यमान विद्यापीठाच्या एखाद्या प्राधिकरणाच्या प्रत्येक सदस्याने त्याचे पद रिक्त केल्याचे मानण्यात येईल.

(४) या अधिनियमाच्या प्रारंभाच्या दिनांकास या अधिनियमाच्या तरतुदीनुसार कोणतेही प्राधिकरण किंवा मंडळ घटित होऊ शकले नाही तर कुलगुरूस, कुलपतीने मान्यता दिल्यानंतर अशा प्राधिकरणाची किंवा मंडळाची अंतरिम रचना करण्यासाठी अशा उपाययोजना करता येतील.

(५) पोट-कलम (४) अन्वये घटित केलेल्या अशा प्राधिकरणाची किंवा मंडळाची मुदत ही ते घटित केल्यापासून एक वर्षाच्या कालावधीकरिता किंवा असे प्राधिकरण किंवा मंडळ या अधिनियमान्वये यथोचितरीत्या घटित करेपर्यंत, यापैकी जी आधीचा असेल तोपर्यंत असेल.

(६) शंकारनिरसनार्थ, असे घोषित करण्यात येते की, अशा प्राधिकरणाची किंवा मंडळाची अंतरिम रचना केल्यापासून एक वर्षाचा कालावधी संपताच असे प्राधिकरण किंवा मंडळ, आपले काम करणे बंद करील.

निरसन व व्यावृत्ती. १९९४. (१) या अधिनियमाच्या प्रारंभाच्या दिनांकास व तेव्हापासून, महाराष्ट्र विद्यापीठ अधिनियम, १९९४ चा ३५. १९९४ निरसित झाल्याचे मानण्यात येईल.

(२) उक्त अधिनियमाचे निरसन करण्यात आले असले तरी,—

(क) या अधिनियमाच्या प्रारंभाच्या लागतपूर्वी विद्यापीठाचा कुलगुरू म्हणून पद धारण करणाऱ्या कोणत्याही व्यक्तीस, अशा प्रारंभापासून त्या विद्यापीठाचा कुलगुरू म्हणून त्याचा पदावधी जोपर्यंत समाप्त होत नाही तोपर्यंत व पूर्वोक्तप्रमाणे त्याचा पदावधी समाप्त होण्यापूर्वी त्या व्यक्तीचा मृत्यू झाल्यामुळे, तिने राजीनामा दिल्यामुळे किंवा अन्य कारणांमुळे तो कुलगुरू असण्याचे बंद होईपर्यंत उक्त पद धारण करण्याचे चालू राहिल व या अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये त्या त्या विद्यापीठाच्या कुलगुरूला प्रदान करण्यात आलेल्या आणि त्याच्यावर सोपविण्यात आलेल्या अनुक्रमे सर्व अधिकारांचा वापर करण्याचे व सर्व कर्तव्ये पार पाडण्याचे चालू ठेविले ;

(ख) या अधिनियमाच्या प्रारंभाच्या लागतपूर्वी विद्यापीठाला संलग्न असलेली सर्व महाविद्यालये, या अधिनियमान्वये त्या विद्यापीठाकडून त्यांचे संलग्नीकरण काढून घेण्यात येईपर्यंत, या अधिनियमान्वये त्या विद्यापीठाला संलग्न असल्याचे समजण्यात येईल ;

(ग) विद्यापीठाचे कोणतेही विशेषाधिकार मिळण्यास हक्कदार होत्या अशा इतर सर्व शैक्षणिक परिसंस्था, त्या विद्यापीठाचे त्याच प्रकारचे विशेषाधिकार मिळण्यास हक्कदार असतील ;

(घ) विद्यापीठाची सर्व जंगम किंवा स्थावर मालमत्ता आणि सर्व हक्क, कोणत्याही प्रकारचा हितसंबंध, अधिकार व विशेषाधिकार त्या विद्यापीठाकडे हस्तांतरित होतील आणि कोणत्याही आणखी हस्तांतरणपत्राशिवाय त्या विद्यापीठाकडे निहित होतील आणि ज्या उद्दिष्टांसाठी व प्रयोजनांसाठी ते विद्यापीठ घटित करण्यात आले आहे त्याच प्रयोजनांसाठी व उद्दिष्टांसाठी त्यांचा वापर करण्यात येईल ;

(ड) विद्यापीठाने स्वीकारलेली किंवा त्याला मिळालेली व या अधिनियमाच्या प्रारंभाच्या लगतपूर्वी त्याने धारण केलेली सर्व धर्मदाने ही त्या विद्यापीठाने या अधिनियमान्वये स्वीकारली असल्याची किंवा त्यास ती मिळाली असल्याचे किंवा त्याने ती धारण केली असल्याचे मानण्यात येईल व ज्या शर्तीवर अशी धर्मदाने स्वीकारली असतील किंवा ती मिळाली असतील किंवा धारण केली असतील अशा सर्व शर्ती, या अधिनियमाच्या कोणत्याही तरतुदीशी विसंगत असल्यातरीही, या अधिनियमान्वये विधिग्राह्य असल्याचे मानण्यात येईल ;

(च) या अधिनियमाच्या प्रारंभापूर्वी पत्करलेली आणि विद्यापीठाच्या नावे वैधरीत्या अस्तित्वात असलेली सर्व कर्जे, दायित्वे व बंधने यांची त्या विद्यापीठाकडून फेड व पूर्ती करण्यात येईल ;

(छ) या अधिनियमाच्या प्रारंभापूर्वी, विद्यापीठाच्या नावाने करण्यात आलेले जे कोणतेही इच्छापत्र, विलेख यांत अथवा अन्य दस्तऐवज यांमध्ये कोणतेही मृत्युपत्रितदान, देणगी, आबंधन (टर्म) अथवा विश्वस्त निधी अंतर्भूत असेल तर या अधिनियमान्वये आणि या अधिनियमाच्या प्रयोजनार्थ ते त्या विद्यापीठाच्या नावाने केले असल्याचे मानण्यात येईल ;

(ज) या अधिनियमाच्या प्रारंभापूर्वी विद्यापीठाच्या कोणत्याही अधिनियमितीमधील किंवा कोणत्याही अधिनियमिती अन्वये काढण्यात आलेल्या इतर संलेखांतील सर्व निर्देशांचा अन्वयार्थ हा, या अधिनियमान्वये व या अधिनियमाच्या प्रयोजनार्थ लावण्यात आला असल्याचे मानण्यात येईल ;

(झ) उक्त अधिनियमान्वये वैधरीत्या करण्यात आलेली आणि या अधिनियमाच्या प्रारंभाच्या लगतपूर्वी अस्तित्वात असलेल्या परीक्षकांची नेमणूक ही, त्या त्या विद्यापीठाकरिता, या अधिनियमान्वये व या अधिनियमाच्या प्रयोजनार्थ, करण्यात आलेली आहे असे मानण्यात येईल आणि या अधिनियमान्वये नवीन नेमणूका करण्यात येईपर्यंत, असे परीक्षक आपले पद धारण करण्याचे व कृती करण्याचे चालू ठेवतील ;

(ञ) या अधिनियमाच्या प्रारंभाच्या लगतपूर्वी उक्त अधिनियमान्वये विद्यापीठाचे मान्यताप्राप्त अध्यापक होते असे अध्यापक, या अधिनियमान्वये आणि अधिनियमाच्या प्रयोजनार्थ, त्या विद्यापीठाचे मान्यताप्राप्त अध्यापक असल्याचे मानण्यात येईल आणि या अधिनियमानुसार नवीन मान्यता दिल्या जाईपर्यंत, ते असे मान्यताप्राप्त अध्यापक म्हणून असण्याचे चालू राहतील.

(ट) या अधिनियमाच्या प्रारंभाच्या लगतपूर्वी ज्या नोंदणीकृत पदवीधरांची नावे विद्यापीठाने ठेवलेल्या पदवीधरांच्या नोंदवहीत नमूद करण्यात आली होती असे नोंदणीकृत पदवीधर हे, या अधिनियमान्वये व या अधिनियमाच्या प्रयोजनांसाठी त्या विद्यापीठाचे नोंदणीकृत पदवीधर असल्याचे मानण्यात येईल व अशा प्रकारे ठेवण्यात आलेली नोंदवही व त्यात ज्यांची नावे नमूद करण्यात आली आहेत असे नोंदणीकृत पदवीधर त्या विद्यापीठाद्वारे ठेवण्यात आलेली नोंदवही असण्याचे व त्यात नमूद केलेले नोंदणीकृत पदवीधर असण्याचे चालू राहतील.

(ठ) विद्यापीठाच्या संबंधात उक्त अधिनियमान्वये करण्यात आलेले सर्व परिनियम आणि आदेश जेथवर ते या अधिनियमाच्या तरतुदीशी विसंगत नसतील तेथवर अंमलात असण्याचे चालू राहतील आणि या अधिनियमाखाली करण्यात आलेल्या परिनियमांद्वारे किंवा, यथास्थिति, आदेशांद्वारे ते अधिक्रमित करण्यात अथवा त्यांच्यात फेरबदल करण्यात येईपर्यंत, या अधिनियमान्वये त्या विद्यापीठाच्या संबंधात करण्यात आले असल्याचे समजण्यात येईल ;

(ड) विद्यापीठाच्या संबंधात उक्त अधिनियमान्वये करण्यात आलेले सर्व विनियम जेथवर ते या अधिनियमाच्या तरतुदींशी विसंगत नसतील तेथवर, अंमलात असण्याचे चालू राहतील आणि या अधिनियमाखाली केलेल्या विनियमांद्वारे ते अधिक्रमित करण्यात अथवा त्यांच्यात फेरबदल करण्यात येईपर्यंत, या अधिनियमान्वये करण्यात आल्याचे मानण्यात येईल ;

(ढ) उक्त अधिनियमान्वये विहित केलेला, कोणताही असल्यास, प्रमाण संकेतांक हा, या अधिनियमान्वये विहित करण्यात आला असल्याचे मानण्यात येईल आणि या अधिनियमाद्वारे किंवा तदन्वये तरतूद करण्यात आली असेल त्या व्यतिरिक्त, या अधिनियमाच्या तरतुदींनुसार अधिक्रमित करेपर्यंत अंमलात असण्याचे चालू राहिल ;

(ण) उक्त अधिनियमान्वये किंवा राज्य शासनाद्वारे कोणत्याही प्राधिकरणाकडून काढण्यात आलेल्या सर्व नोटिसा व आदेश, जेथवर ते या अधिनियमाच्या तरतुदींशी विसंगत नसतील तेथवर, अंमलात असण्याचे चालू राहतील आणि या अधिनियमान्वये ते अधिक्रमित करण्यात अथवा त्यांच्यात फेरबदल करण्यात येईपर्यंत, ते त्या प्राधिकरणाकडून काढण्यात आल्याचे मानण्यात येईल ;

(त) उक्त अधिनियमान्वये घटित करण्यात आलेले आणि या अधिनियमाच्या प्रारंभाच्या दिनांकास अस्तित्वात असलेले न्यायाधिकरण हे, या अधिनियमान्वये न्यायाधिकरण म्हणून काम करण्याचे चालू ठेविल आणि अशा न्यायाधिकरणाकडे प्रलंबित असलेले सर्व वाद किंवा बाबी किंवा अपिले, न्यायाधिकरण त्यांच्या संबंधात कार्यवाही करून ती निकालात काढील :

परंतु, या कलमाद्वारे निरसित करण्यात आलेले, उक्त अधिनियमान्वये करण्यात आलेले आणि या अधिनियमाच्या प्रारंभाच्या लगतपूर्वी अंमलात असलेले कोणतेही परिनियम, आदेश, विनियम व काढण्यात आलेल्या कोणत्याही नोटिसा अथवा आदेश हे, या अधिनियमान्वये असे परिनियम, आदेश, विनियम, नियम करण्याचा अथवा नोटीस अथवा आदेश काढण्याचा अधिकार, वेगळे प्राधिकरण अथवा मंडळ किंवा अधिकारी यांच्याकडे विहित आहे या, अथवा त्याचा विषय हा, या अधिनियमान्वये करावयाच्या दुय्यम विधिविधानाच्या अथवा लेखाच्या केवळ वेगळ्या स्वरूपात अनुज्ञेय आहे केवळ या कारणावरून या अधिनियमाच्या तरतुदींशी विसंगत आहे असे मानण्यात येणार नाही.

अडचणी दूर  
करणे.

**१४८.** (१) या अधिनियमाच्या तरतुदी अंमलात आणताना कोणतीही अडचण उद्भवल्यास, राज्य शासनास, परिस्थिती उद्भवेत त्याप्रमाणे ती अडचण दूर करण्याच्या प्रयोजनासाठी त्यास आवश्यक किंवा इष्ट वाटेल अशी, परंतु या अधिनियमाच्या तरतुदींशी विसंगत नसेल अशी कोणतीही गोष्ट **राजपत्रातील** आदेशाद्वारे करता येईल :

परंतु, असा कोणताही आदेश या अधिनियमाच्या प्रारंभाच्या दिनांकापासून दोन वर्षांचा कालावधी समाप्त झाल्यानंतर काढता येणार नाही.

(२) पोट-कलम (१) अन्वये काढलेला प्रत्येक आदेश, तो काढण्यात आल्यानंतर होईल तितक्या लवकर राज्य विधानमंडळाच्या प्रत्येक सभागृहासमोर मांडण्यात येईल.

१५९

अनुसूची

भाग एक

[ पहा कलमे ३(१) व ६(१) ]

| विद्यापीठाचे नाव<br>(१)                                   | विद्यापीठ क्षेत्र<br>(२)  |
|---|---|
| १. मुंबई विद्यापीठ, मुंबई                                 | जिल्हे<br>(१) मुंबई शहर<br>(२) मुंबई उपनगर<br>(३) रायगड<br>(४) ठाणे<br>(५) पालघर<br>(६) रत्नागिरी<br>(७) सिंधुदुर्ग |
| २. सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ, पुणे                  | जिल्हे<br>(१) पुणे<br>(२) अहमदनगर<br>(३) नाशिक  |
| ३. शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर                            | जिल्हे<br>(१) कोल्हापूर<br>(२) सांगली<br>(३) सातारा   |
| ४. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ,<br>औरंगाबाद. | जिल्हे<br>(१) औरंगाबाद<br>(२) जालना<br>(३) बीड<br>(४) उस्मानाबाद  |
| ५. राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज विद्यापीठ, नागपूर            | जिल्हे<br>(१) नागपूर<br>(२) भंडारा<br>(३) गोंदिया<br>(४) वर्धा  |

## अनुसूची-चालू

| (१)   | (२)  |
|---|--|
| ६. श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी महिला विद्यापीठ,<br>मुंबई. | महाराष्ट्र राज्य   |
| ७. संत गाडगेबाबा विद्यापीठ, अमरावती                         | जिल्हे<br>(१) अमरावती<br>(२) अकोला<br>(३) बुलढाणा<br>(४) यवतमाळ<br>(५) वाशीम |
| ८. उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगाव                        | जिल्हे<br>(१) जळगाव<br>(२) धुळे<br>(३) नंदुरबार                              |
| ९. स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ, नांदेड          | जिल्हे<br>(१) नांदेड<br>(२) परभणी<br>(३) लातूर<br>(४) हिंगोली                |
| १०. सोलापूर विद्यापीठ, सोलापूर                              | सोलापूर जिल्हा   |
| ११. गोंडवाना विद्यापीठ, गडचिरोली                            | जिल्हे<br>(१) गडचिरोली<br>(२) चंद्रपूर                                       |



१६१

भाग दोन

[ पहा कलम ३(२) ]

| नवीन विद्यापीठाचे नाव<br>(१) | विद्यापीठ क्षेत्र<br>(२) |
|------------------------------|--------------------------|
|------------------------------|--------------------------|